# ज्ञानपीठ मूर्तिदेवी जैन यन्थमाला [ संस्कृतयन्थाङ्क २ ]

# कन्नडपान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थसूची

[ जैनमठ-जैनसिद्धान्तभवन-सिद्धान्तवसदि आदि मृडविद्री, जैनमठ कारकल, आदिनाथ ग्रन्थ-भण्डार अलियुर आदिके भण्डारोंकी सविवरण सूची ]



सम्पादक-

विद्याभूषण पं० के० भुजवली शास्त्री मूडिबद्री

### भारतीय ज्ञानपीठ, काशी

प्रथम श्रावृत्ति (

माघ, बीरनिर्वाण सं० २४७४ वि० स० २००४ जनवरी १९४८

मूल्य १३) तेरह रुपया

# भारतीय ज्ञानपीठ काशी

स्व॰ पुण्यक्लोका माता म्ह्तिदेवी की पवित्र स्पृति में तत्सुपुत्र सेठ शान्तिप्रसाद जैन द्वारा

संस्थापित

# ज्ञानपीठ मूर्तिदेवी जैन यन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में प्राक्कत संस्कृत अपम्रंश हिन्दी कन्नड तामिल आदि प्राचीन भाषाओं में उपलब्ध आगमिक दार्शनिक पौराणिक साहित्यक और ऐतिहासिक आदि विविध विषयक जैन साहित्य का अनुसन्धान, उसका मूल और यथासंभव अनुवाद आदि के साथ प्रकाशन होगा। जैन मंडारों की सूचियाँ, शिलालेख-संग्रह, विशिष्ट विद्वानों के अध्ययन ग्रन्थ और लोकहितकारी जैन साहित्य भी इसी ग्रन्थमाला में प्रकाशित होंगे।

यन्थमाला सम्पादक और नियामक ( संस्कृत विभाग )
पं महेन्द्रकुमार जैन, न्यायाचार्य, जैन-प्राचीन न्यायतीर्थ
बौद्धदर्शनाध्यापक, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी

## संस्कृत यन्थांक ?

प्रकाशक-अयोध्याप्रसाद गोयलीय, भन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड, काशी मुद्रक—रामकृष्ण दास

नाशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रेस, बनारस ।

ाः स्थापनाब्द फाल्गुन कृष्ण ९ धीरनि० २४७०

सर्वाधिकार सुरक्षित

विक्रम स० २००० १८ फरवरी १९४४

### कन्नडप्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थसूची स्−



स्व० मूर्तिदेवी, मातेश्वरी सेठ शान्तिप्रसाद जैन

## JNANA-PITHA MOORTIDEVI JAIN GRANTHAMALA

SANSKRIT GRANTHA No. 2

## Kannad Prantiya Tadapatriya Grantha Soochi

[ A descriptive Catalogue of Bhandaras of Jam Matha Jain Siddhant Bhavan, Siddhant Basadi etc. of Moodbidri, Jam Matha of Karakal, and Adinatha Grantha-Bhandar of Aliyoor etc ]



#### EDITOR

### VIDYABHOOSHAN PANDIT K, BHUJABALI SHASTRI MOODBID.RI

## BHARTIYA JNANA PITHA KASHI

First Edition 500 Copies.

MAGHA VIR SAMVAT 2474 VIKRAMA SAMVAT 2004 IANUARY, 1948

Price Rs. 13/-

### BHARATIYA JNANA-PITHA KASHI

#### FOUNDED BY

#### SETH SHANTI PRASAD JAIN

IN MEMORY OF HIS LATE BENEVOLENT MOTHER

#### MOORTI DEVI.

#### JNANA-PITHA MOORTI DEVI JAIN GRANTHAMALA

IN THIS GRANTHAMALA CRITICALLY EDITED JAIN AGAMIC, PHILOSOPHICAL,
PAURANIC, LITERARY, HISTORICAL AND OTHER ORIGINAL TEXTS IN PRAKRIT,
SANSKRIT, APABHRANSHA, HINDI, KANNADA AND TAMIL ETC AVAILABLE
IN ANCIENT LANGUAGES, WILL BE PUBLISHED IN THEIR RESPECTIVE
LANGUAGES WITH THE TRANSLATION IN MODERN LANGUAGES
AND ALSO CATALOGUES OF BHANDARAS, INSCRIPTIONS
STUDIES, OF COMPETENT SCHOLARS & POPULAR
JAIN LITERATURE WILL BE PUBLISHED

GENERAL EDITOR OF THE SANSKRIT SECTION

#### PANDIT MAHENDRA KUMAR JAIN

NYAYACHARYA, JAIN-PRACHIN NYAYA TIRTHA
PROFESSOR OF BAUDDHA DARSHAN
BANARAS HINDU UNIVERSITY,
BANARAS

SANSKRIT GRANTHA No. 2

**PUBLISHER** 

AYODHYA PRASAD GOYALIYA

Secretary—BHARATIYA JNANA PITHA

DURGAKUND, BANARAS CITY

Founded in Falgun Krishna 9 Vir Samvat 2470

All Rights Reserved.

Vikram Samvat 2000 18th February, 1944

### विषय-सूची

प्रास्ताविकं किञ्चित्	<b>५</b> – <u>६</u>
प्रकाशकीय	المِيْ
प्रस्तावना	6-30
जैन वाङमय पर एक दृष्टि	८-२२
प्राकृत वाद्मय	८-१४
सस्कृत वाङमय	१४-१७
कन्नड वाडमय	१७-२१
जैन वाद्यमयकी रक्षाका <sup>,</sup> श्रेय	२१-२२
ग्रन्थ भण्डारोंका सक्षिप्त परिचय	२२-२४
अप्रकाशित ग्रन्थोके नाम	<i>₹</i> ፮ <u>-</u> ₹८.
ग्रन्थ तालिका-निर्माणमें कठिनाइयाँ	२९
घन्यवाद समर्पेण	२९
मेरा निवेदन	३०

र्जनमठ के ताड	पत्रीय ग्रन्थ	जैन भवन	मूडविद्री के अत्य भण्डार	कारकल	अलियूर
सिद्धान्न	१-२१	२०२-२०४	२५४-२५८	२८२-२८४	
अध्यात्म	२१-३३	२०५-२०६	२५८	२८४	
धर्म	३४-७९	२०६-२१४	२५८-२६०	२८४-२८७	00 इ
योगशास्त्र	७९-८०	२१४	२६१		
प्रतिष्ठा	८१-८३	२१४-२१६	२६१-२६२	<b>२</b> ८७-२८८	
व्रतविधान आराधना	८३-९०	२१६-२२०	२६२-२६४	२८८-२८९	३०७
न्याय तथा दर्शन	९०-१०४	२२०-२२१	२६४	२८९	२०६-४०६
व्याकरण	१०४-११४	२२३	२६५	२८९-२९०	
कोश	११४-११९	२२ <b>१-२२</b> २	२६५	२९०-२९१	३०९
काव्य	११९-१३४	२२४	२६६	२९१-२९३	३०९
नाटक	१३४				
अलङ्कार आदि	१३५-१३७	२२५	२६६	२९३	
छन्द शास्त्र	१३७-१३९	२२५			
नीति तथा सुभाषित	१३९-१४१	२२५	२६६-२६७	२९३	
पुराण	१४१-१४९	२२६-२२९	<i>२६७</i>	२९३-२९४	३०९
चरित्र	१४९-१५८	२२९-२३५	२६७-२६९	२९४-२९७	३०९
कथा	१५९-१६३	२३५-२३८	२६९-२७०	२९७-२९८	३१०
इतिहास	१६४	२३८-२३९	२७०	२९८	
आयुर्वेद	१६५-१६६	२३९-२४१	२७०-२७ <sup>३</sup>	२९८-२९९	•
ज्योतिष	१६६-१६८	२४१-२४३	२७३-२७५	२९९	३१०

		(	₹ )		
गणित घास्त्र	१६८-१६९	२४४	ં રહધ	२ <b>९९</b> -३००	
मन्त्रशास्त्र	१६९-१७०	२४४-२४६	२७५-२७६	₹ <b>०</b> 0	३१०
लोकविज्ञान	१७१-१७३	२४६	२७६	३०१	३१०
शिल्पशास्त्र	१७४		२७६		३४१
लक्षण समीक्षा, तथा					
पाकशास्त्र	१७४-१७५	२४७	२७६-२७७	३०५	
क्रियाकाण्ड	१७५-१८२	२४७ २४९	२७७	३०२-३०३	
स्तोत्र	१८२-१९७	२४९-२५१	२७७-२७९	३०३-३०४	३११
भजन तथा गीत	१९८-१९९	२५१-२५२	२८०	३०४-३०५	३११
प्रकीर्णंक	१९९-२०१	२५३	२८०-२८१	३०५-३०६	,३१२
प्रन्थकारसूची	३१३-३२४			<b>3.</b>	•

### प्रास्ताविकं किञ्चित्

धर्म-तीयंद्वरोंकी पवित्रवाणी गणघरीने सुनी और उसे प्रन्यक्ष्यमें गूँथकर अपने शिब्योंको सुनाई। इस तरह श्रुतानुश्रुत परम्परासे उनके दिन्य उपदेश भन्यजनोको समताका पाठ पढ़ाते रहे। श्रुत-सुनेगए उपदेश स्मृतिद्वारा नूतन पीढ़ीको अलिखित हो प्राप्त होते गए। कालने करवट ली, लोगोंको स्मरणशिक्त दिनोदिन क्षीण होने लगी तब युगप्रधान आचार्योंने उन छिन्न विच्छिन्न उपदेशोंको लिपिबद्ध किया। उन सूत्रात्मक उपदेशोंको मूल आधार बनाकर सख्यावद्व विविधविषयक शास्त्रोका निर्माण हुआ। किसी भी सस्कृतिका मतं आधार उसका साहित्य होता है। साहित्य सुरक्षित रहा सस्कृति जीवित रही, साहित्यके नष्ट होते ही सस्कृति अपने आप बिनाशके गर्भमें समा जातो है। अत पुरातन आचार्योंने इन शास्त्रोंकी सैकडों प्रतिलिपियाँ कराके समस्त भारतके कोने कोनेमें पहुँचा दी।

जैनसस्कृतिको विदेशियोंसे उतना मोर्चा नहीं लेना पड़ा जितना समान-तन्त्रीय बौद्धसस्कृति और प्रतितन्त्रीय बैदिक संस्कृतिसे। नास्तिक शब्द तो जैनोंके लिए रूढ़सा कर दिया गया था। मगध देशमें भूलसे भी जानेवाले वैदिकांको प्रायहिवत्त करना होता था। मागधी अर्धमागधी या प्राकृत भाषाका जिसमें इन तीर्थंकरोके लोकोदयकारी उपदेश होते थे—उच्चारण करना भी पापका कारण माना जाता था। उस जीवन-मरणके कठिन युगमें इन धर्मप्राण आचायौंने अपनी सस्कृतिकी निधिको अतिशय मनोयोग पूर्वक रखाया और बढ़ाया।

विक्षणके भण्डारोमें दिगम्बर परम्पराके प्रत्यरत्न विखरे पढे हैं। जैनप्रन्थोको जलाकर पानी गरम करनेवाले प्रतितन्त्रियोको कमी नहीं थी। इन्हें राजाश्रय भी प्राप्त था। अत. भण्डाराष्ट्रयक्षोने ताडपत्रीय प्रन्योको बांध बांध कर कुएमें डाला। भूमिगृहमें उन्हें अतिसुरक्षित किया। फलस्वरूप सैकड़ो प्रन्यरत्न कुओंमें पड़े रह गए और सहस्रो की को भोजन बन गए। फुन्दकुन्द, समन्तभद्र, उमास्वामि जंसे युगनिर्माता आचार्योका पूरा साम्हत्य हमें उपलब्ध नहीं है। भट्टारक युगमें इन भण्डारोका बाह्यरक्षण तो रहा पर भीतर ही भीतर वे पुद्गल जीर्ण-शीर्ण और दीमकभक्ष्य बनते गए, जिनपर जीवनकी साधनाका एक एक क्षण मूत रूप लिए हुए था। इन लोगोने सालियां तो सम्हालों पर भण्डारोको खोलकर उनके जीर्णोद्धारके प्रयत्न नहीं ही किए। कुछके लिए तो ये युजा प्रतिष्ठा और आर्थिक लाभके साधन वन जानेक कारण अपने सहधर्मी विद्वक्जनोको भी दुष्प्राप्य बन गए थे। ऋषिकत्प प० टोडरमलजी जैसे विद्वदप्रणीको भी इनके स्वाध्यायका अवसर न मिला और वह प्रन्थरांक्ष धीरे अस्त-व्यस्त जीर्ण-शीर्ण नष्टप्राय होती गई। यद्यपि बोच बीचमें ऐसे भी प्रयत्न हुए जिनसे इन प्रन्थोने प्रकाश और धूप वेसी। अस्तु।

मान भी सैकड़ो प्रन्य विक्षणके व्यक्तिगत तथा मठोंके भण्डारोमें पड़े हुए होगे जिनमें सस्कृतिके विविध अञ्जीपर प्रकाश डालनेवाली ज्ञानिधि उत्कीणं होगी। विगम्बर प्रन्थोकी शुद्ध प्रतिलिपियां विक्षणके भण्डारोंमें ही मिलती है। क्योंकि इनके प्रमुख आचायोंने दक्षिण भारतकी ही पुण्यमूमिका गौरवाान्वत किया था। भण्डारोंमें ही मिलती है। क्योंकि इनके प्रमुख आचायोंने दक्षिण भारतकी ही पुण्यमूमिका गौरवाान्वत किया था। वहीं इन प्रन्थोकी आद्य प्रतिलिपियां हुई। कन्नड लिपिमें छोटो इ और बड़ो ई अल्पप्राण व और महाप्राण व, द विक्षेत स्युक्ताक्षर और पूर्व अनुस्वारमें यथा वध और बढ़में काई अन्तर नहीं होता अत. लिपिकारोको वर्णावपर्यात जैसे सयुक्ताक्षर और पूर्व अनुस्त यथा वध और बढ़में काई अन्तर नहीं होता अत. लिपिकारोको वर्णावपर्यात होना स्वाभाविक है। अनेको प्रतियोमें प्रकरणके प्रकरण नकल करनेसे रह जाते है। इसके अनुभत उदाहरण होना स्वाभाविक है। अनेको प्रतियोमें प्रकरणके प्रकरण नकल करनेसे रह जाते है। इसके अनुभत उदाहरण होना स्वाभाविक है। अनेको प्रतियोमें प्रकरणके प्रकरण नकल करनेसे रह जाते है। इसके अनुभत उदाहरण होना स्वाभाविक है। उत्तरकी प्रतियोमें चालू रही, पर पूनाकी ताडपत्रीय-एक स्थलपर २२ पत्रका पाठ छूट गया और यह छूट प्राय. उत्तरकी प्रतियोमें चालू रही, पर पूनाकी ताडपत्रीय-प्रतिसे उसकी पूनि हुई। राजवातिकका जिन ताडपत्रीय प्रतियोसे सम्पादन किया जा रहा है वे अत्यन्त शुद्ध तथा प्रतिसे उसकी पूनि हुई। गुद्धित राजवातिकमें कई स्थलोमें पित्तयों छूटी है। न्यायविनिश्चयविवरणकी यवि विक्षण प्रान्तकी सिटपण है। मुद्धित राजवातिकमें कई स्थलोमें पित्तयों छूटी है। न्यायविनिश्चयविवरणकी यवि विक्षण प्रान्तकी

ताडपत्रीय प्रति न मिली होती तो इसके सम्पादनकी हिम्मत मेरी भी नहीं हो रही थी। अतः जिन प्रन्थोंकी प्रतियां उत्तरमें सुलम भी है उनकी शुद्धतर प्रतियोक्षे लिए दक्षिणकी प्रतियोंकी खोज अत्यावश्यक है।

शोध, खोज और प्राचीन प्रन्थभण्डारोंकी सूचीका निर्माण आदि ऐसे कार्य हैं जिन्हें तन्त्रसञ्चालककी अपनी सस्कृतिके उद्धारको अदूट श्रद्धा ही सतत चालू रख सकती है। दाता अपनी श्रद्धाके द्रव्यफूल जिनवाणी-माताके चरणोमें बखेरकर एक प्रकारसे कृतकृत्य है। पर उसकी श्रद्धाके कणोका यथेष्ट विनियोग तो अन्तत. सञ्चालककी दृढता और उद्धारकबृद्धिपर ही निर्भर है। भगवान् जिनेन्द्रकी सद्भिषतके प्रसादसे हम सबको वह बल और सुभ मिले जिससे इस कार्यको उद्धारकबृद्धिसे आगे बढ़ा सकें।

भद्रजीवी साहु शान्तिप्रसादजीकी अटूट श्रद्धा और उन्मुक्तहस्तता तथा उनकी तद्रूपा धर्मपत्नी सी॰ रमाजीकी समन्वयशीलता और स्थिरता अभिनन्दनीय और अनुकरणीय है। आशा है कि वे अपने सुदीर्घ जीवनमें इस ज्ञानाडकुरको विवेकवारि और सतत लगनसे पल्लवित, पुष्पित और फलित करेंगे। इस ग्रन्थके विद्वान् सम्पादक प॰ के॰ भुजवली शास्त्रीकी अपनी व्यवस्था, कार्यतत्परता और संस्कृतिनिष्ठासे समाज सुपरिचित है। उनकी ही कार्यतत्परताका परिणाम है जो ज्ञानपीठकी मूडिबद्री शाखाने दो वर्षमें ही पर्याप्त कार्य किए जिनमें यह सूची मुख्य है। इस सूचीनिर्माणके फलस्वरूप विभिन्न विषयके करीब १२५ अप्रकाशित ग्रन्थोंकी प्रतिलिपियोका पता लगा। जिनमें अनेक तो अन्यत्र अलभ्य और एकमात्र प्रतिर्या है। अनेकों शुद्धतम प्रतियोकी खोज हुई जिनसे इतिहास और सजोधनप्रेमियोंकी सामग्रीमें पर्याप्त चृद्धि हुई। हमें आशा है कि शास्त्रीजीकी शक्तिका इस दिशामें आगे भी उपयोग होगा और हमें अपनी खोई हुई ज्ञाननिधिक दर्शन हो सकेंगे। शास्त्रीजी तथा शास्त्रीजीके सहयोगी हमारे विशेष धन्यवादके पात्र हैं।

सूचीकी छपाई काशीमें हुई है। यह सम्भव नहीं हुआ कि इसके प्रत्येक प्रूफ मूडबिद्री भेजे जाते अतः कुछ अशुद्धियां रह गई है। उन श्रुटियोके उत्तरदायी हम है। इस कठिन कालमें जो हो सका वह आप सबके सामने हैं। इस सूचीके सम्पादक शास्त्रीजीने अपनी प्रस्तावनाके अन्तमें आशा की है कि ज्ञानपीठ इस सूचीनिर्माण के कार्यको अवश्य आगे चलावे। ज्ञानपीठके सस्यापककी श्रद्धामें कमी नहीं है वे जल्दीसे जल्दी इस सांस्कृतिक यज्ञको सम्पन्न वेखना चाहते हैं। सञ्चालक भी यथारुचि प्रयत्नशील है कि परिस्थितियां अनुकूल होते ही कार्यको क्रमशः आगे बढ़ाया जाय। इस भीषण सक्रमणकालमें हमें सस्कृतिके प्राणोंकी सुरक्षाके लिए अति सतर्कतासे सतत जागरूक रहकर कर्मक्षेत्रमें इट जाना है। वस्तुतः ऐसे ही कार्य ज्ञानपीठकी देन कहे जा सकते है।

,भारतीय ज्ञानपीठ विजयादशमी २४।१०।४७

न्महेन्द्रक्रुमार् जैन प्रनथमाला सम्पादक

#### प्रकाशन व्यय

३०००)	सूचीनिर्माण तथा	सम्पादन	३००)	प्रूफशोधन
५६०)	कागुज		२८५)	न्यू तस्या व्यवस्था
११२५)	छपाई		५००)	्र भेंट
३००७	वाइहिंग		، ۶۹۰۵)	कमीशन
१५०)	रेपर चित्र		<del></del>	
५००)	ਧੁੜਿ	motores mailes and	७७२०)	
100	MM	लागत प्रति १५१इ)	, मूल्य १३) रु०	

### प्रकाशकीय

दक्षिण प्रान्तीय अनुपलव्य और अप्रकाशित ग्रन्थोकी शोध-खोजकी भावनासे प्रेरित होकर काशीमें ज्ञानपीठ स्थापित होनेके दो माह वाद ही अप्रैल १९४४ में ज्ञानपीठकी एक शाखा मूर्डाबद्रीमें भी खोल दी गई। सौभाग्यसे उसी प्रान्तके प्रसिद्ध और योग्य विद्वान् विद्याभूषण प० के० मुजवली शास्त्रीकी सेवाएँ प्राप्त हो गईं। अतः उनकी देख रेखमें प० वी० लोकनाय गास्त्री, प० पद्मनाभ शास्त्री, प० एस० चन्द्रराजेन्द्र साहित्य शास्त्री और प० एम० पी० भोजगज पोणीने दो वर्ष निरन्तर परिश्रम करके पाँच ग्रन्थभण्डारोकी जाँच पडताल की, जिसके फलस्वरूप १२५ अप्रकाशित ग्रन्थोकी प्रतिलिपियोका पता चला और ३५३८ नाडपत्रीय और हस्तिलिखित शास्त्रीकी सविवरण प्रस्तुत ग्रन्थ सूची तैयार हुई।

इन दो वर्षों मूडिवद्री शाखामें ४४५२॥॥ व्यय हुए। ५ ग्रन्थ भण्डारोकी जाँच पडतालके अतिरिक्त दशभक्त्यादि सग्रह (पृ० १००) का सम्पादन हुआ। ८ ग्रन्थो का मूल प्रतिसे िलान किया गया, पोन्न और रन्न कविका परिचय लिखा गया।

शासा स्थापित करते समय भावना थी कि दक्षिण प्रान्तके समस्त ग्रन्थ मण्डारो का परिश्रमी और योग्य विद्रानो द्वारा निरीक्षण कराके एक वृहत् तालिका बनवाई जाय। और उनमेंसे उपलब्ध अप्रकाशित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ अधिकारी विद्वानोंसे सम्पादित कराके प्रकाशित किए जाएँ। किन्तु हृदयस्थित भावनाएँ पूर्ण न हो सकी, निम्न बाधाएँ मार्ग रोककर खडी हो गई जिसके कारण दो वर्ष बाद कुछ समयके लिये शास्ता बन्द कर देनी पढी।

- (१) दक्षिणप्रान्तीय ज्ञानपीठ शाखा द्वारा सम्पादित ग्रन्थ कन्नड भाषामें होनेके कारण उनके मुद्रण और विकयका प्रवन्ध उसी प्रान्तमें करना पडता। काग्रजका अभाव, प्रेसकी असुविधा और उस प्रान्तका विकय आदिका अनुभव न होनेसे प्रकाशनका साहस नहीं हुआ। मुद्रण, प्रचार, विज्ञापन, भेंट, बिकी आदिका कार्य इतना वढता कि हमारे सम्हाले न सम्हलता।
- (२) ग्रन्यसूची अंदिका कार्य भी इतना व्यय-साध्य मालूम हआ कि कई पुरातत्त्वप्रेमी और सहयोगी विद्वानोकी सम्मितियो और अपनी समाजकी रुचिको देखते हुए उत्साह नहीं हुआ कि सूची-निर्माणमें इतना अधिक व्यय किया जाय। क्योंकि हमारे समाजकी प्रथम तो ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रकाशनकी और रुचि नहीं है और कदाचित् कुछ महानुमानोको है भी तो उनमें से अधिकाश मृप्त साहित्य भेजनेकी निरन्तर प्रेरणा करके पारमार्थिक प्रकाशन सस्थाओका उत्साह बढाते रहते है (?) जिस समाजमें महाधवल जैसे दुष्प्राप्य सिद्धान्तग्रन्थ मृप्त पढ़नेकी अभिलाना नलवती हो, उसके लिये इतना अधिक व्यय करके सूचीपत्रके कार्यको जारी रखनेका साहस हमें नहीं हुआ और इन दो वर्नों जिन ग्रन्थ मण्डारोकी तालिका तैयार हुई, वही प्रेसमें दे दी गई।

ज्ञानपीट हत्त्वपूर्ण भव्य प्रकाशनके लिये निरन्तर प्रयत्नशील है, परन्तु जब कंभी अनुभवी और वयो-वृद्ध गुरुजनोंसे सुननेमें आता है कि अधिकसे अधिक उपयोगी ग्रन्थोकी भी ५०० प्रतियाँ १५-२० वर्षोंमें ५ ठिननासे निकल पाती है और उसमें भी अधिकाश भेंटस्वरूप प्राप्त करके ही जिनवाणी माताका उद्घार देखना चाहते हैं जो उत्साह पर पाला-सा पढ जाता है।

ज्ञानपीठके संस्थापकीकी ओरसे पुरातत्त्व साहित्योद्धार और नवीन उपयुक्त सुर्विचपूर्ण साहित्यके निर्माण और प्रकाशनमें लाखी रुपये व्यय किये जा सकते हैं किन्तु वह लाखोकी लागतका साहित्य पानीकी तरह मुफ्त वहा दिया जाय, इससे वढ़कर साहित्यका और रचयिताका अपमान और क्या हो सकता है? आर्ज हमारी समाजमें इसीलिये गौरवयुक्त सुरुचिपूर्ण साहित्यका अभाव-सा है क्योंकि हमारे यहाँ प्राहक उँगलियो पर गिने जा सकते है। जिस साहित्यके जितने अधिक ग्राहक होगे, वह उतना ही विकसित और सुलभ होगा।

ज्ञानपीठ-प्रकाशनके सम्बन्धमें कई विद्वानीने सम्मति दी है कि पुस्तकोंका मूल्य लागतसे तिगुना रखा आय, ताकि लेखको, सम्पादको, अनुवादको और प्रूफ संशोधकोको यथेष्ट पारिश्रमिक और पारितोषिक दिया जा मके। और प्रकाशनके घरातलको ऊँचा किया जा सके। किन्तु अधिक महानुभावोका सकेत ग्रन्थोका मूल्य लागनसे भी कम रखनेको बोर है। परन्तु ज्ञानपीठके सचालक न इसे व्यापारिक सस्था बनाना चाहते हैं, न इसे खेराती ' सन्याका ही रूप देना चाहने हैं। वे इने एक आदर्श और स्वावलम्बी मंस्था बनानेकी अभिलापा रखते हैं। तािक ज्ञानपीठ अपने पाँबो पर खडी होकर उत्तमोत्तम साहित्यका सृजन और प्रकाशन कर सके। न वे लेखको, सम्पादकोंके श्रमके शोपणके पक्षमें हैं, न वे इतना अधिक ही देना चाहने हैं कि वह ग्राहकाका बोझा बन जाय।

अन्मन्यानात्मक माहित्यके मूल्यको वाजाक सस्ते साहित्यने तुलना करना मोतियां का गुँजाके नाय कीमत ऑकना है। मस्कृत, प्राकृतके प्रत्योका क प्रतियोगे पाठान्तर फिर अनेक ग्रन्थोंसे टिप्पण नहित सम्पादन ५-६ वार प्रत्येक पार्मका पूफ संशोवन आदि नव ऐमे व्ययसाध्य कार्य है जिन्हें अनुसन्यानप्रेमी हो जान सकते हैं। इस तरहके खोज पूर्ण ग्रन्थ कई नहनोगी पंस्थाओं द्वारा ५०२८ म्ह्य ६), पृ०१५० मू०२०), पृ०६०० मूल्य ५) में विक रहें है। उनका यह मूल्य कुछ अधिक नहीं है क्योंकि इनके प्रकाशनमें काफी श्रम और व्यय हुआ है।

ज्ञानपीठका प्रकाशन भी तम उत्तरीत्तर गौरवयुक्त वनानेके अभिलापी है। जिस तरहका कलापूणें प्रकाशन हम करना चाहते हैं, वह हमारी अभिलापा कई कारणोंने पूरी नहीं हो पा रही है। परन्तु समय अनुकूल होते देर नहीं लगेगी और हम अवश्य अपनी आकाआओं में पूर्ण होते देखेंगे।

सम्पादन और प्रकाननमें ययण्ड व्यय होने पर भी ग्रन्योका मूल्य मुलम हो सकना है यदि पाठक मुफ्त न पढ़नेकी प्रतिज्ञा कर लें। यह मुफ्त पढ़नेकी मनीवृत्ति उत्कृष्ट साहित्यके लिए दीमक हैं। जिम साहित्यके ग्राहक जिनने यहन होंगे, वह उनना ही अधिक महना होगा। गीता प्रेमका साहित्य इसीलिए उनना सस्ना है कि उसके ग्राहकोंकी मन्या वहुन अधिक है। प्रस्तुत पुस्तकका मूल्य १३ रुपयेकी वजाय लगभग चाररपये हो मकता या, यदि यह ५०० न छक्तर २००० छनी होती। परन्तु अपने समाजमें वह वर्ग नो ग्रन्य खरीद कर पढ़ मकता है, उसके पान अवकाश नहीं और न उसे दम तरहके कार्योकी ओर आकर्षण ही है। अधिकाश मस्थाएँ और महानुभाव मेंट स्वरूप चाहने हैं और माधारण पाठक उस नरहके साहित्यको समझ नहीं सकनेके कारण नहीं खरीद पाते, ऐसी स्थितिमें जिन ग्रन्थकी ५०० प्रनियाँ छावा ली जाती है, तो वह भी १५-२० वर्षोमें निकल पाती है, एसा पुराने नाहित्य मेवियो का अनुभव है।

महत्त्वपूर्णं इ पद्मोगी ग्रन्थोंके उद्धार और मुरुभ-प्रमारके लिये हमारी सम्मनिमें निम्न वार्ते आवश्यक है:-

- (१) जैन मन्दिरों, नरस्वनीमण्डारों, पुम्तकालयोमें आवण्यकीय उपयोगी ग्रन्योका अधिक से अधिक सग्रह बरीद कर किया जात्र। प्रकाशन मस्याओंमें मुफ्त लेकर मण्डार न भरे लाएँ।
- (२) वे दानी महान्भाव जो चोर-लृटेरोंको प्रोत्माहन देनेके लिये मन्दिरोमें सोने चादीके वर्तन और धन देते है, बन, उद्यापन, विवाह आदिने अवसरो पर जैनेतर विद्वानो, जैनमन्दिरो एव सस्याओको प्रन्य भेट करें।
- (३) पाठक प्रतिज्ञा कर लें कि ग्रन्य मुफ्त न माँगकर मोल लेकर ही पटगे और यदि मोल लेनेकी सामर्थ्य न हुई नो स्थानीय मन्दिरों, पुस्तकालयोंके प्रवन्यकोको प्रेरणा करके ग्रन्य खरीदवाएँगे और वहाँसे लेकर पटेंगे।

खारचर्र है कि हम वीनराग भगवानके चारो और मोना-चांदी पुतवाते है, और चेंबर-छनर लगाते हैं और दर्शन करने नमन कुछ न कुछ अवन्य चढ़ाते हैं। किन्नू जिनवाणी मानाओ खाली हाथ माथा टेकनेमें ही कर्तव्यकी इतियी नमझने हैं। काग, हम वीनरागको तो वीन गण ही रहने देते और वीनरागकी वाणीको इनना अलकृत कर देते कि उमकी उमेनि ने नमार जगमगा उठना। हम जैन वीनराग भगवान के सामने लींग, वादाम न चटाकर मरस्वनी मण्डार में एक-एक पैसा भी रोज चड़ायें तो कमसे कम २००० २० दैनिक जमा हो सकते हैं, जो ग्रन्थागारोंके स्थानन के लिये बहुत बड़ी निधि है।

डालमिया नगर(विहार) हे १० अक्तूबर १९४७

अयोध्याप्रमाद गोयलीय मंत्री

#### प्रस्तावना

### जैनवाद्मय पर एक दृष्टि-

यद्यपि जैन वा मय बहुत विशाल है और यह प्राकृत, सस्कृत, हिन्दी, गुजराती, कन्नड एव तिमल आदि कई भागों में विभक्त है। पर प्रस्तुत ग्रन्थ-तालिकामें प्रधानत प्राकृत, सस्कृत तथा कन्नड इन तीन वाडम्य के ग्रन्थ ही सिम्मिलित है, इसिलिये यहाँ पर सिर्फ इन्हीं वाडमयों पर दृष्टि डालना मेरा अभीष्ट है। अवकाशाभाव भी इसका अत्यन्न कारण है। विज पाठकोंको इनना अवश्य जान लेना होगा कि दक्षिण भारतकी भाषाओं तिमल तथा कन्नड प्रधान है और इन दोनो भाषाओं को साहित्यिक रूप देने वाले जैन (दिगम्बर) ही है। अस्तु, अब पाठकोंका ध्यान प्रस्तुत विषय पर आर्कावत करता हूँ।

प्राकृत वाद्यसय—यह भाषा सुप्राचीन कालमें यहाँके आर्योकी वोल-चालकी भाषा थी। इसी भाषामें भगवान् महावीर एव गौतमवृद्धनें अपने पुनीत सिद्धान्तोका उपदेश और प्रचार किया था। इसी भाषाको जैन और वौद्ध विद्वानोने अपना कर विविध विषयक विपुल साहित्यको जन्म दिया। इसी भाषाके मौलिक साहित्यकी भित्त पर सस्कृत भाषामें अनेक उत्तमोत्तम ग्रन्थोका निर्माण हुआ। विद्वानोकी राय है कि सस्कृतके नाटक-साहित्यमें सस्कृत-भिन्न जिस भाषाका प्रयोग हमें दृष्टिगोचर होता है, जिस भाषासे हमारे भारतवर्षकी वर्तमान अन्यान्य आर्य-भाषाओकी उत्पत्ति हुई है और जो भाषाएँ भारतवर्षके कई प्रदेशोमें भिन्न-भिन्न रूपमें वोली जाती हैं—इन सभी भाषाओका सामान्य नाम प्राकृत है। क्योंकि ये सभी भारतीय भाषाएँ एकमात्र प्राकृतके भिन्न-भिन्न रूपातर है, जो कि काल, देश आदि अन्यान्य कारणोमे भिन्न-भिन्न रूपोमें परिवर्तित हुए है। जैसे अर्घमागधी प्राकृत, पालि प्राकृत, पैशाची प्राकृत, सौरसेनी प्राकृत, महाराष्ट्री प्राकृत और अपभ्रश प्राकृत आदि।

सर ग्रियर्सनने वैदिक काल एव उसके पूर्वकी सभी वोज-चालकी भाषाओको प्राथमिक प्राकृत माना है। प्राकृत भाषा-समूहकी यही पहली श्रेणी है। इसका समय ई० पूर्व २००० से ई० पूर्व ६०० तक निर्विष्ट है। प्रथम श्रेणीकी ये समस्त प्राकृत भाषाएँ स्वर एव व्यजनादिके उच्चारणमें तथा विभक्तियोंके प्रयोगमें वैदिक भाषाके ही समान थी। इसीमे ये भाषाएँ विभिन्न-बहुल कहलाती है। वैदिक युगमे जो प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ वोल-चालके रूपमें प्रचलित थी उनमें परवर्ति-कालमें अनेक परिवर्तन हुए। जैसे (१) ऋ, ऋ आदि स्वरोका लोप होना (२) शब्दोके अनिम एव सयुक्त व्यजनो का रूपातर होना, (३) विभक्ति और वचन समूहका लुप्न होना आदि । जब इन परिवर्तनोसे उक्त कथ्य भाषाएँ अधिक मात्रामें रूपान्तरित हुईं तब द्विनीय श्रेणीकी प्राकृत भाषाओका जन्म हुआ। इस श्रेणीकी ये प्राकृत भाषाएँ भगवान् महावीर और गौतम वृद्धके समय-से अर्थात् ई० पूर्व छठी शताब्दीसे लेकर ई० सन् ९ मी अथवा १० मी शताब्दी तक प्रचलित रहीं। श्री महावीर एव वृद्धके समयमें उपर्युक्त सभी प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ द्वितीय श्रेणीके आकारमें भिन्न भिन्न प्रदेशोमें कथ्य भाषाके तौर पर व्यवहृत होती थी। उन्होने अपने सिद्धान्त तथा उपदेशका प्रचार इन्ही कथ्य प्राकृत भाषाओमेंसे एकमें किया था। विलक बुद्धने अपने शिष्योको यही आदेश दिया था कि मेरा उपदेश संस्कृत-बद्ध न कर इस प्रचलित प्राकृत भाषामें ही करना । इसका मुख्य कारण यही मालूम होता है कि साधारणसे साधारण जनता भी उनके सिद्धान्तोसे लाभ उठावे। वास्तवमें यह मार्ग है भी अधिक लामकारी। इसका रहस्य जैन भी खूब जानते बे। इमीका परिणाम है कि वे भारतके भिन्न-प्रदेशोमें जैसे-जैसे फैलते गये वैसे वैसे वहाँकी प्रान्तीय भाषाओमें नये-नये साहित्योका निर्माण करते गये । आर्य-भाषाओको कौन कहे । तिमल, कन्नड जैसी द्राविड साहित्योंके भी जन्मदाता ये ही कहे जा सकते हैं। इन भाषाओं में प्राचीन से प्राचीन ज्याकरण, अलकार, छन्द, काव्य एव नीति आदि साहित्यके मौलिक अगोपागकी रचना इन्होंकी उपलब्ब होती है। इसीसे इन प्रान्तोमें जैन सिद्धान्तका प्रचार भी अधिक है। इन प्रान्तोंके जैनेतर विद्वान् भी जैन सिद्धान्तोंमे अच्छे परिचित है। वास्तवमें निष्पक्षपात विचारसे काम लिया जाय तो भापा-सेवाकी दृष्टिसे जैनोको प्रथम स्थान मिलना समुचित है।

बस्तु, इस तरह कथ्य प्राकृत भाषाओं का साहित्यिक भाषाओं में परिणत होने का यूत्रपात यही हुआ। इसके फलस्वरूप पश्चिम मगध और यूरमेन देशके मध्यवर्ती प्रदेश में प्रचलित कथ्य भाषामें जैनोको वर्ष मागधी भाषा तथा पूर्व मगधमें प्रचलित लोकभाषासे वौद्ध धर्म ग्रन्थों की पालि भाषा उत्पन्न हुई। साथ ही साथ डसी हितीय श्रेणीकी प्राकृत भाषासे प्राय. पाचवी धाताब्दीके पूर्व, भिन्न-भिन्न प्रदेशों की अपश्रग भाषाओं का भी जन्म हुआ। हितीय श्रेणीकी भाषामें चतुर्थी विभिन्तिका, सब विभिन्तियों के हिवचनों और आख्यातको अधिकाश विभिन्तियोंका लोप होने पर भी विभिन्तियोंका प्रयोग अधिक मात्रामें वर्तमान था। इसीने प्रथम श्रेणीकी प्राकृत भाषाके समान इस श्रेणीकी प्राकृत भाषा भी विभिन्ति-बहुल कहलाती है।

सर ग्रियसंनका सिद्धान्त है कि आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं की उत्पत्ति द्वितीय श्रेणीकी प्राकृत भाषासे—सास कर उसके शेप भागमें प्रचलित अन्यान्य अपभ्रम भाषाओं हुई है और ये ही आधुनिक भाषाएँ तृतीय श्रेणीकी प्राकृत भाषा हैं। इन भाषाओं की उत्पत्तिका समय ई० सन् १० वी शताब्दी माना गया है। इनम अधिकांश विभक्तियों को लोप हुआ है और भाषाओं भी प्रकृति विभक्ति-वहुल न होकर विभक्तियों के वोधक स्वतंत्र शब्दोंका व्यवहार हुआ है। इसीमे ये विश्लेषणशील भाषाएँ कही जाती है।

सावारणतया लोगोकी यही वारणा है कि मस्कृत भापासे ही द्वितीय श्रेणीकी सभी प्राकृत भाषाएँ एव आर्चुनिक भारतीय आर्य-भाषाएँ उत्पन्न हुई है । वित्क कई प्राकृत वैयाकरणोने भी उम मतको पुष्ट किया है। पर वास्तवमें ऐसा नही है। क्योंकि आठवी गताब्दीके विद्वान् वाक्पितराजने 'गउडवहो' नामक महाकाव्यमें एव नवमी शताब्दीके विद्वान् किववर राजशेखरने अपनी 'वालरामायण' में प्राकृत भाषा ही सर्व भाषाओकी जननी है इस सिद्धान्तको डकेकी चोटसे प्रमाणित कर दिया है। \* वित्क प्राचीन अन्यान्य जैन अग ग्रन्थोंसे भी प्राकृत भाषाकी सर्वप्राचीनता सिद्ध हो जाती है। प्राकृत वैयाकरणोंके सिद्धान्तसे प्राकृत भाषाके शब्द तीन प्रकारके माने गये है-(१) तत्सम (२) तद्भव (३) देशज। जो शब्द सस्कृत एव प्राकृतमें एकरूप है वे तत्सम या सस्कृतसम कहलाते है। जैसे आगम, उत्तम, एरण्ड, किंकर, छल, तिमिर, दल, धवल आदि। जो शब्द सस्कृतसे वर्ण-लोप, वर्णागम या वर्णपरिवर्तनके द्वारा उत्पन्न हुए है, उन्हे तद्भव अथवा मस्कृतभव कहते है। जैसे—आर्य = आरिअ, इष्ट = इट्ठ, उद्गम = उग्गम, गज = गल, वर्म = थम्म, ध्यान = ज्ञाण, नाथ = णाह, मेघ = मेह आदि। जिन शब्दोका सस्कृतके साथ कोई साद्दय या सपर्क नहीं है उनको देशज कहते है। जैसे—जच्च (पुरुष) डाल (शासा) तोमरी (लता) वाणि (शुल्क) भूण्ड (शूकर) लच (कुक्कृट) रित्त (आज्ञा) घयण (गृह) आदि। अपने साहित्यदर्गणके अलकारप्रकरणमें विश्वनाय किवने भाषामम अलकारका यह—

"मजुलमणिमजीरे कलगम्भीरे विहारसरमीतीरे। विरसासि केलिकीरे किमालि घीरे च गवसारसमीरे॥" जो उदाहरण दिया है, वह तत्समके लिये एक सुन्दर निदर्शन है। प्राक्वत वैयाकरणोका अभिप्राय है कि उपर्युक्त तत्मम शब्द मस्कृतसे ही सर्वदेशीय प्राकृतमें आ मिले हैं। दूसरे प्रकारके तद्भव शब्द सस्कृतसे उत्पन्न होने पर भी कमश भिन्न-भिन्न देशमें मिन्न-भिन्न रूपको प्राप्त हुए हैं। अब रहा तीसरा देशज शब्द। ये वैदिक या लोकिक सस्कृतमे उत्पन्न न होकर भिन्न-भिन्न देशोमे प्रचलित देशी भाषाओसे लिये गये हैं।

द्वितीय श्रेणीकी जिन प्राकृत भाषाओंने साहित्य एव शिलालेखोमें स्थान पाया है, उन प्राकृत भाषा-अंकि प्रवान भेद निम्नलिखित तीन मुस्य कालविभागोमें वाँटे जा सकते हैं—

(१) प्रथम यूग-ई॰ पूर्व ४०० से ई॰ सन् १०० तक, (२) मध्य यूग-१०० से ५०० तक, (३) दीप यग ई॰ सन् ५०० से १००० तक। व्वेताम्बर जैन अग ग्रन्थोंकी अर्धमागधी एव इनसे भिन्न प्राचीन सूत्र तथा

<sup>\*</sup> देखें-'भास्तर' माग ३ किएण ३ पृष्ठ ११४।

ैपउम चरिउ आदि ग्रन्थोकी जैन महाराष्ट्री भाषा प्रथम युगमें, दिगम्बर जैन गन्थोकी सौरसेनी और परवर्ती कालके स्वेताम्बर ग्रन्थोकी जैन महाराष्ट्री भाषा मध्य युगमें, भिन्न-भिन्न प्रदेशोकी परवर्तिकालीन अपभ्रश भाषाएँ शेष युगमें ली गयी है। प्राकृतके निम्न-लिखित दस भेद माने गये है।

- (१) पाछ (२) पैशाची (३) चूलिका-पैशाची (४) अर्घ- मागघी (५) जैन महाराष्ट्री (६) अशोकिलिप (७) सौरसेनी (८) मागघी (९) महाराष्ट्री (१०) अप अश । इनमेंसे प्रत्येकका परिचय देनेसे इसका कलेवर वढ जायगा । इसिलये यहाँ पर जैन वाडमयसे सम्बन्ध रखनेवाली अर्धमागघी, जैन महाराष्ट्री, जैन सौरसेनी एव अप अश भाषाओका ही सक्षिप्त परिचय दिया जाता है।
- (१) अर्घमागची-दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनोका सिद्धान्त है कि भगवान् महावीर अपना धर्मोपदेश अर्घमागची भाषामें ही देते रहे और उनका यह उपदेश दीर्घकाल तक शिष्यपरम्परासे कण्ठपाठ-द्वारा ही संरक्षित रहा । भगवात् महावीरके निर्वाणसे लगभग दो सी वर्षके वाद सम्राट् चन्द्रगृप्तके शासनकालमें मगघ देशमें वारह वर्षीका भीषण दुर्भिक्ष पढा था। उस समय भद्रवाह स्वामीके नेतृत्वमें एक महान् जैन मुनिसघको अपने चारित्रकी रक्षाके लिये ही वह दूरवर्ती दक्षिण देशमें आना पडा। नयोकि इस दुर्वह मृनिचारित्रकी रक्षाके लिये यह दक्षिण देश बहुत उपयुक्त रहा है। उधरका अविशिष्ट मुनिसघ उस मीपण दुभिक्ष कालमें भूत्र-ग्रन्थोका परिशीलन भलीभौति न कर सकनेके कारण उन सूत्रोको भूलसा गया था। इसके फलस्वरूप उक्त दुर्गिक्षके वाद पाटलीपुत्र (पटना) में मगघ-प्रदेशस्य इस अवशिष्ट मुनि-सघने एकत्रित होकर जिस जिस साधुको जिस जिस अग ग्रन्यका जो जो अश जिस जिस रूपमें याद रह गया था उस उस साध्से उस उस अग ग्रन्थके उस उस अशको उस उस रूपमें प्राप्त कर ग्यारह अगोका सकलन किया। पर व्वेतावर ग्रन्थोके कथनानुसार ही ये अग ग्रन्थ महावीर-निर्वाणके वाद ९८०, ई० सन् ४५४ में वल्लभी (वर्तमान काठियावाड) में श्री देविद्वगणि क्षमा-श्रमण के द्वारा वर्तमान आकारमें लिपिबद्ध हुए थे। एक बात यह है कि उपर्युक्त पाटलीपुत्रके सघनें जिन ग्यारह अगोका सकलन किया था उन अगोको अपूर्ण एव विकृत मान कर दक्षिण-प्रवासी मुनिसघने स्वीकार नही किया। पर साथ ही साथ उस सघने स्वय भी उन पूर्व अग ग्रन्थोका सकलन करनेकी चेष्टा भी नहीं की। इसका परिणाम यह हुआ कि उस सघको इन अग ग्रयोसे सदाके लिये हाथ घो वैठना पडा । कुछ विद्वानोका अनुमान है कि उत्तरका मुनिसघ जब अगगत अचेलक आदि शब्दोका अर्थ दुर्भिक्षके उपरात 'ईपच्चेलक' (थोडा कपडा) आदि करने लगा तव अपने मूल सिद्धान्तमें घवका पहुँचता देख कर दक्षिणका मुनिसघ सकलित उन ग्रन्थोको स्वीकार करनेको सहमत नहीं हुआ। अगर वास्तवमें यह वात सच्ची है तो मानना पडेगा कि उस दक्षिणके मुनिसघने भारी भूछ की। बल्कि बचे-खुचे अपने उन ग्रन्थोको सर्वथा परित्याग न कर अपने मूल सिद्धान्तके अनुकूल ही वह उसकी व्याख्या करता। आप हिन्दुओंके सर्व प्राचीन एव पवित्र ग्रन्थ वेद को ही लीजिये। सुप्राचीन कालसे आज तक इसकी अर्नेक टीकाएँ लिखी गयीं। साथही साथ इन टीकाओमें मतभेदकी भी कमी नहीं है, फिर भी मीलिक अर्थ को मानने वाली हिंदू जातिने मतभेदसे घवडा कर वेदका परित्याग नही किया। अस्तु, यहाँ पर प्रायः यह स्पष्ट करनेकी जरूरत नहीं ह कि दक्षिणका वहीं सघ पीछे दिगम्बरके नामसे और उत्तरका सघ श्वेताम्बरके नामसे प्रसिद्ध हुए।

प्रो० जैकोबी आदि विद्वानोंके मतसे श्वेतावर सूत्रग्रन्थोमें महाराष्ट्री प्राकृतका गहरा प्रमाव पढा है। अर्घमागधी और आर्ष प्राकृत वास्तवमें एक ही चीज है। जैकोबी प्रमृति कुछ पिडतोंने इन्हें जो भिन्न-भिन्न मान लिया है, यह उनका भ्रममात्र है। साथ ही साथ यह भी जान लेना आवश्यक है कि अर्घमागधी, महाराष्ट्री प्राकृतसे पूथक् एव प्राचीन है। प्रो० जैकोबीने प्राचीन जैन सूत्रोकी भाषाको प्राचीन महाराष्ट्री कह कर जो इसका जन महाराष्ट्री नाम दिया है—इनके इस सिद्धान्तका डॉ० पिश्चेल (Pischel) ने अपने प्राकृत व्याकरणमें सयुक्तिक खण्डन किया है। नाटकीय अर्घमागधी और जैन सूत्रोकी अर्घमागधी एक नहीं है। मार्कण्डेय आदि प्राकृत वैया-करणोंने अर्घमागधीका जो लक्षण दिया है वह नाटकीय अर्घमागधीका है न कि जैन सूत्रोकी अर्घमागधीका। अर्घ-करणोंने अर्घमागधीका जो लक्षण दिया है वह नाटकीय अर्घमागधीका है न कि जैन सूत्रोकी अर्घमागधीका। अर्घ-

<sup>ा</sup> देखें-'स्थिनरावली-मरित,' सर्गे ६।

मागधीका मूल उत्पत्तिस्थान ऊपर पिश्वम मगध और सूरसेन देशका मध्यवर्ती प्रदेश वतलाया जा चुका है। परन्तु जैन वर्धमागधीमें मागधी एव सौरसेनी भापाक विशेष लक्षण नहीं पाये जाते हैं। प्रो० जैकोवी आदि विद्वानों के कथनानुसार महाराष्ट्रीके माथ ही इसका अधिक सादृश्य दृष्टिगोचर होता है। इसीसे कोई कोई इसके उत्पत्ति-स्थानके सवधमें शका उपस्थित करते हैं। प्रो० जैकोवी जैन सूत्रोकी भाषा और मथुराके शिलालेखों (ई० सन् ८३ से १७६) की भाषाने यह अनुमान करते हैं। जैन अग ग्रन्थोकी अर्धमागधीका काल चतुर्य गताब्दीका भेष माग कथवा तृतीय शताब्दीका प्रथम भाग है।

- (२) जैन महाराष्ट्री-जैन सूत्र प्रथोंके अतिरिक्त श्वेतावर जन विद्वानोंके द्वारा प्रणीत अन्य प्रथोंकी प्राकृत भाषाकों जैन महाराष्ट्री नाम दिया गया है। इस भाषामें महापुरुषोंकी जीवनी (चरित्र), दर्शन, ज्योतिष, भूगोल, काव्य एव स्तोत्र आदि विषयोंका विशाल माहित्य भरा पड़ा है। प्राचीन प्राकृत वैयाकरणोंने जैन महाराष्ट्रीके नामसे किसी भिन्न भाषाका निर्देश नहीं किया है। किन्तु आधुनिक पश्चात्य विद्वानोंने काव्य, नाटकादि प्रयोमें महाराष्ट्रीका जो रूप मिलता है, उससे श्वेताम्वर प्रयोकी भाषामें पर्याप्त पार्यक्य देखकर इसे जैन महाराष्ट्री नाम दिया है। इसमें प्राकृत व्याकरणमें प्रतिपादित महाराष्ट्रीका लक्षण विशेष रूपसे समन्वित होते हुए भी जैन अर्थमाग्वीका बहुत कुछ प्रभाव देखा जाता है। पयन्ना ग्रथ, निर्युवितर्यां, पडमचरिड, उपदेशमाला, कई माष्यग्रथ, निशीयचूणि, वर्मनग्रहणी, प्रवचनसारोद्धार, उपदेशरहस्य और भाषारहस्य आदि इसी जैन महाराष्ट्रीके कुछ उदाहरणम्त है
- (३) जैन चौरसेनी—डॉ० पिश्चेलके मतसे दिगंवर जैनोके प्रवचनसार, कार्तिकेयानुप्रेक्षा आदि प्रथोकी सापा जैन सौरसेनी हैं। इस वातको कुछ जर्मन विद्वान् नहीं मानते। परन्तु साथ ही साथ इस विषयमें उन लोगोंने जो कुछ अनुस्थान किया है, उसका परिणाम आज तक कुछ भी नहीं निकला। अव तो इसका फिलतांश भविष्यके गर्भमें ही समझना चाहिये। अत. जब तक इस डॉ० पिश्चेलके मतके विरुद्ध कीई पुष्ट प्रमाण नहीं मिलते हैं, तब तक इन्हींके मतको मानना ममुचित होगा। यह जैन मौरसेनी अर्थमागवी और प्राकृत व्याकरणोंमें निर्दिष्ट सौर- सेनीके मिश्रणसे वनी हुई है। जैन सीरमेनी जैन महाराष्ट्रोकी अपेक्षा अर्धमागवीसे अत्यविक निकटता रखती है। दोनोकी प्रकृति (मृल) एक होना ही जमका प्रधान कारण है। राजाराम कॉलेज कोल्हापुरके अर्धमागवीके प्रोफेसर मित्रवर ए० एन० उपाच्येने 'रायचद्र जैन गास्त्रमाला' ववर्ड द्वारा प्रकाणित 'प्रवचनसार' की गवेयणा-पूर्ण अपनी मूमिकामें सहेतुक प्रकट किया है कि प्रवचनसार-जैमे पुरातन और सौरसनी भाषाके ग्रथ जो कि देशी घट्योंसे रहित है उन प्रचलित क्वेताम्बरीय आगम ग्रथोंने प्राचीन हैं। क्योंकि आगम ग्रंथोंमें तो देशी घट्योंका विपुल मिश्रण पाया जाता है। उपाच्येजीने अपनी भूमिकामें प्राकृत भाषाकी आलोचनाके साथ साथ एक भाषा पर इसरी भाषाके प्रभाव आदि विषयको वड़ी ही पाण्डित्यपूर्ण युक्तियोंसे व्यक्त किया है। इस विषयके विशेष जिज्ञासु उपाच्येजी द्वारा लिखी 'प्रवचनसार'की मूमिका एक वार अवव्य पढ़ें।

क्वेताम्वरोकी तरह दिगम्वरोंपर दीर्वंकाल तक महाराष्ट्रीका प्रभाव नहीं पड़ा। इसका प्रधान कारण यह है कि दिगम्वर चौरसेनीके कट्टर पक्षपाती थे और उसी चौरसेनी व्याकरणमें ही वे सहायता छेते थे। दिगंवरों में पुप्पदंत, भूतविल, बट्टकेर, कुदकुद और शिवायें आदि इस मापाके आदिम ग्रथ-रचयिता थे। इन उद्भट दिगंवरा-चायोंके द्वारा प्रणीत अष्टपाहुड, रयणसार, पट्पाहुड, वारस-अण्वेकखा, नियमसार, पचास्तिकाय, प्रवचनसार, समयसार, भगवती आराधना, मूलाचार और कार्तिकेयानुप्रेक्षा कादि कृतियाँ इस मापाके समुज्ज्वल रत्न है। कुछ जर्मन विद्वानोकी राय है कि पट्पाहुड और कार्तिकेयानुप्रेक्षामें अपभ्रंश शब्द अधिक मात्रामें पाये जाते है। पर ए० एन० उपाव्येजीका कहना है कि यह कथन पट्पाहुडके लिये ही लागू हो सकता है। खेर, पीछे दिगम्बर जैन ग्रंथकर्ता जब सस्कृतका आश्रय छेने लगे तब सौरसेनीका संस्कृत पर अधिक प्रभाव पड़ने लगा। श्री समन्तमद्र, पूज्यपाद, अनन्तवीयं एव अकलंक आदि आचार्योंने सस्कृतमें ही ग्रयप्रणयन किया है। इसीसे अवंगापधीसे संवध विच्छिन्नसा होकर सौरसेनी पर सस्कृतका प्रभाव पड़ा। क्वेताम्बरों पर सस्कृतका प्रभाव वहुत पीछे पड़ा। हो, अनके साहित्यमें इसके विपरीत सस्कृत भाषापर प्राकृतका ही प्रभाव दृष्टि-गोचर होता है।

(४) अपभ्रश-पतञ्जिल प्रमृति मस्कृत वैयाकरणोके मतमें सस्कृत भिन्न समस्त प्राकृत भाषाएँ अपभ्रगके अन्तर्गत हैं। किन्तु प्राकृत वैयाकरणोके मतमें अपभ्रश प्राकृतका ही एक अवान्तर भेद है। इस मापामें भी जैनोका विपुल साहित्य भरा पड़ा है। भविष्यदत्तकथा, महापुराण, यशोवरचरित, नागकुमार चरित, कथाकोश, पार्श्वपुराण, सुदर्शनचरित, करकण्डुचरित, दर्शनसार, योगसार, श्रुतपञ्चमी कथा, सावयधम्मदोहा, पाहूड दोहा, एव पट्कर्मोपदेश आदि रचनाएँ इस अपभ्रश माषाके आदर्श-मूत निदर्शन है। इनमेंसे कई ग्रन्थ प्रकाशित भी हो चुके हैं। यह वात निर्विवाद सिद्ध हो चुको है कि इसी अपभ्रश भाषासे हिन्दीका अवतरण हुआ है। इस दृष्टिसे इस मापाका स्थान वहुत उच्च है। क्योंकि इसीसे प्रादुर्भूत यह हिन्दी भाषा आज राष्ट्रभाषा होने जा रही है।

डॉ॰ होर्नेलिके मतमें आर्योकी कथ्य भाषाएँ भारतवर्षके आदिम निवासी अनार्य लोगोकी अन्यान्य भाषायके प्रभावसे जिन विकारोको प्राप्त हुई थी वे ही भिन्न-भिन्न अपभ्रव भाषाएँ है और ये महाराष्ट्रीकी अपेक्षा अधिक प्राचीन हैं। पर उस मतको डॉ॰ ग्रियसंन आदि आधुनिक भाषाजास्त्री स्वीकार नहीं करते। सर ग्रियसंन के मतमें भिन्न-भिन्न प्राक्तत भाषाएँ साहित्य एव व्याकरणमें नियन्त्रित होकर जनसाधारणमें अप्रचलित होनेके कारण जिन नृतन कथ्य भाषाओकी उत्पत्ति हुई थी वे ही अपभ्रव हैं। चण्डके प्राकृत व्याकरण सथा कालिदासके 'विकमोर्वशीय'के निदर्शनोंसे यह वात स्पष्ट सिद्ध हो जाती है कि ई॰ सन् पाचवी गताब्दीके पहलेसे ही ये माहित्यमें स्थान पान लग गयो थी। अत. इससे वहुत पूर्वकालसे भारतमें कथ्य भाषाओके रूपमें अपभ्रव भाषाओं का व्यवहृत होना स्वामाविक हैं। ये अपभ्रव भाषाएँ लगभग दशवी शताब्दी तक साहित्यक भाषाएँ रही। फिर पीछे इन्होंसे हिन्दी, वङ्गला, गुजराती एव मराठो आदि आधुनिक आर्यभाषाएँ उत्पन्न हुई। प्राकृत वैयाकरणोके मतमें अपभ्रवक्ते अनेक भेद माने गये हैं और वास्तवमें यह है मी ठीक। इस भाषाके उत्पत्ति स्थान भी भिन्न भिन्न माने गये हैं। ई॰ सन् पाचवी शताब्दीके पूर्वसे लेकर दशवी शताब्दी तक भारतके भिन्न-भिन्न प्रदेशोमें वोलचालके काम प्रचलित जिस-जिस अपभ्रव भाषासे भिन्न-भिन्न प्रदेशोकी जो जो आधुनिक आर्य भाषाएँ उत्पन्न हुई है उनका विवरण निम्न प्रकार है—

महाराष्ट्री अपश्रवासे मराठी और कोकणी भाषाएँ, मागधी अपश्रवकी पूर्ववाखासे बङ्गला, उहिया अीर आमामी भाषाएँ, अर्धमागधी अपभ्रश मे पूर्वीय हिन्दी भाषाएँ, सीरसेनी अपभ्रश से वुन्देली, कन्नौजी, व्रजभाषा, हिन्दी या उर्दू ये पश्चिम हिन्दी भाषाएँ, नागर अपभ्रश से राजस्थानी, मालवीय, मेवाडी, जयपुरी, मारवाडी एवं गुजराती भाषाएँ, पालिसे सिहली और मालदीवन माषाएँ; टाक्की अपभ्रश से पश्चिमी एव पूर्वी पञ्जावी भाषाएँ, न्नाचड व्यपश्रशसे सिन्वी भाषा और पैशाची व्यप्नशसे काश्मीरी भाषा उत्पन्न हुई । ऊपर कहा जा चुका है कि जैन एव बौद्धोने मस्कृत भाषाको महत्त्व न देकर उस समयकी कथ्य भाषामें ही अपने पवित्र घर्मोपदेशको लिपिबद्ध करनेकी प्रथा प्रचलित की । इससे जैनसूत्रोकी अर्घमागघी एव वौद्धधर्म ग्रन्थोकी पालि इन साहित्यिक भाषाओका जन्म हुआ। किन्तु ये दोनो साहित्यिक भाषाएँ अन्यान्य प्राकृत भाषाओके साथ संस्कृतके प्रभावको उल्लंघन नहीं कर सकी । इसका यही एक प्रवल प्रमाण है कि इन समस्त प्राकृत भाषाओं संस्कृतके अनेक शब्द अविकल रूपमें गृहीत हुए है, जी कि तत्सम कहलाते है। यद्यपि पूर्व कथनानुसार ये तत्सम शब्द प्रथम श्रेणीकी प्राकृत भाषासे ही लिये गये हैं। फिर भी यह स्वीकार करना ही होगा कि परवितकालकी प्राकृत भाषाओं में सस्कृत भाषासे ही ये शब्द आ मिले हैं। विलक्ष लिलत-विस्तर, सद्धर्मपुण्डरीक एव चन्द्रप्रदीप सूत्र आदि वौद्ध ग्रन्थोमें तो सस्कृत सब्दोकी भरमार है। इनमें अनेक प्राकृत शब्दोंके आगे भी सस्कृतकी विभक्ति लगाकर उन्हें भी संस्कृत बना डाला गया है। हाँ, यहाँ पर यह भी याद रखना होगा कि संस्कृत पर भी प्राकृतका प्रभाव कम नहीं पढ़ा है। उसके लिये मैंने ऊपर कुछ रवेताम्वर ग्रन्थोका नाम-निर्देश किया है। यह वात है भी ठीक, क्योंकि सस्कृतकी जननी जव प्राकृत है-यह अपनी अङ्गपुष्टिके लिये अपनी माताकी उपेक्षा कर किस भापाके दरवाजेको खट-खटाती फिरे ? प्रत्येक कथ्य माषा सदैव परिवर्तनशील होती है । साहित्यिक और व्याकरण नियमके वन्वनोंसे तो जकड़कर वे गतिहीन (पगु) एव कृटस्थ वन जाती है। इसका नतीजा यह होता है कि क्रमश. यह कथ्य भापासे

अलग होकर जन-साधारणमें अप्रचलित होती हुई मृतभाषामें परिणत हो जाती है। प्रत्यक साहित्यिक भाषां किसी कथ्य भाषासे ही उत्पन्न होती है और जब वह मृतभाषामें परिणत होती है तब उससे एक नई साहित्यिक भाषाकी सृष्टि होती है, इसी अविचल नियमानुसार एक समयकी कथ्य भाषासे ही वैदिक एव सस्कृत भाषाका जन्म हुआ। जब वह सर्वसाधारणके लिये दुर्वोध हुई तब अर्धमागधी, पालि आदिने साहित्यमें स्थान पाया। ये समस्त प्राकृत भाषाएँ भी समय पाकर जब सर्वसाधारणके लिये दुर्वोध हुई तब सस्कृतकी तरह मृतभाषामें परिणत होकर भिन्न-भिन्न प्रदेशोकी अपश्रश भाषाएँ साहित्यिक भाषाओं के रूपमें व्यवहृत होने लगी। अपश्रश भाषाएँ भी जब सर्वसाधारणके लिये कष्ट-बोध्य होकर मृतभाषाके रूपमें परिणत हुई तब हिन्दी, बङ्गला, गुजराती और मराठी आदि आधृतिक आर्य कथ्य भाषाएँ साहित्यिक भाषाओं रूपमें प्रचलित हुई । प्रत्येक भाषाका प्रधान लक्ष्य होता है अर्थप्रकाश । इसलिये जिसके द्वारा स्पष्ट एव अल्प प्रयत्नसे अर्थवोध होता है वही उत्कृष्ट मानी जाती है और ये ही भाषा-परिवर्तनके दो मृत्य कारण है।

सस्कृत वाद्यसय—संस्कृत शब्दके प्रयोगसे ही यह बात स्वय विदित हो जाती है कि बहुत पहले हमारे भारतवर्षमें एक प्रकारकी भाषा प्रचलित थी और वहीं पीछे सस्कारको प्राप्त होकर संस्कृत मापाके रूपमें प्रतिक्तिल हुई। सुप्राचीन युगमें म्लेच्छ भाषाओके सम्मिश्रणसे अपनी भाषाओको विशुद्ध रूपमें सुरक्षित रखनेके लिये आयोंने सफल प्रयत्न किया था। फलस्वरूप वर्तमान संस्कृत भाषाका जन्म हुआ। ऋक् मन्त्रके पहले संस्कृत एव प्राकृत भाषाएँ किस रूपमें थी, इस वातको जाननेके लिये हम लोगोके पास कोई साधन नहीं है। ऋक् मन्त्रके प्रकाशनकालसे वेदिक संस्कृतका निदर्शन हमें मिलता है सही। किन्तु उस समयकी प्राकृत भाषाको जाननेके लिये कुछ भी सामग्री उपलब्ध नहीं दीखती। वेदिक युगके नष्ट होनेके बाद लौकिक संस्कृत भाषा प्रचारमें आई। विद्वानोकी राय है कि वेदिक युगको वह सुप्राचीन भाषा संस्कृतके नामसे प्रचलित नहीं थी। वाल्मीकिकालसे ही सर्वप्रथम संस्कृत भाषाका प्रयोग और वैदिक एव संस्कृत नावाकोका पार्थक्य ज्ञात होता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि पाणिनिक पहले भी लौकिक संस्कृत भाषाके कई व्याकरण रचे गये थे। क्योकि व्याकरणशास्त्रके अध्ययनके बिना संस्कृत भाषामें निष्णात होना असम्भव है।

पूर्वीक्त कथनसे यह बात सिद्ध हो जाती हैं कि दो प्रकारकी संस्कृत भाषाएँ देखनें में आती है-एक वैदिक, दूसरी लीकिक। ऋक्, यजु, साम कीर अथर्व ये चार वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ एव उपनिषद् वैदिक संस्कृत भाषामें है। परवर्तिकालके सूत्रग्रन्य, सहिताग्रन्य, इतिहास, पुराण, काव्य आदि लौकिक सस्कृतमें रचे गये है। लौकिक संस्कृत साहित्यमें व्याकरणका वन्धन अधिक सुदृढ है। परन्तु वैदिक भाषा व्याकरणके नियमोसे उतनी आबद्ध नहीं हैं। विद्वानोका कथन हैं कि लौकिक सस्क्रत भाषाकी उन्नतिके साथ ही साथ वैदिक शब्दोकी विभक्तियोमें अधिक परिवर्तन हुए । लौकिक सस्कृतमें अनेक वैदिक शब्दोंके प्रयोगका सर्वथा अभाव है । विमक्तियाँ भी विशेष रूपान्तरको प्राप्त हुई है। शब्दोमें से भी अनेक शब्द भिन्न-भिन्न अर्थोंमें प्रयुक्त है। इस परिवर्तनसे वैदिक सस्कृत एव लौकिक सस्कृतमें विशाल परिवर्तन हुआ। फलस्वरूप सस्कृतमें विशेष पाण्डित्य प्राप्त करने पर भी वैदिक संस्कृत एक प्रकारसे अवोध्य रह जाती है। अर्थात् लीकिक संस्कृतके मर्मज्ञ भी वैदिक संस्कृतके अर्थीको नहीं लगा सकते हैं। पारर्दाशक शिक्षक एव भाष्यकी सहायताके विना वैदिक शब्दोका अर्थ जानना सुलभ नहीं। साथ ही विद्वानोका यह भी कहना है कि वैदिक संस्कृतमें अपशब्दोका सम्मिश्रण वहूत रहा। संस्कृत शब्दोकी सल्या भी अधिक थी। इसीलिये परवर्ति वैयाकरणोने व्याकरण सम्वन्धी अनेक नियमोसे भाषाको सुन्दर एवं पूर्णांग बनानेके लिये वहुतसे शब्दोको कम कर दिया । उस युगमें स्त्रियाँ, विदूषक और नौकर आदि प्राकृत भाषा ही वोलते थे । यह वात प्राक्कालीन कवियोंके नाटकोसे स्पष्ट हो जाती हैं । इसका साराश यह निकला कि अशिक्षितवर्गं संस्कृत नही वोलता था, या यो कहिए कि सस्कृत माषा शिक्षितोकी ही भाषा थी। उस जमानेमें साधारण जनता भिन्न-भिन्न प्राकृत भाषा बोलती थी। इसीसे प्राकृतमें अनेक भेद वृष्टिगत होते हैं।

भारतवर्षके अनेक स्थानोमें पालि भाषा भी प्रचलित थी, विलक वृद्ध और महादीरके वहुत पहले ही पिरपुष्ट इस पालि भाषाने यहाँके कई स्थानोमें मातृभाषाका रूप घारण कर लिया था। यह भाषा भी एक प्रकार

प्रस्तावना १५

की प्राकृत ही है। गौतमके समयमें भी इस भाषाका प्रचार काफी रहा। उन्होंने तथा उनके शिष्योंने मातृभाषाके रूपमें प्रचलित इसी पालि भाषामें ही उपदेश दिया था। इस अपेक्षासे हम कह सकते हैं कि बौद्ध-कालमें संस्कृत भाषाका गौरव कुछ कम हो गया था। अशांकने भी संस्कृत भाषाको छोड मातृभाषामें ही अपने अनुशासनोको लिपिबद्ध करने की आज्ञा दी थी, जो आज विभिन्न स्थानोमें उपलब्ध हो रहे हैं। भारतके भिन्न-भिन्न स्थानोमें प्राप्त होनेवाले इन अनुशासनोसे भी स्थान-भेदसे प्राकृत भाषाकी भिन्नता व्यक्त हो जाती है।

विद्वानोकी ऐगी राय है कि शाक्यसिंहके पहले इस देशमें सस्कृत भाषाका यथेष्ट प्रचार था। जनता अधिक संख्यामें संस्कृत भाषा बोलती और लिखती थी। पत्र व्यवहार आदि सभी कार्य संस्कृत भाषामें ही होते थे। शाक्यसिंहके आविभावके वाद भी भारतमें संस्कृत भाषाका प्रचार सर्वथा कम नहीं हुआ। बिल्क बादके बौद्धाचार्योंने संस्कृत व्याकरण, कोश आदि प्रथोको रच कर तन्मलक संस्कृत भाषाके सम्मानकी रक्षा की। बौद्ध युगम भी राजकीय कागज, शिलालेख आदि संस्कृत भाषामें ही लिखे जाते थे। बौद्ध अपने दर्शनके प्रचारके लिये एवं अन्य दर्शनोंके खण्डनके लिये संस्कृत अवश्य सीखते थे। यहाँ तक संस्कृत साहित्यके इतिहासका परिचय हुआ।

अव में पाठकोका ध्यान प्रकृत विषयको ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। आज तकके उपलब्ध जैन ग्रयोमें श्री कृदकूदाचार्यके ग्रन्थ ही सर्व-प्राचीन है । ऐतिहासिक विद्वानीका मत है कि उक्त आचार्य विक्रमीय प्रथम शताब्दीके है। इसके पूर्व अर्यात् ऋषम तीर्थंकरसे लेकर भद्रवाहु आदि श्रुतज्ञानियोके काल तक जैनागम गुरुपरपरासे कण्ठस्य ही रक्षित या और पीछे भूतविल और पुष्पदतने कालदोषसे नष्टावशेष उस आगमको लिपि-वद्ध करनेका मार्ग दिखलाया-यो दिगम्बरीय श्रुतावतार आदि ग्रन्थोका कहना है। पूर्वोक्त कुदकुदाचार्यकी सभी कृतियाँ प्राकृत भाषामें है। इस लिये प्रथम शताब्दीके इन्ही कुदकुदाचार्यंके शिष्य श्री उमास्वातिको ही जैन सस्कृत साहित्यका आदि कवि मानना पडेगा। इनके बाद क्रमश समतभद्र और सिद्धसेन आदि सैकडो उद्भट जैन आचार्योंने जन्म लेकर अपने पवित्र ज्ञानके वलसे सस्कृत साहित्यकी यथेष्ट सेवा की । जैन साहित्य प्रारममें केवल द्यामिक रूपको हो धारण किए हुए था। किन्तु पीछे उसने अन्यान्य विभागोर्मे भी काफी उन्नति की। न्याय और अध्यात्म विषयमें यह वाद्यमय अधिक उच्च विकास तथा ऋमको प्राप्त है। प्रथम शताब्दीके श्रीउमा-स्वाति, दशम शताब्दीके श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्ती, उसी शताब्दीके श्री अमृतचन्द्रसूरि, ग्यारहवी शताब्दीके श्री शुभचन्द्राचार्य जैसे सिद्धातिवश।रद, त्तीय-चतुर्य शताब्दीकेश्री समन्तभद्र, लगभग इसी समयकेश्री सिद्ध-सेन, आठवीं शताब्दीके श्री भट्टाकलक और हरिभद्र, नवमी शताब्दीके श्री विद्यानन्द, ग्यारहवी शताब्दीके अभयदेव तथा प्रभाचन्द्र, सत्रह्वी शताब्दीके यशोविजय, जैसे नैयायिक; आठवी शताब्दीके श्री जिनसेन, नवमी शताब्दीके श्री गुणभद्र जैसे पुराणलेखक इस भारतभिममें बहुत कम होगे। जैन नैयायिकोमें से अनेकोने न्याय ग्रयोकी टीका भी रची है। श्री सतोशचन्द्र विद्याभूषणके शब्दोमें मध्य युगमे जैन साहित्यने वहुमूल्य काम किया है। इस कालमें न्यायदर्शनके नामसे जितने ग्रन्थ प्रसिद्ध है वे सभी जैन और वौद्धोके परिश्रमके फलस्वरूप हैं। आघूनिक प्रणा-लीको लेकर चौदहवी शताब्दीमें गङ्केश उपाध्यायके द्वारा प्रकाशमें आए हुए नव्यन्याय नामक ब्राह्मणोके न्याय प्रथ जैन और वौद्धोकी मध्यकालीन न्यायकी नीवसे ही निकले हुए हैं।

व्याकरण एव कोशरचनाके विभागमें भी श्री शाकटायन, पूज्यपाद, वर्धमान, हेमचन्द्र, धनञ्जय और श्रीघर आदि आचार्य अधिक प्रसिद्ध है। गणितशास्त्रमें तो नवमी शताब्दीके श्री महावीराचार्यका 'गणितसार' विशेष उल्लेखनीय है। कोलबीय (Ceylon) विश्वविद्यालयके गणिताध्यापक डेविड यूजन स्मिथ (David Eugene Smith) ने लिखा है कि भारतवर्षके सपूर्ण गणित साहित्यमें यह ग्रथ अधिक पाडित्य-पूर्ण है। इससे पाठक भली भाँति समझ सकते है कि जैन सस्कृत साहित्य कितना विपुल, विस्तीर्ण एव समर्थ है। इसमें प्रत्येक विषयके यथेष्ट ग्रथ रचे गये है। जैन ग्रथोकी विषय प्रतिपादनशैली आदर्शको लिए हुए है। इसीसे भिन्न-भिन्न विषयोमें रचे गये ग्रथोको देखकर पाछचात्य या पूर्वीय बहुतेरे मान्य विद्वान् इसकी भूरि भूरि प्रशसा करते है। जैन वाइसयके सम्पूर्ण ग्रन्थ प्रथमानयोग, चरणानुयोग, करणानुयोग और द्रव्यानुयोगके भेदसे चार विभागोमें

विभवत है। गणितशास्त्रमें पूर्वोक्त गणितसारके सिवा चन्द्रप्रज्ञित, सूर्यप्रज्ञित, आदि ग्रन्थ भी अपूर्व हैं। इसी-प्रकार वर्मशर्माभ्युदय, पारवीभ्युदय, यशस्तिलकचम्पू, नेमिनिर्वाण, तिलकमजरी, चन्द्रप्रमकाव्य, हीरसीभाग्य और हम्मीरमहाकाव्य बादि काव्यग्रथ, अष्टसहस्री, प्रमेयकमलमातंण्ड, श्लोकवातिक, सम्मतितर्क, न्यायविनिष्चय, न्यायकुमुदचन्द्र, स्याद्वादरत्नाकर, स्याद्वादमजरी और जैनतर्कवातिक आदि न्याय ग्रन्थ, पचाध्यायी, राजवातिक, अध्यात्मसार, आत्मानुशासन, इष्टोपदेश, समाधिशतक और अध्यात्मकत्पद्भुम आदि दर्शन एव आध्यात्मिक ग्रथ; महापुराण, पाण्डवपुराण, हरिवशपुराण और पद्मपुराण आदि पुराण ग्रन्य; शाकटायनन्यास, अमोधवृत्तिन्यास, सिद्धहेमचन्द्र, जैनेद्रन्यास और गणरत्नमहोदिध आदि व्याकरण ग्रन्थ सुप्रसिद्ध हैं। इस प्रकार जैन न्याय, जैन तत्त्व-ज्ञान, सादि अन्यान्य विषयके गद्य-पद्य-मय अनेक उत्तमोत्तम ग्रथ जैन सस्कृत वाडमयमें भरे पडे हैं। डॉ॰ सतीश-चन्द्र विद्याभूषण, प्रो० हर्टल जैसे पूर्वीय तथा पाश्चात्त्य विद्वानोने जैन न्याय, जैन व्याकरण आदिकी यथेण्ट प्रश्नमा की है । जैन साहित्य कलामें भी पीछे नहीं है । मेघदूत पर पाश्वीभ्युदय, शीलदूत, नेमिदूत, इदुदुत, चेतोदूत वादि; माघपर देवानदाभ्युदयः; नेपघ पर शांतिनाथ चरित्र, इसी प्रकार भक्ताभर और कल्पाणमदिरस्तीत्र पर भी कई समस्यापूर्ति \* कृतियाँ मौजूद है। दूनकाव्य साहित्यमें भी यह पीछे नहीं है। उक्त पार्श्वाभ्युदय, शील-दूत, इदुदूत, नेमिद्रत और चेतोदूतके अतिरिक्त पवनदूत, मनोदूत, जैन मेघदूत, रथागदूत, चन्द्रदूत, सिद्धदूत, उद्धवदूत और देवदूत आदि रचनाएँ इसके लिये पर्याप्त उदाहरण है 🕆 । द्विसधान काव्यके जोडका ग्रथ राघव-पाण्डवीय ब्राह्मण संस्कृत साहित्यमें है अवस्य; पर इसके सिवाय भी जैन वाडमयमें पचमन्वान, सप्तसन्वान एव चतुर्विश्वतिसन्धान ये काव्य भी क्लेपालकारकी अनुपम तथा आक्चर्यकारी कृतियाँ है। हेमचन्द्रका 'द्वचाश्रय' काव्य भट्टिसे न्यून नहीं है। सिद्धिपिकी 'उपिनितिभवप्रपञ्चकथा' अत्युच्च श्रेणीका एक रूपक काव्य है। इसकी जॉन वाहरन ( John Byrone ) के पिलिग्रिम्ज प्रोग्रेस ( Pilgrimage Progress ) गन्यसे तुलना की जा सकती हैं। हिन्दी विज्वकोशके सपादक श्री नगेन्द्रनाथ वसु आदिकी ऐसी अभिमित है कि कवित्वशक्तिमें आचार्य जिनसेनका काव्य कविश्रेष्ठ कालिदासकी कृतियोसे कुछ कम नहीं है। इसी प्रकार आचार्य सोमदेवका गद्य वाणकी कादवरीसे कुछ न्युन नहीं है। जिन ग्रन्थोमें अपना धार्मिक पक्षपात कुछ भी नहीं है ऐसे भी ग्रन्थ जैन वादमयमे अनेक है। मृगपक्षिशास्त्र और प्रश्नोत्तररत्नमाला इसी श्रेणीके ग्रन्थ है। भारतीय कथासाहित्यकी उत्पत्ति एवं रक्षामें भी जैनोने पर्याप्त परिश्रम किया है। सस्कृत वादमयके अद्वितीय रतन 'पचतत्र' की रक्षा जैन आचार्य पूर्णभद्रकी 'पचाल्यायिका' नामक ग्रन्थके द्वारा ही हुई है। यथार्थत कथाओंके द्वारा साधारण जनतामें घामिक मिद्धान्तको प्रचार करनेकी सुप्रणाली जैसी जैनोमें थी, वैसी भारतीय अन्य सम्प्रदायोमें नही थी-यो अनुभवी विद्वानोका कहना है। इसीलिये जैन साहित्यका कथा भाग अधिक विशाल है। श्रीयुत् हर्टल साहवका कहना हैं कि इन कथाओ में से वहुतसी कथाएँ पूर्वमे भारतवर्षमे ही नही, विलक शने शने संसारके अन्यान्य भागोमें भी फैल गई थी।

प्राक्तलीन उदार जैन किवयोने साप्रदायिकताको त्याग कर जैनेतर साहित्यमे जो कृति उन्हें विशेष उपयोगी एव प्रकासाई मालूम हुई उसे प्रेमसे अपनाया । इस उदारताके फलस्वरूप पाणिनि, मुग्धवोघ, काशिकान्यास, किवकल्पहुम, सिद्धान्तचिन्द्रका और सारस्वत आदि व्याकरण ग्रन्थो, वृत्तरत्नाकर तथा श्रुतवोध आदि छद ग्रन्थो; काव्यालकार, काव्यप्रकाण और विदग्धमुखमण्डन आदि अलकार ग्रन्थो, कादम्बरी, भट्टि, रघुवण, कुमार-सम्भव, मेघदूत, नैपध, किरातार्जुनीय, शिणुपालवध, नलोदय और राधवपाण्डवीय आदि काव्य ग्रन्थो; अनर्धराधव, प्रवोधचन्द्रोदय, राधवाभ्युदय, दमयतीचम्पू और नलचम्पू आदि नाटक और चम्पू ग्रन्थो; तर्कभाषा, तर्करहस्य-दीपिका, न्यायकन्दली, न्यायप्रवेश, न्यायालकार, न्यायसार और न्यायवोधिनी आदि न्याय ग्रन्थो; योगरत्नमाला, रसिनन्तामणि, वैद्यकसारसग्रह, वैद्यकसारोद्धार और वैद्यकवल्लभ आदि वैद्यक ग्रन्थो पर जैन आचार्यप्रणीत

<sup>\*</sup> विशेष परिचयके लिये 'जैन सिद्धान्त-भास्कर' भाग ३, किरण २ में प्रकाशित श्री अगरचन्दको नाहटाका 'जैन पादपूर्ति काव्यमाहित्य' शोपैक लेख देखो ।

<sup>ं</sup> श्रधिक जानकारोंने लिये 'जैन सिद्धान्त-मास्कर' माग २, किरण २ श्रीर माग ३, किरण १ में प्रकाशित श्री चिन्ता-मणि चक्रवर्ती तथा श्रगरचन्दजो नाहराने लेख देखें।

टीकाएँ उपलब्ध होती है । मेघदूतके पद्योकी समस्या-पूर्ति कई जैन कवियोने की है। बौद्धोका 'धर्मविदु' नांमक उच्च न्याय ग्रन्थ जैनाचार्य मल्लगदिकी टीकासे ही भारतमें रिक्षत है। भासवैज्ञके 'न्यायसार' नामक ग्रन्थ पर जयसिंह, सूरिकृत टीका सर्वोत्तम है। ये कृतियाँ ब्राह्मण एव बौद्ध ग्रन्थोंके प्रति जैन विद्वानोंके द्वारा की गई उदारताके कुछ उदाहरण है।

वैद्यक विषयमें औषधकल्प, सिद्धान्तरसायनकल्प, भिषक्ष्रकाश, जगत्सुन्दरी, कनकदीपक, कल्याणकारक, निघण्टु, रससार, रसतत्र, वेद्यसार, रामविनोद, योगचिन्तामणि, विद्याविनोद, वालग्रहचिकित्सा, मेस्तत्र, रसमजरी, जनरपराजय, वैद्यवल्लभ, ज्वरनिदान, मेघविनोद, लघनपथ्योपचार और प्रयोगसग्रह आदि ग्रय उल्लेखनीय हैं 🕇 । ज्योतिष विगयमें त्रैलोक्यप्रकाश, मेघमहोदय, यत्रराज, आयज्ञानतिलकटीका, जिनेन्द्रमाला, चन्द्रोन्मीलन, भद्रबाह-निमित्त, ज्योतिपसार, लग्नशृद्धि, ज्योतिपसारोद्धार, जन्मपत्रीपद्धित, मानसागरीपद्धित, ज्योतिषमण्डलिवचार, सामुद्रिकतिलक, श्रकुनशास्त्र, श्रकुनशास्त्रोद्धार, जगच्चिन्द्रकासारणी, दिनशुद्धिदीपिका, उदयदीपिका, हस्तसजी-वन, रमलबास्त्र, विवाहपटल, ज्योतिषरत्नाकर, और भुवनतिलक आदि ग्रन्थ 🕽 भी महत्त्वके हैं। अर्थेशास्त्रमें नीति-वाक्यामृत एक अनूठा रत्न हैं। मन्त्रशास्त्रमें विद्यानवाद, ज्वालिनीमत, ज्वालिनीकल्प, भैरवपद्मावतीकल्प, काम-चाण्डालिनीकल्प, श्रीदेवताकल्प, सरस्वतीकल्प, गणधरवलयकल्प, प्रतिष्ठाकल्प, सूरिकल्प, श्रीविद्याकल्प और वर्ध-मानविद्याकल्प प्रमृति भी अच्छे ग्रन्थ है । सगीतमें 'Trivendrum Sanskrit Series' में प्रकाशित संगीत-समयसार, सुभावितमें सुभावितरत्नसदोह और सुभावितावली; अलकारमें काव्यानुशासन, अलकारचिन्तामणि और वाग्भटालकार, छन्दमें छन्दोऽनुशासन और रत्नमजूषा आदि क्रतियाँ वहुमूल्य समझी जाती है। इसी प्रकार कानूनी साहित्यमें अर्हेश्वीत, भद्रवाहुसहिता, वर्षमाननीति और इन्द्रनन्दिसहिता आदि एव ऐतिहासिक ग्रन्थोमें तीर्थकल्प, परिक्षिप्टपर्व, प्रवन्धिचन्तामणि, प्रवन्धकोश, प्रभावकचरित्र, कुमारपालप्रतिवोध, कर्मचन्द्रप्रवन्ध और तेजपालवस्तु-पालचरित्र आदि अपने अपने विषयके जागरूक निदर्शन है। यह जैन सस्कृत वाङमयका दिग्दर्शन मात्र है। वहे खेदकी वात है कि अभी तक जैन संस्कृत वाडमय पर कोई उल्लेख-योग्य सर्वांगपूर्ण पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है। पाण्चात्य विद्वानोने इस विषय पर कुछ प्रकाश डाला है अवस्य, फिर भी वह संतोषंप्रद नहीं कहा जा सकता । इन पश्चिमीय शिद्वानोके द्वारा लिखी हुई पुस्तकोमें विटरनिट्ज की "A history of Indian Literature" नामक पुस्तक विशेप महत्त्वपूर्ण है। इन्होंने भी अपनी इस पुस्तक (द्वितीय भाग) में विशेष-तया क्वेतावर साहित्यपर ही प्रकाश डाला है। बहुत कुछ सभव है कि इनको दिगम्बर जैन ग्रन्थ अर्घ्ययनार्थ नहीं मिले हो । क्योंकि दिगम्बर साहित्यकी अपेक्षा ब्वेताम्बर साहित्य अधिक प्रचार एव प्रकाशमें आया है। एतत्सम्त्रन्धी हिन्दी पुस्तकोमें हिन्दू विश्वविद्यालय काशीके दो अध्यापकोके द्वारा सम्पादित "संस्कृत साहित्यका सिक्षप्त इतिहास" नामक पुस्तक दर्शनीय है। इसमें भी इन लोगोने कुछ ही जैन ग्रन्थोकी परिचय दिया है। साथ ही साथ इस परिचयमे कई त्रुटियाँ भी रह गयी है। गुजराती भाषामें खेताम्बर भाई मोहनलाल दलीचन्द देसाई-द्वारा लिखित ''जैन साहित्यनो सक्षिप्त इतिहास" पठनीय है। पुस्तक विद्वत्तापूर्ण है। परन्तु इसमें भी <del>श्वेताम्बर साहित्य</del>\_पर ही प्रकाश डाला गया है । दु खके साथ लिखना पडता है-कि दिगम्बर विद्वानोंने इ**स ओ**र कुछ उल्लेखनीय कार्य नही-किया है। हाँ, कुछ विद्वानोकी कृपासे दस-दीस ग्रन्थकर्ता और उनकी फृतियोका परिचय\_यत्र-तत्र प्रकट हुआ है अवश्य । किन्तु इससे क्या होनेवाला है । सावकाश विद्वानोको इस ओर अवश्य ध्यान देना चाहिये। एक श्रुखलाबद्ध जैन वाङ्मयका इतिहास प्रकाशित होनेंकी परमावश्यकता है।

कन्नड-वाङ्मय—दक्षिण भारतमें प्रचलित प्रख्यात पञ्च द्राविड भाषाओमें कन्नड भी एक हैं। इस भाषावर्गकी अविशिष्ट चार भाषाएँ तिमल, तेलुगु, मलयालम एव तुल् है। द्राविड भाषाएँ सस्कृत और प्राकृत

<sup>\*</sup> भ्राधिक जानकारी के लिये 'जैन सिद्धान्त-मास्कर' माग २, किरण १ में प्रकाशित स्व० बाव, पूरणचन्द्रजों नाहर का 'धार्मिक उदारता' शोर्षक लेख देखें।

पा। पा।पपा उपारणा राजपा राज राज राज राज । † विशेष जानकारी के लिये 'जैन सिद्धान्त-मास्कर' भाग ४, किरण २ में प्रकाशित श्रो अगरचन्द्रजो नाहटाका 'जैन ज्योतिष श्रीर वैद्यक ग्रन्थ' शोर्षक लेख देखें ।

आदि आर्यं भाषाओंसे भिन्न इसिलये मानी जाती है कि एक तो इन भाषाओं व्यवहारोपयोगी स्वतंत्र शब्द प्रचुर मात्रामें पाये जाते हैं। ताल्पयं यह है कि इन भाषाओंको किसी भी आर्यं भाषासे उधार लेनेकी जरूरत नहीं पडती। दूसरी बात यह है कि इस भाषावर्गका व्याकरण संस्कृत आदि आर्यं भाषाओंके व्याकरणोंसे बहुत कुछ भिन्न है। इसके लिये कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

द्वाविद्व भाषाओं में लिंग अर्थेपरक है; सिधकम भिन्न है; सज्ञाओं एकवचन तथा बहुवचनमें एक ही प्रकारकी विभिव्तियों हैं; गणवाचक शब्दोमें तरतम भाव नहीं है, सबधार्थक सर्वनामका सर्वथा अभाव है; कर्मीण प्रयोग कम है; कियाओं निषेधकप है और कृत्तद्वित प्रत्यय स्वतंत्र है। ऊपर कहा गया है कि द्वाविद्व भाषावगें में व्यवहारपर्याप्त स्वतंत्र शब्द अधिक मात्रामें पाये जाते हैं। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि इस भाषावगें में सस्कृत और प्राकृत आदि आर्य भाषाओं शब्द है ही नहीं। पीछे समयके प्रभावने सस्कृत और प्राकृत आदि वार्य भाषाओं की कहो, क्रमशः इनमें उर्दू, अग्नेजी आदि विदेशी भाषाओं के शब्द भी यथेष्ट आ मिले हैं। विदेशी शब्दोकी यह रफ्तार केवल द्वाविद्व भाषाओं ही नहीं, प्रत्युत सभी भारतीय भाषाओं में इसी प्रकार जारी रहीं। इस प्राकृतिक अटल नियमको कोई रोक नहीं सकता। एक दृष्टिसे यह है भी उपादेय। अन्यथा किसी भी भाषाके शब्दभाण्डारकी वृद्धि नहीं हो सकती। इतना ही नहीं, प्रत्येक भाषाकी सीमित शब्दा-वलीसे काम भी नहीं चल सकता। बल्कि भाषातत्त्वके घुरघर विद्वान् डॉ० काल्डीवेलके मतानुसार कक्क, अत्त, कृदि, कोट, नीर, पल्लि, मीन, एड, मरुत्त, हेरस्व, अट्ट, आम्, बल्लि, गड, सुत्त, खलीन, तल्प, काक, माचल, मेक, सीर, ताल, वरुक, उल्क, तटित् या तडित्, मलय, आलि, कलि, गड, सुद्दि, खलीन, तल्प, कल्प, और खर्ज आदि शब्द द्वाविद्व भाषाओंसे ही सस्कृत कोशोमें लिये गये हे भ इसी प्रकार दीनार, होरा आदि शब्द सस्कृतमें लेटिन, ग्रीक आदिसे लिये गये है । कई पारचात्य भाषा-शास्त्रियोका मत है कि सस्कृत व्याकरणमें प्रचलित व्वनिविषयक खास कर टवर्गाक्षर द्वाविद्व भाषाओंसे ही लिये गये है।

यो तो मोहनजोदडो और हडप्पा आदि स्थानोमें उपलब्ध चित्रलिपियोसे द्राविड भाषाओका मूल वेद-पूर्वेकाल सिद्ध होता है। ब्राह्मी लिपिकी तरह उस समय भी इन भाषाओकी लिपि मौजूद थी। † फिर भी खेद है कि दूसरी शताब्दीके पूर्वेका कन्नड साहित्य अभी तक उपलब्ध नहीं हुआ है। हाँ, द्रितीय शताब्दीके कुछ कन्नड शिलालेख अवश्य प्राप्त हुए है। साथ हो साथ ज्ञात हुआ है कि मिश्रमें इसी शताब्दीके लिखे गये एक नाटकमें भी कुछ कन्नड शब्द वर्तमान है। ‡ सुदीर्घ कालसे ही कन्नड साहित्यकी ओर ध्यान देनेका प्रयत्न किया गया है। इसी लिये जिस समय हिंदी, वगला, मराठी और गुजराती आदि भाषाओका जन्म भी नहीं हुआ था उस समयभी कन्नड साहित्यका भाण्डार अनेक बहुमूल्य ग्रन्थरत्नोंसे भरा हुआ था।

प्राचीन कन्नड साहित्यको उच्च एव प्रौढ बनानेका सारा श्रेय जैन आचार्यो एव कियोको दिया जाता है। यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि जैनोंके ही द्वारा कन्नड भाषाका उद्धार तथा प्रसार हुआ है और उन्होंने ही इस भाषाके साहित्यको एक उच्च श्रेणीकी भाषाके गौरवयोग्य बनाया है। कन्नड साहित्यको उन्नतिके चरम किसर पर पहुँचानेमें असीम प्रयत्न करके इन्होंने उपत साहित्यमें सदाके लिये अपना नाम अमर कर दिया है। इसीसे आज भी सपूर्ण कर्णाटक बडे आदरके साथ इनके सुयशका गीत गा गा कर अपनी कृतज्ञता प्रकट करता है। तेरहवी शताब्दी तक कन्नड भाषाके जितने उद्भट ग्रन्थकर्ता हुए है वे प्रायः सबके सब जैन है। कर्णाटक किव-चिरतेके मान्य सम्पादक महामहोपाध्याय स्व० आर० नरसिंहाचार्य एम० ए० के शब्दोमें जैन ही कन्नड भाषाके आदि किव हैं। आज तककी उपलब्ध सभी प्राचीन एव उत्तम कृतियाँ जैन किवयोको ही है। ग्रन्थरचनामें जैनोंके प्रावत्यका काल ही कन्नड साहित्यकी उच्च स्थितिका काल मानना होगा। प्राचीन जैन, किव ही कन्नड भाषाके

<sup>\* &#</sup>x27;कर्णांटक कविचरिते' माग ३ को प्रस्तावना देखें।

<sup>† &#</sup>x27;कात्रक संस्कृति' वृष्ठ ८० देखें ।

<sup>🕇 &#</sup>x27;कर्पाटक कविचरिते' साग १ पर्व २ को प्रस्तावना देखें।

सीवर्य एव फारिके विशेषतः कारणभूत है। उन्होंने शुद्ध और गम्भीर शलीमें ग्रन्थ रच कर ग्रन्थरचनाकीशलको उन्नत स्तरपर पहुँचाया है। प्रारम्भिक कन्नड साहित्य उन्होंकी लेखनी द्वारा लिखा गया है। कन्नड भाषाध्ययनके सहायभूत छन्द, अलकार, व्याकरण और कोश आदि ग्रन्थ विशेषतः जैनोके द्वारा ही रचे गये है।"

वोल-चालको भाषाको ग्रन्थरूप देनेका सारा श्रेय जैन कवियोको प्राप्त है। उपलब्ध कन्नड साहित्यमें नुपतुगका कविराजमार्ग ही आदिम ग्रन्थ एव किवतागुणार्णव महाकिथ आदि पंप ही आदिकवि है। किव चन्नवर्ती महाकि रन्न काक्यिनिर्माणकलामें महाकिव भवभूतिसे कम नही था। जिनसमयदीपक यह रन्न वस्तुतः कन्नड साहित्यका एक समुज्ज्वल रत्न था। कन्नड काव्यमें किवचन्नवर्ती उपाधि प्राप्त पोन्न, रन्न तथा जन्न ये तीनो वास्तवमें जैन 'रत्नत्रय' है। विलक्षणकिवतासामर्थ्यप्राप्त उपर्युक्त महाकिथ प्रम्प अद्वितीय कीर्तिशाली किव था। इसी प्रकार महाकिव नागचन्द्रके द्वारा प्रशसित 'अभिनववाग्देवी' उपाधिधारिणी किन्त आदि कवियत्री है।

कलड जैन पुराणोमें आदिपम्प [ ई० सन् ९४१ ] का आदिपुराण, पोल [ ई० सन् लगभग ९५० ] का धान्तिनायपुराण, रल [ ई० सन् ९९३ ] का अजितन थपुराण, चावुहराय [ ई० सन् ९७८ ] का चावुहर रायपुराण, नागचन्द्र [ ई० सन् लगभग ११०० ] का मिल्लिनायपुराण, कणेपाये [ ई० सन् लगभग ११४० ] का नेमिनायपुराण, अग्गल [ ई० सन् ११८९ ] का चन्द्रप्रभपुराण, आचण्ण [ ई० सन् ११९५ ] का वधमानपुराण, नेमिचन्द्र [ ई० सन् लगभग ११७० ] का अर्धनिमिपुराण, बन्धुनर्म [ ई० सन् लगभग १२०० ] का हिरवश्चराण, पादवंपिष्टत [ ई० सन् १२०५ ] का पादवंनायपुराण, दितीय गुणवर्मा [ ई० सन् लगभग १२२५ ] का पुष्पदन्तपुराण, कमलभव [ ई० सन् लगभग १२२५ ] का घान्ताइवरपुराण, मधूर [ ई० सन् लमभग १३८५ ] का घान्ताइवरपुराण, मधूर [ ई० सन् लमभग १३८५ ] का घान्ताथपुराण, मङ्गरस [ ई० सन् १५०८ ] का चन्द्रप्रभपुराण प्रमुख ह । इनम पदलाल्त्य, प्रसाद और सोष्ठव आदि काव्योचित सभी गुण मौजूद है।

इसी प्रकार पट्षांद प्रत्थोमें मगरसका सम्यक्तकी मुदी, कृमुददु [ई० सन्' लगभग १२७५] का कुमुदेन्दुरामायण, भास्कर [ई० सन् १४२४] का जीवधरचारत, कल्याणकाति [६० सन् १४३९] का जानचन्द्रा-भ्युद्य, बोम्मरस [ई० सन् १४८५] का सन्तुः भारचारत, काट्यद [६० सन् १५००] का जीवधरपट्षाः और मञ्जरसका जयनुष्काव्य, साञ्जत्यम रत्नाकर वर्णी [६० सन् १५५७] का भरतध्यभय, प्रवनाभ [६० सन् लगभग १६८०] का रामपुराण, चन्द्रम [६० सन् १६०५] का गाम्मदक्तरपारत और बाहुबलाका नाग-कुमारचिरत, शतक प्रन्थोमे रत्नाकर वर्णाका शतकत्रयो, व्यावरण प्रन्थाम नागयमा [६० सन् लगभग ११४५] का भाषाभूषण और शब्दस्मृति, कोशराज [६० सन् लगभग १२६०] का शब्दमाणदपण, भट्टाकल द्व. [६० सन् लगभग १२६०] का शब्दमाणदपण, भट्टाकल द्व. [६० सन् ८०४ वर्ण का शब्दानुशासन, छन्द शास्त्रम नागयमका अन्दोऽम्बाध और अलब्द्वार प्रन्थामे नृपत्ग [६० सन् ८१४ वर्ण वर्णा का वर्णावर्णाण, नागयमका काव्यालोकन, उदयादित्य [६० सन् लगभग ११५०] का उदयादित्यालक्कार आह बहुत प्रसद्ध ह ।

उल्लिखित ग्रन्थोक अतिरिक्त जैन कियाने वद्यक, ज्योतिष आदि लोकापकारी विद्याओ पर भी पर्याप्त प्रकाश काला है। वद्यक ग्रन्थोम सामनाथ [ ई० सन् ११५० ] का क्याणकारक, मङ्गराज [ ई० सन् लगभग १३६० ] का खगन्द्रमणिदपण, श्रीघरदेव [ ६० सन् लगभग १५०० ] का वैद्यामृत, सात्वका वद्यसागत्य, अभिनयचन्द्र [ ई० सन् लगभग १४०० ] का अववशास्त्र, कातिवर्मा [ ६० सन् लगभग ११२५ ] का गावदा; ज्योतिष ग्रन्थोमें श्रीधराचाय [ ई० सन् १०४६ ] का जातकतिलक; गणित ग्रन्थोमें राजादित्य [ ई० सन् लगभग ११२० ] के व्यवहारगणित, क्षत्रगणित, व्यवहाररत्न, लोलावतो, चित्रहसुग, जैनगणितटीकादाहरण एव सुर (पाक) शास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थोमें मङ्गरसका सूपशास्त्र आदि उल्लेखनीय है।

महाकवि नागचन्त्र अगर उपासना-ित्रय हं तो किन निमित्तन्त्र पक्के श्वारोपासक है। किनिकवर्ती जन्न अगर अहिंसान्नेमी हैं तो निरक्त किन नम्भुनमी अध्यातमित्रय है। इसी प्रकार महाकिन अगल अगर संस्कृत पक्षपाता था दो छनि अवस्य कन्नडपक्षपाती। सर्वप्रथम संस्कृत भाषाके नहुमूल्य भूषणोको पहुना कर कन्नड नाग्देनाको सजानेका श्रेय एव पीछे उस अल द्वार भारते दु.खी उसे उस भारते मुक्त करनेका श्रेय दोनों जैन कवियोको ही प्राप्त है। साथ ही साथ कल इ भाषामें जब कमश. शिथिलता आने लगी, तब उसमें दृढता लानेवाला वैया- करण केशिराज भी जैन था। इस प्रकार प्रत्येक पहलुओसे जैन किवयाने कल आपाकी अटूट सेवा की हैं। यह अनुपम सेवा कभी भी भुलाई नहीं जा सकती। जैन काव्योमें हमें केवल काव्यधर्म ही नहीं, किन्तु आत्मवाद, यह अनुपम सेवा कभी भी भुलाई नहीं जा सकती। जैन काव्योमें हमें केवल काव्यधर्म ही नहीं, किन्तु आत्मवाद, साम्प्रवाद, अपेक्षावाद, अहिसावाद और स्याद्वाद आदि सभी मिल रहे हैं। पुराणोमें भी हमें अभी ट महापुरुषों की जीवनीके साथ साथ अनुकरणीय आदर्श चरित्रका सकेत भी मिलता है। अगर इनके पूर्वाधंमें प्रागार सकी की जीवनीके साथ साथ अनुकरणीय आदर्श चरित्रका सकेत भी मिलता है। जगर इनके पूर्वाधंमें प्रागार सकी स्वच्छ यमुना वहती है तो उत्तरावंमें नियमसे शातरसकी विमल गंगा बहती मिलेगी। जैन पुराण एवं काव्योमें उल्लेखनीय यह एक खास गुण है।

पप, रम्न, नागचन्द्र और जम्न इन जैन किवयोंने नाम कम्नड साहित्यमें आचद्रार्क अमर रहेंगें। अडय्य और नेमिचन्द्र जैसे प्रौढ़ किवयोंने लौकिक कथाओंकों भी लिखा है जो कि बीसवी धताब्दी में 'उपन्यासोंमें किमी भी दृष्टिसे कम नहीं है। रिसक किव रत्नाकरका भरतेशवेंभव तो एक अद्भृत चीज है। इससे रत्नाकरके विशाल अध्ययन तथा व्यापक ज्ञानका यथेष्ट परिचय मिलता है। पप और रन्नका महाभारत और नागचन्द्रकी रामायण दुर्योंधन तथा रावण जैसे व्यक्तियोंमें भी आदर-वृद्धि उत्पन्न कराती है। साराधात जैन किवयोंने हमें काव्य, काव्यलक्षण, जीवनोपयुक्त ज्ञान आदि सब कुछ दिया है।

गग, राष्ट्रकूट, चालुक्य, होय्सल, विजयनगर तथा मैसूर आदि शासक उपर्युक्त मान्य कवियोके पोषक एव प्रोत्साहक वने रहे। इन्ही राजामहाराजाओका आश्रय पाकर पप, रन्न, पोन्न और जन्न जैसे महाकवियोने अपनी अमर कृतियोके द्वारा कन्नड वाग्दवी का मुख उज्ज्वल किया है।

जिस प्रकार अन्यान्य प्रान्तोमें विद्वानोके द्वारा अपने अपने साहित्यका काल निर्धारित है, उसी प्रकार कन्नड साहित्यका काल भी प्राचीन, माध्यिमक और वर्तमान यो अथवा क्षात्र, मनप्रचारक एव वैज्ञानिक कालके भेदसे तीन श्रेणियोमें विभनत हैं। प्राचीन, काल नवमी शताब्दीसे वारहवी शताब्दी तक, माध्यिमक काल वारहवी शताब्दीसे सत्रहवी शताब्दी तक, वर्तमान काल सत्रहवी शताब्दीमें लेकर आज तक माना गया है। कन्नड साहित्य सेवाका भार तीन धर्मानुयायियोके ही हाथों, में रहा। जिस समय जिस जिस धर्मकी प्रधानता थी उस समय मुख्यतया उस धर्मके अनुयायियोने पूर्ण रीतिसे साहित्यनेवा की है। प्राय. ई० सन् नवमी शताब्दीसे वारहवी शताब्दी तक जैनोका विशेष प्रभाव था। अत एव कन्नड भाषाका प्रारमिक साहित्य उन्होंकी लेखनी द्वारा लिखा गया है। इस सबधमें कन्नड साहित्यके मर्मज्ञ विद्वान् शैप भी० पारिश्वाबंदिय उन्होंकी लेखनी द्वारा लिखा गया है। इस सबधमें कन्नड साहित्यके मर्मज्ञ विद्वान् शैप भी० पारिश्वाबंदिक शब्दोमें ''लगभग ई० सन् छठी शताब्दीसे चीवहवी शताब्दी तकके सात-आठ सी वर्ष सबधी जैनोके सम्युदय-प्राप्ति-निमित्त जो वाद्यम्य है, उसका अवलोकन करना समुचित है। तत्कालीन करीव २८० कियोमें ६० किवयोको स्मरणीय एव सफल किवयोमें से ४० किवयोको निस्सन्देह हम प्रमुख मान सकते है। लौकिक चरित्र, तीयंकरोके पारमार्थिक पुराण और दार्शनिक आदि अन्यान्य भी ग्रन्थ जैनोके द्वारा ही जन्म पाकर वे कन्नड साहित्यके कपर अपना प्रभाव शास्वत जमाए हुए है।"

जैनोके बाद वारहवी शताब्दीसे सत्रहवी शताब्दी तक लिंगायतो (शैव) का प्राधान्य रहा। अत इन शताब्दियोमें मुख्यतया कन्नड साहित्य इन्हींके हस्तगत रहा। सत्रहवी शताब्दीसे आज तक न्नाह्मणोकी प्रधानतामें दो तीन शताब्दियोसे इस धमेंके किन साहित्य-सेवा कर रहे है। प्राचीन समयमें धमींक्षितिके साथ साथ साहित्योन्नितिका सत्रध कितना सुन्दर था। साथ ही साथ वह कितने विशदक्ष्पसे अपने ऐतिहासिक रहस्यकी, प्रकट करता है। यद्यपि कन्नड माण्का प्रारंभिक काल "जैन काल" माध्यमिक काल "लिंगायत काल" और वर्तमान काल न्नाह्मणकाल कहलाता है अवश्य, फिर भी लिंगायत या वृतमान कालमें जैन अपनी परपरागत पित्र साहित्य सेवाको भूले नहीं है। इन समयोमें भी अनेक जैन ग्रन्थ रने गये हैं।

अब मैं जैन समाजके समक्ष एकं परमावश्यक प्रस्ताव उपस्थित कर देन। अपना कर्तव्य समझता हूँ। वह यह ह कि कन्नड जैन साहित्यके मौलिक ग्रन्थोका अनुवाद या तात्यां हिंदीमापामापी जनताके सामने आ जाना परमावश्यक है। खास कर जो कृतियाँ संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओमें नहीं मिलती है, उनको तो प्रकाशमें आ जाना विनवार्य ही कहा जा सकता हो। जो संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओमें प्राप्त होते है, विल्क उसीके आद्धें पर कन्नडमें रचे गये है, उनका प्रकटीकरण भी अनुपादेय नहीं कहा जा सकता। क्यों कि इससे तुलनात्मक अध्ययन द्वारा प्राचीन क्रमिक जैन-संस्कृतिका पता लगानेमें पर्याप्त सहायता मिलेगी। विल्क इमी उद्देशकी पूर्तिके लिये 'भारतीय ज्ञानपीठ काशी'की ओरसे इसकी एक शाखा मूडविद्रीमें सन् १९४४ में स्थापित हुई थी। दुर्भाग्यवश इसके सचालकोने खर्चको कम करने एवं कार्यशक्तिकों केंद्रित करनेके ख्यालसे इस शाखांको दो वर्षके बाद बद कर दिया। किर भी मैं 'ज्ञानपीठ'के संस्थापक दानवीर सेठ श्रीमान् शांतप्रसादजीसे सादर एवं सांग्रह निवेदन करना चाहता हूँ कि इस शाखांको किरसे चालू करके पूर्वीक्त पवित्र उद्देशको अवश्य पूर्ण कर दें। क्योंकि कांगीसे पत्र व्यवहारके द्वारा सुदूरवर्ती कर्णाटकमें कन्नड साहित्यका प्रकाशन एवं प्रचार होना बहुत कठिन है। मेरे स्थालमें शायद ही मफलता मिलेगी।

#### जैन वाद्मयकी रक्षाका श्रेय

यद्यपि हमारे जैन भाइयोमें अनेन भाई भट्टाग्नोके खिलाफ है और वे यदा-कदा उनकी कटु समालोचना भी किया करते हैं। पर खेदके साथ लिखना पहता है कि वे इन अवसरो पर जैन घर्मके प्रमुख सिद्धात
अनेकान्त या अपेक्षावादको सर्वथा भूल जाते हैं। किसी वस्तुके गुणोकी उपेक्षा करके केवल उसके दोषोकी
समालोचना करना न्यायसगत नहीं कहा जा सकता। यह नीति जैन धर्मके अपेक्षावादके सर्वथा प्रतिकूल है।
म मानता हूँ कि परिमार्जन दृष्टिसे किसीके दोषोको उद्घाटन करना बुरा नहीं है। परन्तु निष्पक्ष होकर
दोषोंक साथ-साथ उनके गुणोको व्यवत करना भी विमर्शक्षका आवश्यक धर्म है। मेरे इस वक्तव्यका एक
आधाय यही है कि मट्टारकोंके दोषोकी जैसी कटु समालोचना की जाती है, वैन ही उनके गुणोकी अर्थात् उनके
दारा समाजको प्राप्त लामकी प्रवस्ता नहीं की जाती। अनुकरणित्रयता रूपी भयकर साक्रामिक रोगसे सर्वसाधारण
उत्तता ही नहीं, कभी कभी हमारे मान्य लेखक भी ग्रम्त हो जाते हैं, यह आश्चयकी बात है!

वस्तुतः खास कर दिगवर जैन वादं मयकी रक्षाका अधिकतरं श्रेय मट्टारकीको प्राप्त हैं। आज मी जैन वादमयका निशाल सर्ग्रह हमें जैन मठामें ही दूं टिगोचर होते हें। मूड बिद्री, कारकेल, वारंग, श्रवणवेलगील, हुनुज, कोल्हापुर, नागौर, कारजा और ग्वालियर आदि किसी भी स्थानक मठंका आप लेंजिये वहां पर इस स-य भी सैकड़ीं हजारों हस्तलिखित प्रत्य पाये जाते हें। इतना हा नहा, उत्तर भारतके इस्तलिखित प्रन्योकी स-य भी सैकड़ीं हजारों हस्तलिखित प्रत्य पाये जाते हें। इतना हा नहा, उत्तर भारतके इस्तलिखित प्रन्योकी अपेक्षा दक्षिण भारतके देसमें भी खास कर कन्नड या कर्णाटक लिए में लिखत प्रन्य अधिक शुद्ध सिद्ध हुए हैं। वीन साढ़े तीन सालमें मेरे द्वारा राजवार्तिक, तत्त्वायवृत्ति, द्विसवान और घमंश्रमाभ्युदयका टीकी, न्यायिवितीन साढ़े तीन सालमें मेरे द्वारा राजवार्तिक, तत्त्वायवृत्ति, द्विसवान और घमंश्रमाभ्युदयका टीकी, न्यायिवितीन साढ़े तीन सालमें मेरे द्वारा राजवार्तिक, तत्त्वायवृत्ति, द्विसवान और घमंश्रमाभ्युदयका टीकी, न्यायिवितीन सालमें मेरे द्वारा राजवार्तिक, तत्त्वायवृत्ति, द्विसवान और घमंश्रमाभ्युदयका टीकी, न्यायिवित्वया, आदिपुराण और सर्वार्थसिद्ध आदि को जो भी प्रात्या यहांसे स्वरोधन सहायतार्थ उत्तर मारितमें भेजी गई है, वे प्राय: सबके सब शुद्ध प्रमाणित हुई हैं। वोल्क कोई काई प्रात एक्षो निकली ह कि स्वरोदकीन देसकी मुन्तकंटिस प्रशसा की है। इससे मालूम होता है कि उत्तर भारतके लेखकाको अपक्षा दोक्षण भारतक उसमें भी मुन्तकंटिस प्रशसा की है। इससे मालूम होता है कि उत्तर भारतके लेखकाको अपक्षा दोक्षण भारतक उसमें भी खास कर कर्णाटकके लेखक अधिक मुनुद्ध थे। इसका कारण भी ह—

कुछ गतान्त्रियो तक कर्णाटक प्रात दिगंबर विद्वानोको लीलाभूमि ही बना रहा । दिगंबर सप्रदायके स्तम समसे जानेवाले मूतवलि, पुष्पदंत, समतभद्र, पूज्यपाद, बोरसेन, जिनसेग, गुणमद्र, अकलक और विद्यानंदी आदि जितने प्रधान आचार्य इस समय प्रसिद्ध है, वे सिंव ही कर्णाटकके निवासी ये। कर्णाटककी संस्कृति परें इस संप्रदायकी अमिट छाप पडी हुई है। इस बातको निष्पक्ष प्रकृत जैनेतर विद्वान् भी सहव स्वीकार करते हैं। इस संप्रदायकी अमिट छाप पडी हुई है। इस बातको निष्पक्ष प्रकृत जैनेतर विद्वान् भी सहव स्वीकार करते हैं। बिल्क एक जमानेमें कारण-विश्वेषसे निराश्चित दिगबर जैन सप्रदायको हस्तावलवन देकर इसकी रक्षा एवें अभिवृद्धका सफल तथा पवित्र श्रेय कर्णाटक प्रांतको ही प्राप्त है। बिंद बिल्लिखत ये दिगंबराचार्य कर्णाटकमें

जन्म लेकर दिगंबर वाक्ष्मयकी श्रीवृद्धि नहीं करते तो बहुत कुछ सभव था कि आज भारतीय अन्यान्य स्रुप्तं संप्रदायोकी तरह इसका भी केवल नाम ही नाम रह जाता। क्योंकि यह निर्विवाद सिद्ध बात है कि कोई सप्रदाय बिना अपने मौलिक साहित्यके दीर्घकाल तक जीवित नहीं रह सकता। मैं समझता हूँ कि इस पैतृक साहित्य-सपत्ति जैसी अमूल्य एवं अलभ्य निधिकी रक्षा करनेके उपलक्ष्यमें उत्तर भारतका दिगवर जैन समाज कर्णाटकका सदा कृतज्ञ बना रहेगा।

अस्तु, मेरे लिखनेका आशय इतना ही है कि उपर्युक्त इन विद्वान् आचार्यों विप्रान्त भी दीर्घंकाल तक कर्णाटकमें पठन-पाठनकी परिपाटी बनी रही और ग्रन्थ-लेखनादि साहित्यरक्षाके कार्य बराबर चलते रहे। दानचिन्तामणि अत्तिमब्बेके द्वारा कविचक्रवर्ती महाकवि पोत्रकृत शान्तिनाथपुराणकी एक हजार प्रतियोको लिखनाकर बास्त्र दान करनेका शुभ उल्लेख उपर्युक्त मेरी इस घारणाके लिये उज्ज्वल निदर्शन है। दूर जानेकी आवश्यकता नही है। इस ग्रन्थतालिकामें पाठक स्वय देख सकते है कि मूडबिद्रीमें विराजमान घवला टीकाकी आद्य प्रति मण्डलानाडु भुजवली गङ्गपेमीदिकी सास देनियक्कके द्वारा कोपण तीर्थंके प्रसिद्ध दानी जिन्नय्यसे लिखनाकर बिन्नकेरे उत्तुग जिनचैत्यालयके सिद्धान्तमुनि श्री शुभचन्द्रदेवको अपने श्रीपञ्चमीत्रतकी उद्यापनाके उपलक्षमें शास्त्र दानमें दी गई थी। इसीकी दूसरी प्रतिको राजा गण्डरादित्यके सेनापित मल्लिदेवने लिखनाकर सिद्धान्तमुनि श्रीकुलभूषणको शास्त्रदान किया था। इसी प्रकार यहाँकी जयघनला टीकाकी आद्यप्रतिको चिक्कमय्यके बिल्लिसेट्टिने लिखनाकर सिद्धान्तमुनि श्रीपद्मितको और महाबन्धकी आद्य प्रतिको राजा शान्तिसेन की पत्नी मल्लिकच्वादेवीने (उद्यादित्यसे लिखना कर) अपने श्रीपञ्चमीत्रतकी उद्यापनाके उपलक्षमें श्रीसिद्धान्तमुनि माधनन्दीको शास्त्रदान किया था। शास्त्रदान सम्बन्धी इस प्रकारके उद्यापनाके उपलक्षमें श्रीसिद्धान्तमुनि माधनन्दीको शास्त्रदान किया था। शास्त्रदान सम्बन्धी इस प्रकारके उद्यापनाके दो-चार नही, सैकडो मिलेंगे। बल्कि मुझे कुछ ऐसी भी प्रतियौ उपलब्ब हुई है जो कि ग्रन्थ रचिताके खास विद्वान् शिष्य या प्रशिक्षोंके द्वारा ही लिखी गई हो।

#### प्रनथ-भण्डारोंका संक्षिप्त परिचय

इस ग्रन्थ-तालिकामें जैन मठ तथा श्रीवीर-वाणीविलास जैन सिद्धान्त-भवन मूडिबद्री, जैन मठ कारकल, आदिनाथ ग्रन्थ-भण्डार अलियूर और अन्यान्य फुटकर सग्रह मूडिबद्रीके ताडपत्र एव कागज पर लिखे गये दोनो प्रकारके ग्रन्थोंके नाम सगृहीत है। इन भण्डारोमें जैन मठ और श्री वीर-वाणी-विलास जैन सिद्धान्त-भवन मूडिबद्री, जैन मठ कारकल, आदिनाथ जैन भण्डार अलियूर तथा फुटकर संग्रहोमें सिर्फ सिद्धान्त वसिद मूडिबद्रीका परिचय ही उल्लेखनीय है। अन्य फुटकर सग्रहोका परिचय देना कष्टसाध्य नही, मेरी दृष्टिमें उतना आवश्यक भी नहीं है। इसिलये यहाँ पर पूर्वोक्त भण्डारोका आवश्यक परिचय निम्न प्रकार दिया जाता है—

जैनमठ, मूडिबद्री मूडिबद्री मद्रास प्रान्तके दक्षिण,कञ्चड (South Kanara) जिलेमें एक विश्रुत प्राचीन जैन तीर्थ है। स्वास्थ्यकी दृष्टिसे भी यह स्थान जिले मरमें सर्वोत्तम समझा जाता है। इस जिलेमें जैनों का आगमन कब हुआ यह निःसन्देह रूपसे कहना बहुत कि नि । फिर भी इतना तो अवश्य कहा जा सकता है कि ई० सन् प्रथम शताब्दीमें यहाँ पर जैन-धर्म मौजूद था। क्योंकि ई० सन् ७८ में बारकूरमें शासन करने वाला मूतालपाडच जैनधर्मावलम्बी था। हाँ, साधनाभावके कारण तीसरी-चौथी शताब्दियोमें इस जिलेमें जैन धर्मकी स्थित कैसी रही, यह नहीं कहा जा सकता। ५ वी शताब्दीके पश्चात् यहाँ पर शासन करनेवाले चालुन्य, राष्ट्रकूट और होय्सल शासनोमें भी कई जैन धर्मावलम्बी ही रहे। १२ वी शताब्दीके बाद तो इस जिलेमें जैन धर्म फिर विशेष रूपसे पल्लिवत हुआ। ई० सन् १३ वी शताब्दीसे १६ वी शताब्दी तक राज्य करने वाले विजयनगरके शासकोंके शासन-कालमें यहाँ पर जैन धर्म विशेष रहा। इन्ही शताब्दियोमें कारकलकी गोम्मटेश्वर मूर्ति (१४३२), मडिबद्रीका होसबस्ति अथवा त्रिभुवन-चूडामणि (१४२९) तथा भैरादेवी-मण्डप (१४५१) कारकलका चतुर्मुख-बसदि अथवा त्रिभुवन-विलक्ष-चैत्यालय (१५२१) और वेणूरकी गोम्मटेश्वरमूर्ति (१६०४) निर्मापित हुई है।

१. देखें 'बैन-सिडान्त-मारकर' मा० ४, कि० ४ में प्रकारित सेरा 'बारकूर' केख ।

वा देखना है कि मूडिवदीमें मठ कव स्थापित हुआ। पर यह उतना आसान काम नही है। इसमें शक नहीं है कि मूडिवदीका मठ श्रवणवेल्गोल मठको ही शाखा है। इसीलिये दोनो मठके मठाधीशों का नाम भी एक ही चारकीर्ति है। हाँ, यह शाखामठ कव स्थापित हुआ, इसे जाननेके लिये हमारे पास कोई साधन नहीं है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि मूडिविदीका मठ कमसे कम ८०० वर्ष पूर्वका अवश्य है। क्योंकि मूडिविदी मठावीशका ही दूसरा एक मठ उसी जिलेके नल्लूर ग्राममें ई० सन् ११२० में स्थापित हुआ है जिसका प्रमाण मौजूद है।

में अन्यत्र लिख चुका हूँ कि जैन मठोमें प्रन्य-सप्रह एव रक्षाका कार्य सुदी में कालसे चला बा रहा है। अत. मूडिवद्री मठमें भी यह सत्कार्य प्रारम्भने ही चालू रहा होगा। परन्तु सुननेमें आया है कि स्वर्गीय भट्टा-रकजीके कालमें सप्रहका कार्य तेजीसे हुआ। उस वक्त अन्यान्य मन्दिरो एव श्रावकोंके घर पर जो प्रन्य सगृहीत थे, उनमेंसे अधिकाश प्रन्य सुरक्षाके खयालसे मठमें ही मेंगवा लिये गये। इसके प्रेरक जिनवाणीभक्त आरा-निवासी स्व० श्रीमान् बाबू देवकुमारजी ये जिनका जैन सिद्धान्त-भवन दिगम्बर जैन समाजमें एक बहुमूल्य निधि ममझी जाती है। खैर, ये सब प्रन्य अब मठमें नहीं है। वर्तमान मठावीश चारकीर्तिजीके द्वारा घर्मशालाके कपर निर्मापित नवीन भव्य भवनमें रक्षा पूर्वक रखे गये है। आजकल इसके व्यवस्थापक प० श्री नागराजजी शास्त्री, न्यायतीय है।

श्री बीर वाणी-विलास जैन सिद्धान्त-भवन मूडिबद्री—यह भवन सन् १९३३ में स्थापित हुआ। इसके संस्थापक सरस्वतीभूषण प० श्रीलोकनाथजी शास्त्री हैं। इसमें शास्त्रीजीके निजी ग्रन्थोंके अतिरिक्त अन्यान्य उदार दानियोंके द्वारा भी सैकडो हस्तलिखित एव मूद्रित ग्रन्थ प्रदान किये गये हैं। सामान्यतया सग्रह अञ्ला है। शास्त्रीजीके प्रयत्नसे इस ग्रन्थ-भण्डारके लिये एक सुन्दर भवन भी वन गया है जिसमें स्थानीय और बाहरके अन्यान्य उदार दानियोका पैसा भी लगा है। अभी भी इसकी व्यवस्था प्रेमसे स्वय शास्त्रीजी ही कर रहे हैं। आप शीध्र इसका एक ट्रस्टडीड करनेवाले हैं।

जैन मठ, कारकल—कारकल पूर्वमें जैन धर्मानुयायी भैररस राजाओकी समृद्धिशाली राजधानी रही। उस जमानेमें निर्मापित गोम्मटेश्वरकी विशालकाय भव्य मूर्ति, शिलामय त्रिमुवन तिलक-चैत्यालय आदि सुन्दर जिनालय, रामसमृद्ध, आनेकेरे आदि चित्ताकर्षक जलाशय वगैरह आज भी यहाँके पूर्व वैभवको सूचित कर रहे हैं। इस समय कारकल तालुकाका हेड क्वॉटेंर है। यद्यपि आजकल यहाँ पर जैनोकी सख्या कम है। फिर भी भुजबलि-ब्रह्मचर्याश्रम, जैन कन्या पाठशाला, जैन जीणोंद्वार-सङ्घ और जैन विद्यार्थी-निलय आदि कुछ सस्याएँ काम कर रही है। यहाँका विशेष परिचय मैं जैन सिद्धान्त-भास्कर आदिमें कई बार दे चुका हूँ, इसिलये उन्हीं वातोको फिरसे दुहराना पिष्टपेषण होगा।

पर एक बात पर यहाँ प्रकाश डाल देना आवश्यक प्रतीत होता है। वह यह है कि एक ताम्रपत्र के आधार पर कुछ विद्वानोका कहना है कि यहाँका गुरुपीठ (मठ) ई० सन् १५०४ में स्थापित हुआ था। किन्तु में इससे सहमत नहीं हूँ। क्योंकि कारकलकी गोम्मटेश्वरमूर्तिके दक्षिण पार्श्वमें वर्तमान एक लेखसे रपष्ट है कि ई० सन् १४६२ में भी श्री लिलतकीर्तिजी ही भैररस राजाओं में मनोनीत गुरु थे और उन्हींकी अध्यक्षतामें गोम्मट-मूर्तिके प्रतिष्ठामहोत्सवका समारोह सम्पन्न हुआ था। हाँ, इतनी बात तो अवश्य है कि जैसे मूडिबद्रीका मठ श्रवणवेल्गोलके मठकी शाला है, उसी प्रकार कारकलका मठ हनसोगे (मैसूर) मठकी शाला है। खेर, कारकल मठके प्रन्थोंकी रक्षा वर्तमान भट्टारकजी स्वयं कर रहे हैं। आप पढे-लिखे एक उत्साही त्यागी है। मेरा खयाल है कि यहाँके सप्रहमें श्रद्धेय श्री नेमिसागरजी वर्णीके प्रन्य भी सम्मिलत है, जिन्होंने लगभग २५ वर्ष पूव 'लिलतनेमिग्रन्य सप्रहोंके नामसे मसूरमें एक ग्रन्थालय स्थापित किया था। उसम उन्हें मेंने भी कुछ प्रन्थ देहातोसे एकत्रिन करके दिया था। उस समय मैं मैसूरमें विद्याध्ययन कर रहा था।

आदिनाथ प्रन्य-भाण्डार अलियूर-यह कारकल तालुकामें सबिबेदी से ९ मील दूरी पर पूर्व दिशामें

अवस्थित है। इस समय तो अलियूर एक सामान्य प्राम है। हां, मुनने में आता है कि पूर्व में यह एक नगर रहा। अ दिनाय मिन्दरका जीणों द्वार मजलोडि स्व० अनतय्य घेट्टि द्वारा हालही में कराया गया। मिन्दरका स्थान बहुत सुदर है। स्थान काफी ऊँचा भी है। मिन्दरकी व्यवस्थाके लिये स्थानीय श्रावको के मिवाय सरकार से भी कुछ वर्षाशन नियमित रूपने मिलता है। मिन्दरके वर्तमान अर्च श्री अनन्तराजेंद्र उत्माही हैं। सुना है कि इनके पूर्व ज बड़े विद्वान् थे। खास कर ज्योतिय और मन्त्र-शास्त्र में उनकी अच्छी गति रही। इस आदिनाय ग्रन्थ-भण्डार के कुछ ग्रन्थ पहले अर्चक के घर पर थे। मेरी प्रेरणांसे अब वे मिन्दरमें ही एक आलमारी में मुरक्षित रख़े गये है।

सिद्धान्त वसि मृहिबद्दी—स्थानीय मठके मठा चिपितका उट्टा शियेक इसी मिन्दिरमें होता है । इसिलय इसे गुरु वसिद भी कहते हैं। विल्क चवला, जयववला और महावधकी प्राचीन प्रतियां इसीमें विराजमान होनेसे सिद्धान्त वसिद भी इसका नाम है। इसमें सोना, चौदो, स्फिटिक, नीलम, गरु डो ह्यार, गोमेधक, वैड्र्य, माणिक्य, मोती, हीरा, पुखराग और मूगा आदि रत्न तथा उपरत्नोकी ३२ अमूल्य, एव अनध्यं जिन प्रतिमाएं विराजमान है जिनके दर्शनके लिये दूर दूरने अधिक सन्यामें यात्रो यहां पर आया करते हैं। ये प्रतिमाएं आवे अगुलमे लेकर ९ अगुल तक की है। वस्तुन. इनके दर्शनसे हृदयमें एक अभूतपूर्व आनंद पैदा होता है। जनश्रुति है कि घवलादि ग्रन्य पहले ववई प्रान्तके वारवाड़ जिलेके वकापुरमें य और वहाँसे देवताओं हारा यहां पर लाये गये हैं। एक जपानेमें वकापुर वहुत ही उन्नत स्थितिमें था। यह नगर जैन वीर वके के देशा वसाया गया था। उस जपानेमें वकापुरमें ५ धामिक महाविद्यालय वतें मान ये। खेर, यह विपयातर है। उक्त सिद्धान्त वसिदमें ९ फीट उन्नत शिलामयी पार्वनायजीकी कायोत्सर्ग मूर्ति है। यह ई० सन् ७१४ में स्थापित हुई है। मूहिबद्रीके कुल मन्दिरोमें यह सब प्राचीन है।

रपर्युक्त प्रन्थभण्डारोंमें वर्तमान अप्रकाशित प्रन्थोंमेंसे कुछ प्रन्थोंके नाम-

		विषय-सिद्धांत-		
कम न०	ग्रन्य का नाम.	कर्ताका नाम	भाषा	ग्रं०सू०पृ०
१	<b>बारोह</b> णसार	×	संस्कृत	٦,
२	<b>बासवसन्तति</b>	श्रुतिमुनि	प्राकृत	₹
₹.	कर्मेत्रकृति	अभयचन्द्र	मंस्कृत	२
Y	कालस्वरूप	×	प्राकृत	<b>8-</b> 1−
4	चतुर्गतिवन्य तथा चतुर्वन्ध	×	कन्नड	6
Ê	त्रिभिद्गिटीका	कनकनन्दी	सस्तृत	१०
છ	विभिन्न्दीका	শ্বদানি	कन्नड	१०
6	द्रव्यसंग्रहलघुवृति	वारचन्द्र	11	<b>१</b> ३
९	*नवपदार्यनिश्चय	वादीभसिंह (?)	संस्कृत	१३
१०	पदार्यसार	माघनन्दी	स॰, प्रा॰, फ॰	१३
88	*परमागमसार	श्रुतमुनि	प्रा॰, सं॰	<b>१</b> ५
<b>१</b> २	दन्ध्पदेश	वालचन्द्र	संस्कृत	<b>?</b> Ę
		विषय-अध्यातम-		•
83-	व्यागस्तव.	भास्करनन्दी-	संस्कृत-	२६

रं. देखें 'हेन सिद्धांतमास्तर' मा० १२, कि० १ में प्रकाशित मेरा "हेन वोर बंकेय" लेख ।

२. देखें 'नम्बरं प्रांतके प्राचीन जैन स्नारक' पृष्ठ ११६।

<sup>×</sup> इत नामके दो-पना अन्य और है। † यह 'जैन स्थितन्त-मास्कर'में प्रनाशित हुआ है।

		प्रस्तावना		રય
		विषय-धर्म		
१४	*आराधनासमृच्चय	रविचन्द्र	संस्कृत	<sup>,</sup> ३७
१५	<b>उद्योगसार</b>	नेमिचन्द्र	** · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	₹ <b>७</b> <b>३९</b>
१६	तत्त्वरत्नप्रदीपिका	बालचन्द्र	কন্ন <b>ত</b>	**
१७	तस्वार्थेवृत्ति	प्रभाचन्द्र	सस्कृत	४५
१८	त <del>र</del> चाथँल <b>घुवृत्ति</b>	दिवाकरमुमीन्द्र	सम्बद	૪ૡ
? \$	त्रैवर्णिकाचार	इस्द्रनस्दी	संस्कृत	४७
२०	दानसार	प्रभाचन्द्रदेव	कन्नड	Yo
२१	प्रायश्चित्तविधि	इन्द्रनन्दो	प्राकृत	५८
२२	भन्यजनकण्ठरन्नाभरण	अभयचन्द्र	कन्नड	६०
२३	गुणप्रकाश	×	सस्कृत	२०७
		विषय-न्याय		
२४	न्यायमणिदीपिका	×	संस्कृत	९६
२५	*परीक्षामुखवृत्ति	शुभचन्द्रदेव	27	36
२६	विश्वतत्त्वप्रकाश	भावसेन	"	१०३
२७	सत्यशासनपरीक्षा	विद्यानन्दी	"	१०३
२८	*स्याद्वादसिद्धि	वादीभसिंह	21	१०४
२९	प्रवचनपरीक्षा	अभयचन्द्र	11	२२१
		विषय-च्याकरगा		
३∙	कातन्त्रविस्तर	वर्षंमान	"	१०७
३१	चिन्तामणिटीका	समन्तभद्र	17	१०७
३२	मन्त्रव्याकरण	समन्तभद्र	22	२२३
३३	जैनेन्द्र <b>न्यास</b>	प्रभाचन्द्र	27	२९०
	•	विषय-काच्य		
<b>38</b>	चन्द्रप्रभचरितव्याख्या	<b>मुनिचन्द्र</b>	99	१२६
३५	<b>धर्मशर्माम्युदयटीका</b>	देवर	<b>37</b>	१२५
३६	नेमिनिर्वाणटीका	×	29	१२६
₹७	यशोधरकाव्यटीका	लक्ष्मण	<b>;</b> ;	१३०
३८	राघवपाण्डवीयटीका	देवर तथा सूरि (१)	"	\$\$\$
३९	<b>श्यगारसुघाव्यि</b>	मङ्गरस	कन्नड	१३४
४०	पञ्चसधान	शान्तिराज	संस्कृत	२९१
४१	यशोघरटीका	लक्ष्मण	37	२९२
४२	सरसजनचिन्तामणि	<b>बान्तिराज</b>	27	797
४३	सन्देहघ्वांतदीपिका	यश.कीर्ति	2)	२९३
		विषय-श्रलङ्कार	1	454
88	*अलङ्कारसग्रह	अमृतानन्दी	27	१३५
84	वाग्मटालकार	बालचन्द्र	27	१३७

		विषय-पुरागा		
४६	त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण	मल्लिषेण	सस्कृत	१४६
४७	<del>*</del> धर्मनाथपुराण	बाहुबली	কল্পভ	१४६
88	पाण्डवपुराणः-	वादिचन्द	सस्कृत	१४८
४९	पार्श्वनाथयुर्गण	पार्वंनाथ	कन्नड	१४८
५०	श्रीपुराण	हस्तिमल्लि	सस्कृत	१४८
		विषय-चरित		-
५१	ज्ञानचन्द्राभ्युदय-	कल्याणकीर्ति	<b>ক</b> ন্নন্ত	१५२
५२	ज्ञानचन्द्रचरित	पायण्णवर्णी	7,	१५२
५३	पाइर्वनाथचरित	शान्तिकीति	29	१५४
५४	प्रभजनचरित	मगरस	<b>,</b> ,	१५५
५५	प्रद्युम्नचरित	महासेन	सस्कृत	१५५
५६	श्रीपालचरित	सकलकीर्ति	<b>27</b>	१५७
५७	ज्ञानभास्करचरित	नेम्मण	• कन्नड	7 <b>1</b> 8
46	घन्यकुमारच <b>रि</b> त	आदिनाथ	22	<b>२३२</b>
५९	नागकुमारषड्पदि	विजयण्ण	1)	<b>२३३</b>
६०	<b>97</b>	कल्याणकीति	<b>&gt;&gt;</b>	233
६१	वाहुबलिचरित	चिक्कण	7,	<b>२३३</b>
६२	यशोघरचरित	चन्दण्ण	,,	738
६३	रोहिणीचरित	जिनचन्द्र	"	२३४
६४	लोभदत्तचरित -	<b>नेंम</b> रस	11	२३४
६५	वर्षमानचरित	पद्म	**	२३४
<del>द</del> ृद	वसन्ततिलकाचरित	नेमिचन्द्र	"	२३४
६७	विजयकुमारीचरित	श्रुतिकीर्ति	<b>))</b>	२३४
६८	श्रीपालचरित	इन्द्रदेवरस	77	7 <b>३</b> ४
६९	<b>37</b>	वर्षंमान	<b>;;</b>	२३५
90	श्रेणिकचरित	जिनदेवण्ण	79	१३५
હ ફૈ	अनन्तमतिचरित	सातणवर्णी	"	7 <del>7 9</del>
७२	अञ्जनाचरित ••••े	शिशुमायण	 <del>7</del> 7	२६९
७३	आंजनेयचरित	मायण्ण	29	२६९
७४	सुकुमारचरित	षान्तिनाथ	<b>3</b> 7	२६९
७५	सुदर्शनचरित	नेमरस	3,	२६९
	<u> </u>	विष्य-इतिहास		
७६	श्रीपालचरित	केशण	<b>,</b> ,	२९७
90 50	गोम्मटेश्वरचरित (कारकल)	चन्द्रम	11	१६४
১৩	" (वेणूर)	गुरुराम ।	27	२३८
७९	REITHETTE	विषय-वैद्यक		
٥, ڏه	कल्याणकारक बालग्रहचिकित्सा	स्रोमनाथ	**	१६५
ă.	नारमधा नामस्ता	देवेन्द्रम्नि	**	२७१

		- भ <b>रता</b> वना		<b>₹</b> ७	
•	- ,	विषय-ज्योतिष	•	rrt	
८१	<b>अक्षरकेवलिप्र</b> दन	×	n	१६६	
८२	केवलज्ञानहोराशास्त्र	चन्द्रसेन	"	१६६	
८३	फेवलिप्रश्न	×	দস্ত	१६७	
ሪሄ	गर्भप्रदन	×	"	२४२	
८५	चन्द्रोन्मीलनप्रश्न	×	संस्कृत _	२४२	
८६	जिनेन्द्रमाला	×	कन्नड	<i>२</i> ४२'	
८७	*ज्योतिर्ज्ञानिविधि	श्रीघराचार्य	सस्कृत	२४२	
८८	भट्टमत	<b>अहँ</b> दास	कन्नड	२७३	
APS	तीर्थं केवलिप्रश्न	×	संस्कृत	२७४	
८९B	*केवलज्ञानचूडामणि	समन्तभद्र (?)	<b>37</b>	२४७	
		विषय -गणित			
९०	गणितविलास	चन्द्रम	कन्नड	१६८	
९१	*गणितसार	श्रीधराचार्य	सस्कृत	१६९	
९२	गणितसग्रह 🗸	राजादित्य	कन्नह	१६९	
		विषय-मन्त्रशास्त्र		ŗ	
९३	गणधरवलयकल्प	×	सस्कृत	१६ं९	
९४	पञ्चनमस्कारचक	×	",	१७०	
94	*कामचाण्डालिनीकरुप	मल्लिषेण	•,	<i>२</i> ४४	
९६	ज्वालिनीकल्प	इन्द्रनन्दी तथा म	ल्लिषेण ,, -	२४४-,५,	
90	<b>मह्मविद्यावि</b> षि	×	11	२४५	
96	विद्यानुवादाग	×	11	२४६	
<b>९</b> ९	सरस्वतीकल्प -	मल्लिषेण तथा वि	जियकीति "	२९६	
800	*श्रीदेवताकल्प	अरिष्टनेमि	22	२७६	
		विषय-स्तोत्र			
१०१	निजाष्टक	योगीद्रदेव	प्राकृत	१८९	
१०२	वृषभनायगद्य	हस्तिमल्ल	संस्कृत	१९३	
६०३	सिदस्तोत्र	आशाधर	**	१९६	
१०४	<b>अहं</b> द्भाक्त	427	**	२५०	
१०५	<b>चतुर्विशतिस्तव</b>	केश्वसेन		२५०	
१०६	चन्द्रप्रभस्वामिघोष	पूज्यपाद		२५०	
७० ९	चतुर्विशतिस्तोत्र	माघनन्दी		२७८	
१०८	<b>आरोग्यस्तोत्र</b>	श्रुतकीर्ति	<b>फ</b> न्न <b>ड</b>	३०३	
१०९	प्रक्नोत्तरचतुर्विशतिजिनस्तव	घर्मचन्द्र	सस्कृत	४०६	
विषय-प्रतिष्ठा तथा पूजा					
110	प्रतिष्ठा <b>ग</b> लप	भट्टाकलङ्क	सस्कृत	२१४	
1	•				

१∈	कम्बद्यान्तीय ताहपत्रीय प्रन्यसूची					
१११	अष्टमनन्दीश्वरपूजा	विद्यानन्दी	संस्कृत	२१६		
११२	सिद्धचऋपूजा	<b>आ</b> शाघर	19	२२०		
११३	सक्षिप्तश्रुतज्ञानविधान	चन्द्रम	29	२२०		
i	विषय	-आराधना तथा व्रत	विधान			
११४	<b>भुजवलिकल्याण</b> व्रतविधान	पद्मनन्दी	11	२१८		
११५	श्रुतस्कन्धाराषना	विजयवर्णी	"	288		
		विषय-परीक्षा	1			
११६	<b>अ</b> श्वपरीक्षा	अभिनवचद्रम	কন্নভ	२४६		
		विषय-क्रियाकाण्ड	•			
११७	<b>*</b> दशभक्त्यादिसग्रह	वर्षंमान	सं०, प्रा॰, क॰	२४९		
		विपय-कथा				
११८	चन्द्रपष्ठिकथा	माधवचन्द्र	सस्कृत	२३५		
११९	त्रैलोक्यविधानकथा	अभ्रदेव	सस्कृत	<b>२३६</b>		
१२०	रत्नत्रयकथा	पद्मनन्दी	*,	२३६		
१२१	रुविमणीकथा	सोमदेव	1)	२३६		
		विपय-गीत				
१२२	<b>आदिनाययक्षगान</b>	सदानन्द	कन्नह ः	२५१		
१२३	पद्मावतीयक्षगान	बाहुबली तथा शङ्क	र भट्ट "	747		
		विषय-नीति	-	* * * *		
१२४	<sup>‡</sup> नीतिवानयामृतटीका	नेमिनाथ ,	कसद	२९३		



#### प्रनथतालिका-निर्माणमें कठिनाइयाँ

प्रन्यतालिकानिर्माणमें सबसे बढी कठिनाई यह होती है कि एक बंहलमें एक-दो नहीं, किसी-किसीमें दस-बीस प्रन्थ तक रहते हैं। वे भी एक विषयके नहीं, भिन्न-भिन्न विषयके। ऐसा भी है कि किसी-किसी बढलमें पूर्ण प्रन्थ एक भी नहीं मिलता। किन्तु किसीका एक पत्र, किसीके दो पत्र, किसीके चार पत्र और किसीके बाठ। इसके साथ-साथ दूसरी यह दिक्कत भी है कि ताडपत्रीय प्रन्थोकी लिपि बहुत ही वारीक रहती है। बिल्क, किसी-किसीकी लिपि इतनी खराब होती है कि वह पढी ही नहीं जाती। ऐसे भी सग्रह मिलते हैं कि एक ही में ज्योतिष, मंत्रशास्त्र, कामशास्त्र, स्तुति और मजनादि सब कुछ भर दिये गये हैं। जैसे कोई आधे पत्रमें, कोई एक पत्रमें, कोई दो पत्रोमें और कोई चार पत्रोमें। पाठक ही सोचे कि इसका क्या नाम लिखा जाय और क्या विषय। इसे एक छोटा नोट-बुक कहना ही समुचित है।

वस्तुतः प्राचीन हस्तांलखित ग्रन्थोकी तालिका तैयार करना आसान काम नहीं है, जैसे कुछ व्यक्ति समझ रहे हैं। प्रत्युत यह बहुत ही कष्टसाच्य एव रूक्ष काम है। इस बातका अनुभव एक भुक्तभोगी ही कर सकता है। बढलके प्रत्येक पत्रको सावधानीसे उलट-पुलट कर देखना आवश्यक होता है। अन्यथा बीचमें जो ग्रन्थ छिपा हुआ है, वह छूट ही जाता है। गणितसार-श्रीधराचार्य, परीक्षामुखवृत्ति-शुभचन्द्र, स्याद्वादसिद्धि तथा नवपदार्थ- निश्चय-वादीमिसह, आराधनासार-रिवचन्द्र और ध्यानस्तव-भास्करनदी आदि अभी उपलब्ध अप्रकाशित नये ग्रन्थ क्या पहलेसे भाण्डारोमें मौजूद नहीं थे? फिर इसके पूर्व, पूर्वमें तालिकानिर्माण करनेवालोको ये ग्रन्थ क्या नहीं मिले? कृपया इसका अथ कोई यह न लगावें कि प्रस्तुत तालिका श्रुटियोसे सर्वथा मुक्त है। इसमें भी बहुत सी श्रुटियां होगी और उन श्रुटियोका होना कोई अस्वाभाविक नहीं है। हां, सावधानीसे काम लिया गया है। फिर भी एक व्यक्तिके हाथका काम नहीं है, मैं इस पर विज्ञ पाठकोको पूर्ण विश्वास दिला दू।

#### धन्यवाद समर्पण

वंतमें प्रत्यभाण्डारके सरक्षको एव अन्यान्य सहयोगियोको धन्यवाद देना भी मेरा कर्तं व्य है। प्रत्यभाण्डारके सरक्षकोमें लास कर श्रद्धेय स्वस्ति श्री मट्टारक चारकीर्तिजी मूडविद्री और स्वस्ति श्री मट्टारक लालतकीर्तिजी कारकल विशेष धन्यवादके पात्र है। आप दोगोने अपने यहांके प्रत्य-तालिका-निर्माणमें विशेष रूपसे
सहायता की है। इसके अतिरिक्त श्री वीरवाणी-विलास जैन सिद्धान्त-भवनके सचालक सरस्वतीभूषण प० वी०
लोकनाथजी शास्त्री, आदिनाय प्रत्यभाण्डार अलियूरके अधिकारी श्री अनतराजें न्नजी, मूडविद्रीके अन्यान्य फुटकर
सश्होंके सरक्षक जैसे सिद्धात वसदिके प्रवधक जैन पच, चौटर श्री धमंसाम्राजय्यजी, प० श्री नेमिराजजा सेट्टि,
प० श्री एम्० एस० पद्मनाभजी शास्त्री, वैकणितकारीवसिंद श्री जिनराजेंद्रजी, होसबसिंद श्री शातिराजेंद्रजी
पद्वसाद श्री अनन्तराजेंद्रजी और मा० श्री देवराजजी सेट्टि भी धन्यवादके अधिकारी है, जिन्होंने बड़ी उदारतासे
सूचीनिर्माणार्थ अपने यहाँके बहुमल्य प्रन्थोको सहष् प्रदान किया है।

सह्यागियोमे सरस्वताभूषण प० श्री० लाकनाथजा शास्त्री, प० श्री एस० चन्द्रराजेद्वजी शास्त्री, प० श्री एम० एस० पद्मनाभजी शास्त्री तथा प० श्री एम० पी० मोजराजजी पुवणिका मी में नही भूल सकता जिनकी सहायतासे इस प्रन्य तालिकाको में इस रूपमें आप पाठकोके समक्ष रख सका। इस अवसर पर 'जंन विद्या-वर्दक सघ' मूडविद्दोके सुयोय कार्यदर्शी श्री एम० जगत्पालजीक उपकारका स्मरण करना भी में अपना धर्म समझता हूँ, जिन्होने वड़ी उदारतासे 'भारतीय ज्ञावर्यं ठ' के शाखा-कार्यालयको लगभग दो साल तक विचा प्रति- फलापेक्षाके अपने ही यहाँ सघ-भवनमें स्थान दे कर इसके प्रत्येक कार्यमें समय समय पर सह।यता की है। इस तालिका-निर्माण-कायमें मठके प्रन्यभाण्डारके व्यवस्थापक प० श्रीनागराजजी शास्त्रीसे भी काफी सहायता मिली है, अत, वे भी घन्यवादके पात्र है।

<sup>\*</sup> इस चिह्नाले प्रन्थ भारतीय शानपीठकी भारते प्रकारित होनेनाले है।

#### मेरा निवेदन

अव ग्रन्य-तालिकाके संपादनके संबंधमें भी दो शब्द लिख देना परमावश्यक है। इस ग्रन्य-तालिकाका निर्माण कार्ड सिस्टममें 'भारतीय ज्ञानपीठ' काशीके शाखाकार्यालय मूडविद्रीमें हुआ। बाद आज्ञानुसार ये कार्ड सबके सब प्रधान कार्यालय काशीमें भेज दिये गये, और व्यवस्थापकजीको लिख दिया था कि इसका प्रूफ़ मेरे पास आ जाना चाहिये, ताकि प्रूफ़में सुधारी जानेवाली आवश्यक वार्ते सहज सुधार दी जाँय। किंतु छपाई आदिकी अमुविधासे वे ऐसा नहीं कर सके। परिणामस्वरूप ग्रंथ-तालिका में कहीं ग्रंथ तथा ग्रंथकर्ताके जैसे-चंद्रमका चंद्रप, शान्तिका शान्ति और यत्रप्रतिष्ठा विधानका यथाप्रतिष्ठाविधान, यंत्रविधिका यंत्रीविधि आदि नामोंमें भी अमुद्धियाँ रह गई है।

ग्रंथ तालिकातर्गत अर्जन ग्रंथोंको \* इस चिन्हके द्वारा सूचित करनेका प्रयास कार्यालय वालोंने किया है अवस्य, पर यह भी कहीं कही छूट गया है।

अस्तु, इस ग्रंथ-तालिकाको प्रकाशमें लानेके उपलक्षमें 'भारतीय ज्ञानपीठ'के संस्थापक श्रीमान् दानवीर सेठ गांतिप्रमाद जी, मंत्री वावू श्री अयोव्याप्रसाद जी गोयलीय तथा न्यायाचार्य श्रीमान् पं० महेंद्रकुमार जी शास्त्री इन तीनोंका समाज अवश्य कृतज्ञ रहेगा। आजा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि ग्रंथ-तालिकाके दूसरे भागमे वारंग, हंवुज, श्रवणवेलगोल और कोल्हापुर अदि दक्षिणके शेप ग्रंथ माण्डारोंके ग्रंथ भी अवश्य सम्मिलित किये जायेगे। तब ही 'ज्ञानपीठ' का यह कार्य पूर्ण संपन्न हुआ समझा जायगा।

मूडविद्री } ६।११।४७ }

-श्रुजवली शास्त्री

# कन्नड प्रान्तीय ताडपत्रीय प्रन्थसूची

# कन्नडग्रन्थसूची

# मृडविद्री जैनमठके ताडपत्रीय ग्रन्थ

# विषय-सिद्धान्त

ग्रन्यं ने० २०७१

१ श्रारोह्गासार- पत्र स०-५। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-८६। लिपि-केन्नेह। भाषा-सस्कृत । विषय-मिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शृद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें गुणस्थानकमारोहणपर प्रकाश हाला गया है ।

ग्रन्थ न० ४६२।

२ श्रामविर्सगी-आंचारं नेमिचन्द्र । पत्र मं०-६४ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अंक्षर प्रतिपिक्त-९० । लिपि-कन्नड । माया-प्राकृत । विषय-मिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य सुद्ध । देशा-सामान्य । विशेष-इममें कन्नडवृत्ति भी है ।

#### ग्रन्य न० ५११।

3 श्रासवसंनति-श्रुतमृनि । पत्र न०-९ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नंह । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य गृह । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें वालचन्त्रकृति कन्नडटीकां भी है । टीकाका प्रारम्भिक पद्य इस प्रकार है-अभिवन्य जिनान्वीरान् सद्ज्ञानादिगुणात्मकान् । कर्णाटभाषया वक्ष्ये टीकामास्त्रवसन्तते ॥

ग्रन्थ न० ७७४।

४ श्राम्बसंतित-श्रुतमुनि । पत्र स०-१३ । पिन्न प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपैक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विपय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा समिन्यि बृद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नडटीका है ।

#### ग्रन्य न० ४२।

ध् कम्मपयिं [कर्मप्रकृति ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं० २०। पॅक्ति प्रतिपत्र-१०। वस्तरं प्रौत-पक्ति-७०। लिपि-कन्नडे । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४। पूर्णं तथा गृद्ध । दशा-जीर्ण । विद्येष-इसमें कन्नडवृत्ति एव 'रयणसार' के कुछ पत्र भी है ।

#### ग्रन्थे नं ० ८७ ।

हे कम्मपयिह [कर्मप्रकृति]-बॉचॉर्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०-७। पन्ति प्रतिपत्र-९। अक्षरं प्रति-पित्त-१००। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-४। पूर्णे सुद्ध। दशा-सामान्य। विद्येप-इसमें मूलमात्र है।

#### प्रत्य न० ३२०।

७ कम्मपयि [कर्मप्रकृति ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-९ । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पंक्ति-८० १ लिपि-कृत्नेह । नार्या-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ३७५।

द्र कम्मपयि [ कमेप्रकृति ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-१३९ । पनित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा सामान्य शद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें मुनि प्रभाचन्द्रदेवकृत कन्नडटीका भी है।

ग्रन्थ न० ५६३।

रुकम्मपयि [कमेप्रकृति ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-२७ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- ४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीणं तथा खण्डित ।

विशेष-इसमें कन्तडटीका है तथा 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' के कुछ खण्डित पत्र भी है।

### ग्रन्थ न० ५६३।

१० कम्मपयि [ कमें प्रकृति ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-२७ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्वान्त । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष-इसमें 'सूक्तिमुक्तावली' के भी कुछ पत्र है।

### ग्रन्थ न० ८७।

११ कर्मे प्रकृति—आचार्य अभयचन्द्र । पत्र स०-६ । पनित प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपन्ति-९६ । लिपि-कन्नड । भापा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० १८६।

१२ कर्मप्रकृति-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सख्या-६ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । मापा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्य न० २४५। १३ कर्मप्रकृति-आचार्य अभयचन्द्र। पत्र स०-८। पन्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपन्ति-१०४। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

१५ कमेप्रकृति-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-१०। पित्र प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपित्त-८८। लिपि-कन्नड । मापा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । अनितम पद्य-जयन्ति विवृताभेषपापाञ्जनसमुच्चया । अनन्तानन्तिभीवृष्टिसुखवीर्या जिनेश्वरा ॥ कृतिरियमभयचन्द्रिद्धान्तचक्रवर्तिन. ।

### ग्रन्य नं० ३८३।

१६ कर्मप्रकृति-आचार्यं अभयचन्द्र । पत्र सं० २४ । पिनत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिनत-४५ । छिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । छेखनकाछ- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रारम्भिक पद्य-प्रक्षीणावरणद्वैतमोहप्रत्यूहकर्मणे । अनन्तानन्तघीदृष्टिसुखवीर्यात्मने नम ॥ १ ॥ विशेष-यह ग्रन्थ भीम्मटसार' मे भिन्न है, तथा गद्यरूप है ।

ग्रन्थ नं० ५८२।

१७ कर्मप्रकृति-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र स०-५३ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-११० ।

लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । अनितम पद्य-जयन्ति विधुताशेषपापाञ्जनसमुच्चया । अनन्तानन्तवीदृष्टिसुखवीर्या जिनेश्वरा ॥

#### ग्रन्थ न० ३३४।

१८ कर्मप्रकृति— । पत्र स०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्तह । भाषा-कन्तह । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न०९।

१९ कर्मप्रकृति- । पत्र स०-५। पिक्त प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपिक्त-१२०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न०५०।

२० कमेप्रकृति— । पत्र स०-७। पित्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-९५। लिपि-कन्नड। माषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४।पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ५१।

२१ कमेप्रकृति- । पत्र स०-८। पिनत प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिनत-६९। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल- 🗶 । अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-जीर्ण। विशेष-इसमें कन्नडटीका भी है।

#### ग्रन्थ न० ९०।

२२ कमेप्रकृति- '। पत्र स०-१३। पिन्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिन्त-७८। लिपि-कन्नड। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल- ×। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-मेरुनन्दिके शिष्य जिनचन्द्रदेवने तेंकण आदियण्णके वास्ते इसे लिखा है।

#### ग्रन्थ न० २१४।

२३ कमेप्रकृति- • • । पत्र स०-१५ । पन्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-१८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ३२१।

२४ कमेप्रकृति- : । पत्र स०-२५ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-४२ । लिपि-कन्नढ । भाषा-कन्नढ । विषय-सिद्धान्त । केखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ४६२।

२५ कमेप्रकृति- ' । पत्र स०-७ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-प्रतिमें इसका नाम 'कर्मप्रकृतिबोल्लि' है ।

#### ग्रन्थ न० ४६४।

२६ कम्प्रकृति- । पत्र स०-८। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-४२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा अशुद्ध। दशा-सामान्य।

### ग्रन्थ न० ४८१।

२७ कमेप्रकृति- ' । पत्र स०-१९। पिक्त प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपिक्त-४६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल- ×। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

#### ग्रन्थ न० ६३६।

२८ कमेप्रकृति- । पत्र स०-१७। पक्ति प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपक्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- ४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

#### ग्रन्थ न० ६५९।

२६ कमेप्रकृति- : । पत्र स०-८०। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-२०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा अशुद्ध। दशा-जीर्ण।

#### ग्रन्थ न० ७४५।

३० कमेप्रकृति । पत्र स०-८। पिक्त प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपिक्त-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें 'लोकस्वरूप' का भी एक पत्र है।

### ग्रन्थ न० ७६८।

३१ फर्मप्रकृति- ''। पत्र स०-११। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-५६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४। अपूर्णं,तथा सामान्य सुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें 'पचपरमेष्ठिस्वरूप' ( कन्तडः ) के भी २ पत्र है।

#### ग्रन्थ न० ९०३।

३२ कर्मप्रकृति- '' । पत्र स०-७६ । पितत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-८० । लिपि-कन्तड । भाषा-कन्तड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ३३५।

३३ कालविभाग- · · · । पत्र स०-७ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्य न० ६३६।

३४ कालस्वरूप- ःः । पत्र स०-२५ । पिक्त प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपिक्त-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें वीच वीच में सस्कृतविवरण भी है।

प्रारम्भिक पद्य-विन्तिता पचगुरू सिंदिदपरिपूजिए अणतगुणे । भरहेरावह्खेत्तजकालसरूव पवक्खामि॥१॥ ग्रन्य न० ७४० ।

३५ कालम्बरूप- · · · । पत्र स्-२०। पिक्तः प्रतिपत्र-५,। अक्षर प्रतिपिक्त-८१। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा गुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० १०१।

३६ गोम्मटसार [जीवकाण्ड तथा कर्मकाण्ड ] आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-२० । पित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗶 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें सद्ष्टिके भी कुछ पत्र है।

#### ग्रन्थ न० ५८९।

३७ गोम्मटसार [जीवकाएड तथा कर्मकाएड] बाचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-५० । पक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिनिक्त-८० । लिपि-नागरी । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्णं तथा अशुद्ध । दशा-अतिजीर्णं तथा खण्डित ।

'विशेप-इसमें 'दशवैकालिक' तथा 'आप्तमीमासा' के भी कुछ खण्डित पत्र है।

#### ग्रन्थ न० २१।

३८ गोम्मटसार [जीवकाएड]-आचार्य नेमिचन्द्रं। पत्र स०९। पिक्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रति-पिक्त-१३०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमे केशववर्णीकृत संस्कृतटीका भी है।

#### ग्रन्थ नं० ६६।

३६ गोम्मटसार [ जीवकारङ ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र सं० २२४ । पंक्ति प्रतिपत्र ६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा- सामान्य ।

विशेष-इसमें आचार्य अभयचन्द्रकी संस्कृतटीका भी है।

#### ग्रन्थ नं० ८०।

४० गोम्मटसार [जीवकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ नं० ९३।

४१ गोम्मटसार [जीवकाएड]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-५१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भापा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें वनञ्जयनाममालाके भी ३ पत्र हैं ।

#### ग्रन्य नं० १५१।

४२ गोम्मटसार [ जीवकाएड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं० २६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा- प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्य नं० ४९६।

४३ गोम्मटसार [जीवकाराड] —आचार्यं नेमिचन्द्र। पत्र सं०-५५। पंक्ति प्रतिपत्र-७। कक्षर प्रति-पंक्ति-१२०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-अति जीर्णं।

विशेष-इसमें केशववर्णीकृत कन्नडटीका भी है।

### ग्रन्य नं० ५११।

४४ गोम्मटसार [जीवकाएड]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नडटीका है।

### ग्रन्थ नं० ५५७।

४५ गोम्मटसार [ जीवकाएड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-पंक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेप-इसमें कन्नड टीका भी है।

### ग्रन्य नं ० ५६७ ।

४६ गोम्मटसार [जीवकारड]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र सं० १७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-'क्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भापा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- ४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ नं० ५७३।

४७ गोम्मटसार [जीवकाएड]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं० ५० । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति १२० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेप-इसमें कवि अग्गलकृत 'चन्द्रप्रभपुराण' के भी कुछ पत्र हैं ।

### ग्रन्य न० ५७४।

४८ गोम्मटमार [जीवकाएड]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र म०-१७ । पक्ति प्रतिपत्र- ६ । अक्षर प्रजि-पक्ति-८० । निपि-कन्तड । मापा-प्राकृत । विषय- निद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-नामान्य ।

#### ग्रन्य नं० ५८८।

४६ गोम्मटमार [जीवकाएड]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र म०-१३७ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-१५० । लिप-कन्नड । नापा- प्राकृत । विषय-मिद्धान्त । लेखनकाल- 🔀 । अपूर्णे तथा गृह्व । दशा-

विशेष-इसके अन्तकी ७ गाथाएँ नहीं है । इसमें केशववर्गीकृत 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नड टीका भी है।

#### ग्रन्य न० ६७२।

प्र गोन्मटसार [ जीवकाएड ]-काचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-१९ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिह पिन-५० । लिपि-कन्नड । मापा-प्राकृत । विषय-मिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध ।
दश्य-सामान्य ।

दिशेष-इसमें 'द्रव्यसग्रह' तया 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' के भी कुछ पत्र है।

#### ग्रन्य न० ७६७ ।

प्र गोम्मटसार [ जीवकाएड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र म०-११२ । पिक्न प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पिक्त-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय- सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सा गान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें केशवणाविरचित 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नडवृत्ति हैं।

#### ग्रन्य न० ७८७।

५२ गोम्मटमार [ लीवकार्ट्ड ]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२५ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पंक्ति-९८ । लिपि-कन्नद । भाषा-प्राङ्कत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें मूलगायाओकी संस्कृत-छाया है तया त्रिभगी ब्यादिके भी कुछ खष्टित पत्र है। ग्रन्य न० ८१३।

५३ गोम्मटसार [ जीवकाएड ]-आचार्यं नेम्चिन्त्र । पत्र सं०-४१ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पिक्त-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राष्ट्रत । विषय-मिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष-इसम पोड्यमावनाके गीत भी है।

### ग्रन्य नं ० ९०५।

पृष्ठ गोम्मटसार [ जीवकाएड ]-बाचार्य नेनिचन्द्र । पत्र सं०-६६ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-इंन्ति-१४६ । लिपि-कन्नड । मापा-प्राकृत विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें सदृष्टियाँ तथा संस्कृतिहिष्पणी भी है ।

### ग्रन्य नं० ५८।

११ गोन्मटसार [कर्मकाएड]-काचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२९४ । पिक्त प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रति-पिक्त-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें चामुण्डरायके द्वारा शालिवाहन शक १८२१ में रिचत कन्नडवृत्ति भी है । वृत्तिके अन्तमें एक विस्तृत कन्नडप्रशस्ति लगी है ।

#### ग्रन्थ न० २३७।

५६ गोम्मटसार किमैकाग्रह |-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-३७ । पिन्त प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपक्ति-११०। लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दवा-जीर्ण ।

बिशेष-इसमें केशववणींकृत विस्तृत कन्नडटीका भी है।

#### ग्रन्थ न० २३७।

५७ गोम्मटसार [ कर्मेकाएड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-३७। पन्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीणं ।

#### ग्रन्थ न० २९४।

**४८ गोम्मटसार** [कर्मकाग्रह]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-३१७ । पक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपक्ति—१३२ । लिपि—कन्नड । माषा-प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें केशण्णरिचत कन्नडटीका है। यह टीका शालिवाहन शक १२८१ विकारि सवत्सर, चैत्र शक्ला ५ के दिन रची गई है।

#### ग्रन्थ न० ४२३।

५६ गोम्मटसार [जीवकाण्ड की टिप्पणी]-पत्र स० २२। पक्ति प्रतिपत्र-१३। अक्षर प्रतिपक्ति-१९९। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० ४३२।

६० गोम्मटसार [ कर्मकाएड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२२५ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पक्ति–२००। लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल− ४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें केशववर्णीकृत कन्नडटीका है। मट्टारक घर्मभूषणकी आज्ञासे उक्त केशववर्णीने शालि शक १२८१ में इस टीकाकी रचना की है। लेखक पण्डितदेव है।

#### ग्रन्थ न० ५०९ ।

६१ गोम्मटसार [ कर्मकाण्ड ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-३० । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पक्ति-६३। लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं।

#### ग्रन्य न० ५४४ ।

६२ गोम्मटसार [ कमकाएड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-१७१ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१६०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-अतिजीर्ण ।

विशेष-इसमें बीच बीचमें कन्नडटीका भी है।

#### ग्रन्थ न० ५८६।

६३ गोम्मटमार [कर्मकारह]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-२८१ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति–१२५ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल– ४ । शालि शक १२५१ । अपूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-अतिजीण ।

विशेष-इसमें केशववर्णीकृत कन्नडवृत्ति है। यह वृत्ति शालि शक १२५१ विकारि सवत्सर, चैत्र शुक्ला ५ के दिन रची गई है।

### ग्रन्य नं० ६७० !

६५ गोम्मटसार [कर्मकाएड] – जाचार्य नेमिचन्द्र । पत्र मं०-२०। पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पंक्ति-९८ । लिपि-कन्नड । मात्रा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । व्या-व्यतम ।

विशेप-इनमें सस्तृत तथा कन्नडवृत्ति है, तथा पूजा एव वैद्यक नवधी कुछ पत्र भी है। ग्रन्थ न० ५००।

इर् चतुरोतिवन्धक्रम- ' ''पत्र म० ५। पत्रित प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपत्रिन-८४। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-निद्धान्त। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा मामान्य शृद्ध। टशा-सामान्य।

#### प्रत्य न० २९२।

६६ चतुर्वेन्व- ' पत्र स०-१०। पन्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपन्ति-५७। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल- X। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा सामान्य।

### ग्रन्य नं ० ३२१।

६७ चतुर्वेन्य-' पत्र सं०-१९। पक्ति प्रतिपत्र-६। असर प्रतिपक्ति-४५। लिपि-कन्नढ। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा नामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

#### ग्रन्य न० २८१।

६८ ठिदिबन्ध-[स्थितिबन्ध]-····पत्र स०-६३। पितः प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपित्त-११३। लिपि-कन्नड। नापा-प्राकृत तथा कन्नड। विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४। पूर्ग तथा गृहः। व्या-सामान्य । प्रत्य नं ३२१।

६९ तस्वस्वरूप- पत्र स०- ६। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-३४। लिपि-कन्नड। मापा-कल्लड। विषय-मिद्धान्त । लेखनकाल-४। पूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्य नं० ३२० ।

७० तस्वानुशामन-मृनि रामसेन । पत्र सं०-११ । पन्नि प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रनिपन्ति-६५ । किपि-कन्नद्र । मापा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । छेखनकाळ+× । अपूर्ण तथा गुद्ध । दथा-सामान्य ।

#### ग्रन्य न० ७०६।

७१ तस्त्रानुशासन-मृनि रामनेन । पत्र सं० १४ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-निद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्य नं० ७५५ ।

७२ तस्वानुशासन-मृनि रामसेन । पत्र स० ५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्षि-९० ) लिपि-कन्नड । मापा-तस्कृत । विषय-विद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तया मामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें किमी वर्मग्रयके संस्कृतिष्णणोके आद्यन्तरहित ५ पत्र भी है ।

#### ग्रन्य नं० २९१।

७३ तत्त्वार्थराजवार्तिक-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र म०-२८० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षरे प्रतिपक्ति-११७ । लिपि-कन्नड । मापा-सन्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य नं ० ४८७ ।

७४ तत्त्रार्थराजवार्तिक-आचार्य अकलङ्कदेग । पत्र स०-१७५ । पंक्ति प्रतिपेत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्य नं० ४९७। ७५ तत्त्वार्यराजवार्तिक-आचार्ये वकलङ्कदेव । पत्र नं०-३५। पंक्ति प्रतिपत्र-८। वक्षर प्रतिपंक्ति-१२०। लिपि-कन्नड। नापा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-४। अपूर्णं तया सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्णे ।

#### प्रन्य न० ८८९ ।

७६ तस्त्रार्थेगज्ञवार्तिक-आचार्यं अकलङ्कदेव। पत्र सं०-३६। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण। ग्रन्थ न० २०।

७७ तिसगी-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-१६ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें गोम्मटसारकी सन्दृष्टिके भी कुछ पत्र है।

ग्रन्थ न० ४३।

७८ तिभगी-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-२३ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नडवृत्ति है ।

#### ग्रन्थ न० ५१।

**७६ तिसगी**—आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-४४ । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-८१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नडटीका है ।

#### ग्रन्थ न० १२८।

८० तिसगी-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-१७ । पिनतः प्रतिपत्र-५ । अक्षरः प्रतिपिनत-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नडटीका है ।

#### ग्रन्थ न० २०९।

८१ तिभगी-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-६ । पन्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपन्ति-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० २६४।

८२ तिभगी-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-२० । पन्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपन्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० २९०।

द्ध तिभंगी-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-४३ । पिन्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिन्ति-१४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें वालचन्द्रकृत कन्नडवृत्ति भी है ।

#### ग्रन्थ न० ४१७।

८४ तिभंगी-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-३०। पिक्त प्रतिपत्र-१५। अक्षर प्रतिपिक्त-६८। लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं । ग्रन्थ न० ६०६।

द्र तिसंगी-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-४० । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-४० । लिपि-कन्नह । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं । विशेष-इसमें कन्नहटीका है ।

#### ग्रन्थ न० ६०९।

८६ तिभंगी-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-२४ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें फन्नडटीका है।

#### ग्रन्थ नं ० ७२६ ।

८७ तिभंगी-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा साम्मन्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेप-इसमें संस्कृत 'आदिपुराण' के भी कुछ पत्र हैं । उक्त ग्रंथ कन्नडटीकासहित है ।

### ग्रन्थ नं० ७५६।

८८ तिसंगी-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- ४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीणं । ग्रन्थ नं० २०३ ।

दर त्रिभंगिटीका-आचार्य कनकनन्दी । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० २०४ ।

६० त्रिभंगिटीका-श्री श्रुतमुनि । पत्र सं०-१०४ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल∸× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ नं० ४५८।

ह१ त्रिभंगिटीका-''''। पत्र सं०-२०। पंक्ति प्रतिपत्र-९। बक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल--×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

#### प्रंथ न० ७७४।

हर त्रिभंगीवृत्ति—केशवण्ण । पत्र सं०-८९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष-यह 'गोम्मटसार' कर्मकाण्ड का एक प्रकरण है। ग्रंथारंभमें मुनि जयकीति कृत संस्कृत अवतरणिका भी इसमें उद्भृत की गयी है।

#### ग्रन्थ नं० २०।

६३ दृव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह् ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र मं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा गुद्ध । दशा-जीर्णं ।

#### ग्रंथ नं० २६।

६४ द्व्यसंगह [द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-जालि० शक-११९५ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेप-इसमें लेखनकाल-''शकवर्षं वाणपदार्थकलाघररूपसंख्येयं'' अर्थात् शालिवाहन शक११९५ लिखा है। इसमें वालचन्ददेवकी कन्नड वृत्ति भी है।

### ग्रन्थ नं० ४१।

ह्र दृज्यसंगह [द्रृज्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । विषय-सिद्धान्त । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'गोम्मटसार' (जीवकाण्ड , के कुछ पत्र और संदृष्टि भी है ।

### ग्रन्थ नं ० ५०।

६६ द्व्वसंगह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रति-पंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेप-इसमें कन्नड वृत्ति भी है ।

#### ग्रन्थ न० १०१।

६७ दव्वसंगह [ द्रव्यसम्भह ]-शाचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-१८ दे । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पिक्त-१२७ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी हैं।

#### ग्रन्थ न० १०१।

६८ द्व्यसंगह [ द्रव्यसग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-३ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-पिक्त-१०२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० १२८ ।

**८६ दव्त्रसंगह [ द्रव्यसमह** ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-५६ । पिनत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रति-पिनत-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेय-इसमें विंस्तृत कन्नड टीका भी है।

#### ग्रन्थ नं ० २३७ ।

१०० द्व्यसंगह [ द्रव्यसम्बह् ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-२७ । पक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रति-पक्ति-१०१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें विस्तृत कन्नड वृत्ति भी है ।

#### ग्रन्थ न० ३००।

१०१ उठ्यसगह [ द्रव्यसग्रह ]-आचार्यं नेमिचन्द्रः । पत्र स०-२० । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पक्ति-८७ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ मं० ३१६।

१०२ द्व्यसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-२० । पिन्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पिन्त-११६ । लिपि-कन्नइ-। भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें विस्तृत कन्नड वृत्ति भी है ।

#### ग्रन्थ न० ४५२।

१०३ द्व्वसगह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-७६ । पिन्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पिन्त-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗴 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें विस्तृत कन्नड टीका भी है।

#### ग्रन्थ न० ४६२।

१०४ द्व्यसंगह [ द्रव्यसम्बह् ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-३६ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पिन्त-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ५३५।

१०५ द्व्वसंगह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-१० । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-पिक्त-१२५ । लिपि-कन्तड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति है। इसके रचियता पण्डित वालचन्द्र हैं। यह शालि० शक ११९५ अगिर सवत्सर कार्तिक कृष्णा पचमीके दिन रची गयी है।

### ग्रन्थ न० ५५२।

१०६ दब्बसगह [ द्रव्यसम्बह् ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-७५ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-पक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य गुद्ध । दणा-अतिजीर्णं तथा खण्डित ।

विशेप-इसमें श्रीव्रह्मदेव कृत सस्कृत टीका है। ग्रथ पूर्ण है, पर वीच-बीच में कुछ पत्र खण्डित है। ग्रन्थ न० ५९८।

१०७ दृष्यसग्रह् ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । न्य म०-१७ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पिक्त-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-मिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेप-इसमें कन्नड टीका है।

### ग्रन्य न० ६३६।

१०८ दृश्वसगह् [द्रव्यसम्भः ]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-७ । पिक्त प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रति-पिक्त-४० । लिपि-कन्नट । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विगेप-इसमें ७७ गायाएं है।

#### ग्रन्य न० ६७८ ।

१०६ दृज्यसगृह [ द्रज्यसंप्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-५९ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पिनत-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । शालि० शक १६६८ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेप-इसमें पण्डित बालचन्द कृत कन्नड टीका है। यह टीका शालि॰ शक ११९५ आंगीरस सवस्सर कार्निक कृष्णा ५ के दिन रची गयी है।

### प्रन्य न० ६७९।

११० डन्ब्र मगह [ द्रव्यसम्बर् |-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र म०-५ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पन्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-अडगूरुनिवासी मत्यण्णने मुनि जिनदेवके लिये शास्त्रदान-निमित्त इसे लिखा है। इसमें 'अकलं-काष्टक' भी है।

### यन्य न० ६८९।

१११ दब्बसंगर् [ द्रब्यमंप्रर् ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-१८६ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पक्ति-८४ । लिपि-कन्नह । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेप-इसमें विस्तृत कन्नड टीका भी है।

### ग्रन्थ न० ६९६।

११२ दन्त्रमगह [द्रन्यसग्रह्]-त्राचार्यं नेमिचद्र । पत्र स०-६३ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कलाड टीका है।

#### ग्रन्थ न० ७८२।

११३ दृ**वसगह** [ द्रव्यसमह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-५७ दै । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिक्त-६२ । लिपि-कन्नष्ठ । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

### ग्रन्थ नं० ८०९।

**१९४ द्व्वसगह [ द्रव्यसंग्रह** ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-३० । पक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

#### ग्रन्थ न० ८१३।

११५ द्व्यसंगह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-९६ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रति-पत्र-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ८१५।

११६ टन्चसगह [ द्रव्यसग्रह् ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-२५ । पिन्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रति-पिनत-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-इसमे फन्नड टीका है।

### ग्रन्य न० ८१९ ।

११७ द्व्यसंगह् [ द्रव्यसम्बद्घ ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-६ । पन्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रति-पक्ति-९१ । लिपि-क्रन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗴 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्य न० ८८० ।

१९८ द्व्यसंगह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द । पत्र स०-३ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पित-९० । लिपि-कन्नद । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दत्रा-सामान्य ।

विशेय-इसमें कन्नड टीका है।

#### ग्रन्य न० ८९ ।

११६ द्रव्यसंग्रहलघुवृत्ति-पण्डित वालचन्द । पत्र स॰-३४ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-९५ । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विपय-सिद्धान्त । लेखनकाल-शालि॰ शक ११९५ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-वृत्तिके रचियता वालचन्द्र भट्टारक नेमिचन्द्र तथा अभयचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य है ।

#### ग्रन्थ न० ७५५।

१२० नवपदार्थनिश्चय-वादीर्मासह । पत्र स०-१६ । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-९६ । लिपि-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा सामान्य ग्रद्ध । दगा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० २६८।

१२१ पटार्थसार-आचार्य माघनन्दी । पत्र स०-६३ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत, संस्कृत तथा कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- ४ । अपूर्ण तथा शद्ध । दशा-जीर्ण ।

### ग्रन्य न० ३८२।

१२२ पदार्थं सार-आचार्यं माघनन्दी । पत्र स०-४२ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ३९२ ।

१२३ पदार्थे सार-आचार्य माघनन्दी । पत्र स०-९१ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ४९१ ।

१२४ पदार्थमार-आचार्य माघनन्दी । पत्र म०-५० । पन्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपन्ति-१५० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । अपूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्णे ।

### ग्रन्थ न० ५६३।

१२५ पदार्थसार-आचार्य माघनन्दी । पत्र स०-२५ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीण तथा खण्डित ।

### ग्रन्थ न० ८०७।

१२६ पदार्थस्नार-आचार्य माघनन्दी । पत्र स०-६६ । पितत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपित्त-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणं। ग्रन्थ न०४१

१२७ पयडिसमुक्तित्त [प्रकृतिसमुत्कीतन]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-१० । पिक्त प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिक्त-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । विशेष-यह 'गोम्मटसार' [ कर्मकाण्ड ] का एक प्रकरण हैं ।

#### ग्रथ न ५०।

१२८ पयडिममु कत्ताण [ प्रकृतिसमुत्कीर्तन ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०--२१ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । सक्षर प्रतिपक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखननकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-इसमें कन्नड टीका है।

#### ग्रन्थ न० २८१।

१२६ पग्रडि नमुष्कित्तण [प्रकृतिममुस्कोर्नन ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१६ई । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०३ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है।

### ग्रन्थ न० ३१३ ।

१३० पग्रहिममुक्तित्ता [प्रकृतिममुक्तित्त ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-५६ । पन्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-इसमे संस्कृत छाया एव कन्नड वृत्ति भी है।

#### ग्रन्थ नं० २१/।

१३१ पर्यं ह न तहु।ग [ प्रकृति मस्यम्यान ो की टीका-आचार्यं कनकनन्दी । पत्र स०-६ । पक्ति प्रति-पत्र-१५ । अक्षर प्रातपक्ति-२०० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ७५५।

१३२ परमागमसार-श्रुतिमुनि । पत्र स०-६ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यो तो यह ग्रथ प्राकृतमें है । पर अन्तमें थोडी सी टिप्पणी संस्कृतमें दी गयी है ।

#### ग्रन्थ न० ४५८।

१३३ परमागमसार : । पत्र स०-६। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-५४। लिपि-कम्नड। माषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

### ग्रन्थ न० ७५८।

१३४ परमागमसार : । पत्र स०-३ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ४५६।

१३५ पवयणसार [प्रवचनसार ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र स०-१३७ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । सक्षर प्रतिपिक्त-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें मुनि पद्मनित्कृत कन्नड तात्पर्यवृत्ति भी है।

#### ग्रन्थ न० ५३५।

१३६ पवयणसार [प्रवचनसार ]-आचार्यं कोण्डकुन्द । पत्र स०-१० । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०८ । लिपि-कन्तड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें आचार्य अमृतनन्दि कृत 'तत्त्वदीपिकां' नामक संस्कृत वृत्ति भी है।

#### ग्रन्थ न० ५३६ ।

१३७ पवयग्रसार [ प्रवचनसार ]-आचार्यं कोण्डकुन्द । पत्र स०-१०५ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर । प्रतिपक्ति-१ २ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्णं ।

विशेष-इसमें 'पचास्तिकायप्रामृत' के कुछ पत्र है , एव मस्कृत व्याख्या भी है ।

### ग्रथ न० ६९२।

१३८ पवयग्गमार [प्रवचनसार ]-आचार्यं कोण्डकुन्द । पत्र स०-८ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१२८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

#### ग्रथ न० ७५६।

१३६ पवयणसार (प्रवचनसार)-आचार्यं कोण्डकुन्द । पत्र स०-८ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पिनत-१२• । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं तथा खण्डित ।

#### ग्रथ न० ५५४।

१४० पंचपरूवणा-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-६ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🔀 पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-यह 'गोम्मटसार' [ जीवकाण्ड ] का एक भाग है ।

# ग्रथ नं० ३१ ।

१४१ पंचसत्तावएगा [ सप्तपचाशवास्त्रव ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र म०-३७ । पिन प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिक्त-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । शुद्ध तथा

अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह 'गोम्मटसार' का एक प्रकरण है। इसमें कन्नड टीका भी है।

### ग्रथ न० १५४।

१४२ पंचसंमारिवस्तर-पत्र स०-२ । पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-११०। लिपि-कन्नस । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रथ न० ३१८।

१४३ पंचित्थकाय-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र स०-५ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा- प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- ४ । अपूर्ण तथा शृद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति भी है ।

### ग्रथ न० ६९२।

१४४ पचित्थकाय-आचार्यं कोण्डकुन्द । पत्र स०-२० । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत -१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें मलधारी पद्मप्रभ देव कृत कन्नड टीका भी है ।

#### ग्रथ न० ७५६।

१४५ पचित्यकाय-साचार्यं कोण्डकुन्द । पत्र स०-३६ । पित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं । प्रथ न - १४१ ।

१४६ बन्धूपदेश-पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०-३ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-९८ । लिपि-कन्नढ । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० ५५४ ।

१४७ बन्धूपदेश-पण्डित बालचन्द्र । पत्र स०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ न० ७९७ ।

१४८ बन्धूपदेश-पण्डित बालचन्द्र । पत्र स०-३ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- ४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कर्म-बन्धो का लक्षण कहा गया है ।

#### ग्रन्थ न० ९ ।

१४९ मोक्खपाहुड [ मोचप्राभृत ]-आचार्यं कोण्डकुन्द । पत्र स०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिक्त-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह १०५ गाथाओमें मूलमात्र है।

#### ग्रन्य न० २०९।

१५० मोक्खपाहुड [ मोद्धप्राभृत ]-जाचार्य कोण्डकुन्द । पत्र स०-७ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष -इसमें बीच बीच में सस्कृत टीका भी है।

#### ग्रन्थ न० ४९४।

१५१ मोक्खपाहुड [ मोत्तप्रभृत ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र स०-८। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-१२५। िलिप-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाळ- × । अपूर्ण तथा सामान्य

1 1 1 1 1

शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेप-इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ त० ५२९।

१५२ मोक्खपाहुड [मोत्तप्राभृत ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र स०-१६ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत, । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेप-इसमें कन्नड टीका है।

#### ग्रन्थ न० ७५८ ।

१५३ मोक्खपाहुड [मोत्तप्राभृत ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र स०-११६ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें पण्डित बालचन्द्रकृत कन्नड टीका है ।

#### ग्रन्थ न० ७९०।

१५४ मन्द्रमबोधिनी-आचार्यं अभयचन्द्र । पत्र स-२९ । पक्ति प्रतिपत्र -८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । माषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं तथा खण्डित ।

विशेप-यह गोम्मटसार [ पचसप्रह ] की वृत्ति है।

#### ग्रन्थ न० २१।

१५५ लद्धिसार [ लिंघसार ]-शाचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-४५ । पन्ति प्रतिपत्र-१६ः। अक्षर प्रतिपन्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा- उत्तम ।

विशेप-इसमें सस्कृत टीका भी है।

#### ग्रन्थ न० ४२ ।

् १४६ लिख्सार [लिब्सार]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-१० । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा- उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ४९।

१५७ लद्धिसार [लिब्धसार]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-२६ । पन्ति प्रतिपत्र-९'। अक्षर प्रतिपन्ति-९१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्ता लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा शुद्ध ।' दशा-सामान्य'।

विशेष-इसमें 'गोम्मटसार' के भी कुछ पत्र है।

#### ग्रन्थ न० २९८।

१५८ लिखसार [लिब्धसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-४० । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पक्ति-५७ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ४१९।

१५६ लद्धिसार [लिंग्यिसार]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-६७ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-१३६ । लिंग्य-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा- उत्तम ।

विशेष—्इसमें केश्ववर्णी कृत संस्कृत टीका है।

#### ग्रन्थ न० ५५१

१६० तिद्धसार [ तिब्धसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-८ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-८० । लिप-क्षड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-अतिजीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका एव न्यायसम्बन्धी कुछ खण्डित पत्र भी हैं ।

#### गन्थ न० ५५७।

१६१ लिखिसार [ लिबिसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-९२ । पनित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-१०० । लिपि-कञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ५६० ।

१६२ लिख्सार [ लिब्धसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-१६ । पनित प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपन्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

#### ग्रन्थ न० ५०।

१६३ बीसपरूवणा [विशितिप्ररूपणा]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-५८ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-९५ । लिपि-कन्नड । आषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-शालि०शक १४४० । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-इसे वोम्मि सेट्टिके पुत्र चिन्दि सेट्टिने श्री वर्धमानदेवके लिये लिखवाया है। इसमें विस्तृत कन्नड टीका भी है, इसका अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है-

''स्याद्वादाचलकेसरीकुमतजालक्षोणीभृद्वासव श्रीवालेन्दुपदार्रावदमकरन्दानन्दपुष्पन्धय ।

सिद्धान्तामृतवाधिवर्धनकरप्रालेयरोचि सदा जीयाद् भूनुतपद्मनित्द्यितपस्त्रैविद्यचकेश्वरः॥ १ यह गोम्मटसार (जीवकाण्ड)का अपर नाम ह।

#### ग्रन्थ न० ७७।

१६४ वोसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-६७ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-१२१ । लिपि-कन्नड । माषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-शालि०शक१६७३ । पूर्णं तथा शृद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति है। वृत्तिके रचियता अभयचन्द्र सिद्धान्तचन्नवर्तीके शिष्य केशण्ण है। इसे मूडविद्रीके त्रिभुवनच्डामणि मन्दिरमें स्थानीय अय्यण्ण सेट्टिने श्री मुनि श्रुतकीर्तिके लिये लिखा है। यह गोम्मटसार [जीवकाण्ड] का अपर नाम है।

#### ग्रन्य न० २४५

१६५ वीसपरूवणा [विशतिप्ररूपणा]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-२९ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१०८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा शुद्ध- दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें मुनि वालचन्द्रके अग्रशिष्य त्रैविद्यचकवर्ती पद्मप्रभके द्वारा रचित विस्तृत कन्नड वृत्तिं भी है। ग्रन्थ न० २६०।

१६६ वीसपरूवणा [विशतिप्ररूपणा]—आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-१०० । पनित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा शृद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेप–इसमें बालचन्द्रके शिष्य त्रैविद्यचक्रवर्ती पद्मप्रभके द्वारा रचित कन्नड टी्का है।

#### ग्रन्थ न० २७३।

१६७ वीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]-आचार्यं नेमिचन्द्र। पत्र स०-२८ । पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-५६। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लखनकाल 🗙 । पूर्णं तथा भृद्ध। दशा-सामान्य।

विशेप-इसमें त्रैविद्यचक्रवर्ती पद्मप्रभ कृत कन्नड टीका है।

ग्रन्थ न० ३४०।

१६८ वीसपरूवणा [ विंशतिप्ररूपणा ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-१३२ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य भुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें विस्तृत कन्नड टीका है। इसके टीकाकार श्री पद्मप्रम त्रैविद्यचक्रवर्ती है।

ग्रन्थ न० ४५२।

१६९ वीसपरूवणा [ विंशतिप्ररूपणा ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-५८ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिन्त-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें विस्तृत फन्नड टीका है।

ग्रन्थ न० ५४० ।

१७० वीसपरूवणा [ विंशतिप्ररूपणा ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-१६ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न०५५३।

१७१ वीसपरूवणा [विशतिप्ररूपणा ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-३३ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रृतिपक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल ४ । अपूर्णं तथा सामान्य ृशुद्ध । दशा-अति जीणं ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ न० ५७१।

१७२ वीसपरूवणा [ विशतिप्ररूपणा ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-५१ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेप-इसमें आचार्य पदाप्रभदेव कृत कन्नड टीका है।

ग्रन्थ न० ५७४।

१७३ वीसपरूवणा [ विंशतिप्ररूपणा ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्ता । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-इसमें पद्मप्रभ त्रैविद्यदेव कृत कुछ सस्कृत पद्य भी है ।

ग्रन्थ न० ५७७ ।

१७४ वीसपरूत्रणा [ विंशतिप्ररूपणा ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१२ । पक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें अमरकोश पदवृत्ति के भी ७ पत्र है।

#### ग्रन्य न० ५८२ ।

१७५ वीसपरूवणा [ विंशतिप्ररूपणा ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-८३ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपत्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-मिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । द्या-मामान्य ।

### ग्रन्थ न० ६०४।

१७६ वीसपरुवणा [ विशतिप्ररूपणा ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-१० । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रथ नं० ६१५।

१७७ वीसपरूवणा [ विशतिप्ररूपणा ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र म०-४३ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य गृद्ध । दशा-जीर्ण ।

### ग्रन्य नं० ६८९।

१७८ वीसपरूवणा [ विश्वितप्ररूपणा ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । वक्षर प्रतिपक्ति-९० । लिनि-कन्नड । मापा-प्राञ्चत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें कल्नड टीका है तथा, प्रमेयरत्नमाला' एव 'सागारधर्मामृत' के कुछ पत्र भी है। प्रन्य न० ७०६।

१७६ वीसपरूत्रणा [विश्वतिप्ररूपणा]-आचार्यं नेमिचन्द्र। पत्र सं०-३२। पंक्ति प्रतिपत्र-६। वक्षर प्रतिपत्रिन-२८। लिपि-कन्तड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। पूर्णं तया सामान्य शृह्र। दशा-मामान्य।

#### ग्रन्य न० ५६९।

१८० सत्तिभंगी [ सत्त्वत्रिभगी ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-१९ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अझर प्रतिगक्ति-९० । लिपि-कन्तड । मापा-प्राञ्चन । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तया सामान्य ज्ञुइ । दशा-मामान्य ।

विशेष-इनमें संस्कृत टीका भी है।

### ग्रन्य न० ५३७।

१८१ समयपाहुड [ समयपाभृत ]-जाचार्य कोण्डकुन्द । पत्र स०-३ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रति पक्ति-१०० । लिपि-कन्नट । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीणं ।

#### ग्रन्य नं० ७३६।

१८२ ममयसार-किव वृह्यदेव । पत्र मं०-५६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कंन्नड । विषय-सिद्धान्त-वर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्य न० २३२ ।

१८३ सिद्धराशिवर्णन- · · · । पत्र स०-४। पिन्त प्रतिपत्र-८ । असर प्रतिपिन्त-७०। लिपि-कल्नड । मापा-कल्नड । विपय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्य न० २९२ ।

१८४ सिद्धराशिवर्णन-\*\*\*। पत्र सं०-२३। णक्त प्रतिपत्र-१०। यक्षर प्रतिपंक्ति-८४। लिपि-कत्नड। नापा-कत्नड। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य सुद्ध। दशा-सामान्य।

### ग्रम्य न० ३९८।

१८५ सिद्धराशिवर्णन—कल्याणकीर्ति । पत्र स०-३३ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रथ न० ९

१८६ सिद्धन्तसार-आचार्य जिनचन्द्र । पत्र स०-२ । पित्त प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिक्त-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष--यह ८१ गाथाओमें मूल मात्र है ।

#### ग्रथ न० ५१।

१८७ सिद्धन्तसार-आचार्यं जिनचन्द्र । पत्र स०-२६ । पक्ति प्रतिपेत्रं-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । अन्तिम पद्य---

प्रभाचन्द्रं स्तुवे नित्य मोक्षमार्गंप्रकाशकम् । अमेया यद्गुणा लोके प्रयान्ति गणनीयताम् ॥ १ ॥ तस्मै भव्यगुणाम्भोधिवर्घनाय महीयसे । नष्ट जगत्तमो यस्मात्प्रभेन्द्रमुनये नम ॥ २ ॥ विशेप—इसमें प्रभाचन्द्रकी कन्नड टीका भी है ।

#### ग्रथ न० १०१।

१८८ सिद्धन्तसार-आचार्य जिनचन्द्र । पत्र स०-४ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-८९ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रथ न० १४५ ।

१८६ सिद्धन्तसार्-\*\*\* । पत्रस०-५ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-९१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नट । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रथ न० २३७ ।

- १६० सिद्धन्तसार-आचार्यं जिनचन्द्र । पत्र स०-४ । पिनत प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिनत-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रथ न० २८३ ।
- १६१ सिद्धन्तसार-आचार्यं जिनचन्द्र। पत्र स०-३। पिन्त प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिन्ति-१३०। लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रंथं न० ५४४।
- १६२ सिद्धन्तसार-आचार्य जिनचन्द्र । पत्र सं--९ । पिक्त पृतिपत्र-१० । अक्षरं पृतिपिक्त-१६० । लिपि-कन्नड । भाषा-पृक्कत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी हैं।

### ग्रथ न० ६९२।

१९३ सिद्धन्तालाव · · · · । पत्र स०-२०। पक्ति पृतिपत्र-९। अक्षर पृतिपंक्ति-९०। लिपि-कन्नड । मापा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा उत्तम ।

# विशेष-इसके लेखक माघनन्दी हैं।

### ग्रथ न० १८१

# विषय-अध्यात्म

### ग्रन्थ न० १४।

१ त्रातमानुशासन—आचार्य गुणभद्र । पत्र स०-१२५ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यातम । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

### ग्रन्थ न० ७५।

२ स्त्रात्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र स०-४० । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-१२२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति है । वृत्तिकार माघनन्त्री है । इनका काल शालि० शक १३१४ है । ग्रन्थ न० ८७ ।

३ स्त्रात्मानुशासन-आचार्यं गुणभद्र । पत्र स०-१४ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत्-७९ । लिपि-कन्तड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० १०१ ।

४ स्त्रात्मानुशासन-आचार्यं गुणभद्र । पत्र स०-१० । पिनत प्रतिपंत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-१२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-- 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० २१७ ।

४ स्त्रात्मानुशासन-आचार्यं गुणभद्र । पत्र स०-१९ । पिनत प्रतिपत्रं-६ । अक्षर प्रतिपिनत-५७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० २३७ ।

६ त्र्यात्मानुशासन-आचार्यं गुणभद्र । पत्र स०-९ । पित प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपित-७६ । लिपि-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विपय-अध्यात्म । लेखनकाल- 🗴 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३२० ।

७ स्नात्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र स०-१५ । पिन्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिन्त-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यातम । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३२८ ।

द श्रारमानुशासन-आचार्य गुणमद्र । पत्र स०-३० । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यातम । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ४४३।

र श्रात्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र स०-३६ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें प्रभाचन्द्रकृत संस्कृत टीका भी है ।

### ग्रन्थ न० ४८५।

१० श्रात्मानुशासन-आचार्यं गुणमद्र । पत्र स०-३९ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विपय-अध्यात्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

### ग्रन्थ न० ४९९ ।

११ त्रात्मानुशासन-आचार्यं गुणभद्र । पत्र स०-८ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षरं प्रतिपक्ति-१०९ । लिगि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यातम । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं ।

#### ग्रन्थ न० ५०५।

१२ श्रात्मानुशासन-आचार्यं गुणभद्र । पत्र स०-१० । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ५०८।

१३ द्यात्मानुशासन-आचार्यं गुणभद्र । पत्र स०-२५ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्णं । ग्रन्थ न० ५५४।

१४ स्त्रात्मानुशामन-आचार्य गुणभद्र । पत्र स०-११ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-८५ । लिपि-कन्नष्ट । मापा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ५५५।

१५ स्रात्मानुशासन-आचार्यं गुणभद्र । पत्र स०-५१। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-१००। लिपि-कन्नड । भाषा-म्रस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेप-इसमें कन्नड टीका है तथा 'प्रवचनसार' के भी ९ पत्र है।

#### ग्रन्य न० ५७५।

१६ स्त्रात्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र। पत्र स०-१५। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-८४। लिपि-कन्नड । भापा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें संस्कृत टीका है।

#### ग्रन्थ न० ७२१ ।

१७ स्रात्मानुशासन-आचार्यं गुणभद्र। पत्र स०-८। पनित प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-११२। लिपि-कन्नड । भापा-सस्कृत । विपय-अध्यातम । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । ग्रन्थ न० ७२३।

१८ स्रात्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र स०-१७ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । वियोप-इसमें हस्तिमल्ल भट्टोपाध्याय कृत 'ऋषभनाथगद्य' के २३ पत्र, एव मृनि शुभकीर्ति कृत 'बारोग्यस्तवन' के २५ पत्र भी सम्मिलित हैं।

### ग्रन्थ न० ७६२ ।

१६ त्र्यात्मानुशासन-आचार्यं गुणभद्र । पत्र स०-२६ । पन्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपन्ति-७८ । लिपि—कन्नड । भापा—सस्कृत । विपय—अध्यात्म । लेखन काल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । ग्रन्थ न० ७४८।

२० स्थारमञ्योति - • । पत्र स० - १५। पक्ति प्रतिपत्र - ८। अक्षर प्रतिपक्ति - २९। लिपि - कन्नड । भाषा-कन्न्ड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३९८।

२१ चारुतस्वभेदाष्ट्रक-कल्याणकीर्ति । पत्र स०-१ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-७० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—अध्यात्म । लेखनकाल— 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम । ग्रन्थ न० २०२।

२२ चिन्मयचिन्तामणि-मुन् कल्याणकीर्ति । पत्र स०-५ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-५६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-अध्यातम। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० २३२।

२३ चिन्मयचिन्तामणि-कल्याणकीर्ति । पत्र स०-६। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-४९। पिलि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्य नं० ३४८।

- २४ चिन्मयचिन्तामिण्-कत्याणकीति । पत्र म०-५ । पिक्न प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यातम । लेकनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं ८ ३६८ ।
- २५ चिन्मयचिन्तामिण्-कन्याणकोति । पत्र म०-७ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्ति-६० । लिपि-कन्नट । मापा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-८ । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्य न० ३९८ ।
- २६ चिन्मयचिन्तामिंग्-कल्याणकीर्ति । पत्र मं०-६। पिन प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपित्रि-७०। लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-जध्यात्म । लेप्वनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ६६८ ।
- २७ चित्मयचिन्तामिणि-जन्याणकीर्ति । पत्र न०-५ । पिक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । निपय-अव्यातम । लेखनकाल- ४ । अपूर्ण तथा मामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । पत्र्य नं० २९२ ।
- २८ चिन्मयचिन्तामिण्-सिंहराज । पत्र स०-३ । पत्रिन प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपत्रि-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । त्रिपय-अध्यात्म । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा सामान्य गृद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ७५ ।
- २६ जीवसम्नोघन-किव वन्युवर्म । पत्र न०-५२ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-९६ । लिपि-कन्नड । विषय-अव्यातम । लेवनका रु- ४ । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्य नं० १८५ ।
- ३० लीवसम्बोबन-त्रन्युवर्म । पत्र म०-७२ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-९५ । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-अध्यातम । लेजनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० १९५ ।
- ३१ जीवसम्बोयन-वन्बूवर्म । पत्र म०-१२० । पंक्ति प्रतिपत्र- ॥ अक्षर प्रतिपक्ति- ६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अव्यातम । लेखनकाल- ४ । पूर्ण नया मामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष--रचनाकाल-शालि० वक १४४४ चित्रमानु सवत्मर आव्वयुज शुक्ला ७ शुक्रवार । प्रन्य न० २१६ ।
- ३२ जीवसम्बोधन-बन्धुवर्म । पत्र न०-८३ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-११० । लिपि-क्त्रड । भाषा -कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा गृद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्य न० ४२६ ।

३३ जीवसम्बोधन-वन्वुवर्म । पत्र न०-१३३ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-९० । लिपि-कन्नड । नापा-कन्नड । विषय-अव्यातम । लेक्नकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य गुट्ट । दशा-उत्तम ।

विशेष—नेमिनदेवके जामाना काज कुन्दय नेट्टिने नन्दीश्वरव्रतीद्यापनके उपलक्ष्यमें इसे शास्त्रदान किया है।

#### ग्रन्य न० ६८५।

३४ जीवसम्बोधन-बन्बुवर्म । पत्र म०-२०६ । पक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-४० । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-अध्यातम । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा मामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ७९०।

३५ जीवसम्बोधन-बन्बुवर्म । पत्र म०-२१ । पन्नि प्रतिपत्र्-७ । बद्धर प्रतिपंत्र्नि-६९ । लिपि-कप्तड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेबनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य गृह । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

#### ग्रन्थ न० ५६२।

३६ जोगसार [ योगसार ]-आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र स०-५७ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-५७ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-आनन्द सवत्सर कार्तिक शुक्ला १ मञ्जलवारके दिन सुगुरिनवासी अन्तण्णके पुत्र चन्द्रण्णने

इसे लिखा है।

#### ग्रन्य न० ६६३।

३७ जोगसार [ योगसार ]-आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र स०-९। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रति-पक्ति-५७। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दगा-सामान्य ।

विशेप-इसमें 'गोम्मटसार' आदि के भी कुछ पत्र हैं।

#### ग्रन्य न० ६८९।

३८ जोगसार [ योगसार ]-आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र स०-२६ । पिन प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिन्ति-९० । लिपि-कन्नड । भापा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेप-इसमें पद्मनित्द कृत कन्नड टीका है, एव 'आनन्दाप्टक'के कुछ पत्र भी है।

#### ग्रन्य न० ७०७।

३६ जोगसार [ योगमार ]-आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र स०-९२ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिन्त-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-अव्यात्म । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-इसमें पद्मनिन्द कृत कन्नड ठीका है।

#### ग्रन्थ न० ८२५।

४० जोगसार [ योगसार ]-आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र स०-३० । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिन्त-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० २३२।

४१ ज्ञानसार- । पत्र सं०-६। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-८६। लिपि-कन्नड। माषा-कन्नड। विषय-अन्यान्म। लेखनकाल-शालि शक १४८७। पूर्ण तथा गुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेप-यह ग्रन्य शालि॰ शक-१४८७ कोवन सवत्सर श्रावण शुक्ला १३ सौम्यवारके दिन बद्धमान मण्णके द्वारा लिखा गया है।

### ग्रन्थ न० ४५८ ।

४२ ध्यानत्तच् ग्ण- । पत्र स०-८ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भोपा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ४६२।

४३ घ्यानलचाग्- ' । पत्र स०-१। पिनत प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिन्ति-८२। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

### ग्रन्थ न० ६८९।

४४ ध्यानलच्या — ः । पत्र म०-२। पित्त प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपित्त-९०। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इमें 'लघुप्रायश्चित' तथा [ कन्नड टीका सहित ] 'गोम्मटसार' [ जीवकाण्ड ] के भी कुछ पत्र हैं।

### ग्रन्थ न० ७५५।

४५ ध्यानस्तव-भास्करनन्दी । पत्र स०-२ । पत्रित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपत्रित-९३ । लिपि-कन्नड । भापा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह गन्य प्रकाशनीय है।

#### ग्रन्थ न० ३५४।

४६ ध्यानखरूप र । पत्र स० - २। पक्ति प्रतिपत्र - ७। अक्षर प्रतिपक्ति - ५०। लिपि - कन्नड। भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दगा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ३८३।

४७ ध्यानामृत- ' '। पत्र स० १२। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपति-४९ । लिपि-कन्नछ। भापा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० २३७।

४८ निजात्साष्टक- ' । पत्र स०-१। पक्ति प्रतिपत्र-१२। अक्षरप्रतिपक्ति-७५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ३४२।

४९ परमप्पपयासु [ परमात्मप्रकाश ]-आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र स०-७७ । पन्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य।

विशेप-इसमें मुनि पद्मनन्दीकी कन्नड टीका भी है। सेनगणीय मुनिमद्रदेव के जिष्य सेवतूर मुनियणण ने कोट्टूर निवासी ज्ञानश्री के लिये इसे लिखवाकर दिया था।

#### ग्रन्थ न० ५१०।

५० परमप्पयासु [ परमात्मप्रकाश ]-आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र स०-३० । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति–१३०। लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । लेखनकाल– 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें मुनि पदानन्दिकृत कन्नड टीका है।

# गन्थ न० ५५७।

**५१ परमाप्यायु [ परमात्मप्रकाश** ]-आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र स०-३५ ।पिकत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-१००। लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-×'। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेप-इसमें संस्कृत तथा कन्नड टीका भी है।

### ग्रन्थ न० ८२७।

**५२ परमात्मक्योति- \* \* \* ।** पत्र स०-१० । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कञ्चड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विञेप-इसमें 'कियापाठ' सादि के भी कुछ पत्र है-।

# ग्रन्थ न० ३९८।

**५३ भावनाष्ट्रक-** । पत्र स०-१६ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-८१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अव्यात्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ४०० ।

५४ भावनाष्ट्रक- ःः। पत्र स०-१६ । पृक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- 🗙 ः। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० २३७।

**४४ योगामृत- : : ।** पत्र स०-१२ । पक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नद्य । विषय-अध्यातम । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ३८३ ।

**५६ योगामृत- ।** पत्र स०-५३ । पनित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० १६०।

**५७ रत्नाकरशतक**—कवि रत्नाकर। पत्र स०-१७। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-४५। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ३५३।

प्द रत्नाकरशतक-कवि रत्नाकर। पत्र स०-२३ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-३४। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तया शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेप-रक्ताक्षि सवत्सर, भाद्रपद शुक्ला ७, वृहस्पतिवारके दिन रामराजने इसे लिखा है।

### ग्रन्य ने० ६३१ ।

**४६ रलाकरशतक**-कवि रत्नाकर। पत्र स०-१६।पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-४९। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । विशेप-इसमें सस्कृत ज्योतिप तथा कन्नड अनुप्रेक्षा सम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

#### ग्रन्थ न० ८३० ।

६० रत्नाकरशतक-कवि रत्नाकर। पत्र स०-६। पक्ति प्रतिपत्र-१३। अक्षर प्रतिपक्ति-११०। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अ॰यात्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्य न० ८३२ ।

६१ रत्नाकरशतक-कवि रत्नाकर। पत्र स०-५। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-२१। लिपि-नन्नड । भाषा—कन्नट । विषय—अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम । ग्रन्थ न० ७९० ।

६२ विषमपद्व्याख्यान- ''। पत्र सं०-१५। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-१२५। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेप-यह आ॰ गुणभद्रकृत 'आत्मानुशासन' की टीका है ।

### ग्रन्थ न ०३९८।

६३ शतकत्रय-कवि रत्नाकर। पत्र स०-३४। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-५५। लिप-कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—अध्यात्म आदि । लेखनकाल— 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष-इसमें 'रत्नाकरशतक' 'अपराजितेश्वरशतक, एव 'त्रिलोकशतक' है।

### ग्रन्थ न० ४७ ।

६४ शतकद्वय–कवि रत्नाकर । पत्र म०–२६ । पक्ति प्रतिपत्र∸७ । अक्षर प्रतिपक्ति–८० । लिपि– कन्नड । भाषा-कन्नट । विषय-अध्यात्म आदि । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० २७७ ।

६५ शतकद्वय-कवि रत्नाकर। पत्र स०-१७। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-४४। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यातम आदि । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा गुद्ध । दगा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० २३२ ।

६६ घोडशभावनापद्य- ११११ पत्र स-६। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-६२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड । विषय-अन्यातम् । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ६२८।

६७ सद्घोधचन्द्रोदय-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-६ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१११ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमे कन्नड टीका है ।

#### ग्रन्थ न० ३६।

६८ समयसार-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-१०७ । पनित प्रतिपत्र-३ । अक्षर प्रतिपनित-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यातम । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशय-इसमें कन्नड वृत्ति भी है ।

### ग्रन्थ नं० ३५५ 1

६६ समयसार-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र स०-५ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

### ग्रन्थ न० ५४०।

७० समयसार-आचार्यं कोण्डकुन्द । पत्र स०-७९ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति- जीर्णं तथा खण्डित ।

विशेष-इसमें 'आत्मख्याति' नामक संस्कृत टीका भी है।'

### ग्रन्थ न० ५५३।

७१ समयसार्-आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र स०-५९ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य श्रद्ध । दशा-अति जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेप-इसमे ' आत्मख्याति' नामक सस्कृत टीका भी है।

### ग्रन्थ न० ७५६। '

७२ समयसारचूितया-आचार्यं कोण्डकुन्द । पत्र स०-७ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-११९ । िलिप-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यातमे । लेखनकाल- 🗴 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं तथा खण्डित । प्रन्थ न ० ३१७ ।

७३ समयसारवृत्ति-आचार्यं अमृतचन्द्र । पत्र स०-१५ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-८९ । िर्लाप-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं । ग्रन्थ न० ४९ ।

७४ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-१६ । पित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-९९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यातम । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

# ग्रन्थ न० १०१।

७५ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-२१ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें आचार्य मेघचन्द्र त्रैविद्य कृत कन्नड वृत्ति है ।

### ग्रन्थ न० १०१।

७६ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद। पत्र स०-५। पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-८७ । लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ः

#### ग्रन्थ न० १६२ ।

. ७७ समाधिशतक-आचार्यं पूज्यपाद । पत्र स०-१६ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-८८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० १८२ ।

७८ समाधिशतक-भाचार्यं पूज्यपाद । पत्र स०-१० । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रांतपक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भापा-सस्कृत । विपय-अध्यात्म । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं । विशेप-इसमें सस्कृत टीका है ।

#### ग्रन्थ न० ३१६।

७६ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-१४३ । पित्र प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपित्त-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अञ्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें महाकवि पम्मके पुत्रके लिये यति मेघचन्द्रके द्वारा रचित कन्नड टीका है।
ग्रन्थ न० ४४३।

८० समाधिशतक-याचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-१४ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपाक्त-१३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें प्रभाचन्द्र कृत संस्कृत टीका है ।

#### ग्रन्थ न० ४६२।

८१ समाधिशतक-आचार्यं पूज्यपाद । पत्र स०-३ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-८७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यातम । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ४७६ ।

ट्र समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-१३५ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-५० । छिपि-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-अध्यातम । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इममें कन्नड टीका है ।

#### ग्रस्य य० ४९२।

८३ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-६। पक्ति प्रतिपत्र-५ । बक्षर प्रतिपक्ति-७८। लिपि-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-अभ्यातम । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ५०९ ।

८४ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-१२ । पाक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यातम । लेखनकार- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीण । विशेष-इसमें यित मेघचन्द्र कृत कन्नड टीका है ।

# ग्रन्थ न० ५१७ ।

द्ध समाधिशतक—आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अब्यातम । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ग्रन्थ न० ५५२ ।

दि समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-१९ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेप-इसमें पण्डित प्रभाचन्द्रकृत संस्कृत टीका है । टीकाका अन्तिम भाग-''श्री जयसिंहदेवराज्ये श्रीमद्धारानिवासिना परापरपरमेष्ठिप्रणामोपाजितामलपुण्यनिराकृताखिलमलकलङ्केन श्रीमत्प्रभाचन्दपण्डितेन समाधिशतकटीका कृतेति ।"

#### ग्रन्थ न० ६३६।

८७ समाधिशतक-आचार्यं पूज्यपाद । पत्र स०-१३६ । पनित प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रति पनित-४ । िलिप-कन्नड । माषा-संस्कृत । विषय-अध्यातम । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्यं । ग्रन्थ न० ६८९ ।

८८ समाधिशतक-आचार्यं पूज्यपाद । पत्र स०-२ । पित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिप्रक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथां सामान्य नुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ७५८ ।

द्ध समाधिशतक-आचार्यं पूज्यपाद । पत्र स०- २ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दणा-उत्तम । ग्रन्थ न० ७७१ ।

ह० समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-९ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यातम । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें इप्टोपदेशके भी कुछ पत्र है ।

### ' ग्रन्य न० ७७५।

६१ समाधिशतक—आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-५ । पित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भापा-सस्कृत । विषय-अव्यातम । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न ८०१ ।

**६२ समाधिशतक**-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-९ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-६३ । लिपि-कन्नड । भापा-सस्कृत । विषय-अन्यात्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रन्थ नं० ८३८ ।

, ६३ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-५ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-७० । किपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यातम । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न०४०२ ।

**६४ सहजात्मप्रकाश**—(सग्नह)—आचार्यं कोण्डकुन्द आदि। पत्र स०-१२२।पंक्ति प्रतिपत्र—७। अक्षर प्रतिपक्ति—२८। लिपि—कन्नड। भाषा—प्राकृत , सस्कृत तथा कन्नड। विषय—अध्यात्म। लेखनकाल— ×। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा—सामान्य।

विशेष-'मोक्षपाहुड' 'परमात्मप्रकाश' 'जीवसम्बोधना' आदि ग्रन्थोके इलोक इसमें सग्रह किये गये हैं। प्रकाशमें कन्नड टीका भी है। दुदुमि सवत्सर आश्वयुज शुक्ला ७ के दिन बेलतगडिस्य ब्रह्मसूरिके शिष्य पदुमणने गोमटपुर-निवासी भोगी सेट्टिके पुत्र चउडि सेट्टिके लिये इसे लिखा है।

### ग्रन्थ न० ६०३।

**६५ सहजात्मप्रकाश**—आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-५३ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेप-इसमें कन्नड टीका भी है ।

### ग्रन्थं न० २३७।

१६ स्तरूपभावनाष्ट्रक- । पत्र स०-१।पिक्त प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिक्त-७२। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यातम । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

# ग्रन्थ न० ३५३।

रूप स्वरूपमावनाष्ट्रक ''। पत्र म०-१। पनित प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपन्ति-५८। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यातम । लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

### ग्रन्थ न० २६।

ह्द स्वरूपसम्बोधनपञ्चिवशति-आचार्य अकल द्भदेव । पत्र स०-४ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पक्ति-८० । लिपि-कन्नउ । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेप-कन्नड टीकाकार नयसेनके शिष्य महासेन तथा श्रोता सिद्धान्तचक्रवर्ती वासुपूज्य सिद्धान्तदेवके

डा॰ ए॰ एन॰ उपाध्याय का मत है कि इसके रचियता आचार्य अकल हू नहीं है किन्तु आचार्य महासेन हैं। पर सभी प्रतियोमें अकल हू ही लिखा मिलता है।

### ग्रन्थ न० १०१।

६६ स्वरूपसम्बोधनपद्धविशति-आचार्य अकलद्भदेव । पत्र स० ७ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-पक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेप-इसमें विस्तृत कन्नड वृत्ति भी है। वृत्तिकार प० नयसेनके शिष्य प० पद्मसेन है।

### ग्रन्य न० १०१।

१०० स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशाति-आनार्यं अकलङ्कदेव । पत्र स०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें संस्कृत टीका है ।

#### ग्रन्थ न० १३४।

१०१ स्वरूपसम्बोधनपद्धविंशति-आचार्यं अकलङ्कदेव । पत्र स०-१ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-९८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० १६२।

१०२ स्वरूपसम्बोधनपद्धविशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र स-५ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-९३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें सम्कृत तथा कन्नड टीका है।

### ग्रन्थ न० १६२।

१०३ स्वरूपसम्बोधनपद्धविंशति-आचार्य अकल द्भुदेव । पत्र स०-५ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यातम । लेखनकाल-शालि० शक १३६८ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विगेप-इसमें पण्डित महासेन कृत कन्नड वृत्ति है। यह वृत्ति सूरस्तगणीय वासुपूज्य सिद्धान्तचक्रवर्तीके शिष्य पद्मरमके वास्ते पाण्डित महासेनके द्वारा रची गयी है। पतिलिपिकार वाडगेरे निवासी अण्णि सेट्टिके पुत्र नागण्ण है।

#### ग्रन्थ न० २०९।

१०४ स्वरूपसम्बोधनपद्धविशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र स०-२। पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-९९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अव्यातम । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० २०९।

१०५ स्वरूपसम्बोधनपञ्चिवशिति-आचार्यं अकलङ्कृदेव । पत्र स०-३ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पिक्त-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### गन्थ नं० २५४।

१०६ खरूपसम्बोधनपञ्चित्रंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-२ । पंन्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अन्यातम । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्य नं० ३१६।

१०७ स्वरूप सम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकल ङ्कदेव । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तया शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेप-इसमे नयमेनके शिष्य पण्डित महासेनकृत संस्कृत टीका तथा सिद्धान्तमुनि वामुपूज्य के शिष्य पद्मरस कृत कन्नड टीका भी है।

#### ग्रन्थ नं० ४६२।

१०८ स्वरूपसम्त्रोधनपञ्चितिंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ४७६।

१०६ स्वरूपसम्बोधनपञ्चिविशति-आचार्य अकल ङ्कदेव । पत्र स०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अन्यातम । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेप-इसमें संस्कृत टीका है।

### ग्रन्थ नं ९ ४९२।

११० खरूपसम्बोधनपञ्चविंशति—आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यातम । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ नं ० ५०९।

१११ स्तरूपसम्बोधनपञ्चित्रंशिति-आचार्यं अकलङ्कदेव । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य चृद्ध । दशा-जीर्ण ।

### ग्रन्थ नं० ५१४।

११२ स्वरूपसम्बोधनपञ्चित्रंशिति—आवार्यं अकलङ्कदेव । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यातम । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विगेप-इसमें पद्मरसकृत कन्नड टीका है, साथ ्ही साथ संस्कृत टीका भी।

#### ग्रन्थ नं ० ५२९।

११३ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्यं अकलङ्कदेव । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य गुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-इसमें केशववर्षकृत कप्तड टीका है।

#### ग्रन्थ न० ५५२।

१९४ स्वरूपसम्बोधनपद्धविंशति-आचार्यं अकलङ्कदेव । पत्र स०-८१ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । बक्षर प्रतिपक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका भी है। टीकाका प्रारम्भिक पद्य इस प्रकार है —

'स्वस्पमम्बोबनाख्य'-ग्रन्थम्यानम्य तन्मुनिम्। रचितस्याकलङ्केन वृत्ति वक्ष्ये जिन निमम्।।"

ग्रन्थ न० ६३६ ।

**११५ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति**—आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र स०-३ । पक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यातम । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

#### ग्रन्य न० ७५५।

**११६ स्वरूपमम्बोधनपञ्चविंशाति**—आचार्यं अकलङ्कदेव । पत्र सं०-२ई । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-९३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सम्कृत । विषय-अन्यातम । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दगा-उत्तम ।

विशेप-प्रम्तुन प्रतिमें मस्कृत टीका भी है।

#### ग्रन्य न० ७७१।

१९७ स्वरूपसम्बोधनपञ्चित्रिशति-आचार्यं अकलङ्कदेव । पत्र सं०-२ । पिक्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिक्त-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-अव्यात्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें व्याकरण तथा घर्मसम्बन्धी और भी कुछ पत्र है।

#### ग्रन्थ न० ७७५।

११८ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र स०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अन्यात्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ८१९।

११९ स्तरूपसम्त्रोधनपद्धविशति-आचार्यं अकलद्भदेव । पत्र स०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-१३ । लिपि-मन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-अब्यात्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# विषय-धर्म

#### ग्रन्य न० २६७

१ श्रक्तत्रिमचैत्यालयवर्णन- " '। पत्र स०-१ । पिन्तर्र निरत्र-९। यसर प्रतिपंक्ति-८२। लिपि-कत्रड । भाषा-कत्रड । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा गुद्ध । दश्चा-सामान्य ।

#### प्रत्य न० ४५८।

२ श्रक्तत्रिमचैत्यानयवर्णन- \*\*\*। पत्र म०-६। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-५८। लिपि-कन्नड। नापा-कन्नड। विषय-वर्ष। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध। दगा-नीर्ण। विशेष-मूडविद्रीस्य पड्डवमिद निवासी पटुमय्य उपाच्यायके पुत्र पटुमने इसे लिखा है।

ग्रन्य नं० ३५३।

३ श्रगुत्रतियोंके श्रन्तराय- ••। पत्र मं०-२। पिक्त प्रतिपत्र-५। अझर प्रतिपिक्त-३०। लिपि-कन्नड। मापा-कन्नड। विषय-वर्म। लेवनकाल-४। पूर्ण नया सामान्य शुद्ध। व्या-उत्तम।

### गन्य न० २९ ।

४ स्त्रनगारधर्मामृत-पण्डित आजावर । पत्र स०-१०६ । पिन प्रतिपत्र १२ । अक्षर प्रतिपिनि-९६ । लिपि-कन्नड । नाण-सस्कृत । विषय-वर्ष । लेखनकाल-गालि० जक १५०० । हेमलंबी सवत्सर निज आज्वयुज कृष्णा ३ मंगलवार रोहिणी नक्षत्र । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इममें स्वोपन चम्कृत टीका भी है। नरस्वती-गच्छ, वलात्कार-गण, कुन्दकुन्दाम्नायके मुनि महेन्द्रकीतिदेवके शिष्पान्यतम श्री चन्द्रकीतिदेवके लिये वंगवाडीके सान्तु मेट्टिके पुत्र आदि मेट्टि ने शास्त्रदान किया है।

प्रनिलिपिकार-वंगवाडीके वोम्मय्यण्यके पुत्र ब्रह्मय्य है।

#### ग्रन्य न० १३१।

५ श्रमतारघमोमृत-पण्डित आञावर । पत्र स०-१७४ । पत्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१०० । लिपि-क्षत्र । नाषा-संस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तया मामान्य गृद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इमर्ने स्वोपत्र नंस्कृत टीका है । वीच,वीच में कुछ पत्र खण्डित है ।

#### ग्रन्य न० १३८।

६ श्रतगारधर्मोमृत-पण्डित आगाधर । पत्र स०-२०१।पिक्त प्रतिपत्र-१३। अक्षर प्रतिपिक्त-१०६। लिपि-कन्नड । भाषा सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा मामान्य गुद्ध । दशा-मामान्य । विशेष-इमर्मे स्टोपज सस्कृत टोका है ।

#### ग्रन्य न० १७५।

७ स्रतगारवर्मोमृत-पण्डित आशायर । पत्र मं०-६५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपत्रित-५९ । क्षिप-कन्नड । मापा-सस्कृत । विपत्र-वर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तया गुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें स्वोपन मन्कृत टीका है ।

### प्रन्य नं० ४५३।

द्र स्रानगार्यमामृत-पण्डिन आगावर । पत्र न०-८१ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रनिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । माषा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा मामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रत्य न० ५०९ ।

है अनगारधर्मामृत-पण्डित बाजावर । पत्र स०-२३ । पक्ति प्रतिपत्र -९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । निपि-कन्नड । नापा-सन्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न ५३५ ।

१० श्रानगारधर्मोमृत-पण्डित आञाघर । पत्र स०-१७ । पित्रत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-१२० । लिपि-कन्नड । मापा-सस्कृतः । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण । विशेष-इसमें आचार्य महावीरकृत संस्कृत 'गणितसारसग्रह' के भी तीन पत्र है ।

### ग्रन्थ न० ५७५।

११ स्त्रनगारधर्मामृत-पण्डित आशाघर । पत्र स०-६३ । पिनत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपन्ति-७६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा समान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ६२५ ।

१२ द्यनगारधमीमृत-पण्डित आशाधर। पत्र स०-९७। पित प्रतिपत्र-६०। अक्षर प्रतिपिक्त-१२०। िलिप-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण। विशेष-इसमें व्रतिविधान सम्बन्धी और भी कुछ पत्र है। ग्रन्थ न०६२५।

१३ स्त्रनगारधर्मोमृत-पिडत आशाघर । पत्र स०-३४। पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-१००। लिपि-कन्नह । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'गोम्मटसार' जीवकाण्ड सम्बन्धी सदृष्टिके भी कुछ पत्र है ।

#### ग्रन्थ न० ७९८ ।

- १४ स्त्रनगारधर्मोमृत-पण्डित आगाधर । पत्र स०-३२। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-९८। िलिप-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण तथा खण्डित। ग्रन्थ न० १६०। ' '
- १५ श्रपराजितेश्वरशतक-किव रत्नाकर । पत्र स०-२३ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० १६९ ।
- १६ अपराजितेश्वरशतक-कवि रत्नाकर। पत्र स०-१३। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-४७। लिपि-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। पूर्णतथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न०३५३।
- १७ श्रापराजितेश्वरशतक-कवि रत्नाकर । पत्र स०-२४ । पक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ४५८ ।
- ्**१८ त्र्यपराजितेश्वरशतक**—कवि रत्नाकर । पत्र स०-३२ । पितत प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपिक्ति-७५ । क्षिपि-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तमः। ः ग्रन्थ न० १३४ ।
- १६ श्रमृताशीति-आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र स०-२३ । पित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपित्त-८१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें वालचन्द्रकी कन्नड वृत्ति है ।

२० श्रमृताशीति—आचार्य योगीत्द्रदेव । पत्र स०-२६ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-७० ।

२० द्रामृताशाति—अपाय योगारू प्रविष्य प्रविष्य प्रविष्य प्रविष्य शुद्ध । दशा—उत्तम । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम । विशेष—प्रभाकरमट्टके प्रतिवोचनार्थ । श्री योगीन्द्रदेवने इस ग्रथ को रचा । सिद्धान्तचन्नवर्ती नयकीर्ति के शिष्य मृति वालचन्द्रने वन्द्रप्रभार्यके लिये इसकी कन्नड वृत्ति रची ।

## ग्रन्थ न० २०९।

२१ श्रमृताशोति-आचार्यं योगीन्द्रदेव । पत्र स०-५ । पितत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिति-११८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ३५५ ।

२२ त्र्यमृताशीति-आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र स०-४७ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेप-इसमें वालचन्द्र कृत कन्नड टीका है । अवलिम्य वोमणके पुत्र माणिकदेवने बुल्लिसेट्टिके लिये

इसे लिखा है।

## ग्रन्थ न० ३९८।

२३ श्राहेरप्रवचन [लघुतत्त्वार्थसूत्र ] : । पत्र स०-१। पन्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। पूर्ण सथा मामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ न० ७२१।

२४ श्राचारवृत्ति—आचार्यं वमुनन्दी । पत्र स०-४६ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१२८ । लिपि-कन्नड । मापा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेप-मूल प्राकृतमें है।

#### ग्रन्थ न० ६० ।

२५् आचारसार-आचार्य वीरनन्दी । पत्र म०-२०। पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-१२५ । क्षिप-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ६८ ।

२६ श्राचारसार-जानार्य वीरनन्दी । पत्र मं०-९५ । पिन्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिन्त-८२ । क्षिप-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति है ।

#### ग्रन्य न० ९४।

२७ स्राचारसार-त्राचार्य वीरतन्दी । पत्र स०-१४२ । पनित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-१०९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें संस्कृत और कन्नड वृत्ति भी है ।

### ग्रन्थ न० १५४।

२८ श्राचारसार-आचार्य वीरनन्दी । पत्र स०-२६ । पित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपित्त-१०६ । छिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० २०७ ।

२६ श्राचारसार-आचार्य वीरनन्दी। पत्र स०-४६ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । अन्तिम पद्य -

विमेषचन्द्रोज्वलमूर्तिकीर्तिस्समस्तसैद्धान्तिकचकवर्ती । श्रीवीरनन्दी कृतवानुदारमाचारसार यतिवृत्तसारम् ॥ ग्रन्थ न० ३३० ।

३० श्राचारसार-आचार्य वीरनन्दी । पत्र स०-४६। पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपैन्ति-७९। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-भर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० ३५९।

३१ श्राचारसार-आचार्यं वीरनन्दी। पत्र स०-७। पन्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपन्ति-६२। लिपि-फन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-धर्मं। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ न० ३६४।

३२ द्याचारसार-आचार्यं वीरनन्दी । पत्र स०-६७ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-६० । लिपि-कन्नष्ट । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ५३५ ।

३३ श्राचारसार-आचार्य वीरनन्दी । पत्र स०-१० । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

#### ग्रन्य न० ६८७।

३४ श्राचारसार-आचार्यं वीरनन्दी । पत्र स०-१२३ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । 💍

विशेप-काणूरगण श्री मुनि देवकीर्तिकी शिष्या गुम्मक्कने देशीगण देवकीर्तिकी शिष्या चिक्कमिल्ल देवी अन्वको इसे दान किया है।

#### ग्रन्य न० ७७५ ।

३५ स्त्राचारसार-आचार्यं वीरनन्दी । पत्र स०-३० । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । िलिप-कन्नड । भापा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेप-इसमें 'तत्त्वार्थंसूत्र' द्विसन्धानकाव्य' तथा 'धनकुमारचरित' (कन्नड) के भी कुछ पत्र हैं ।

#### ग्रन्थ न० १४१ ।

३६ श्राप्तस्वरूप- '''। पत्र स०-३। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिनत-८८। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ७९७ ।

३७ स्त्राप्तागमस्वरूप- ' ' पत्रस०-४ । पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-३९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य सुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ३२०।

३८ श्राराधनासमुख्य-मुनि रविचन्द्र। पत्र स०-८। पन्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपन्ति-८८। लिपि-कन्नहः। भाषा-सस्कृतः। विषय-धर्मः। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्धः। दशा-उत्तमः। अन्तिम पद्य-

श्रीरावचन्द्रमुनीन्द्रै पनसोगेग्रामवासिभिर्ग्रन्य । रचितोऽयमखिलशास्त्रप्रवीणविद्वन्मनोहारी ॥

श्रावकाचारसम्बन्धी यह ग्रथ प्रकाशनीय है।

#### ग्रन्थ न० ५५४।

३६ श्राराधनासमुचय-मुनि रविचन्द्र । पत्र स०-६ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ६०३ ।

४० श्राराधनासमुखय-मृनि रिवचन्द्र । पत्र स०-२६ । पिततं प्रेतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-४० । िलिप-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणं । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

# ग्रन्थ नं ६८९ ।

४१ द्यारार्धनासमुचय-मुनि रविचन्द्र। पत्र स०-५। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रनिपंति-१००। लिपि-कन्नह। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्मे। लेखनकाल-४। पूर्ण नथा सामान्य गुद्ध। दशा-मामान्य।

## ग्रन्थ न० १५४।

४२ श्राराह्णासार्[श्राराधनामार]-आचार्यं देवसेन । पत्र म०-८ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-पिक्त-११५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं नथा शुद्ध । दशा-मामान्य । विशेष-इसमें संस्कृत छाया भी हैं ।

## ग्रन्य न० ५५४।

४३ द्याराहणां मार [ग्राराधनासार]-आचार्य देवमेन । पत्र म०-३। पिन्न प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रति-पिन्त-८०। लिपि-कञ्चड। भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य जुद्ध । दशा-जीण । ग्रन्थ नं० १८१।

, ४४ म्राशीर्वाद्पद्य- '। पत्र स०-२। पिन्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रनिपिन्ति-७७। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध। दशा-सामान्य।

## ग्रन्थ न० ३५४।

४५ छाशीर्बोद्पद्यःः। पत्र स०-४। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-४५। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ ।, पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेप-इसमें संस्कृत टीका एव 'गायत्रीमनत्र' का अर्थ भी हैं।

### ग्रन्थ न० २६।

४६ इष्टोपरेश-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-१५ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्तृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-जीर्ण

विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति भी हैं। यह महाकवि पपके मुपुत्रके लिये श्री यित मेघचन्द्रके द्वारा रची गयी है।

### ग्रन्य त० १०१।

४७ इष्ट्रोपदेश-लाचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-१२६ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वर्मं । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति है ।

# ग्रन्थ नं० १०१।

४८ इष्टोपदेश-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-३ । पिनत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिनत-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० १६२।

४६ इष्टोपदेश-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-७३ । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें संस्कृत और कन्नड टीका भी है । संस्कृत टीकाकार कवि मेधचन्द्र है ।

# ग्रन्थ न० ३१६।

५० इप्रोपदेश-आचार्य पूज्यापाद । पत्र स०-८ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१२१ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्ष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

#### ग्रन्थ न० ४६२ ।

५१ इष्टोपदेश-अाचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-३६ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विपय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ४९२।

५२ इष्टोप्देश-आचार्यं पूज्यपाद । पत्र स०-३६ । पिक्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ५३५ ।

५३ इष्ट्रोपटेश-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-१० । पिक्त प्रतिपत्र-७ । पक्षर प्रतिपिक्त-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशां-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका हैं ।

### ग्रन्थ नं० ५५२।

५४ इष्टोपदेश-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-७ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-८५ । किपि-कन्नड । भाषा-सम्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित । विशेष-इसमें केशववर्य कृत सस्कृत टीका भी है ।

### ग्रन्य न० ६८९।

५५ इष्टोपदेश—आचार्य पूज्यपाद । पत्र, स०-२ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—इसमें 'स्वरूपसम्बोधनपर्चीवंगति' भी है ।

## ग्रन्य न० ७५८।

५६ इष्टोपदेश-आचार्यं पूज्यपाद । पत्र स०-९३ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१०९ । लिपि-कन्नड । भापा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ७७५ ।

५७ इष्टोपदेश—आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०--२ई । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्मे । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णे ।

## ग्रन्थ न० ८०१।

५८ इष्टोपदेश-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-६ । पिक्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिक्त-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें प्रारम्भिक पत्र नहीं है ।

#### ग्रन्थ न० ८३८ ।

प्र इष्टोपदेश-आचार्य पूज्यपाद। पत्र स०-३। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिनत-७३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४। पूर्ण तथ्य सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० ८८० ।

६० इष्टोपदेश-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-२। पक्ति प्रांतपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-९०। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्मं । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्धं । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० ३३५।

६१ उद्योगसार-यति नेमिचन्द्र । पत्र स०-४० । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ न० २२२ ।

६२ **एद्योगसार-ॱॱ॰॰।** पत्रस०-३७ । पक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । माषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ न० ४०३ ।

६३ ख्योगसार- : :। पत्र स०-२८ । पित्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिति-५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

## ग्रन्थ न० ४८१।

६४ उद्योगसार-''' । पत्र स०-१४। पिनत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिनत-४९। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्मे । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शृद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ न० ५०० ।

६५ उद्योगसार-ॱॱ '। पत्र स०-१०। पिनत प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिनत-१३०। लिपि-कन्नड। माषा-कन्नड। विषय-धर्मं। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

### ग्रन्थ न० ५५३।

६६ उद्योगसार- ' '। पत्र स०-६। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-८०। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित । ग्रन्थ न० ६७२ ।

६७ उद्योगसार- · · · । पत्र स०-३२ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

## ग्रन्थ नं ० '३५४।

६८ उपवासिविधि-' '''पत्र स०-४। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिनत-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें सर्वतोभद्र आदि उपवासोकी सख्या बतलायी गयी है।

# ग्रन्थ न० १५७।

६६ उपासकाचार-आचार्य अमितगित । पत्र स०-७६ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । 'विशेष-इसमें 'जिनचतुर्विशतिका' आदि स्तोत्रोके भी कुछ पत्र है ।

### ग्रन्थ न० ४८८।

७० उपासकाचार-आचार्य अमितगति । पत्र स०-९० । पनित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपनित-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । वशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ७५५ ।

७१ उपासकाचार-आचार्य अमितगति । पत्र स०-३६ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ न० ७५६।

७२ उपासकाचार-आचार्यं अमितगति । पत्र स०-२६ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-१२५ । िक्षि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणं तथा खण्डित । ग्रन्थं नं ० ७९८ ।

७३ उपासकाचार-आचार्य अमितगति। पत्र स०-३९। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्ति९८। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

#### ग्रन्य न० ३४७।

७४ उपासकाचार-आचार्य पून्यपाद । पत्र म०-६ । पक्ति प्रति । अक्षर प्रतिपक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० १८१ ।

ग्रन्थ न० ७५५ ।

७६ उपासकाचार-॰॰॰। पत्र म०-६। पिक्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-९६। लिपि-कन्नड। भापा- सस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा मामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेप-इसमें 'पद्मनन्दिपंचिंकति' के भी कुछ पत्र है।

ग्रन्थ न० १४१ ।

, ७७ उपासकसस्कार—आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-३ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ३४७ ।

७८ उपासकसंस्कार-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-३ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-४९ । लिपि कन्नट । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३५४ ।

७६ उपासकसंस्कार-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-६ । पिक्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'क्रियाकाण्डचूलिका'' भी है ।

#### ग्रन्थ न० ५२३।

८० उपासकसंस्कार-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-१ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपन्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ५७४ ।

द्रश्रासकसंस्कार-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-१५ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-८० । लिपि-कन्नट । भाषा-संस्कृत । निषय-वर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ६७३ ।

द्वर उपासकसंस्कार-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-३६ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम : ग्रन्थ न० ७९८ ।

द्भ उपासकसंस्कार-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-२ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-९७ । लिपि-कन्नह । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दगा-उत्तम ।

### ग्रन्य न० ८१९ ।

८४ **डपासकसंस्कार**—आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-२ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-९६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ८२७ ।

द्ध् उपासकसंस्कार-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र म०-१ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-११२ । लिपि-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-मामान्य । विशेष-इसमें 'रत्नाष्टक' सटीक, प्राकृत 'पचस्तोत्र' तथा 'द्रव्यसंग्रह' के भी कुछ पत्र है ।

### ग्रन्थ न० '२६ ।

८६ एकत्वसप्तति—आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-१३ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीण । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

### ग्रन्थ न० १०१।

८७ एकत्वसप्ति-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-२० । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति है ।

### ग्रन्थ न० १०१।

८८ एकत्वसप्तति-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-४। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० १३४।

दश्यकत्वसप्ति-अन्वार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-२। पित्रत प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपित्र-१७५। िलिप-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० १६२ ।

ह० एकत्वसप्ति-आचार्यं पद्मनन्दी । पत्र स०-१५३ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-९३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें संस्कृत तथा कन्नड टीका है ।

### ग्रन्थ न० २०९ ।

**६१ एकत्वसप्तति**—आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-५ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-९६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ३१६ ।

**६२ एकत्वसप्तति**-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-१३ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

## ग्रन्थ न० ४९२ ।

े ६३ एकत्वसप्तति-आचार्य पद्मनन्दी। पत्र स०-४६ । पक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ५१४ ।

रु४ एकत्वसप्ति—आचार्य पद्मनन्दी। पत्र स०-२७। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-९०। िलिप-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल ×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशां-सामान्य। विशेप-इसमें कन्नड टीका है। साथ ही साथ 'इष्टोपदेश' तथा 'नीतिवाक्यामृत' के कुछ पत्र भी। ग्रन्थ न० ५५२।

६५ एकत्वसप्ति—आचार्यं पद्मनन्दी । पत्र स०-१६ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-८५ । लिपि-कन्नड । माषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य गुद्ध । दशा-जीर्णं तथा खण्डित । विशेष-इसमें संस्कृत टीका है ।

## ग्रन्थ न० ६२८।

६६ एकत्वसप्तिति—आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-८। पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-९०। लिपि-कन्नट । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विषय-इसमें कन्नड टीका है ।

#### ग्रन्थ न० ६३६।

रु एकत्यसप्ति—आचार्य पद्मनन्दी। पत्र स०-७। पिक्त प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपिक्त-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ७७१।

८८ एकत्वसप्ति—आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-५ । पन्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रति पन्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा—सस्कृत । निषय—धर्म । लेखनकाल-४ – । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । ग्रन्थ न० ७७५ ।

हर एकत्वसप्तिति—आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-२३ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-८० । क्षिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ८०१ ।

१०० एकत्वसप्ति—आचार्यं पद्मनन्दी । पत्र स०-६६ । पक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें प्रारम्भिक पत्र नहीं है ।

## ग्रन्थ न० ८१९ ।

१०१ एकत्वसप्तति—आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-४। पिक्ति प्रतिपत्र—६ । अक्षर प्रतिपिक्ति—९०। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष-इसमें संस्कृत टिप्पणी है ।

## ग्रन्थ न० ८३८।

१०२ एक्त्वस्मप्तति-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-४ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिन्ति-६० । लिपि-कन्नट । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ६६८ ।

१०३ गुगाप्रकाशक- ' '। पत्र स०-५ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपनित-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धम । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें अहिंगा घर्म तथा अधर्म का वर्णन है। इसीमें पद्मनन्दी कृत 'क्रियाकाण्डचूलिका' भी है। ग्रन्थ न० ३५३।

१०५ गोसावित्री- ' '। पत्र स०-१ । पित प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिन्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० २६९ ।

१०५ चारित्रसार—चामुण्डराय । पत्र स०-५९ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ७५८ ।

१०६चारित्रसार-चामुण्डराय । पत्र स०-२७३ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें पण्डित वालचन्द्रकृत कन्नड टीका भी है ।

# ग्रन्थ न० ३५३।

१०७ जपत्तच्रग्- ' । पत्र स०- १ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-२९ । लिपि-कन्नर । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० २३६।

१०८ जिनमुनितनय-चन्द्रसागर वर्णी । पत्र स०-७ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्य न० ३५८।

१०६ जिनमुनितनय-चन्द्रसागर वर्णो । पत्र स०-१८ । पितन प्रनिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपिति-२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वर्षे । लेखनकाल- ४ । पूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्य न० ६४५ ।

११० जिनसुनितनय-चन्द्रमागर वर्णो। पत्र म०-१३। पिन प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपित्र-३७। लिपि-क्चिड। भाषा-कन्नड। विपय-वर्म। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा मामान्य शृद्ध। दशा-मामान्य। विशेष-इममें कन्नड मावार्थं भी है।

#### ग्रन्य न० ६४५ ।

१२२ ज्ञिनसुनितनय-चन्द्रमागर वर्गी । पत्र म०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-४० । निर्ण-कन्नट । माषा-कन्नड । विषय-वर्म । लेखनकाल-४- । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-जीर्ण ।

### ग्रन्य न० ८३२।

११२ जिनमुनितनय-चन्द्रसागर वर्णो । पत्र स०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रनिपक्ति-३३ । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नट । विषय-वर्षे । ठेखनकाल-४ । वपूर्णे तथा सामान्य भृद्ध । दशा-जीर्णे ।

# ग्रन्य न ८ ३५३।

११३ लोवराले- " । पत्र स०-४। पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-४६ । लिपि-कन्नह। भाषा-कन्नह। विषय-वर्म। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष-'रगले' कन्नड छन्दका एक भेद है। इसमें पंचाणूत्रत दान आदिका वर्णन है।

### ग्रन्य न० ६६२।

११४ जीवरगते-''''। पत्र म०-३। पित्र प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपित्न-३०। लिपि-कन्नह। भाषा-जन्नह। विषय-वर्म। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें 'रत्नकरण्ड श्रावकाचार' के भी कुछ पत्र हैं।

#### ग्रन्य न० ५०५।

११५ ज्ञानदीपिका—पण्डित आयाघर । पत्र सं०-४० । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-८८ । लिपि-कन्नट । मापा-सन्कृत । त्रिपय-धर्म । लेखनकाल- ४ । अपूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-जीर्ण । विसेप-यह प० आयाघरकृत 'वर्मामृत' की न्वोपन पचिका है ।

### ग्रन्य न० ३४८ ।

११६ ज्ञानसार-\*\*\* । पत्र च०-७३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्य न० १६८।

११८ तत्त्वरत्तप्रद्रिषिका-पण्टित वालचन्द्र देव । पत्र स०-१९६ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्ति८० । लिपि-कन्नट । नापा-कतह । विषय-वर्ष । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।
विशय-यह आचार्य चमान्वाति कृत 'तत्त्वार्यभूत्र' की विस्तृत कतट वृत्ति हैं । यह वृत्ति श्रो मूलसघ
देशीरगण पुन्तकाच्छ कोण्डकुन्यान्वयी चन्द्रकीर्ति मुनिके नुत-शिष्य राद्धान्तचत्री पण्टित नयकीर्तिके पुत्र-शिष्य
मुनीन्द्र वालचन्द्रके द्वारा रची गणी है ।

#### ग्रन्य नं० ७६३।

११८ तत्त्वरत्नप्रदीर्पिका-पण्डिन वालचन्द्र देव । पत्र मं०-१३६ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पिक्त-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नट । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा मामान्य शुद्ध । द्या-सामान्य ।

#### ग्रन्य न० १३७।

११९ तत्त्वार्थेष्टित्ति—आचार्यं प्रभाचन्द्र । पत्र स०-१५ । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-८९ । लिपि-कप्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्मं । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । अन्तिम पद्य –

ज्ञानस्वच्छजलस्मुरत्निचयश्चारित्रवीचीचयिस्सिद्धान्तादिसमम्तशास्त्रजलिध धीपद्मनिन्दिप्रभु । तिच्छण्यात्रिखिलप्रवोधजनन तत्त्वार्थपृत्ते पद सुव्यक्त परमागमार्थविषय जात प्रभाचन्द्रत ॥ श्रीपद्मनिन्दिसैद्धान्तिशिष्योऽनेकगुणालय । प्रभाचन्द्रश्चिर जीयात्पादपूज्यपदे रत ॥ मुनीन्दुर्नन्दतादिन्दित्रजमानन्दमन्दिरम् । सुधाधारोदि्गरन्मूर्तिः काममामोदयिज्ज (ज्ज) नम् ॥ ग्रन्थ न० ५७ ।

१२० तत्त्वार्थलघुवृत्ति-भट्टारक दिवाकर मुनीन्द्र । पत्र स०-५० । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-१३० । विषय-धर्म । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शृद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ८८ ।

१२१ तत्त्र्वार्थलघुरृत्ति-भट्टारक दिवाकर मुनीन्द्र। पत्र स०-६२। पिनत प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपिनत-९८। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-वर्म। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध दिशा-सामान्य। ग्रन्थ न०१७३।

१२२ तत्त्वार्थेलघुवृत्ति-भट्टारक दिवाकर मुनीन्द्र। पत्र स०-६९। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रति-पिक्त-७२। लिपि-कन्नट। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। पूर्णे तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-यह आचार्य उमास्वाति कृत 'तत्वार्थसूत्र' की कन्नड रुघुवृत्ति है। श्री मट्टारक चन्द्रकीित के प्रिशिष्य, सिद्धान्तदेव पद्मनन्दीके शिष्य सिद्धान्त-मुनीन्द्र दिवाकरनन्दीके द्वारा यह वृत्ति रची गयी है। प्रतिलि-पिकार शिपरुग्राम निवामी गुरुवप्य है।

#### ग्रन्थ न० ७८५।

१२३ तत्त्वार्थलघुवृत्ति-भट्टारक दिवाकर मुनीन्द्र । पत्र स०-८२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पित-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ९०६ ।

१२४ तत्त्वार्थलघुवृत्ति-भट्टारक दिवाकर मुनीन्द्र । पत्र स०-४१ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पिक्त-८७ । लिपि-कन्नट । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्य न० ९०८ ।

१२५ तत्त्वार्थसुख्योधवृत्ति-भास्करनन्दी । पत्र स०-५४ । पिक्त प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपिक्त-२०३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ ।पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० २२९ ।

१२६ तत्त्वार्थसूत्र-आचार्य उमास्वाति । पत्र स०-२१। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-५९ लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा घुढ । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ३०३ ।

१२७ तत्त्वार्थसूत्र-आचार्य उमास्वाति । पत्र स०-७१ । पिनत प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिनत-९७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-शालि० शक १६८० । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—इसमें भट्टारक दिवाकरमुनि कृत कन्नड वृत्ति भी है। लक्ष्मीसेन मठके अधिकारो बिन्नसेट्टि के पुत्र, विद्यार्थी चन्दने भट्टारक लक्ष्मीसेनके लिये शा० शक १६८०, बहुवान्य सवत्सर मार्गशिर कृष्णा १४ के दिन मूडविद्री के त्रिभुवनचूडामणि चैत्यालयमें इसे लिखा है।

# ग्रन्य न० ३३४।

१२८ तत्त्रार्थसूत्र-आचार्य उमान्दाति । पत्र स०-७ । पिन्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिन्ति-६० । किपि-कन्नर । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शृद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३५१ ।

१२६ तस्त्रार्थसूत्र-आचार्य टमास्वाति । पत्र म०-९। णिक्न प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-७२। लिपि-कन्नड । मापा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा गृद्ध । दशा-जीर्ण । प्रत्य न० ३५५ ।

१३० तत्त्रार्थसूत्र-आचार्य उमान्त्राति । पत्र न०-१०। पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सत्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्रत्य न० ३६३ .

१३१ तत्त्वार्थस्त्र-आचार्य उमास्त्राति । पत्र स०-१२ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-उत्तम । गुन्य न० ४०० ।

१३२ तत्त्वार्थसूत्र-आचार्य उमास्वाति । पत्र म०-१३ । पत्रित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सत्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तया गुद्ध । दशा-उत्तम । प्रत्य नं० ५१७ ।

१३३ तत्त्वायसूत्र—आचार्य उमान्वाति । पत्र स०-१४ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-मन्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य गृद्ध । ट्या-सामान्य । ग्रन्य न० ६२३ ।

१३४ तत्त्वार्थसृत्र-आचार्य उमास्वाति । पत्र म०-७। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दया-उत्तम । प्रन्य न० ६९८ ।

१**३५ तत्त्रायंसूत्र-**आचार्यं उमास्वाति । पत्र स०-११ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-४० । लिपि-कन्नह । भाषा-सन्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- ४ । अपूर्णे तथा सामान्य गृद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' के नी कुछ पत्र है।

ग्रन्य न० ७३६।

१३६ तत्त्वार्थसूत्र-आचार्य उमास्वाति । पत्र न०-१० । पिक्न प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-३९ । िर्छाप-कन्नड- । भाषा-मस्कृत । विषय-वर्म । छेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ७४५ ।

१३७ तत्त्वार्थेसूत्र-आचार्यं उमास्वाति । पत्र स०-७ । पक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नड । माण्-सस्कृत । त्रिपय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा मामान्य गुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमे मानुकीति कृत 'शंखदेवाष्टक' भी है ।

ग्रन्य नं० ७४९।

१३८ तत्त्वार्थसूत्र-श्राचार्य चमास्त्राति । पत्र स०-१४। पिन्ति प्रतिपत्र-८। श्रक्षर प्रतिपंक्ति-४०। लिपि-क्नाड । नापा-संस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ८१९ ।

१३६ तत्त्रार्थसृत्र-अस्वार्य उमान्त्राति । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-९० । लिपि-कन्नड । मापा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ७८ ।

१४० त्रैवर्णिकाचार-आचार्यं इन्द्रनन्दी । पत्र स०-५५ । पिनतं प्रतिपत्र-७ । अक्षरं प्रतिपिनत-९३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विपय-धर्म । लेखनकाल- शालि० गक १५२१ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-लेखक छत्रत्रय-नगरनिवासी अध्यापक पद्मण का पुत्र चदप्प है। अन्तिम पद्य –

शाकाव्दे विधुदक्शराव्जकिलने पुष्य विलव्यव्दके पूर्त सोमजवारयुक्प्रयमभद्राया तिथौ सपेंमे । श्रीमत्क्षेमपुरे चतुर्मुखमहाचैत्यालये श्रेयसस्तीर्येशस्य पदाम्बुजद्वयपुरोदेशे सिते पक्षके ।। श्रीछन्नश्यनामधेयनगरीचैत्यालये चाष्टमस्तीर्थेशोऽस्ति तदि श्रिमिक्तभरण श्रीपद्मणोऽध्यापक । तस्य श्योरसचदन्यन (चदपेन) तु मया मट्टाकलङ्कार्यसत्पादाव्जभ्रमरेण लेखितमिद शास्त्र चिर तिष्ठतु ॥

ग्रन्य न० ४६७।

१४१ त्रैवर्णिकाचार-त्रह्मसूरि । पन स०-१३५ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । बक्षर प्रतिपक्ति-६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ७९८।

१४२ त्रैवर्गिकाचार-ब्रह्मसूरि। पत्र स०-१४। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-९३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-धर्मं। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

#### ग्रन्थ न० ८६४ ।

१४३ त्रैवर्णिकाचार-त्रह्मसूरि। पत्र स०-८३। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-४१। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-जीर्णं ।

विशेष-इसमे प्रारमके तीन पत्र नहीं है।

### ग्रन्थ न० ४९६।

१४४ दशधर्मेन्याख्यान-''''। पत्र स०-६ । पिन्त प्रतिपत्र-१ । अक्षर प्रतिपन्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । मापा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० १८१ ।

१४५ दानपञ्चाशत्—आचार्यं पद्मनन्दी । पत्र स०-५ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-४८ । लिपि-कन्नड । मापा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ न० ३२८।

१४६ दानपञ्चाशत्—आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-४ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० ६८४।

१४७ दानशासन-महर्षि वासुपूज्य । पत्र स०-१७१ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-शालि० शक १३४३ विषु सवत्सर, माघ शुक्ला १० के दिन यह ग्रथ रचा गया है ।

# ग्रन्य न० १४५।

१४८ दानसार-प्रभाचन्द्रदेव । पत्र स०-१७ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह ग्रन्थ देशी-गणान्वयश्रीपण्डितदेवाचार्यप्रसाधित श्री योगीन्द्रप्रमाचन्द्रदेवके द्वारा रिचत है ।

## ग्रन्थ न० ८१५ ।

१४६ दानसार- । पत्र सं०-७। पिनत प्रतिपत्र-१२। अक्षर प्रतिपिन्ति-६९। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल- 🗴 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य । 🕠

## ग्रन्थ न० ७०८ ।

१५० दीचाविधि- ' । पत्र स०-५। पिक्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्ति-२४। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

#### ग्रन्थ न० ३५४।

१५१ दोन्नादानविधि- '' ''। पत्र स०-१६ । पिक्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-मामान्य ।

## ग्रन्थ न० ४५१।

१४२ दीस्ताविचार- ''। पत्र स०-४। पक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपक्ति-६९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० ३५४।

१५३ द्वाद्शाङ्गव्याख्यान-अभयसूरि सिद्धान्तचक्रवर्ती । पत्र स०-४ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-पिक्त-५० । लिपि-कन्नड । भापा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा धुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ६६२ ।

१५४ द्वादशाङ्गव्याख्यान-अभयचन्द्रस्रि । पत्र स०-८। पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-३२। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें आचाराग आदि १२ अगोका सिक्षप्त वर्णन है ।

## ग्रन्थ न० ३३७।

१५५ द्वादशानुप्रेचा-आचार्य सोमदेव । पत्र म०-१२ । पन्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपन्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विपय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० ३९८।

१५६ द्वादशानुप्रेचा-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-१ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिन्ति७० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह 'उपासकसस्कार' का एक भाग है ।

# ग्रन्थ न० ४०० ।

१५७ द्वादशानुत्रेचा-''' '। पत्र स०-२। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-४६। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

## प्रारम्भिक पद्य-

द्वादशापि सदा चिन्त्या अनुप्रेक्षा महात्मिम । तद्भावना भवत्येव कर्मण क्षयकारणम् ॥ ग्रन्थ न० ८२३।

१५८ **द्वादशानुप्रेत्ता**— ः । पत्र स०-७। पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिन्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-धर्मं । लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

# प्रन्य न० १८ ।

१५६ द्वादशानुप्रेज्ञा-विजयण्ण । पत्र स०-६० । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें ज्योतिष के भी कुछ पत्र है ।

#### ग्रन्थ न० ३५ ।

१८० द्वाद्शानुप्रेचा—कवि विजयण । पत्र मं०-३७ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१०४ । लिपि-कन्नह । मापा-कन्नड । विषय-त्रमं । लेक्तकाल-४ । शालि० शक १७२२ । पूर्ण तया शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-प्रतिनिषिकारतुमकूर गुम्मप्यने पुत्र यल्लप्य है।

### ग्रन्य न० १५६ ।

१६१ द्वादगानुप्रेचा-विजयणा । पत्र म०-१०८ । पत्रिन प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपत्र-५२ । लिपि-कत्रड । नापा-कन्नड । विषय-प्रमें । लेवनकाल-४ । पूर्ण तथा मानान्य शुद्ध । दशा-मामान्त्र ।

#### प्रन्य न० २२३।

१६२ द्वादशानुप्रेचा-विजयणा। पत्र म०-११। पक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपक्ति-४७। लिपि-करुट। मापा-कन्नड। विषय-धर्म। लेवनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शृद्ध। दशा-त्रीणे।

## ग्रन्य न० २४६ ।

१६३ द्वादशानुप्रेचा-विजयमा । पत्र स०-६८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-७० । लिपि-क्नाड । भाषा-कन्नड । विषय-वर्ष । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-सामान्य ।

### प्रन्य नं० ३६७।

१६४ द्वादशानुप्रेज्ञा-विजयण्य । पत्र म०-१०७ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । असर प्रतिपक्ति-४३ । लिपि-कन्नद्र । नापा-कन्नद्र । विजय-धर्म । ठेन्वनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेप-इसमें आदिका एक पत्र नहीं है।

## प्रन्य नं० ५७९ ।

१६५ द्वादशानुप्रेचा-विजयणा। पत्र मं०-७५। पंक्ति प्रतिगत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-७२। लिप-णप्रद्या भाषा-कप्रद्या विषय-धर्म । लेक्नकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इनमें शादिके २ पत्र नहीं है ।

#### प्रन्य न० ५८०।

१६६ द्वादशानुप्रेचा-विजयणा । पत्र मं०-१६ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-९० । छिपि-क्यर । भाषा-कप्तर । विषय-वर्ष । लेवनकाल-४ । अपूर्ण तथा मानान्य गुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्य न० ८३९ ।

१६७ द्वादशानुप्रेज्ञा-विजयण्ग । पत्र सं०-७२ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-धर्म । लेक्नकाल-४ । पूर्ण तथा गृद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्य न० ५५३ ।

१६८ द्वाद्शानुप्रेचा-कन्यागकीति । पत्र म०-५६ । पक्ति प्रतिगत्र-८ । असर प्रतिपक्ति-८० । लिनि-कन्नड । नापा-कन्नड । निपय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण नया सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण तया खण्डित ।

### प्रन्य नं० ७३० ।

१६६ द्वादशानुप्रेक्ता—बाहुबळी । पत्र मं०-१२६ । पितः प्रतिपत्र-११ । असर प्रतिपित्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-वर्मे । लेखनकाल-४ । पूर्ण तया सामान्य गुर्छ । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

#### ग्रन्य न० १४९।

१७० द्वादृशानुप्रेक्षा-\*\*\*\*। पत्र मं०-३। पिन प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-५९। लिपि-कन्नड। माषा-कन्नड। विषय-वर्ष। लेखनकाल-४। पूर्ण तया सामान्य गुद्ध। दशा-नामान्य।

## ग्रन्य नं० १९४।

१७१ द्वादशासुप्रेचा- । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा मामान्य गृद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें अन्यान्य विषयके कुछ और भी खण्डित पत्र हैं ।

## ग्रन्य नं० ३५३।

१७२ द्वादशातुप्रेचा-\*\*\*। पत्र मु०-६ । पिनत प्रतिपत्र-६ । सत्रर प्रतिपिन्न-३७ । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तया गृद्ध । दशा-मामान्य ।

## ग्रन्य नं० ३८६।

१७३ द्वादशानुप्रेद्धा-\*\*\*। पत्र सं०-३। पिन प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिक्ति-६२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य गृद्ध। दशा-उत्तमः।

# ग्रन्य नं० ३९८।

१७४ द्वादशानुप्रेत्ता-\*\*\*। पत्र स॰-३। पिन प्रतिपत्र-६। असर प्रतिपिक्त-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा मामान्य शृद्ध। दना-जीर्ण।

#### ग्रन्य न० ४६२।

१७५ द्वादशानुप्रेचा- ''। पत्र स०-४। पित्त प्रतिपत्र-१२। वसर प्रतिपंक्ति-७४। लिपि-कन्नट। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा नामान्य शृद्ध। दश्चा-सामान्य।

## ग्रन्य न० ४३३ ।

## ग्रन्य न० ६६०।

१७७ द्वाद्शानुप्रेचा- '''। पत्र स०-२ । पिन्त प्रनिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिन्न-३० । लिपि-क्नन्न । भापा-कन्नड । विषय-धर्म । छेन्ननकाल-४ । अपूर्णे तथा सामान्य गृह । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड स्तोत्रो के भी कुछ पत्र हैं।

## ग्रन्य नं० ८६७।

१७८ द्वाद्शानुप्रेचा- । । पत्र सत्-१९ । पत्रित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नढ । मापा-कन्नड । विषय-वर्ष । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्र । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'वृत्तरत्नाकर' आदि के भी कुछ पत्र है ।

### ग्रन्य नं० २३७ ।

१७६ द्वाविंशतिपरीषह्जयसूत्र-\*\*\*। पत्र सं०-१। पिन प्रतिपत्र-१२। अक्षर प्रतिपित्रत-७२। िलिप-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-वर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तया मामान्य गृद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्य नं० २३७।

१८० द्वार्विशतिपरीषहज्ञयसूत्र-\*\*\*। पत्र सं०-१। पंक्ति प्रतिपत्र-१२। अक्षर प्रतिपक्ति-७२। लिपि-कन्नड। निपय-वर्मे। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य घुद्ध। दशा-मामान्य,।
प्रत्य न० ६१।

१८१ वर्मोपदेशामृत-('पचनन्दिपचिंवचित' का एक प्रकरण )-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-११ । पंन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । छिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा गृह । दशा-सामान्य ।

विशेप-इसमें 'विनित्य-भंचासत्' 'सिद्धस्तुति' एवं न्यायविषयके भी कुछ खण्डित तथा जीणं पत्र है।

### ग्रन्थ न० ६३३ ।

१८२ घर्मोपदेशामृत-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-२३ । पिन्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिन्त-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-घर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण । विशेष-इसमें 'अमरकोश' तथा 'सारसमुच्चय' के भी कुछ पत्र है ।

#### ग्रन्य न० ७५५ ।

१८३ धर्मोपदेश।मृत-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र म०-१० । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-यह 'पद्मनित्यचिंशति' का एक प्रकरण है।

### ग्रन्य र्न० १६२।

१८४ नित्यनिगोंटविवरण्-'''। पत्र स०-३। पिन्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिन्ति-११२। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत तथा कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल- शालि० शक १४३९। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विगेप—इसे शालि॰ शक॰ १४३९, घातुसवत्सर भाद्रपद शुक्ला १० को तिलूबल्लि शान्तिनाथ मन्दिर में दोन्नत्ति सातप्पके पुत्र पालप्पने वाहुबलीके वास्ते लिखा है।

### ग्रन्य न० ५४६।

१८५ नियमसार-आचार्यं कोण्डकुन्द । पत्र स०-४३ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-१०० । लिपि-कन्नड । मापा-प्राकृत । विषय-घर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्णं तथा खण्टित ।

' विशेप-इसमें मलवारी पद्मप्रभदेवकृत तात्पर्यवृत्ति नामक सस्कृत टीका भी है।

### यन्य न०९।

१८६ नीतिसारसमुचय-आचार्यं इन्द्रनन्दी । पत्र स०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-१२० १ लिपि-कन्नट । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णे तथा गुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इममें कन्नड टीका है । इसका अपरनाम ममयभूषण है ।

## ग्रन्य न० १४० ।

१८७ नीतिसारसमुद्यय-आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र स०-६। पिन्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ग्रन्थ न० ३५४ ।

१८८ नीतिसारसमुचय-माचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र स०-१० । पनित प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपन्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-धर्म । लेखनलाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ५२० ।

१८६ नीतिसारसमुचय-आचार्य इन्द्रनन्दी। पत्र स०-१७। पन्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-७४। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-वर्म। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इममें कन्नड टीका है।

#### ग्रन्थ न० ६८९ ।

१२० नीतिसारसमुचय-आचार्यं इन्द्रनन्दी । पत्र स०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । मापा-संस्कृत । विषय-धर्मं । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्य न० ७९८ ।

१६१ नीतिसारसमुच्चय-आचार्यं इन्द्रनन्दी । पत्र स०-१० । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षरं प्रतिपिनत-९९ । लिपि-कृत्रढ । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्मे । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नद टीका है ।

# ग्रत्य न० ३९३।

१६२ पत्रलेखनक्रम- ••••। पत्र स०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । बक्षर प्रनिपक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वर्ष । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा गृह । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें मृनि अर्जिका आदि त्यागियोको पत्र लिखने का क्रम दिया है ।

## ग्रन्य नं० ५३ ।

१६३ पद्मनिन्द्रपंचिव्रिति-आचार्यं पद्मनन्दी । पत्र न०-२६। पिन्त प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रति-पिन्त-१३७। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इनमें 'सम्यक्तवकीमृटी' के भी कुछ पत्र हैं ।

### ग्रन्य नं० १९८ ।

१६४ पद्मनिन्द्रपंचित्रंशित-जाचार्यं पद्मनन्दी । पत्र स०-७२ । पत्रितः प्रतिपत्र-८ । अक्षरं प्रतिपत्ति-७० । लिपि-कन्नड । नापा-मन्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा गृहः । दशा-उत्तमः । विशेष-इसमें 'सहोवचन्द्रोदय' की कन्नड टीका भी है ।

## ग्रन्य न० ३१७ ।

१६५ पद्मनिन्द्रपंचित्रिंशति-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-६५ । पित्र प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तया सामान्य गुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें विस्तृत संस्कृत टीका है ।

## ग्रन्य न० ४९९।

१९६ पद्मनिन्द्रपंचित्रिंशति-त्राचार्यं पद्मनन्दी । पत्र स०-१५ । पितः प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपत्ति-६० । लिपि-कन्नड । मापा-चंन्कृत । विषय-धर्मे । लेखनकाल- ४ । अपूर्णे तथा सामान्य शृद्ध । दशा-जीर्णे । ग्रन्य न० ७५५ ।—

१९७ पद्मनिन्द्पंचित्रिशति-ञाचार्यं पत्रनन्दी । पत्र न०-१० । पित्तः प्रतिपत्र-९ । अक्षरः प्रतिपित्त-९६ । लिपि-कन्नड । नापा-संन्हृत । विपत्र-वर्म । लेखनकार-४ । अपूर्णं तथा नामान्य गुद्ध । दशा-उत्तम ।

### गन्य न० ७५६ ।

१६८ पद्मनिन्यचिशति-अचार्यं प्यनन्त्री । पत्र म०-८ई पिन प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिन्ति-१२० । डिपि-कन्नड । नापा-मम्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण। प्रन्य न० २०३ ।

१६६ परमागमसार-चन्द्रकोति । पत्र स०-१७ । पत्ति प्रतिपत्र-८ । अझर प्रतिपत्रित-१०२ । लिपि-चन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्य न० ४७८।

२०० परमागमसार-चन्द्रकीनि । पत्र स०-५ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-७२ । लिपि-कन्नह । भाषा-कन्नह । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य सद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्य न० ४७१ ।

२०१ परमागमसार-चन्द्रजीर्ति । पत्र च०-१२ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अलस् प्रतिपक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-वर्ष । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्य नं० ५५७।

- २०२ परसागमसार-चन्द्रकीर्ति । पत्र सं०-९ । पिक्ति प्रतिपत्र-७ । असर प्रतिपिक्ति-९० । लिपि- न् नन्नह । भाषा-संस्कृत । विषय-वर्म । केन्त्रनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नढ टीका है ।

### ग्रन्थ न० ८०४।

२०३ परमागमसार-चन्द्रकीर्ति । पत्र स०-१२ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-४९ । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-धर्मे । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० ३९८।

विशेष-इसमें 'कल्याणमन्दिरस्तोत्र' तथा 'कियापाठ' आदिके भी कुछ पत्र है।

२०४ परीपह्त्य-किन मुकुन्द । पत्र स०-३ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-५० । लिपि-कन्नड । निपय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्य न० ६४५।

२०५ परीषहज्ञय-किव मुकुन्द । पत्र स०-४६ । पिनत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिनत-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ४७८ ।

२०६ परीपह्जय- ' '। पत्र स०-४। पन्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

## ग्रन्थ न० २६ ।

२०७ पुरुवासुपेहा[ पूर्वानुप्रेत्ता ]- । पत्र सं ०-१७। पिनत प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपिनत-८६। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-जीर्ण। विशेष-इसमें यति वाहुवलीकृत कन्नड वृत्ति भी है।

## ग्रन्य न० २४३।

२०८ पद्धकल्याग्णपद्य- ः । पत्र स०-३०। पन्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपन्ति-३०। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ९९ ।

२०१ पद्भपरमेष्ठिव्याख्यान- ••••। पत्र म०-१६। पिक्त प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिक्त-७१। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० २०२।

२१० पद्भपरमेष्ठिव्याख्यान- ' । पत्र स०-३१। पित प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिक्त-९७। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें पचपरमेष्ठियोंके गुणोका विस्तृत वर्णन है।

# ग्रन्य न० ३२१।

२११ पद्भापरमेष्ठिस्वरूप-पण्डित वालचन्द्र । पत्र स०-८ । पित प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपित्त-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वर्म । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसके रचिता वालचन्द्र सिद्धान्तवेदी अभयचन्द्रके शिष्य है ।

#### ग्रन्य न० ३४४।

२१२ पद्धपरमेष्टिस्तरूप-पण्डित बालचन्द्र । पत्र स०-२ई । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ३४८ ।

२१३ पद्धपरमेष्टिस्वरूप-पण्डित वालचन्द्र । पत्र स०-६ई । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-३८ । लिपि-कन्नड । माषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'जिनगुणसपित्तमम्' का भी एक पत्र है ।

# प्रन्य नं० ३५३।

२१४ पद्धपरमेष्टिस्वरूप-पण्डित वालचन्द्र । पत्र सं०-११ । पित्र प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिति-३१ । लिपि-कर्रड । भाषा-कन्नड । विषय-वर्ष । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा गुद्ध । वशा-सामान्य । ग्रन्य न० ३८३ ।

२१५ पद्मपरमेप्टिम्बरूप-पण्डित वालचन्द्र । पत्र म०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-५५ । लिपि-कप्तड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ग तथा सामान्य गुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्य न० ४९० ।

२१६ पञ्चपरमेष्टिस्तरूप-पण्डित वालचन्द्र । पत्र स०-१० । पक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपिति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य सुद्ध । दशा-अतिजीर्ण । प्रन्य न० ६४५ ।

२१७ पद्धपरमेष्ठिस्वरूप-पण्डित वालचन्द्र । पत्र सं०-१६६ । पक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नट । विपय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य नं० ६६२ ।

२१८ पद्धपरमेष्टिस्तरूप-पण्डित वालचन्द्र । पत्र स०-६ । पिन प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-जन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा मामान्य गुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें इस प्रन्यकी दो प्रतियाँ है ।

प्रन्य नं० ७३३ ।

२१६ पञ्चपरमेष्टिस्तरूप-पण्डित वालचन्द्र । पत्र सं०-२४ । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपत्रि-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वर्म । लेवनकाल-४ । अपूर्ण तथा मामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें भिन्न-भिन्न विपयोंके १०० अपूर्ण पत्र भी सम्मिलित है ।

### ग्रन्य न० ७४५।

२२० पद्भपरमेष्टिखरूप-पण्टित वालचन्छ । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-१८ । अक्षर प्रतिपक्ति-७३ । लिपि-क्निड । नापा-कन्नड । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्य न० ७९१ ।

२२१ पद्धपरमेष्टिस्तरूप-पण्डित वालचन्द्र । पत्र स०-६ । पितः प्रतिपत्र-८ । अक्षरः प्रतिपन्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वर्म । लेक्नकाल-४ । पूर्णं तथा मामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य नं० ८१६ ।

२२२ पञ्चपरमेष्ठिस्त्ररूप-पण्डित वालचन्द्र । पत्र सं०-५ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-५० । लिपि-कन्नड । निपय-वर्ष । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशय-इसमें 'अकलङ्काप्टन' आदिके भी कुछ पत्र है।

ग्रन्य न० ८३५ ।

२२३ पञ्चपरमेष्टिसहरप-बालचन्द्र । पत्र स०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सुद्ध । दशा-उत्तम । विशेप-इमर्मे 'समवसरणाप्टक' 'दृष्टाष्टक' 'पञ्चपरमेष्टिस्तोत्र' (कन्नड) भी हैं ।

ग्रन्य नं० ३७ ।

२२४ पद्धपरमेष्ठिन्त्ररूप-'''' पत्र म०-४६ । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कप्तद । भाषा-कन्नद । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्य नं० ९३ ।

२२५ पद्धपरमेष्टिस्तरूप-····। पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । असर प्रतिपित्त-७४ । स्टिनि-कप्तह । नापा-कप्तह । विषय-धर्म । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० १३४।

- २२६ पञ्चपरमेष्ठिस्तरूप- \*\*\* । पत्र म०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । माषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० १७० ।
- २२७ पद्धपरमेष्ठिस्वरूप- \*\*\* । पत्र स०-४। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-५५। लिपि-कन्नह । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० २२४।
- २२८ पद्धपरमेष्टिस्वरूप- • । पत्र स०-४४। पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-४६। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नट । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्य न० २३७।
- २२६ पद्भपरमेष्ठिस्वरूप-। पत्र स०-३ । पिनत प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिनत-७७ । लिपि–कन्नड । मापा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल− 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध ∟ दशा–जीर्ण । ग्रन्थ नं० २३७।
- २३० पद्धपरमेष्ठिस्तरूप- ः ः। पत्र स०-१४। पक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपक्ति-७५। लिपि—कन्नड । मापा—कन्नड । विषय–घर्म । लेखनकाल— 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । ग्रन्थ न० २५९।
- २३१ पद्धपरमेष्टिस्वरूप- • । पत्र स०-७ । पक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न०३८२ ।
- २३२ पद्धपरमेप्रिखरूप :। पत्र स०-७ । पन्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपन्ति-५३ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय–घर्म । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ग्रन्थ न० ३९८ ।
- २३३ पञ्चपरमेष्टिस्तरूप- • । पत्र स०-४। पन्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपन्ति-७०। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ४६२।
- २३४ पद्धपरमेष्टिस्तरूप ११८० । पत्र सं० २ । पत्रित प्रतिपत्र ८ । अक्षर प्रतिपत्ति ९२ । लिपि -कन्नह । भाषा-कन्नह । विषय-वर्म । लेखनकाल-🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ५०० ।
- २३५ पञ्चपरमेष्टिस्तरूप- •••। पत्र स०-३१ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-७९ । लिपि-कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—वर्म । लेखनकाल— 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । ग्रन्य न० ७४९ ।
- २३६ पद्धपरमेष्टिस्तरूप- १ । पत्र स्०-१२ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वर्म । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ८३५ ।
- २३७ पद्भपरमेष्टिस्तरूप- ' । पत्र स०-३१। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-५०। लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल– × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम । विशेष-इसका अपर नाम 'पञ्चपरमेष्ठिन्याख्यान' है ।
- ग्रन्थ न० २९२। २३८ पञ्चनमस्कारमाहात्म्य- ' । पत्र स०-१। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-७७। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्य नं० १०१।

२३६ पद्धसंसारविस्तर- '''। पत्र स०-२। पिक्त प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-११९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-वर्म। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें गणित विषयके भी कुछ पत्र है।

ग्रन्थ न० ३२०।

२४० पद्धसंसारविस्तर-\*\* ' । पत स०-४। पांक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा गृद्ध । दगा-मामान्य । ग्रन्थ नं० ७५१ ।

२४१ पद्धसंसारविस्तर-''' ''। पत्र म०-२ । पित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपितत-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सम्मान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्य न० ९ ।

२४२ प्रश्नोत्तरस्त्रमाला-अमोघवर्ष । पत्र स०-१ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-उत्तम । अन्तिम पद्य-विवेकात्त्यक्तराज्येन राजेय रत्नमालिका । रचिनामोघवर्षेण सुधिया सदलदकृति ॥

ग्रन्थ न० ९३।

२४३ प्रश्नोत्तरस्त्रमाला-अमोघवर्ष । पत्र म०-१३ । पिन प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिन्त-९८ । क्षिप-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-धर्मे । लेखनकाल-४ । पूर्णे तथा शृद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न०१४१ ।

२४४ प्रश्नोत्तरत्वमाला-अमोववर्ष । पत्र स०-२ । पक्ति प्रतिपत्र ६ । अक्षर प्रतिपक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्य न० १८१।

२४५ प्रश्नोत्तरत्वमाला-अमोघवर्ष । पत्र सं०-२ई । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा मामान्य शृद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३१८ ।

२४६ प्रश्नोत्तरस्त्रमाला-अमोघवर्ष । पत्र सं०-२ । पिन प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिन्त-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-मंस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तया शुद्ध । दशा-मामान्य ।

ग्रन्य न० ३५९।

२४७ प्रश्नोत्तरस्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र म०-१ई । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-८८ । छिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-मामान्य । ग्रन्थ नं० ३८० ।

२४८ प्रश्नोत्तरस्त्रमाला-अमोववर्ष । पत्र स०-२ । पित्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपित्त-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ५२३ ।

२४६ प्रश्लोत्तरस्त्रमाला-अमोघवर्ष । पत्र स०-१ । पत्रित प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । प्रत्य नं० ६०४ ।

२५० प्रश्नोत्तरत्त्रमाला-अमोववर्ष । पत्र नं०-५ । पन्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य गृह्व । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड दीका है ।

## य़न्य नृ० ६२८।

२५१ प्रश्नोत्तरस्त्रमाला-अमोघवर्षः । पत्र स०-१ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । -अक्षरः प्रतिपक्ति-१०२ । लिपि-कन्नट । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथाः शुद्ध । दशा-उत्तमः । ग्रन्थ न० ६७२ ।

२५२ प्रश्नोत्तरस्त्रमाला-अमोघवर्ष । पत्र स०-१६ । पित प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपित-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सम्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण,। विशेष-इसमें आ० प्रभाचन्द्र कृत 'व्रतस्वरूप' भी है ।

## ग्रन्थ न० ,६७३ ।

२५३ प्रश्नोत्तरत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र स०-२ । पत्रित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपत्रि-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण,तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें नीतिसम्बन्धी २ पत्र और है ।

## ग्रन्य न० ७०९।

२५४ प्रश्नोत्तरत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र म०-१२ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्य २० ७५६ ।

२५५ प्रश्नोत्तरत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र स०-१ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण । ग्रन्थ न० ८१९ ।

२५६ प्रश्नोत्तररत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र स०-१ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । मापा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । यन्य न० २०३ ।

२५७ प्रायिश्वत्तिविधि- • । पत्र स०-७ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-११५ । लिपि-कप्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । 'ग्रन्थ न० ४०१ ।

२५८ प्रायिश्वत्तविधि : । पत्र स०-४। पक्ति प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपंक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। '

ग्रन्थ न० ६३७ । २५६ प्रायश्चित्तविधि- '' '। पत्र स०-५ । पिनतः प्रतिपत्र-६ । अक्षरः प्रतिपन्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्यः शुद्ध । दशा-सामान्यः । ग्रन्थ न० ७७१ ।

२६० प्रायश्चित्तविधि- । पत्र स०-५६ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । । । । विशेष-इसमें 'केशलुञ्चनविधि' भी है । ग्रन्थ ने ७७२ ।

२६१ प्रायख्रित्तविधि- ' '। पत्र स० ६६ । पिक्त प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपिक्त-५६:। लिप्ति-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । वशा-सामान्य । । ग्रन्थ न० ८४१ ।

२६२ प्रायश्चित्तविधि । पत्र स०-२१। पनित प्रतिपत्र-१२। अक्षर प्रतिपन्ति-३२। लिपि-कन्नड। आषा-कन्नड। विषय-धर्मं। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें 'ऋपिमण्डलस्तोत्र' 'दीक्षाविधि' सगीत एव ज्योतिष सवाधी भी कुछ,पत्र है।

## ग्रन्थ नं० ९०२ ।

२६३ प्रायिश्चत्तविधि- : : : । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'गणधरवलययन्त्राराधना' के भी कुछ पत्र हैं ।

## ग्रन्थ नं० ७७१ ।

२६४ प्रायश्चित्तविधि-स्वामी अकलङ्कः । पत्र सं०-६६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७१ । लिपि-कन्नट । भापा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- ४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेप-इसमें प्रायक्वित्त-संवंधी और भी २ पत्र हैं ।

### ग्रन्थ नं० ७७२।

२६५ प्रायश्चित्तविधि-इन्द्रनन्दी । पत्र सं०-३१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-प्रन्थमें इस प्रकरणका नाम 'छेदिपिण्ड' लिखा मिलता है । नं० ३५४ वीं गाथा इस प्रकार है:''भावेइ छेदिपिण्डं जो एदं इन्दर्णन्दिगणिरिचदं । लोइय लोउत्तरिए ववहारे होइ सो कुसलो ॥"

### ग्रन्थ नं० १८२ ।

२६६ प्रायश्चित्तसमुच्चय- ''''। पत्र सं०-७। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-५८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य गुद्ध। दशा-सामान्य। विशेप-इसके अन्तमें प्रायश्चित्तसे सम्बन्ध रखनेवाले कन्नड भाषाके भी कुछ पत्र है।

## ग्रन्थ नं० २२५ ।

२६७ प्रायोपगमनविधान-'''''। पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० ९ ।

२६८ वारस ऋगुपेहा ऋथवा ऋगुपेक्खा [ द्वादशानुप्रेचा ]-आचार्य कुन्दकुन्द,। पत्र सं०-२,। पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप—मूलमें इसका नाम 'अन्प्रेक्षा', ही लिखा हुआ है । वास्तवमें 'अणुपेहा' होना चाहिये ।, ग्रन्थ नं० ९० ।

२६९ वारस श्रगुपेहा श्रथवा श्रगुपेक्खा[ द्वादशानुप्रेत्ता ]-आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं०-८ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 ॥ अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विगेप-प्राकृतमें इसका नाम 'अणुपेहा' होना चाहिये । इसमें 'द्रव्यसंग्रह' तथा 'समवसरण-स्तोत्र' के भी कुछ पत्र हैं।

# ग्रन्थ नं० २३७ ।

२७० वारस ऋगुपेहा श्रथवा श्रगुपेक्खा [द्वादशानुप्रेचा ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

### ग्रन्थ नं० २५९ ।

२७१ वारस त्र्राणुपेहा श्रयवा त्र्राणुपेक्खा [द्वादशानुप्रेत्ता ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्धं । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० २८३ ।

२७२ वारस श्रगुपेहा श्रथवा श्रगुपेक्स्वा [ ढादशानुश्रेत्ता ]-स्वामी कार्तिकेय । पत्र स०-११ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-१४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० ३०५।

२७३ वारस श्रागुपेहा श्रयवा श्रागुपेक्खा [ द्वादशानुप्रेत्ता ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र स०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० ३३५।

२७४ वारस ऋगुपेहा ऋथवा ऋगुपेक्खा [द्वाद्शानुप्रेत्ता ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र स०-६ । पित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम

## ग्रन्य न० ३९८।

२७५ वारस श्रगुपेहा श्रथवा श्रगुपेक्स्वा [ द्वादशातुप्रेत्ता ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र स०-४६ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिवत-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० ६०९।

२७६ वारस ऋगुपेहा ख्रथवा घ्रगुपेक्खा [द्वादशानुप्रेचा ]-स्वामी कार्तिकेय। पत्र स०-४८। पित्त प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपित्त-१००। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

#### ग्रन्थ न० ६४९।

२७७'बारस ऋगुपेहा श्रथवा श्रगुपेक्खा [द्वादशानुप्रेत्ता ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र स०-८। पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ६८९ ।

२७८ बारस श्रापुपेहा श्रथवा श्रापुपेक्खा [द्वादशानुप्रेचा ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र स०-९'। पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-८०। लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ृ विशेष-इसमें वाहुविलिसिद्धान्तिकृत कन्नड टीका भी है।

# ग्रन्थ न० ८२४।

२७६ वारस त्रागुपेहा श्रथवा त्रागुपेक्खा [द्वादशानुप्रेत्ता ]-स्वामिकार्तिकेय । पत्र स०-९ । पितत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ न० ४२७।

२८० भन्यकुमुद्चिन्द्रकाटीका-पण्डित आशाघर । पत्र स०-१७४ । पिनत प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रति-पिनत-१५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । देशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें सागारधर्मामृत और अनगारधर्मामृतकी सिर्फ टीकाएँ हैं।

# ग्रन्थं ने० '२९९ ।

२८१ भव्यजनकण्ठरस्ताभरण्-अभयचन्द्र । पत्र सं०-३०। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षेर प्रतिपंक्ति-१०४। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-अभयचन्द्रदेव श्रीवालचन्द्रदेव एवं नेमचन्द्रदेवके शिष्य हैं ।

## •ग्रन्थं नं ०'३९८।

२८२ मुनिरगले-मायण्ण। पत्र सं०-२। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेप-इसके रचयिता मायण्ण नागण्णके पुत्र हैं।

# ग्रन्थ नं० ७६५ ।

२८३ मृडविद्रोके मन्दिरोंका दानविवरण-'''। पत्र सं०-४५। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-२८। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-स्थानीय मन्दिरोंको भिन्न २ दानियोंके द्वारा प्रदत्त चावल, तैल आदि पूजाद्रव्योंका विवरण इसमें अंकित है।

# ग्रन्थ नं० ५६।

२८४ मूलाचार-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-२०२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०८ । विषय-धर्म । लिपि-कन्नड । भापा-प्राकृत । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । अन्तिम पद्य-

मूलाचारास्यशास्त्रं वृषभजिनवरोपज्ञमहैंत्प्रवाहादायातं कुण्डकुन्दाह्वयचरमलसञ्चारणैस्सुप्रणीतम् ॥ तद्व्यास्यां वासुनन्दीमबुधविलिखनावाचनानायाशमक्त्यां(?)

संशोध्याध्यैतुमहीमकृतयतिकृति (?) · · · · · · ।। २०५॥

इसमें आचार्य वसुनन्दीकी विस्तृत संस्कृत वृत्ति भी है । प्रारंभमें मूल-रचिताका नाम 'कोण्डकुन्द' ही लिखा है, और अन्तमें 'कुण्डकुन्द, भी मिलता है।

# ग्रन्थ नं० १६४।

२८५ मूलाचार-आचार्यं कोण्डकुन्द । पत्र सं०-१८० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षरं प्रतिपंक्त-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें मुनि मेघचन्द्रके द्वारा रचित कन्नड वृत्ति भी है। वीच-वीचमें इसके कुछ पत्र लिखित हैं।

# ग्रन्थ नं० २७९ ।

२८६ मूलाचार-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-१९८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-वर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें आचार्य वसुनन्दिकृत संस्कृत वृत्ति भी है।

# 🖖 ग्रन्थ नं 🖟 ६२९ ।

२८७ मूलाचार-आचार्यं कोण्डकुन्द । पत्र सं०-१९२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनेकाल- 🗶 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

### ंग्रन्थ नं ० ९ ।

२८८ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-४५। पंक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षरं प्रति-पंक्ति-१२०। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृते । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗴 । शुद्धं तथा पूर्णं । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थः ने ० ४७ ।

२८६ रत्नेकरण्डश्रावकाचार-आंचार्यं समन्तभद्र। पत्र स०-३५'। पैंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रति-पिक्त-६६। विषय-धर्म । लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्धः॥ दशा-उत्तम। विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

### ग्रन्थ न० ११४।

२६० रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र स०-४३ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दह्मा-जीर्ण । ग्रन्थ न० १४६ ।

२६१ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र स०-६९ । पिक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा साधारण शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति तथा पचाणुवत एव अष्टागकी कथाएँ भी है । इसे श्रवणवेल्गोलके चार्कीर्ति पण्टिताचार्यके प्रशिष्य मुनि प्रभाचन्द्र के शिष्यने लिखा है ।

#### ग्रन्य न० १८१ ।

२६२ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्यं समन्तभद्र । पत्र स०-९। पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० २०३ ।

२६३ रत्नकरएडश्रावकाचार-आचार्यं समन्तभद्रः। पत्र स०-५। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षरं प्रतिपक्ति-१०८। लिपि-कन्नड। भाषा-मस्कृत। विषय-धर्मं। लेखनकाल-×। अपूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्य न० २३३।

२६४ रत्नकरएडश्रावकाचार-आचार्य समन्तमद्र । पत्र स०-२७ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पिनत-८७ । लिपि-कन्नट । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दणा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नट टीका है ।

### ग्रन्थ न० २३७।

२**९५ रत्नकरए**ड**श्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र स०-४ । पिक्त प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रति-**पिक्त-७६ । लिपि-कन्नट । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० २६**१** ।

२९६ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्यं समन्तभद्र । पत्र स०-४७ । पन्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रति-पन्ति-६८ । छिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

#### ग्रन्थ न० २७२।

२६७ रत्नकरराडश्रावकांचारं-आचार्यं समन्तभद्र । पंत्र स०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-५५ । लिपि-कञ्चड । भाषा-संस्कृत । विषयं-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथी शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० २७४ ।

२६८ रेंत्नकरण्डंश्रावंकाचार-आचार्य समन्तंभद्र । पत्र सँ०-४२ । पंक्ति प्रतिपंत्र-९ । अक्षर प्रति-पक्ति-९२ । लिपि-कन्नडे । भोषाँ-संस्कृत । विषयँ-विमें । लेखनकाल÷ × । पूर्ण तेया सिमान्य शुद्धि । दशा∸जीणे । विशेप-इसमें 'अण्टाग' 'पचाणुवत' आदि की कन्नड कथाएँ भी है ।

## ग्रन्थ नै० ३०५ ।

रें रहनेकरेरख्डश्रावंकाचारं-आचार्य समन्तभद्र । पत्र स०—२९ । पक्ति प्रतिपेत्रँ∸८'। अक्षर प्रति-पंक्तिं–९६-। लिपि–कन्नडें । भाषां–सस्कृति । विषय–धर्में । लेखनंकाल-४'। पूर्ण तथां शुद्धे । दशा–उत्तम । विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

## ग्रन्थ नं० ३०५ ।

३०० रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० ३१५ ।

३०१ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

### . ग्रन्थ नं० ३१८।

३०२ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-पंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० ३४७ ।

३०३ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० ३४८ ।

३०४ रत्नकरख्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षरः प्रति-पत्र-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें अमोघवर्ष कृत 'प्रक्नोत्तररत्नमाला' के भी २ पत्र हैं ।

### ग्रन्थ मं० ३५२।

३०५ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं-१०० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें १५५ रलोक हैं । एवं विस्तृत कन्नड टीका भी ै । आदिके ३ पत्र खण्डित हैं । ग्रन्थ नं० ३५४ ।

३०६ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्यं समन्तभद्र । पत्र सं०-८८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-पंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष- इसमें प्रभाचन्द्र कृत संस्कृत टीका भी है । विभवसंवत्सर, कार्तिक शुक्ला ५ शुक्रवारके दिन भट्टारक लक्ष्मीसेनके शिष्य गुणसागरने बंगवाडिस्थ शान्तीक्वर चैत्यालयमें इसे लिखा ।

# ग्रन्थ नं० ३६०।

३०७ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तमद्र । पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रंति-पंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है । कोपण निवासी चन्दिसेट्टिके पुत्र चन्द्रमने रायवाग निवासी बाहुविलदेव-के लिये इसे लिखा है । यह ग्रन्थ विरोधी संवत्सर, भाद्रपद शुक्ला १० मङ्गलवारके दिन लिखा गया है । ग्रन्थ नं० ४४३ ।

३०८ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं-३८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें प्रभावन्द्र कृत संस्कृत टीका भी है ।

# मन्थ नं० ४५८।

३०६ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-८। पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

### ग्रन्थ न० ४७४।

३१० रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र स०-९५ । पन्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रति-पन्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेप-इसमें कन्नड टीका है।

## ग्रन्थ न० ४७८।

३११ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तगद्र । पत्र स०-७२ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-पिनत-४० । लिपि-कन्नड । भापा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेप-इसमे कन्नड टीका है।

### ग्रन्थ न० ४७८।

३१२ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्यं समन्तभद्र । पत्र स०-१४ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-पिक्त-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सम्कृत । विषय-घर्मे । लेखनकाल- 🗴 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्य न० ४७९।

३१३ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्यं समन्तमद्र । पत्र स०-१०९ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पिक्त-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेप-इसमें कन्नड टीका है। इसके लेखक देवण्णके पुत्र मचण्ण है।

## ग्रन्थ न० ४८१।

३१४ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तमद्र । पत्र स०-८ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-मंस्कृत । विषय-धर्मे । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ४९५।

३९५ रत्नकरण्डश्रावकाचार—आचार्य समन्तमद्र । पत्र स०-५० । पक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेप-इसमें कन्नड टीका है ।

### ग्रन्थ न० ४९९। 🕠

३१६ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्यं समन्तभद्र । पत्र स०-२३ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पिक्त-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ५१७।

३१७ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तमद्र । पत्र स०-१९ । पिक्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रति-पैक्ति-४० । लिपि-कन्नड । मापा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ५२३।

३१८ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तमद्र । पत्र स०-३ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पैक्ति-१३० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

1

## ग्रन्थ न० ५२६।

३१६ रत्नकरग्रहश्रावकात्रार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र स०-२७ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पंक्ति-६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय- धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

# ग्रन्थ न० ५३७।

३२० रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र स०-८२ । -पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रति-पिनत-२८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत ।-विपय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

विशेष-इसमें विस्तृत कन्नड टीका है।

# ग्रन्थ त० ५४७।

३२१ रत्नकरपरश्रात्रक्षाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र स०-१५ । पित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-८ । लिपि-कन्नर । भाषा-सस्कृत । विपय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शृद्ध । दशा-अतिजीर्ण । विशेष-इसमें कन्नर टीका है ।

## ग्रन्य न०५४९।

३२२,रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्यः समन्तभद्र । पत्रःस०-२१ । पिक्तः।प्रतिपत्र-६ः। अक्षर प्रति-पिक्त-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्मः। लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्यःशुद्धः। -दशा- अतिजीर्णं ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका।है।

## ग्रत्थ न० ५५३।

३२३ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्यं समन्तभद्र । पत्र स०-७ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्धः । दशा-जीर्णं तथा खण्डित ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

## ग्रन्थ न० ५७८।

३२४ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्यं समन्तभद्र । पत्र स०-६३ । पन्तिः प्रतिपत्र-१० । ः अक्षर प्रति-पन्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें 'आत्मानुशासन' के भी ६ पत्र है।

### ग्रन्थ न० ६०७।

३२५ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-२०३ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पिनत-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा - शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसंमे कन्नड टीका है।

## ग्रन्थ न० ६३७।

३२६ रतकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तमद्र । पत्र स०-३६६ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पिक्त-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

## ग्रन्थ न० ६७०।

३२७ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र स०-१२ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्धः। दशा-सामान्य । विशेष-इस ग्रन्थ की २ प्रतिया है, तथा इसकी कन्नड टीका भी है ।

# ग्रन्य न० ६८९ ।

३२८ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्यं समन्तभद्र । पत्र स०-१९ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है, आ० पद्यनन्दिकृत 'एकत्वसप्तित' भी है ।

# ग्रन्य नं० ७९८।

३२६ रत्नकरण्डश्रावकाचार—आचार्यं समन्तमद्र । पत्र स०-७६ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षरं प्रति-पक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशप-इसमें 'व्रतस्वरूप' तथा शान्त्यष्टक के भी कुछ पत्र है।

## ग्रन्थ न० ८०९।

३३० रत्नकरग्रहश्रावकाचार-आचार्यं समन्तभद्र । पत्र स०-८ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-४० । लिपि-कञ्चड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्मं । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ८१३ ।

३३१ रत्नकरण्डश्रावकाचोर-आचार्यं समन्तभद्र । पत्र स०-१६ । पन्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रति-पन्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमे आ० वीरनन्दिकृत 'आचारसार' के भी कुछ पत्र हैं ।

## ग्रन्थ न० ८२४।

३३२ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र स०-८। पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पक्ति-४०। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-×अपूर्ण तथा सामान्य शुद्धः। दशा-सामान्य ।

### ग्रन्य न० ९०३।

३३३ रत्नकरग्रहश्रावकाचार-आचार्य समन्तमद्र । पत्र स०-२९३ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

## ग्रन्थ न० ६०१।

३३४ रत्नमाला-आचार्यं शिवकोटि । पत्र स०-३ । पिनत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिनत-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'सज्जनचित्तवल्लम' के भी कुछ पत्र है ।

# ग्रन्थ न० १८६।

३३५ रयग्सार-आचार्य कोण्डकुन्द। पत्र स०-८। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। पूर्ण तथः सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण। ग्रन्थ न०२६७।

३३६ रयग्रासार-आचार्यं कोण्डकुन्द । पत्र स०-८ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ नं० ३३६।

३३७ रयग्सार-आचार्यं कोण्डकुद । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । हिप-कन्नड । भापा-प्राकृत । विपय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ नं० ८१५।

३३८ रयणसार-आचार्यं कोण्डकुन्द । पत्र सं०-१६६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है, तथा 'त्रिलोकसार' का एक पत्र भी है ।

### ग्रन्थ नं० ५०।

३३१ ताघुप्रायश्चित्त- ''' । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । विषय-धर्म । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ नं० १४५।

३४० त्तघुप्रायश्चित्त-\*\*\*\* । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० १९७ ।

३४१ त्रश्चुप्रायश्चित्त-```'। पत्र सं०-८४। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-९२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें वीच २ में अन्यान्य ग्रन्थों के उद्धरण दिये गये हैं। ग्रन्थ संग्रहात्मक मालूम होता हैं।

# ग्रन्थ नं० ६३६।

३४२ व्यासवचनसंग्रह- · · · · · । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-इतरवर्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें वर्णाश्रमधर्म तथा पुराण आदि का संक्षिप्त वर्णन दिया गया है ।

### ग्रन्थ नं० २६।

३४३ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विषेश-इसमें कन्नड टीका है ।

### ग्रन्थ नं० ३७।

३४४ व्रतस्तरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दर्शा-उत्तम । विशेष-इसका अपर नाम 'त्रतफलवर्णन' हैं । इसमें कन्नड टीका भी है ।

# ग्रन्थ नं० १४१.।

- ३४५ त्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० १८१ ।
- ३४६ त्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० ३०८ ।
- ३४७ त्रतस्वरूप-आचार्यं प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-९। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-५३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामन्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विदेष-इसमें कन्नड टीका है।

#### ग्रन्थ न० ३१८।

३४८ व्रतस्वरूप-आचार्यं प्रभाचन्द्र । पत्र स०-१३ । पक्ति प्रतिपत्र ७ । अक्षर प्रतिपक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🔀 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-जीर्णं ।

#### ग्रन्थ न० ३२५।

३४**९ त्रतस्वरूप**—आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र स०-५ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थं न० ३५२ ।

३५० व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र स०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

## ग्रन्थ न० ३५४।

३५१ व्रतस्त्ररूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र स०-३ । पिन्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिन्त-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-घर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३८० ।

३५२ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र स०-२ । पिक्त प्रतिप्रत-९ । अक्षर प्रतिपिक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ३८६ ।

३५३ व्रतस्वरूप-आचार्यं प्रभाचन्द्र । पत्र स०-४ । पक्ति प्रांतपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-४१ । लिपि-कन्नड । भापा-सस्कृत । विपय-धर्मे । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० ३९३।

३५४ व्रतस्वरूप-आचार्यं प्रभाचन्द्र । पत्र स०-४ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ४६२।

३५५ त्रतस्वरूप-आचार्यं प्रभावन्द्र । पत्र स०-४ । पिक्त प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपिक्त-८० । लिपि-कञ्चढ । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कञ्चड टीका है ।

#### ग्रन्थ न० ४९९ ।

३५६ व्रतस्वरूप-आचार्यं प्रभाचन्द्र । पत्र स०-१ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं । ग्रन्थ न० ५२३ ।

३५७ व्रतस्वरूप—आचार्यं प्रभावन्द्र । पत्र स०-१ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षरं प्रतिपंक्ति-१२८ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । लेखतकाल— × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम । ग्रन्थ न० ५५३ ।

३५८ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र स०-६ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

## ग्रन्थ न० ६२८।

३५९ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र स०-२ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा मामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० ६६२।

३६० जनस्वस्प-आचार्यं प्रसाचन्छ । पत्र सं०-३ । पत्रितं प्रतिपत्र-९ । अक्षरं प्रतिपत्रि-३८ । लिपि-क्चित्र । भाषा-सम्हतः । विषय-वर्षे । लेखनकाल-४ । पूर्णे तथा सामान्य शृद्ध । दशा-उत्तमः । ग्रन्य नं० ६६२ ।

३६१ त्रतस्त्रहृप-आचार्यं प्रमाचन्द्र । णत्र स०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । हिपि-कप्तढ । नापा-मस्त्रत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विमेप-इसमें कप्तड टीका है ।

#### ग्रन्य न० ७०८।

३६२ व्रतस्तरप्-आचार्य प्रमाचन्द्र । पत्र सं०-८ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्ति-२१ । लिपि-क्त्रह । मापा-मस्कृत विषय-वर्म । लेखनकाल- ४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्म । ग्रन्य नं० ७१७ ।

३६३ त्रतस्तरूप-आचार्य प्रमाचन्द्र । पत्र स०-७ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अकर प्रतिपक्ति-२० । लिपि-क्पन्न । नापा-सस्हत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तया सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नह टीका है ।

## प्रन्य न० ७५५ ।

३६४ व्रतस्वरूप-जाचार्य प्रमाचन्द्र । एव स०-१ । पक्ति प्रतिपत्र-१ । अत्रर प्रतिपक्ति-९४ । लिपि-नन्नर । नापा-सस्कृत । विपय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्य नं० ७५६।

३६५ त्रतस्तरप-आचार्य प्रमाचन्द्र । पत्र स०-१ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११४ । लिपि-कन्नड । मापा-सम्हत्त । विषय-वर्म । ठेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

### प्रन्य न० ७७० ।

३६६ व्रतस्तरूप-श्वामं प्रभावन्द्र । पत्र स०-५ है । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । व्यक्त प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कत्रद । भाषा-मन्द्रत । विषय-वर्ष । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य सूद्ध । दशा-उत्तम । विभेष-इसमें कत्रद टीका है ।

### प्रन्य न० ७९१ ।

३६७ व्रतस्तरूप-काचार्य प्रमाचन्द्र । पत्र स०-७ । पंन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-३५ । लिपि-कन्नड । माषा-इंस्ट्रत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-तीर्ण । विजेष-इसमें कन्नड टीका है ।

## प्रन्य न० ८३८।

३६८ त्रतस्तर्प-त्राचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र स०-६ । पत्रित प्रतिपत्र-९ । बसर प्रतिपंक्ति-८१ । सिष-कप्तड । मापा-सस्तृत । विषय-वर्म । टेखनकाट-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दश-सामान्य । विशेष-इसमें कप्नड टीका एवं 'स्वरूपसबीयना' 'सच्यावन्दना' आदि के कुछ पत्र है ।

### ग्रन्य न० ९०३।

३६६ अवस्त्रहप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र मं०-२ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । व्यवर प्रतिपंक्ति-'७० । लिपि-कत्रह । भाषा-चंन्हत । विषय-वर्ष । लेखनकाल-४ । पूर्ण तया शुद्ध । व्या-सामान्य ।

# ग्रन्य नं ० १३९ ।

३७: शास्त्रसार्समुखय-अञार्वे मावनन्ती । पत्र सं०-२३१ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । सक्षर प्रतितंग्ति-८५ । बिरि-त्रस्ट । मापा-मंस्त्र । विषय-वर्षे । छेखनकाळ-४ । पूर्व तथा सामान्य बृद्ध । दशा-जीर्षे ।

## म्रन्य न० २३१ ।

३७१ **शास्त्रमारसमुद्धय**-आचार्यं माघनन्दी । पत्र स०-२२३ । पदित-प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपद्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-मम्कृत तथा कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ४१६ ।

३७२ शास्त्रसारसमुच्चय-आचार्यं माघनन्दी । पत्र स०-१३१ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । कक्षर प्रतिपक्ति-१८८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

#### ग्रन्य न० ५६४।

३७<mark>३ शास्त्रसारसमुश्चय</mark>—आचार्यं माघनन्दी । पत्र स०-४० । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत तथा कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

## ग्रन्थ न० ६१० ।

३७४ शास्त्रसारसमुद्यय-आचार्य माघनन्दः । पत्र स०-१०७ । पिनत प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपिन्त-६० । लिपि-कन्नद । मापा-सस्कृत । तथा कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य धुद्ध । दशा-जीर्ण ।

## ग्रन्थ न० ७९२ ।

३७५ शास्त्रसारसमुच्चय-अाचार्यं माघनन्दी । पत्र स०-१४१ । पनित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत तथा कन्नड । विषय-घर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विञेप-इसमें 'त्रैवणिकाचार' के भी दो पत्र है ।

# ग्रन्य न० ३५४।

३७६ शैवणास्त्र '' '। पत्र स०-८। पक्ति-प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति--४५। लिपि-कन्नहः। भाषा-सन्हतः। विषय-इतरधर्मः। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्धः। दशा-उत्तमः।

### ग्रन्य न० २०२।

३७७ श्रावकचारित्र-ॱॱ '। पत्र स०-६ । पवित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-विषु सवत्सर, माघ गु॰ १०, गुक्रवार अगलि के आदीश्वरचैत्यालय में विद्यानगरी के मुनि वीरसैन ने चन्द्रमित अम्म के लिये इसे लिखा। इस चरित्र में श्रावकों के आचार पर प्रकाश डाला गया है।

## ग्रन्य न० ३२१।

३७८ श्रावकप्रायश्चित्त • • • । पत्र सं०-६। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-४६। लिपि--कन्नड। भाषा-संस्कृत। संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

## ग्रन्य न० ३५४।

३७६ श्रावकप्रायश्चित्तः । पत्र स०-४। पन्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपन्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-वर्मे । लेखनकाल-४। पूर्णे तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ नं० ३१।

३८० श्रावकाचार-आचारं अमितगति। पत्र स०-१५। पन्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपन्ति-८८। लिपि-कन्नट। भाषा-सस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा अगुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

## ग्रन्थ न० २९९।

३८१ श्रावकाचार-आचार्य अमितगति । पत्र स०-७३ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-९३ । लिपि-कन्नरः। भाषा-संस्कृतः। विषय-धर्मः। लेखनकाल-× । पूर्णे तथा शुद्धः। दशा-सामान्यः।

## ग्रन्थ न० २७७ ।

। पत्र स०-१३। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-५४। लिपि-३८२ श्रावकाचार-'' कन्नड । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल– 🗴 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

### ग्रन्थ न० ९ ।

३८३ श्रावकाचार-\*\*\* । पत्र स०-५। पक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपक्ति-१२०। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह 'चिक्क धावकाचार' के नामसे प्रसिद्ध है।

## ग्रन्थ न० ५७९।

३८४ श्रावकाचार-''''। पत्र स०-११ । पनित प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह ग्रन्थ 'चिक्क श्रावकाचार' के नाम से प्रसिद्ध है।

## ग्रन्थ न० ६४५।

३८५ श्रावकाचार-''' । पत्र स०-१६। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-५३। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसका अपर नाम 'चिक्क श्रावकाचार'

## ग्रन्थ न० ६४९ ।

३८६ श्रावकाचार- । पत्र स०-१०। पित प्रतिपत्र-८। वक्षर प्रतिपित-५८। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसका अपर नाम'चिक्क श्रावकाचार' है।

## ग्रन्थ न० ३०९।

३८७ श्रावकाचार- · · · । पत्र स०-२०। पनित प्रतिपत्र-१६। अक्षर प्रतिपन्ति-२४७। लिपि-कन्नह । भाषा-कन्नह । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

## ग्रन्थन० ३२१।

३८८ श्रावकाचार-'''। पत्र स०-८ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-५० । स्त्रिप-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ न० ३२५ ।

। पत्रस०-८। पक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतितक्ति-३४। लिपि-३८९ श्रावकाचार-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-क्षय सवत्सर, निजश्रावण कृष्णा १ शुक्रवार के दिन शृगेरी पुट्टय्य । के पुत्र पोम्मय्य । ने धर्ममिति र्वाजका के लिये इसे लिखा है।

## । ग्रन्थ न० २३७।

३६० श्रीपदाशीति—कवि आचाण्ण । पत्र स०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

# ग्रन्थ न० २५९ ।

३९१ श्रीपदाशीति—किव आचण्ण । पत्र स०-७ । पक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपिक्त-१०१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० ३८३।

३९२ श्रीपटाशीति-कवि वाचण्ण । पत्र स०-५ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० ३९८।

३९३ श्रीपदाशीति-कवि आचण्ण। पत्र म०-५। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा मामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

## ग्रन्य न० ६४९।

३९४ श्रीपदाशीति—कवि वाचण्ण । पत्र स०-८ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । वक्षर प्रतिपक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० १७० ।

३**९५ घोडशभावनाचरित्र** । पत्र स०-४ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भापा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्य न० ३०२ ।

३९६ सकलागमसार । पत्र स०-११। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-९२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा शुद्ध। दशा-जीर्णं।

### ग्रन्थ न० ३१४।

३९७ सकलागमसार- । पत्र स०-७१। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति- । लिपि- कन्नड। भाषा-कन्नड। त्रियय-धर्म। लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

### ग्रन्य न० ५०० ।

३९८ सकलागमसार-ःः । पत्र स०-४२ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ९ ।

- ३९६ सज्जन-चित्तवल्लभ-आचार्य मिल्लपेण । पत्र म०-२५ । पिनत प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिनत-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्य न० ५७ ।

४०० सद्धानचित्तत्रक्षम-आचार्य मल्लिपेण । पत्र स०-७। पक्ति पतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपक्ति-१००। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# विशेष-इसमें कन्नड लघु वृत्ति है।

### ग्रन्थ न० ९३ ।

४०१ सज्जनचित्तवञ्चभ-आचार्यं मिल्लिषेण । पत्र स०-९ । पिनत-प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-१०६ । लिपि-कन्नड । मापा-मस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णे तथा गुद्ध । दशा-उत्तम ।

# विशष-इसमें कन्नड वृत्ति है।

### ग्रन्थ न० १३६।

४०२ सज्जनित्तवल्लभ-आचार्यं मल्लिषेण । पत्र म०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्मं । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० १४१ ।

४०३ सज्जनिचत्तवञ्चम-आचार्यं मल्लिपेण । पत्र स०-३। पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य गृद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ नं० १६०।

४०४ सज्जनचित्तवल्लभ-आचार्यं मिल्लिषेण । पत्र स०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षरप्रति पिक्त-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें और भी वैद्यक विषय के कुछ खण्डित पत्र है ।

#### ग्रन्थ न० १८१।

४०५ सज्जनित्तवल्लभ-आचार्यं मिल्लिपेण । पत्र स०-३ । पिक्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिक्त-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० २७२ ।

४०६ सज्जनिचत्तवल्लभ-आचार्यं मिल्लिषेण । पत्र स०-९ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशय-इसमें कन्नड टीका है ।

### ग्रन्थ न० ३०५।

४०७ सज्जनिचत्तवल्लभ-आचार्यं मिल्लिषेण । पत्र स०-२६ । पिन्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिन्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० ३०८ ।

४०८ सज्जनचित्तवल्लभ-आचार्य मिल्लिपेण। पत्र स०-३४। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिनत-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्णं। विशेष-इसमें कन्नडटीका है।

# ग्रन्थ न० ३१८।

४०६ सज्जनित्तत्वस्नभ-आचार्य मिल्लिषेण । पत्र स०-३ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ३४७ ।

४१० सज्जनचित्तवहास-आचार्यं मिल्लिषेण । पत्र स०-५ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ४७१ ।

४११ सज्जनचित्तवल्लभ-भाषार्यं मिल्लिषेण । पत्र स०-११ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्मे । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

#### ग्रन्थ न० ४७९।

४१२ सज्जनित्तन्त्वरुत्तभ-आचार्यं मिल्लिषेण । पत्र स०-२० । पिन्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिन्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेप-इसमें कन्नडटीका है ।

#### ग्रन्थ न० ५१०।

४१३ सज्जनिचत्तवद्ग्रम-आचार्यं मिल्लिपेण । पत्र स०-१० । पिनतः प्रतिपत्र-८ । अक्षरः प्रतिपिनत-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗴 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

### ग्रन्थ न० ५१९।

४१४ सज्जनिचत्तवङ्गभ-आचार्यं मिल्लिपेण । पत्र स०-१५ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सम्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

#### ग्रन्थ न० ५२३।

४१५ सज्जनचित्तवल्लभ-आचार्यं मल्लिषेण । पत्र स०-१ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत्र-१३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्मं । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ६२८ ।

४१६ सज्जनचित्तवहाभ-आचार्यं मिल्लिषेण । पत्र स०-२ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-१०८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्य न० ६३६ ।

४१७ सत्जनित्तवल्लभ-साचार्य मल्लिषेण। पत्र स०-६३। पिक्त प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपिक्त-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेप-इसमें अभिनव श्रुतमृनि कृत कन्नड टीका भी है। टीकाके अन्तिम पद्य-"श्रीमत्सज्जनिच्तवल्लभ इति प्ररूपाननाम्न कृतेः टीका भव्यविभावका बुधजनश्रव्या हि नव्या कृता । कामानेकपकेसरीश्रुतमृने शुद्धा-त्मसवित्वने पादाब्जाल-सुचन्द्रकीर्तियतिन शिष्येण पुण्यात्मना ॥ या अभिनवश्रुतमृनिना गुणिना साघ्वी हिता कृता लघ्वी । ता शोधयन्तु निपुणाः श्रीजैनागमसुधाव्यविधुसङ्काशा ॥ "

# ग्रन्थ न० ६५८।

४१८ सज्जनचित्तवल्लभ-आचार्यं मल्लिषेण । पत्र स०-९ । पक्ति प्रतिपत्र त् । अक्षर प्रतिपक्ति-१८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा अशुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्य न० ७५६ ।

४१६ सज्जनचित्तवल्लभ-आचार्यं मिल्लिषेण। पत्र स०-१। पिनित प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-११२। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्णं।

४२० सज्जनित्तवल्लभ-आचार्यं मिल्लिषेण । पत्र सं०-१७ । पिनतः प्रतिपत्र-७ । अक्षरः प्रतिपिनत-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृतः । विषय-धर्मे । लेखनकाल-४ । पूर्णे तथा शुद्धः । दशा-सामान्यः । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

# ग्रन्थ नै० ८१३ ।

४२१ सज्जनचित्तवल्तभ-आचार्य मल्लिषेण । पत्र स०-४३ । पनित प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्य न० ८१६।

४२२ सज्जनचित्तवल्लभ-आचार्यं मिल्लिपेण। पत्र स०-२।पिक्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-४९। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विपय-धर्मः। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।
प्रन्थ न० ८१९।

४२३ सज्जनचित्तवल्लभ-आचार्य मिल्लिषेण्। पत्र स०-१३। पिन्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रनिपिन्त-९५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४। पूर्णे तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ न० ४३।

४२४ सर्वार्थसिद्धि—आचार्यं पूज्यपाद । पत्र स०-९० । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०५ । विषय-वर्षे । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

प्रत्य न० १३७ । ४२५ सर्वोथिसिद्धि-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-१०१ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्य वं० २८६।

४२६ सर्वायसिद्धि-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-११६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-७१ । लिपि-कन्नड । माणा-संस्कृत । विपय-धर्म । लेखनकाल-शालि० शक १५२१ । पूर्ण तया गुद्ध । दणा-उत्तम ।

विशेप-शालि॰ गक १५२१, विलिव सवत्मर भाद्रपद कृष्णा प्रतिपदाके दिन सरस्वती-गच्छ वलात्का-रगण कोण्डकुन्दान्वयके अा॰ वनुन्यरने इमे लिखा है।

#### ग्रन्य न० ४९९।

४२७ सर्वोधेसिद्धि-बाचार्यं पूज्यपाद । पत्र म०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-त्रमें । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य नं० ५७६ ।

४२८ सर्वोर्थेसिद्धि-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-७१ । पन्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपन्ति-१०० । लिपि-कञ्चड । भाषा-संस्कृत । विषय-वर्मे । लेखनकाल-४ । वपूर्ण तथा सामान्य गृह । दशा-सामान्य ।

### गन्य न० ७१३।

४२६ सर्वोधिसिद्धि-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-३६ । पिनत प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४५ । िक्षि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तया सामान्य गुद्ध । दशा-उत्तम । गन्य नं० १४१ ।

४३० सद्वोधचन्द्रोद्य-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र चं०-३ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । असर प्रतिपन्ति-५९। लिपि-कन्नह । नापा-सस्कृत । विषय-वर्म । टेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-नामान्य ।

#### ग्रन्य न० ७।

४३१ सागारवर्मीमृत-पण्डित बाजावर । पत्र सं०-१२१ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-८२ । लिपि-कन्नड । मापा-संस्कृत । विपय-वर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दणा-उत्तम । विगेष-ग्रंथ स्वोपज्ञ टीका सहित है ।

### ग्रन्य नं० २१।

४३२ सागारघमोमृत-पण्डिन आगाघर। पत्र म०-७४। पंक्ति प्रतिपत्र-१६। अक्षर प्रतिपक्ति-१०५। िलिप-कन्नड । मापा-संस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णे तथा शुद्ध-। दशा-उनम । विशेष-इसमें स्वोपज्ञ टीका भी है ।

# ग्रन्थ न० १०० ।

४३३ सागारधर्मोमृत-पण्डित लागाघर । पत्र मं०-७४ । पत्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपत्रि-७० । लिपि-कन्नह । मापा-सस्कृत । वियय-वर्म । लेखनकाल- 🗶 । वपूर्ण तथा गृद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नह टीका है । इसके अन्तके ६ ग्लोक नहीं हैं ।

#### ग्रन्य नं ० ११२।

४३४ सागारवर्मामृत-पण्डित आशावर। पत्र सं०-१०८। पिनत प्रतिपत्र-६। असर प्रतिपिनत-१४८। लिपि-कन्नड। नापा-संन्कृत। विपय-वर्म। लेखननाल-४। पूर्ण तथा गृद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें स्वोपन्न संस्कृत टीका है।

# ग्रन्य वं० ३२४।

४३५ सागारघमीमृत-पण्डित लागावर । पत्र सं०-६२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१४ । लक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-क्त्रह । भाषा-संस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तया नामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । विषय-इसमें कत्रह टीका हैं ।

#### ग्रन्थ न० ३७६।

४३६ सागारधर्मामृत-पण्डित आशाघर । पत्र स०-१०८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६९ । लिपि--कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗶 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष—इसमें कन्नड टीका है। यह टीका शालि॰ शकः १५३६, बानन्द सवत्सर अशव्ययुज, शुक्ला ५ के दिन क्षेमपुर (गेरुसोप्पे) निवासी बाहुबली (मुजबली) उपाच्यायके द्वारा रची गयी है। राक्षस सवत्सर । कार्तिक-१० के दिन मूल्के निवासी कुल्यने इसे लिखा है।

#### ग्रन्थ न० ४४३।

४३७ सागारधर्मामृत-पण्डित आशाधर । पत्र स०-६८ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-१३० । विरि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें स्वोपज्ञ सस्कृत टीका है ।

#### म्मन्य न० ४७३।

४३८ सागारधर्मामृत-पण्डितः आशाघर । पत्र स०-३९ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-६० । िलिप-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टिप्पणी है ।

#### त्म्रन्थ न० ४७५ ।

४३८ सागारधर्मामृत-पण्डित बाशाघर । पत्र स०-८५ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपेनित-१२८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्मे । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका है ।

### , ग्रन्थ न० ५१२ ।

४४० सागारधूमीमृत-पण्डित आशाघर । पत्र स०-२० । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य ्शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ५२३।

४४१ सागारधर्मामृत-पण्डित आशाघर। पत्र स०-९। पक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपक्ति-१२९।
िलिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।
। प्रत्य न० ५३३।

४४२ सागारधमोमृत-पण्डित आशाधर। पत्र स०-८३। पित्त प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपित्त-८६। लिपि-कंन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।
- विशेप-इसमें कन्नड टीका है।

४४३ सागारधमोमृत-पण्डित आशावर । पत्र स०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अवर प्रतिपक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

, , । ग्रन्थ न० ५५४ । ' ।

🖙 भ्रत्य च० ५६६ । 🕛

४४४ सागारघमोमृत-पण्डित आशाघर। पत्र स०-८९। पिनतःप्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपन्ति-१२०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्णः।

४४५ सागारधर्मामृत-पण्डित आशाघर । पत्र स०-४६ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें व्याकरणसवधी कुछ पत्र हैं ।

#### ग्रन्थ न० ५९८।

४४६ सागारधमीमृत-पण्डित आशाघर। पत्र सं०-८। पिनत प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-५८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें 'आप्तपरीक्षा' के भी ३ पत्र है।

### ग्रन्थ न० ५९८।

४४७ सागारधमोमृत-पण्डित आशाघर । पत्र स०-२३ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ५९८।

88८ सागारधर्मामृत-पण्डित आशाधर । पत्र स०-११६। पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-५३। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ६०९ ।

४४६ सागारधर्मामृत-पण्डित आशाघर । पत्र स०-१६ । पित्त प्रतिपत्र-११.। अक्षर प्रतिपित्त-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीण । विशेप-इसमें अनुप्रेक्षा सवधी और भी कुछ पत्र है ।

### ग्रन्य न० ६३२।

४५० सागारधर्मामृत-पण्डित आशाघर । पत्र स०-८६ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

# ग्रन्थ न० ७५१।

४५१ सागारधर्मामृत-पण्डित आशाघर । पत्र स०-८७ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विपय-धर्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका है ।

# ग्रन्थ न० ८८०।

४५२ सागारवर्मामृत-पण्डित आशाधर । पत्र स०-१६ । पश्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपत्रित-८ । लिपि-कन्नड । भापा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका है ।

# ग्रन्थन०,९।,

४५३ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र स०-१७ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनंकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमे विमलसूरि कृत कन्नड टीका भी है ।

# ग्रन्थ न० ७५ ।

४५४ सून्त्रिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रम । पत्र स०-१७ । पित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति है ।

# ग्रन्थ न० ९१।

४५५ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र स०-३० । पनित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० १००।

४५६ सूक्तिमुक्तावली-आचार्यं सोमप्रभ । पत्र स०-२० । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें विमलसूरि कृत कन्नड टीका है ।

# ग्रन्थ न० १७५।

४५७ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रम । पत्र स०-५ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रन्य न० १८२ ।

४५८ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र स०-२९ । पिन्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिन्त-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है । आदिके २२ पद्य नहीं है ।

#### ग्रन्थ न० २३७।

ि ४**५६ सूक्तिमुक्तावली**–आचार्य सोमप्रभ । पत्र स०-५ । पक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपक्ति–७५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० २७३।

४६० सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रम । पत्र स०-४२ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-कीलक सवत्सर माघ शुक्ला ५ रविवारके दिन जीयण्णके शिष्य नेमिचन्द्र देवने इसे लिखा है ।

#### ग्रन्थ न० ३०८।

४६१ सूक्तिमुक्तावली-आचार्यं सोमप्रभ। पत्र स०-६०। पंतित प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंतित-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें विमलसूरिकी कन्नड टीकां है।

# ग्रन्थ न० ३१८।

४६२ सूक्तिमुक्तावली-आचार्यं सोमप्रसः । पत्र स०-९। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-६८। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ न० ३२८।

४६३ सूक्तिमुक्तावली-आचार्यं सोमप्रभ । पत्र स०-९ । पन्ति प्रतिपत्र-९ । विश्वभर प्रतिपन्ति-५८ । लिपि-फन्नड । माषा-सस्कृत । विषय-वृमं । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णे तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ३३५।

, ४६४ सूक्तिमुक्तावली-आचार्यं सोमप्रभ । पत्र स०-१३ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-४९ । ि छिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-घर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ,ग्रन्थ न० ३,४८ ।

, ४६५ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र स०-१४ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३५४ ।

४६६ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र स०-१३ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । निषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्य नं० ३७७।

४६७ स्किमुक्तावली-आचार्य नोमप्रम । पत्र स०-८। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-७९। िलिए-कन्नड । मापा-मस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा मामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है, एव 'परीक्षामुख' के कुछ खण्डिन पत्र भी हैं ।

# ग्रन्य नं० ३८०।

४६८ सूक्तिसुक्तावली-आचार्यं सोमप्रम । पत्र मं०-१० । पक्ति प्रतिपत्र-९ । यक्षर प्रतिपक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । मापा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा मामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्य न० ४०९ ।

४६९ सूक्तिमुक्तावली-आवार्य मोमप्रभ । पत्र स०-२५ । पत्रित प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपत्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विषय-इसमें कन्नड टीका है ।

#### ग्रन्य न० ५२०।

४७० स्किमुक्तावर्ती-आचार्य सोमप्रम । पत्र स०-१२ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिन-७३ । लिपि-क्नाड । मापा-सस्हत । विषय-वर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रत्य नं० ५५४ ।

४७१ स्किमुक्तावली-आवार्य सोमप्रम । पत्र स०-४ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । जिप्प-कन्नह । मापा-संस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा मामान्य सद्ध । दशा-सामान्य । प्रन्य न० ६०२ ।

४७२ सुक्तिमुक्तावली-झानार्य मोमप्रम । पत्र म०-७ । पन्नि प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-४० । लिपि-कन्नड । माया-संस्कृत । विपत्र-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । विभेप-इसमें संस्कृत 'नागकुमारचरित' के भी कुछ पत्र है ।

#### ज्ञ्य नं ० ६२५।

४५३ स्किमुक्तावली-आवार्य सोमप्रम । पत्र सं०-१५३ । पिनत प्रतिपत्र-१२ । अझर प्रतिपिनत-१५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें सस्कृत 'पार्ग्वनायाष्टक' आदिके 'मी कुछ अपूर्ण पत्र है ।

#### 'प्रन्य न ६३१।

४७४ स्किमुक्तावली-आचार्य सोमप्रम । पत्र स०-१० । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । ।िर्छाप-कन्नड । नापा-संस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें संस्कृत 'अर्हत्स्तोन' 'सिद्धस्तोन' तथा 'रत्नत्रयस्तोन' के भी कुछ पत्र हैं।

#### प्रन्य नं० ६७६।

४७५ सुक्तिमुक्तावली-आवार्य सोनप्रभ । पत्र स०-८५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । असर प्रतिपंक्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्य न० ७२३ ।

४७६ स्किमुक्तावली-आचार्य सोमप्रम । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । स्टिपि-कन्नह । नापा-संस्कृत । विपय-वर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । 'यन्य न० ७५६ ।

४७७ सुक्तिमुक्तावली-काचार्यः सोनप्रम । पत्र सं०-३ । पत्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपत्ति-११६ । विषि-कन्नड । मापा-सक्तत । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा सण्डित ।

#### ग्रन्थ न० ८६२।

४७८ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र स०-२७ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेप—इसमें कन्नड टीका है । खर सवत्सर भाद्रपद प्रतिपदा मङ्गलवारके दिन उपाध्याय अनन्त भट्टके पुत्रने वेणुपुर—[मूडविद्री] स्थ कोटिसेट्टिवसिद [नेमिनाथ चैत्यालय] में इसे लिखा है ।

# विषय-योगशास्त्र

# ग्रन्थ न० द७१।

१ श्रानन्द्विंशतिका- \* \* । पत्र स०-२ । पिनत प्रतिपत्र-१५ । अक्षर प्रतिपिनत-१२२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-योगशास्त्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें योगशास्त्रसविधी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ न० २८३।

२ ध्यानस्वरूप- •••••। पत्र स०-५। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-१४४। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-योगशास्त्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ३२१।

३ ध्यानस्वरूप- '। पत्र स०-२ । पिनत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिन्त-४५ । लिपि-कन्नह । भाषा-कन्नह । विषय-योगशास्त्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ४७७ ।

४ योगरत्नाकर-किव शान्तरस । पत्र स०-२१ । पिन्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिन्त-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-योगशास्त्र । लेखनकाल- × । शालि० शक १६४१ विकारी सवत्सर फाल्गुन शुक्ला १५ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—सोमवशीय राजा लक्ष्मप्परसराय (वगभपाल) के गुरु आचार्य चन्द्रशेखरके पुत्र पद्मनाभर्ने इसे लिखा है।

#### ग्रन्थ न० ७४४ ।

्र योगरत्नाकर-किव शान्तरस । पत्र सर्०-२१ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-७८ । लिपि-कन्नडं । भाषा-कन्नड । विषय-योगशास्त्र । लेखनकाल-४ । शालि० शक १६५३ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

' विशेष—शालि॰ शक १६५३ खर सवत्सर 'आश्वयुज शुक्ला १५ भागेंव (शुक्र) वारके दिन सूरात्न निवासी चन्दप्पने सिंघु उपाध्यायके लिये इसे लिखा है ।

#### ग्रन्थ न० ८९२।

६ योगरत्नाकर-कि कान्तरस । पत्र स०-५ । पित्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-योगशास्त्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'गोम्मटसार (जीवकाण्ड) 'तथा आशीर्वादपद्य' के भी कुछ पत्र है ।

### ग्रन्य नं० ७५५।

७ योगसार-श्री गृत्दास । पत्र मं०-४। पिकत प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-९२। लिपि-कन्नर। भाषा-संस्कृत । विषय-योगशास्त्र । लेखनकाल-४। पूर्ण तया मामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह ग्रन्य प्रकाशनाहं है ।

# ग्रन्य नं० १४४।

द्र योगामृत-कि शालरस । पत्र स०-५। पंग्ति प्रतिपत्र-१। बक्षर प्रतिपिक्त-६३। लिपि-कन्नह। भाषा-कन्नह । विषय-योगशास्त्र । लेक्नकाल-४। अपूर्ण तथा मामान्य शुद्ध । दशा-मामान्य । विशेष-इसमें और भी कृष्ट सण्डित पत्र हैं ।

#### ग्रन्य नं० ३३२।

ह योगामृत-कि शान्तरम । पत्र सं०-१३ । पित्त प्रतिगत्र-८ । अक्षर प्रतिपंत्रि-४३ । लिपि-दन्नह । नापा-कन्नद । विषय-योगशास्त्र । लेखनंकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शृह । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ७०२ ।

१० योगासृत-कि गान्तरस । पत्र म०-२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३६ । लिप-क्ष्मड । नापा-कन्नड । विपय-योगगास्त्र । लेखनकाल- 🗙 । अतूण तया सामान्य गृद्ध । दशा-मामान्य ।

### ग्रन्य नं० ४९०।

११ योगाङ्ग-\*\*\*\*। पत्र मं०-११६। पक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपक्ति-५०। लिपि-कन्नह। भाषा-कन्नह। विषय-योगद्यास्त्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा मामान्य गुद्ध। दथा-अतिजीर्ण।

# ग्रन्य न० १७२।

१२ ज्ञानार्शेव-आचार्यं शूमचन्द्र । पत्र सं०-११५ । पितः प्रतिपत्र-७ । क्षक्षर प्रतिपित्त-६७ । लिपि-कन्न । निषय-योगशास्त्र । लेन्ननकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्य नं० ६२८ ।

१३ ज्ञानाण्व-आचार्यं शुभवन्द्र । पत्र म०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०८ । लिपि-कप्तह । भाषा-सन्द्रत । विषय-योगशास्त्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य श्रुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें गद्यमाण मात्र है । इनकी कप्तड टीका है । साथ ही साथ 'गोम्ण्टसार' जीवकाण्ड सबबी संदृष्टिने मी बुख अपूर्णं पत्र है ।

#### ग्रन्य नं० ६२८।

१४ झानाएँव-अाचारं गुमचन्द्र। पत्र सं०-३८ । पन्ति प्रतिपत्र-१०। सत्तर प्रतिपन्ति-१००। लिपि-क्षत्र । मापा-संन्कृत । विषय-योगशास्त्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तया सामान्य गृद्ध । दशा-्उत्तम । प्रत्य नं० ७१०।

१४ ज्ञानार्णेव-आचार्य श्मचन्द्र । पत्र स०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । ज्ञार प्रतिपक्ति-२० । लिपि-नागरी । भाषा-संन्कृत । विषय-योगशास्त्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा मामान्य शुद्ध । दशा-मामान्य । ग्रन्य नं० ७५६ ।

१६ ज्ञानार्ण्व-श्राचार्य श्रूमचन्त्र । पत्र स०-२८ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति ११० । लिपि-कष्ट । नापा-चंन्क्रन । विषय-योगशास्त्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण । विशेष-इसर्ने 'तत्त्वानुशामन' 'आराबनासार' आदिके भी कुछ खण्डित पत्र हैं ।

# विषय--प्रतिष्ठा

### ग्रन्थ नं० ४२१।

१ जिनयज्ञकल्पटीका- ' ' पत्र स०-४६। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-१६०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा। लेखनकाल- 🗙। पूर्णं तथा सामान्य गृद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-यह पण्डित आगाधर विरचित 'जिनयज्ञकल्प' अथवा 'प्रतिष्ठासारोद्धार' नामक प्रतिष्ठापाठ की

मय्कृत टीका है।

#### ग्रन्य न० १९०।

२ जिनयज्ञकल्पदीपक-पण्डित आगाघर । पत्र स०-७३ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह 'प्रतिष्ठामारोद्धार' का स्वोपज्ञ निवन्य है । प्रति मे इसका नाम जिनयज्ञकल्पदीपक नाम निवन्य लिखा मिलता है ।

#### ग्रन्य न० ५०८।

३ जिनसंहिता—आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र स०-१७ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण । ग्रन्थ न० ६८२ ।

४ जिनसंहिता-भ०एकसवी । पत्र सं०-४ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें 'एकीभाव', 'विषापहार' 'एव तत्त्वार्यसूत्र' के भी कुछ पत्र है ।

#### ग्रन्य न० ७२०।

४ जिनसंहिता-म० एकसन्वी । पत्र स०-२३ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । मापा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दगा-सामान्य । विशेष-इसमें 'गणितविलास' (कन्नड ) के भी कुछ पत्र हैं ।

#### ग्रन्थ न० ६८३।

६ जिनसंहिता-म॰एकमघी । पत्र स०-७६ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-१०० । लिपि-कन्नढ । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रथ न० ११३ ।

७ जिनेन्द्रकल्यागाभ्युद्य-आर्येप । पत्र स०-६८ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-९८ । लिपि-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रारभ्भिक भाग --

तर्कं व्याकरणागमादिलहरीपूर्णश्रुताम्मोनिघे स्याद्वादाम्बरभास्करस्य घरसेनाचार्यवर्यस्य च। शिष्येणार्येपको-विदेन रचित कौमारमेनेर्मुनेर्ग्रन्योऽय जयताज्जगत्त्रयगुरोविम्ब (व) प्रतिष्ठाविधि ॥

#### ग्रय नं० ५७७।

द जिनेन्द्रकल्याणाभ्युद्य-आर्यंप । पत्र स०-५४ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें 'कातत्ररूपमाला' के भी ७ पत्र है ।

#### ग्रय न० ८७४।

१ ध्वजारे। हण्विधि—नेमिचन्द्र । पत्र स०—३६ । पिक्त प्रतिपत्र –८ । अक्षर प्रतिपिक्त –३९ । लिपि –
 कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रतिष्ठा । लेखनकाल – × । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा—उत्तम ।
 विशेष—यह नेमिचन्द्रकृत 'प्रतिष्ठातिलक' का एक प्रकरण है ।

# ग्रंथ न० २१४।

१० प्रतिष्ठाकलपटिष्पिंग कुमुदचन्द्र । पत्र स०-६४। पनित प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपन्ति-९८। लिपि-कन्नड । मापा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा -सामान्य । विशेष-इसमें 'नन्दीश्वरपूजा' के भी २० पत्र हैं।

# ग्रन्थ नं० २५१।

११ प्रतिष्ठाकल्पटिष्पणि—आचार्यं कुमुदचन्द्र । पत्र स०-६२। पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-९०। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शृद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ६८२।

१२ प्रतिष्ठाकल्पिटिप्पिण्-आचार्य कुमुदचन्द्र । पत्र स०-६७ । पिवत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शृद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका है तथा 'जिनसहस्रनाम' एव 'रत्नकरण्ड श्रावकाचार' के भी कुछ पत्र हैं। ग्रन्थ म० ७३० ।

१३ प्रतिष्ठाकल्पिटपिए।-आचार्यं कुमुदचन्द्र । पत्र स०-५१ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

### ग्रन्थ नं० ७७९।

१४ प्रतिष्ठाकल्पटिप्पि — आचार्यं कुमृदचन्द्र । पत्र स० — ८३ । पिक्त प्रतिपत्र — ८ । अक्षर प्रतिपिक्त — ८४ । किपि — कन्नड । भाषा — सस्कृत । विषय — प्रतिष्ठा । लेखनकाल — 🗶 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा — सामान्य । विशेष – इसमें कन्नड टीका है ।

# ग्रन्थ न० २३४।

१५ प्रतिष्ठातित्तक-त्रह्मसूरि । पत्र सं०-४८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० १०६ ।

१६ प्रतिष्ठातिलक-त्रह्मसूरि । पत्र सं०-१८ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा अशुद्ध । दशा-जीर्णं । विशेष-यह ग्रन्थ पूर्ण है, पर आदि के कुछ पत्र खण्डित है ।

#### ग्रन्थ न० ८८१।

१७ प्रतिष्ठातिलक-नेमिचन्द्र । पत्र स०-६ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-गा० शक १७९९ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० ८९१ ।

१८ प्रतिष्ठातिलक-नेमिचन्द्र । पत्र स०-५० । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-३७ । लिपि-कन्नड । मापा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । विशेप-इसमें 'गणितविलास', 'क्षत्रचूडामणि' तथा 'व्याकरण' आदिके भी कुछ पत्र है ।

# ग्रन्थ न० ७०।

१६ प्रतिष्ठासारोद्धार-पण्डित आशाघर । पत्र स०-४४ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-६९ । लिपि-कन्नड । मापा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ११५ । २० प्रतिष्टासारोद्धार-पण्डित वाशाघर । पत्र स०-८८ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । वक्षरः प्रतिपन्ति- १०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणं । विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति भी है ।

#### ग्रन्थ न० २६३।

२१ प्रतिष्ठासारोद्धार-पण्डित आशाघर । पत्र स०-१६ । पन्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसका अपर नाम 'जिनयज्ञकल्प' है ।

#### ग्रन्थ न० ८७२।

२२ यथाप्रतिष्ठाविधान-''''। पत्र स०-२० । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'ध्वजारोहणविधि' भी है ।

### ग्रन्थ न० १९०।

२३ यन्त्रीविधि : : : । पत्र स०-१४ । पित्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें प्रतिष्ठा में काम आनेवाले कितपय यन्त्रों के नियम दिये गये हैं ।

#### ग्रन्थ न० ८८२।

२४ यंत्रसंग्रह्-नेमिचन्द्र । पत्र स०-१४ । पिनत प्रतिपत्र-× । अक्षर प्रतिपिन्त-× । लिपि-कन्नड । भाषा-× । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें प्रतिष्ठा सम्बन्धी कतिषय यत्र सग्रह किये गय हैं ।



# विषय--- व्रताविधान

#### ग्रन्थ नं ० ७८३।

१ स्प्रनन्तत्रतिघान- • • • • • • • पत्र स०-१३। पंनित प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-४७। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत तथा कन्नड। विषय-व्रतिविधान। लेखनकाल- ×। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें 'यज्ञोपवीतलक्षण' 'मुद्रालक्षण' आदि के भी कुछ पत्र हैं।

#### ग्रन्थ न० ११४।

२ श्रमिपेकपाठ- । पत्र स०-९। पिकत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-५८। लिपि-कन्नह। भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। लेखनकाल- 🗴 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेप-इसमें और भी कतिपय स्तोत्रो के कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३५५।

३ स्त्रमिपेकपाठ-ब्रह्मसूरि । पत्र स०-६ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

# ग्रन्थ न० ७१३।

४ **श्रभिषेकपाठ- ' ' ' ।** पत्र स०-२२ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० ८९३।

४ द्यभिषेकपाठ-''''। पत्र स०-१५ । पवित प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपवित-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह 'वज्रपाणि' नाम से प्रसिद्ध है।

ग्रन्थ न० ३८१।

६ स्त्रभिषेकपूजापाठ- ' ' । पत्र स०-६ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । त्रिषय-पूजा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

# ग्रन्थ न० ३८८।

७ द्यभिषेकपूजापाठ- · · · · । पत्र स०-३९ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिन्त-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ न० २३७।

द्ध श्रह्तपूजा- ः । पत्र स०-१ । पक्ति-१२ । अक्षर प्रतिपक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पूजा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ८९४।

**१ श्राराधनासंग्रह-ःः ।** पत्र स०-२७ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपित्ति-२७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-आराघना । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेप–इसमें 'कलिक्नुण्डाराघना' 'नागार्जुनयत्राराधना' तथा वज्जपञ्जराराघना' आदि कई आराधनाए सग्रह की गई है। एव 'शान्तिहोमविधि' भी है।

# ग्रन्य न० ११४।

१० कर्मदृह्नन्रशाराधना- । पत्र स०-१८। पनित प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपन्ति-६८। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-आराधना। लेखनकाल- ×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्य न० ३३५। ११ कमदह्नपूजाविधान-''''। पत्र स०-५। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिनत-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

# ग्रन्य न० २२७।

१२ कमेदहनमंत्र- ' ' ' । पत्र स०-१७ । पिनत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिनत-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ न० ८१०।

१३ कर्मदहनमत्र- ः ः । पत्र स०-९। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य।

विशेप-इसमें 'सिद्धचक' 'दशलक्षण' तथा 'श्रुतज्ञान' के जाप्यमत्र भी है।

#### ग्रन्थ न० ३६३।

१४ कल्पासरव्रतिवधान- ' ''। पत्र स०-१। पिनत प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपिनत-३८। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-व्रतिवधान। लेखनकाल- ×। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

### ग्रन्थ न० २५०।

१५ कितिकुण्ड-श्राराधनादिसंग्रह- · · · । पत्र स०-१३०। पन्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपन्ति-५४। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० १९७।

१६ गणधराष्टक- ' । पत्र स०-१ । पित प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपित्त-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ ने० १९७।

**१७ गण्धराधिवासन** । पत्र स०-४। पक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपक्ति-६२। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत तथा कन्नड। विषय-पूजा। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें 'त्रिभुवनतिलकन्नतकथा' के भी तीन पत्र है।

#### ग्रन्थ न० ८९०।

१८ गण्धरवलययंत्राराधनां । पत्र स०-१६। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-५४। लिपि--कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-आराधना । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ४४५।

**१९ ग्रह्यञ्चविधान**- ' । पत्र स०-७। पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-१७० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ८६३।

२० चतुर्विशितिजिनपूजा-पण्डित आशाघर । पत्र स०-४० । पित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपित्त-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें पंचपरमेष्ठी, श्रुत तथा गणधरपूजाए भी है ।

ग्रन्थ न० ८७१।

२१ चतुर्विशतितीर्थंकरसमुदायपूजा- । पत्र स०-२७। पिक्त प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिक्त-३२। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें श्रुतपूजा, गणधरपूजा तथा रत्नत्रयपूजा भी हैं।

#### ग्रन्थ न० ८४४।

२२ चारित्राराधनामंत्र- : । पत्र स०-३२ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें १३ विष चारित्र-सबन्धी पूजामत्र है ।

### ग्रन्थ न ३३४।

२३ चारित्रसिद्धित्रतिवधान- '। पत्र स०-्वै। पक्ति-८। अक्षर प्रतिपक्ति-४९। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-त्रतिवधान। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न०२३४।

२४ चारित्रसिद्धित्रत-पूजाविधान-भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र स०-३३ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-९९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्रतिवधान । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-मन्मय सवत्सर वैशाख कृष्णा ६ शनिवार के दिन बल्लसे वैलुर देवरसने इसे लिखा है।

#### ग्रन्थ न० २१५।

२५ जिनगुग्**संपत्तित्रतिविधान- ''** । पत्र स०-९ । पक्ति प्रतिपत्र ९ । अक्षर प्रतिपक्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-त्रतिविधान । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रथ न० ३३४ ।

२६ जिनगुगासंपत्तित्रतिवधान-' । पत्र स०-२। पिक्त प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिक्त-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-त्रतिवधान। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ८७७।

२७ तीर्थं करमगलारती- '' '। पत्र स०-१८। पिक्त प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिक्त-१५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-पूजा। लेखनकाल- ×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें वर्तमान २४ तीर्थं करो तथा पचपरमेष्ठियोकी आरती है।

# ग्रन्थ न० ६७८।

२८ त्रिकालतीर्थं करपूजा- । पत्र स०-८। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिनत-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें 'अभिषेकपाठ' भी हैं।

# ग्रन्थ न० ८३४।

२६ त्रिकालतीर्थंकरपूजा- ''' । पत्र स०-१८ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-६१ । स्विपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें आचार्य समन्तभद्र कृत 'स्वयभूस्तोत्र' 'भक्तामरस्तोत्र' तथा 'समवसरणस्तोत्र' आदि के भी कुछ पत्र है ।

# ग्रन्थ न० ६४७ ।

३० **नवदेवतापूजाविधि-** : : । पत्र स०-६३ । पिनत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपन्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा साम्रान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ३६३ ।

३१ नवनिधिमण्डारव्रतविधान- : : । पत्र स०-४ । पिकत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्रतिवधान । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ३५३

३२ तित्यन्नतादानक्रम- ' ''। पत्र स०-३। पिन्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिनत-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-न्नतविधान। लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-जीर्ण। विशेष-इसमें श्रावकोके प्रतिदिन नियम लेने का क्रम बतलाया है।

# ग्रन्थ न० ८५४।

३३ नन्दीश्वरपूजा- · · · · । पत्र स०-१९ । पिन्तं प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिन्त-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न०५२९।

३४ नन्द्रिश्चरत्रतिषधान-'''। पत्र स०-७। पिन्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिन्ति-५२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-व्रतिविधान। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्णं।

### ग्रन्थ न ०५७९ ।

३५ नन्दिश्वरव्रतविधान-'' '। पत्र स०-८। पिनत प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिनत-६०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-व्रतविधान। लेखनकाल-×। पूण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

#### ग्रन्थ न० ३७८ ।

३६ नान्दोमंगत्तविधान- ' ''। पत्र स०-५२। पन्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपन्ति-५४। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ७००।

३७ नान्दीमंगलविधान-सग्रह । पत्र स०-११६ । पनित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत, प्राकृत तथा कन्नड । विषय-पूजा । लेखनकाल- 🔀 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ३३४ ।

३८ पल्यविधानत्रतविधान- : : । पत्र स०-१। पिनत-६। अक्षर प्रतिपिनत-२५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-न्नतविधान। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न०४०७।

३६ पूजापाठसंग्रह ''''। पत्र स०-१५ । पित्र प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपत्रित-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

•

#### ग्रन्थ नं० ४०९।

४० पूजापाठसंग्रह- ' ' '। पत्र स०-२५ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-१०० । लिपि-कन्नस । भाषा- सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्य न० ६९९।

४१ पूजापाठसंग्रह्- ः । पत्र स०-६०। पिनत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिनत-३५ । लिपि-नागरी । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

# ग्रन्थ न० ८६८ ।

४२ पूजापाठसंग्रह्- ' । पत्र स०-२७ । पन्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ नं० २१५।

४३ पंचकल्याणव्रतिवधोन- : :: । पत्र स०-१६ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-५८ । लिपि-कन्नरः । भाषा-सस्कृत । विषय-व्रतिवधान । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० १८१ ।

४४ पंचपरमेष्ठिपूजा- । पत्र स०-३ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत तथा कन्नड । विषय-पूजा । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ८४८।

४५ पंचपरमेष्ठिपुजा- "। पत्र स०-१६। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-३७। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# विशेष-इसमें 'वाहुवलिपूजा' भी है ।

# ग्रन्थ न० ८४०।

४६ पंचपरमेष्टि तथा नवदेवतापूजा— । पत्र स०-३०। पित प्रतिपत्र-८। वक्षर प्रतिपिक्त-३३। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें 'नवदेवतास्तोत्र' भी हैं।

#### ग्रन्थ न० ८७६।

श्रृष्ठ ब्रह्मयत्त्राचेत्त- ' '''। पत्र स०-९ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'सुप्रभातस्तोत्र' 'स्वप्नावली' तथा 'त्रिलोकचरित' [कन्नड] भी है ।

#### ग्रन्थ न० ६५८।

४८ भुजवित्तक्तत्याण्वतिविधान-पद्मनन्दी वर्णी । पत्र स०-१९६ । पन्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रति-पिनत-१८ । छिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-त्रतिविधान । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ८१३।

**४६ भूमिशुद्धिविधान-** । पत्र स०-१९ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ६७८।

५० महापुरयाहवाचना- । पत्र स०-१५। पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-४५। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-यह 'नान्दीमञ्जलविघान, का एक अश हैं । इसमें 'अकलङ्काष्टक' 'नन्दीश्वरपूजा' तथा 'पोडश-

भावनापूजा' के कुछ पत्र है।

### ग्रन्य नं० ३५५।

५१ महाभिषेक- ' ' ' । पत्र म०-१० । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-५२ । लिपि-कन्नढ । भाषा-मस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ नं ० ६४७।

४२ महाभिषेक- · · · । पत्र न०-४० । पक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-मन्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- 📐 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्य न० ८९३।

४३ महाभिषेक- ' ' । पत्र स०-४४ । पिक्त प्रतिपत्र -७ । अक्षर प्रतिपक्ति-३७ । लिपि- कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य जूद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्य न० ८९५।

५४ महाभिषेक- । पत्र म०-२८ । पिक्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा–सामान्य ।

#### ग्रन्य न० ३३४।

प्य मुक्तावलीत्रतिवधान- '। पत्र मं०-१। पक्ति-६। अक्षर प्रतिपक्ति-४०। लिपि- कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-त्रतिवधान। लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दश-सामान्य।

### ग्रन्य न० ८९४।

५६ मृत्युख्चयन्त्राराधना- ः ः। पत्र स०-१४। पित्रत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रनिपित्त-२७ । लिपि-वन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-आराधना । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा मामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० ५८० ।

५७ वस्तुकल्याग्रञ्जतविद्यान- । पत्र स०-४। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-४६। लिपि-कन्नड। भाषा-सम्कृत। विषय-त्रतिविद्यान। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें 'नन्दीश्वरव्रतिविधान' आदि के भी कुछ पत्र है।

# ग्रन्य न० ६४७।

५८ वास्तुपूला तथा शान्तिविधान- ''। पत्र स०-७५। पनित प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपनित-५३। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें 'नान्दीमञ्जलविधान' नम्बन्धी और भी कुछ पत्र है।

#### ग्रन्य न० ८४७।

५६ वास्तुपूजा तथा शान्तिविधान- '' । पत्र म०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ६४७ ।

६० विमानशुद्धिविधान- ' । पत्र म०-११६ । पन्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य श्रद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ न० ८९३।

६१ विमान [चैत्यालय ] शुद्धिविधान- ' । पत्र सं०-१९। पिनत प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपिनत-२१। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। लेखनकाल- ईसवी सन् १८७५। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेप-ईसवी सन् १८७५ जुलाई ता० २३ के दिन पदुमसेट्टिने इसे लिखा है। ग्रंथ न० ६०४।

६२ त्रतिविद्यानसंग्रह्- ' । पत्र स०-४९ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-त्रतिविद्यान । लेखनकाल- ४ । अपूर्णं तथा सामान्य शृद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रथ न० ७०७।

**६३ गुक्रवारत्रतिधानः ः । पत्र स०-११ । प**क्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-त्रतिविधान । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें प्रभाचन्द्रकृत 'त्रतस्वरूप' है तथा कविरत्नाकर कृत 'भरतेशवैभव' के कुछ पत्र भी है ।

#### ग्रन्थ न० ३२५ ।

६४ श्रुतज्ञानमन्त्र- ःः । पत्र स०-११ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिन्त-२२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ न० ३३४।

६५ श्रुतज्ञानत्रतोपवासकम- '''' । पत्र स०-१ । पक्ति-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-न्नतविधान । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ३८५।

६६ श्रुतस्कन्धपूजाविधान-''''। पत्र स०-९। पिक्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-२६। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न०१९७।

६७ श्रुताष्टक- · · · · । पत्र स०-१ । पिक्त-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-८२ । लिपि-कन्नह । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० १९७।

६८ श्रुताधिवासन- · · · । पत्र स०-४। पिनत प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपिनत-६२। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत तथा कन्नड। विषय-पूजा। लेखनकाल- ×। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

#### ग्रन्थ न० ३८१।

६२ षोडशभावनापूजाः । पत्र स०-१६ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ३६३।

७० सप्तपरमस्थानव्रतविधान ः । पत्र स०-१४। पिनत प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपिनत-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-त्रतविधान। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

# ग्रन्थ न० ३६३।

ग्रन्थ न० ३२५ ।

७३ सहस्रनाममन्त्र—आचार्यं जिनसेन । पत्र स०-३० । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-३४ ।

लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ न० ३६३ ।

७४ सिद्धचक्रव्रतविधान- "। पत्र स०-२६। पक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-३८। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ नं० २३७ ।

७५ सिहपायोपगमन-\*\*\*\*। पत्र स०-९। पिनत प्रतिपत्र-१२। अक्षर प्रतिपिनत-१०८। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-व्रतिविधान। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।



# न्याय तथा दर्शन.

#### ग्रन्थ न० ७१९।

\*१ श्रथर्वशिखोपनिषद्दीपिका-शकरानन्द । पत्र स०-६८ । पन्ति प्रतिपत्र-१२। अक्षर प्रतिपन्ति ४५। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह'अथर्वशिखोपनिषत्' की टीका है ।

# ग्रन्थ न० ७८३।

२ श्रष्टशाती-आचार्यं मट्टाकल द्भृदेव । पत्र स०-५५ । पित प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-त्याय । लेखनकाल-शालि० शक् १५९९ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि०शक १५९९ पिंगल सवत्सर पुष्य शुक्ला १३ वृधवार के दिन संकिषट्टस्थ वर्षमान चैत्यालय में यह ग्रन्थ लिखा गया है।

#### ग्रन्थ न० ९०७।

३ श्रष्टशती-आचार्यं भट्टाकलङ्कदेव । पत्र स०-२४ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षरः प्रतिपक्ति-१०० । किपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ न० १४९ ।

४ अष्टसहस्त्री-आचार्ये विद्यानन्दी। पत्र स०-२४। पित्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-७७। लिपि-इन्नड। मापा-सस्कृत । विषय-न्याय। लेखनकाल-४। अपूर्णे तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ५१९।

५ अष्टसहस्री-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र स०-४९ । पिनत प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपिनत-१०४ । िलिप-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्रन्थ न० ६२५ ।

६ श्रष्टसहस्त्री-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र स०-२८ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ९०७ ।

श्रष्टसहस्त्री-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र स०-१७६ । पिक्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिक्त-१०४ । लिपि-कञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें ज्योतिष तथा गणित सबन्धी और भी कुछ पत्र है ।

# ग्रन्थ न ९०९।

द्र श्रष्टसहस्त्री-आचार्यं विद्यानन्दी । पत्र स०-१५६ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-११४.। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । त्रिषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-जीर्णं ।

<sup>\*</sup> तारकाङ्कित जैनेतर ग्रन्थ हैं

#### ग्रन्थ न० ५६४।

६ श्रहिसालच्त्या (१)- ःः। पत्र स०-२४। पिन्त प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिन्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेप-ग्रन्य का 'अहिंसालक्षण' यह नाम अनुमानपरक है। क्योंकि प्रारमका पत्र खण्डित है। प्रारिभक पद्य निम्नप्रकार है'--''आनम्य सन्मति देवमधर्म ऋतुहिंसन। हिंसात्वादिति सिद्धधयम '' ''' ब्रुवे ॥ इसमें न्याय मबदी और भी कुछ पत्र सिम्मिलित है।

#### ग्रन्य न० ७३।

१० स्नाप्तपरीत्ता-आचार्यं विद्यानन्दी । पत्र स०-३२ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्य न० ९५ ।

११ स्त्राप्तपरोत्ता-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र स०-५६ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्य न० २७७।

१२ स्त्राप्तपरीच्ता-आचार्यं विद्यानन्दी । पत्र स०-८ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिन्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं । ग्रन्थ न० ४११ ।

१३ श्राप्तपरीचा-आचार्यं विद्यानन्दी । पत्र म०-६६ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५७ । लिपि-कतड । भाषा-सम्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ६७६ ।

१४ त्राप्तपरीत्ता—आचार्यं विद्यानन्दी । पत्र स०-३ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

### ग्रन्थ न० ९७।

१५ **श्राप्तमीमांसा**-त्राचार्य समन्तमद्र । पत्र स०-६७ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१३२ । लिपि-कतट । भाषा-मस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० २०८ ।

१६ श्राप्तमीमांसा-आचार्य समन्तमद्र । पत्र स०-३५ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षरः प्रतिपिक्त-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें आचार्य अकल द्भृदेवकी संस्कृत टीका भी है ।

# ग्रन्थ न० २०८।

१७ श्राप्तमीमांसा—आचार्यं समन्तभद्र । पत्र स०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्य न० २१८।

१८ जाप्तमीमांसा-आचार्य समन्तमद्र । पत्र सं०-५ । पनित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-६३ । लिप-क्ष्यह । भाषा-मस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ नं० २७७।

१६ स्राप्तमीमांसा-आचार्यं समन्तभद्र । पत्र स०-१० । पक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-जीणं ।

### ग्रन्थ नं० २९२।

- २० श्राप्तमीमांसा-आचार्यं नमन्तभद्र। पत्र सं०-६। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-५९। निपि-कन्नड। मापा-संस्कृत । विषय-न्याय। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य। ग्रन्थ नं० २३४।
- २१ द्याप्तमीमांसा-आचार्यं समन्तमद्र । पत्र सं०-५ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । नापा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्य नं० ४७१।

- २२ स्त्राप्तमीमांसा-आचार्य समन्तमद्र । पत्र स०-५ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६३ । निपि-कन्नह । भाषा-सस्त्त । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्ण तया सामान्य शुद्ध । दशा-मामान्य । ग्रन्य न०४९२ ।
- २३ स्त्राप्तमीमांमा-जाचार्यं समन्तमद्र । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७९ । जिप-कप्तर । मापा-संस्कृत । विपन-स्थाय । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य जुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें वैद्यकसम्बन्धी दो पत्र भी है ।

# प्रन्य नं० ४९७

- २४ द्याप्तभीमांसा-जाचार्यं समन्तमद्र । पत्र स०-१८। पंक्ति प्रतिपत्र-६ । असर प्रतिपंक्ति-१२० । निप-क्त्रड । मापा-संस्कृत । विपय-न्याय । नेवनकाल-४ । व्यूर्णं तया सामान्य गुद्ध । दया-जीर्णं । ग्रन्थ न० ६७६ ।
- २५ स्नाप्तमीमांमा-आचार्य समन्तमद्र । पत्र स०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । जिप-कन्नद्र । मापा-संस्कृत । विषय-स्पाय । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इनमें 'शान्तिनायाण्टक' मी है ।

#### ग्रन्य न०७८३।

- २६ श्राप्तमीमांसा-आचार्य समन्तमद्र । पत्र सं०-४ई । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । मापा-सन्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । पूर्ण तया सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । जन्य नं० ७९६ ।
- २५ श्राप्तमीमांसा-आचार्यं समन्तमद्र । पत्र स०-५२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । व्यक्षर प्रतिपक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । नापा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्गं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें संस्कृत टिप्पणी भी है।

# ग्रन्य नं० ९०७।

२८ श्राप्तमीमोसा-शाचार्य समन्तमद्र । पत्र स०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । मापा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-लक्तम ।

# ग्रन्य नं० ७५५ ।

२६ श्रालापपद्वति-त्राचार्य देवसेन । पत्र स०-४ । पंक्ति प्रतितत्र न९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-क्त्रह । मापा-संस्कृत । विषय-त्याय । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तया सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्य नं० ६७१ ।

\*३० खरहनदीपिका-मुनि चित्नुत । पत्र सं०-४६ । पिक्त प्रतिपत्र-१७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । निपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह महाकवि श्रीहर्ष कृत खण्डनग्रन्य की संस्कृत टीका है ।

### ग्रन्य नं ० ५६० ।

\*३१ गौतमसिद्धान्त-पिंडत शैशवर शर्मा । पत्र सं०-४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । वर्धर प्रतिपंक्ति-९० । निपि-कप्तर । माया-सङ्कत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणं । Ž,

विशेप-इसमें 'ताकिकरक्षा' के भी तीन पत्र है।

# ग्रन्थ, न० ५२० ।

\*३२ तस्वकोमुदी-श्री वाचस्पति मिश्र । पत्र स०-३८ । पित्र प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपित्र-७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० ६७१ ।

\*३३ तत्त्रकौ सुदी-वाचस्पति मिश्र । पत्र स०-९३ । पन्ति प्रतिपत्र-१६ । अक्षर प्रतिपन्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । लेखनकाल- 🗶 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ७२४ ।

\*३४ तस्विन्तामिण-महोपाघ्याय गणेश्वर । पत्र स०-८० । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-११६ । लिपि-नागरी । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ५२१ ।

\*३५ तस्वदीपिका-खण्डनाकन्द। पत्र स०५-२००। पिक्त प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिक्त-१००। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण । ग्रन्थ न० २०९।

३६ तक्वितिरचय-प्रवरकीित । पत्र स०-६ । पिनत प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ३६८।

३७ तत्त्वप्रदोप-देवण्ण । पत्र स०-२७ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिन्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेषं-कालयुक्ति सवत्सर, श्रावण कृष्ण१४, शुक्रवारके दिन कृष्णने इसे लिखा है ।

३८ तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक-आचार्यं विद्यानन्दी । पत्र स०-४२ । पित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति । १४० । विषय-न्याय । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्थ नं०४३६ ।

ग्रन्थ न० ४८।

३६ तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक-आचार्यं विद्यानन्दी । पत्र स०-१०४ । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-१०६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं॰ ५०८। ४० तस्वार्थभ्रोकवार्तिक-आचार्य विद्यानन्दी॥ पत्र स०-१६। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपन्ति-९३। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ न० ५८१। ४१ तक्वार्थभ्रोकवार्तिक-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र स०-१८५। पनित प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपन्ति-१४०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दंशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ५८४।

४२ तस्वार्थस्रोकवार्तिक-आचार्यं विद्यानन्दी । पत्र स०-१३ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रत्य ने० ४३१ ।

४३ तस्वार्थभ्रोकवार्तिकालंकार-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-२५५ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५८ । लिपि-कन्नड । आपा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-शालि० शक् १४२१ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इस प्रतिके लेखक पण्डितदेव है।

#### ग्रन्थ न० ६।

\*४४ तकंपरिभाषा-केशव मिश्र । पत्र स०-१२। पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१२० । लिप्-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध ।

#### ग्रन्थ न० ८१।

\*४५ तकैपरिभाषा-केशव मिश्र । पत्र स०-१६ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१२१ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ३६५।

\* ४६ तर्कपरिभाषा-केशव मिश्र । पत्र स-३४ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-दुदुभि सवत्सर ज्येष्ठ कृष्ण ७ के दिन नन्दावरपुरस्य आदिन।य चैत्यालय में यह ग्रन्थ लिखा गया। ग्रन्थ न० ४१३।

\*४७ तर्कपरिभाषा-केशव मिश्र। पत्र स०-२२। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-११५। लिपि—कन्नड । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । लेखनकाल— × । शालि॰ शक १५०३ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । वशा-उत्तम ।

विशेप-शालि॰ शक १५०३, विषु सवत्सर, भाद्रपद शुक्ला १३, रिववारके दिन कनकपुरस्य वोम्मरस ने होगनूरूनिवासी पदुमण उपाघ्यायके पुत्र चिक्कय्यके लिये क्षेमपुरस्य शान्तिनाथमन्दिरमें लिखवाकर इसे दान किया था।

# ग्रन्थ न० ६६६।

\*४८ तर्कदीपिका-\*\*\*\*। पत्र स०-२६। पनित प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपनित-५६। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ५२६।

\*४९ तकैभाषा-केशव मिश्र । पत्र स० ५८ । पक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-४८ । लिपि-नागरी । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

# ग्रन्य न० ३९०।

\*५० तकसंग्रह-अन्नभट्ट। पत्र स०-९३। पन्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपन्ति-३२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ न० ७२९।

\*५१ तर्कसंग्रह-अन्नमट्ट। पत्र स०-७। पिक्त प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपिक्त-३८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य ।

# प्रन्य न० ७६४।

\*४२ तर्कसंग्रह-अन्नमष्टु । पत्र स०-१५३ । पनित प्रति।त्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ न० ७७६।

\*५३ तर्कसंग्रह्-अन्नंभट्ट। पत्र स०-१६३। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-५६। लिपि-कन्नड। भापा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# विशेष-इसमें आशीर्वाद गद्य भी हैं।

# ग्रन्य नं० ७८९।

\*५४ तर्कसंग्रह्-अन्नंभट्ट। पत्र स०-७। पन्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपन्ति-४९। लिपि-कन्नड। मापा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० १११।

\*५५ तक**संग्रहदीपिका-** : : । पत्र स०-६६ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-९० । लिपि-कञ्चड । भाषा–सस्कृत । विषय –न्याय । लेखनकाल– 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा –सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ३९० ।

\*४६ तर्कसंग्रहदीपिका- · · । पत्र स०-६६। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-३१। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ७८९।

<sup>अ</sup>थ्**७ तर्कसंग्रहदीपिका**- ' पत्र स०-२६।पिक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-५०। लिपि-कन्नड। भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । लेखनकाल— 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ११।

\*ধুত্ৰ तिर्केकरचा-वरदराज । पत्र स०-६ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । दशा-उत्तम ।

\*५६ तार्किकरचा-वरदराज । पत्र स०-१०८ । पिक्त प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपिक्त-६४ । लिपि-नागरी । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें गणित विषयके भी कुछ वत्र है।

# ग्रन्थ न० १७८।

\*६० तार्किकरन्ता-वरदराज । पत्र स०-७ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा–सस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल– ४। पूर्ण तथा सामान्य शद्ध । दशा–जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० २०६।

\*६१ तार्किकरत्ता-वरदराज। पत्र स०-११। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-५२। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ४४८ ।

\*६२ तार्किकरत्ता-मायिभट्ट। पत्र स०-२७। पक्ति प्रतिपत्र-१३। अक्षर प्रतिपक्ति-२७७। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-इसमे वरदराज कृत सस्कृत व्याख्या भी है ।

# ग्रन्थ न० ४१३।

\*६३ तार्किकरत्ताञ्याख्यान- । पत्र स०-८५। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-१२०। लिपि–कन्नड । भाषा–सस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल– ४ । शालि० शक १५०५ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष—शालि० शक १५०५ भानु सवत्सर, चैत्र शुक्ला पूर्णिमा के दिन इसकी प्रतिलिपि समाप्त हुई थी। ग्रन्थ न० ६७१।

\*६४ तार्किकरत्ता को टीका-पण्डित हरिहर। पत्र स०-३१६ । पक्ति प्रतिपत्र-१५ । अक्षर प्रतिपक्ति-१२५ । लिपि–कन्नड । माषा–सस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल– 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । विशेष-यह वरदराजकृत 'तार्किकरक्षा' की टीका है। साथमें न्यायसम्बन्धी और भी कुछ पत्र है।

# ग्रन्थ न० ६४०।

**६५ नयलन्ए-** । पत्र स०-१४ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह एक सग्रह-ग्रन्थ है

ŧ¦.

### ग्रन्थ न० ६७९ ।

६६ नयलक्त्या-'''। पत्र स०-८। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-६०।-लिपि-कन्नह। भाषा-मस्कृत नया कन्नह। विषय-न्याय। लेखनकाल-४। अपूर्ण तया सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ६७९।

६७ नयसंग्रह्- ''''। पत्र म०-६। पंक्ति प्रतिपत्र-१३। अक्षर प्रतिपक्ति-५६। लिपि-कन्नह। भाषा-मन्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल- ८। पूर्णं नया मामान्य शुकु। दशा-सामान्य। विशेष-इममें संस्कृत 'समवसरणाष्टक' नया 'वीतरागाष्टक' भी है

# ग्रन्य न० ६।

४६८ स्यायक्रन्दली-पाण्डुदास यति श्रीवर मट्ट । पत्र सं०-१३० । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१२० । लिपि-कञ्चड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-प्रारम्भके १४ पत्र नहीं है ।

# ग्रन्य न०५७०।

\*६६ स्यायकन्द्रलीटीका-राजा इरुंगोल । पत्र स०-१६० । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-५८ । िलिप-क्त्रह तथा नागरी। भाषा-सम्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य श्रुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ९०८ ।

७० न्यायकुमुद्चन्द्र-प्रभाचन्द्र। पत्र सं०-१३४। पिक्न प्रतिपत्र-१९। अक्षर प्रिमिक्त-२१०। निर्णि-क्ष्पड । मापा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । पूर्णं तया मामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेप-इसमें 'न्यायकुमुदचन्द्र' की अपूर्ण कारिकाए तथा 'परीक्षामुख' के अपूर्णं सूत्र भी है । प्रन्य न० ५८७।

\*७१ न्यायकुमुमाञ्जलि-किव वरदराज । पत्र स -७९ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-१०५ । लिपि-क्निड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ६७१ ।

\*७२ न्यायदीपावलीकी टीका-मृनि मुखप्रकाश । पत्र मं०-६ । पिक्त प्रतिपत्र-१५ । अक्षर प्रतिपिक्त-१२५ । लिपि-कन्नर । भाषा-मंस्कृत । विषय-न्याप्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ६७१ ।

१२५। लिपि-कन्नड । भाषा-उंम्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । वपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दवा-सामान्य । विरोप-यह 'न्यायदीपावजी' की टीका है

# ग्रन्य न० ७६९।

७४ न्यायमिणिदीपिका- । पत्र स०-९२। पिक्त प्रतिपत्र-१०। अझर प्रतिपंक्ति-११३। लिपि-कन्नड। मापा-संस्कृत। विषय-न्याय। छेखनकाल- ×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-यह बा० जनन्तत्रीर्यकृत 'प्रमेयरत्नमाला' नामक परीक्षाम्खवृत्तिकी टीका है। टीकाकारने अपना नाम सिर्फ 'वाल' छिखा है।

# ग्रन्य नं० ८१।

\*५५ न्यायसार- · · · । पत्र सं०-९ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपत्रित-११७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्य नं० ३१० ।

\*७६ न्यायसार-\*\*\*\* पत्र सं-५। पन्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-१६०। लिपि-कग्नड। नापा-नम्हन । निषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

#### ग्रन्थ न० २८३।

\*७७ न्यायपारटीका-\*\*\*\*। पत्र म०-५६। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-११६। लिपि-कञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ३१०।

- \* ७८ न्यायसार्पदपश्चिक'-पण्डित वासुदेव। पत्र स०-३४। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-१२८। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ नै० ७८०।
- \* ७६ न्यायसार्पदपश्चिका-पण्डित वासुदेव । पत्र स०-१७ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-५६ । लिशि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ८२१ ।
- \* द्र॰ न्यायसारपद्पञ्चिका-पण्डित वासुदेव। पत्र सं०-४५। पिन प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-९०। लिपि-कञ्चड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ न० ८२४।
- \*८१ न्यायसिद्धान्तदीप-शशघर शर्मा। पत्र सं०-२५। पन्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-३१। लिपि-कन्नह। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ नं० ५०१।
- \*८२ न्यायामृतः । पत्र स०-१४९। पित प्रति।त्र-१०। अक्षर प्रतिपिन्त-१२८। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।
- ्रग्रन्य न० ९५ ।

  ८३ पत्रपरी ज्ञा-आचार्यं विद्यानन्दी । पत्र सं०-१६ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-११० ।

  लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-त्याय । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य
  ग्रन्थ न० ३७७ ।
- ८४ पत्र स्रोत्ता-आचार्यं विद्यानन्दी । पत्र स०-१० । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-जीर्णं तथा शिथिल । ग्रन्थ न० ४११ ।
- द्ध् पत्रपरी ता-आवार्य विद्यानन्दी । पत्र स०-११ । पन्ति प्रतिपत्र -८ । अक्षर प्रतिपन्ति-१५४ । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । वशा-सामान्य । ग्रम्थ न० ५०९ ।
- द्ध पत्रपरोत्ता-आचार्यं विद्यानन्दी । पत्र म०-१२ । पित्रन प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपित्त-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा -सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ६७६ ।
- ८७ पत्रपरी सा-आचार्यं विद्यानन्दी । पत्र स०-३ । पिन प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिन्त-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-पस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा -उनम । ग्रन्थ न० ७९० ।
- ८८ पत्रपरीत्ता-आचार्यं विद्यानन्दी । पत्र स०-८ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा -सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ४८० ।
- दृश्यस्तत्वरहन- ' ' । पत्र स०-२७ । पन्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० २०८।

९० परोत्तामुख-आचार्यं माणिक्यनन्दी । पत्र स०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा -संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा गुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्य न० २४१।

है१ परीज्ञामुख-आचार्यं माणिक्यनन्दी । पत्र स०-५७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० २९३ ।

ह२ परी ज्ञामुख-आचार्यं माणिक्यनन्दी । पत्र सं०-५ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७८ । किपि-कन्नड । भाषा-सक्तत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्णं नथा शुद्ध । दशा-जीर्णं ।

#### ग्रन्य न० ३०७।

€3 परीन्।मुख्-आचार्यं माणिक्यनन्दी । पत्र स०-३ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-११२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा गुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'प्रमेयकमलमार्तण्ड, आप्तपरीक्षा, आदि के भी कुछ पत्र है ।

# ग्रन्य नं० ४६३।

६४ परीन्नामुख-आचार्यं माणिक्यनन्दी । पत्र सं०-१०६ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- ४ । पूर्णं तथा सामान्य गुद्ध । टणा-उत्तम । विशेष-इसमें अनन्तवीर्यंकी संस्कृत टीका भी है ।

#### ग्रन्य न० ६०४।

ह्र् परीन्तामुख-आचार्यं माणिक्यनन्दी । पत्र स०-१२ । पृक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपक्ति-४० । िलिप-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रन्य न० ६७६ ।

ह६ परोत्तामुख-आचार्य माणिनयनन्दी । पत्र स०-३ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य गुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्य न० ७६१ ।

हि॰ परीक्तामुखवृत्ति-श्री गुभचन्द्रदेव । पत्र म०-९४ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-९८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तया सामान्य द्युद्ध । दशा-उत्तम । प्रत्य न० ३१० ।

\* ६८ प्रश्रोधसाधन-मायिभट्ट। पत्र स०-४६। पिन प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रिनिपिन्त-१५७। लिपि-कन्नड। मापा-संस्कृत। विषय-न्याय। छेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-यह वरदराज कृत 'मारसग्रह' की टीका है।

# ग्रन्य न० ५५३।

\* ६६ प्रत्रोध प्राचन-मायिमट्ट । पत्र स०-५२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-११० । लिपि-कप्तड । भाषा-मस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शृद्ध । दशा-अति जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेप-यह वरदराजीय न्याय-ग्रन्यकी संस्कृत टीका है।

# प्रन्य नं० ४९१।

१०० प्रमाण्पदार्थ- · · · · । पत्र स०-५६। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-१३०। लिपि-कन्नड। भाषा-मस्कृत । विषय-न्याय। लेखनकाल- 🗴 । अपूर्णं तथा सामान्य गुद्ध । दशा-अति जीर्णं।

#### ग्रन्थ न० १३२।

१०१ प्रम गापरी हा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र स०-२४ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा -सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें ग्रन्थकर्ताका नाम नही भिलता है । प्रारम्भिक पद्य इस प्रकार हैजयन्ति निर्जिताशेषसर्वयैकान्तनीतय । सत्यवाक्याधिषा शश्वद्विद्यानन्दा जिनेश्वरा ॥

#### ग्रन्थ न० २९३।

१०२ प्रमागापरीन्ता—आचार्य विद्यानन्दी । पत्र स०-६६ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ४११ ।

१०३ प्रमाणपरीन्ता-आचार्यं विद्यानन्दी । पत्र स०-२७ । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षरप्रतिपन्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ५०८ ।

१०४ प्रमाणुपरीत्ता-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र स०-१३। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-१२८। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ मं० ५४८ ।

१०५ प्रमाग्।परीत्ता-आचार्यं विद्यानदी । पत्र स०-९ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-१३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा अशुद्ध । दशा-अति जीर्ण । ग्रन्थ न० ७३ ।

१०६ प्रमाण्निर्णय-आचार्य वादिराज। पत्र स०-३१। पन्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपन्ति-८३। लिपि-कन्नड। भाषा-मस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ न०९५।

१०७ प्रमाणिनिर्णय-आचार्यं वादिराज । पत्र स०-३५ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थके अन्तिम पद्म-

श्रीमद्व्याकरणोष्गताप्रनखर पट्तर्कदण्ट्रोत्कट सत्साहित्यवरोक्केसरसटासुञ्जाजित सिंहवत् । यद्वाक्य परवादिवारणगणध्वसोदवादुद्वत (?) ते नन्दन्तु मुनीन्दव सुकृतिन श्रीनागवीरात्मजा ॥ काणाद कोणमेक भजतु भयवशात्सीगतस्यागतोऽय मृत्युर्मीमासकाद्याः किमिति जडिषय कुर्वते गर्वबुद्धिम् । येनाय न्यायमागंप्रकट-पटुवच प्रौढपर्यायरूढो वाढ दुस्तकंगाढग्रहणपरिवृढान्वादिराजस्तृणेथि ? ॥०॥ विद्यानन्दवृषाग्रणी. समयनाथोऽन-तवीर्यो मुनिनंत्रद्वन्द्वसमी मतो भगवतो भट्टाकलङ्कस्य च । लालाट पुनरीक्षण समजिन श्रीवादिराजो मुनिर्मिथ्यात्वा-तियुरत्रयस्य दहने देवस्त्रिणंत्रो भुवि ॥

#### ग्रन्थ न० ४११।

- १०८ प्रमाण्निर्ण्य-आचार्य वादिराज। पत्र स०-२७। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-१४९। लिपि-कन्नड। मापा-सस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-४।पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसे पोसवलल चन्द्रमित अन्वने विजयोपाध्यायके पुत्र पण्डितदेवके लिये लिखवाया।

#### ग्रन्थ न० ५४९ ।

१०६ प्रमाणिनर्णय-आचार्यं वादिराज । पत्र स०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-२२० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें आचार्यं विष्णुसेन कृत 'समवसरणस्तोत्र' के भी कुछ पत्र है ।

# ग्रन्थ नं० ६६८।

११० प्रमाणिनिर्णय-आचार्य वादिराज। पत्र सं०-३४। पन्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंन्ति-८५। विषय-न्याय। केखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य गुद्ध। दशा-सामान्य।

# ग्रन्थ नं० ६७१।

\* १११ प्रमाणमालातात्पयेटीका-मृनि चित्नुख । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१६ । अक्षर प्रतिपक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । नापा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तया सामान्य सृद्ध । दशा-मामान्य । ग्रन्य न० ६३९ ।

११२ प्रमाणिसिद्धि-\*\*\* । पत्र स०-१८ । पिन्त प्रतिपत्र-५ । असर प्रिपिनिक्त-६० । लिपि-कत्रह । माषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें पड्दर्शनोका सक्षिप्त वर्णन मी हैं ।

# ग्रन्य न० १३।

११३ प्रमेयकमलमार्तेष्ड-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-२२२ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-७५ । लिपि-कन्नड । नापा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-जालिवाहन श०१५३८ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ नं० ५२।

११४ प्रमेयकमलमार्तेण्ड-आचार्यं प्रभाचन्द्र । पत्र स०-२४५ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । विषय-न्याय । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-जीर्णं ।

# ग्रन्य न० १०८।

११५ प्रमेयकमलमार्तेण्ड-आचार्यं प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

प्रन्य नं० ४२९।

११३ प्रमेयकमलमार्तेण्ड-जाचार्यं प्रभाचन्द्र । पत्र स०-१३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१४। अक्षर प्रतिपेक्ति-२८० । लिपि-कन्नड । मापा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्य नं० ४३९ ।

११७ प्रसेयक्रमलमार्तेण्ड-आचार्यं प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-१२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१४८ । लिपि-कन्नट । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्य न० ४४४।

११८ प्रमेयकमलमार्तेण्ड-आचार्यं प्रभाचन्द्र । पत्र स०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१६० । निपि-कन्नड । मापा-सस्ट्रत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्य नं० ७२२ ।

११६ प्रमेयकमलमार्तएड-जाचार्य प्रनाचन्द्र । पत्र सं०-२१० । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षरं प्रतिपत्ति-१२० । लिपि-कन्नड । नापा-सस्ट्रतः । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗴 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्धः । देशा-उत्तम । प्रन्य न० १९ ।

१२० प्रमेयरत्नमाला-आचार्यं अनन्तवीर्यं । पत्र स०-३९ । पत्रित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-१०५ लिपि-कप्तढ । नापा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्य नं० २५४।

१२१ प्रमेयरत्नमाला-त्राचार्यं अनन्तर्वायं । पत्र स०-६८ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । जिपि-कप्तड । मापा-सस्कृत । विषय -त्याय । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ४८०।

१२२ प्रमेयरत्नमाला-अाचार्यं अनन्तवीर्यं। पत्र स०-५३। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर-प्रतिपंक्ति-४०। लिपि-कन्नड। माषा-संस्कृत विषय-न्याय। ठेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

# ग्रन्थ न० ५५७।

१२३ प्रसेयरत्नमाला-आचार्यं अनन्तवीर्थं। पत्र म०-३५। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिनत-८७। िलिप-कन्नछ। भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय। लेखनकाल-×। अर्थ्रा तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। प्रन्य न० ५६४।

१२४ प्रमेयरत्नमाला-आचार्यं अनन्तवीर्यं । पत्र स०-१९ । पिनतं प्रतिपत्र-१० । अक्षरं प्रतिपन्ति-६० । लिपि-कञ्जड । भाषा-सकृतं । विषय-न्याय । लेखनका ठ-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० '७१४ ।

१२५ प्रमेयरत्नमाता-आचार्यं अनन्तवीर्यः। पत्र स०-३३। प वेत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-९०। लिपि-कन्नडः। भाषा-सस्कृतः। विषय-न्यायः। लेखनकाल-४ । पूर्णं तथाः सामान्य शुद्धः। दशा-उत्तमः। विशेष-इसमें 'सप्तभगी' के भी कुछ पत्र हैं।

#### ग्रन्थ न० ७३५।

(२६ प्रमेयरत्नमात्ता-आचार्यं अनन्तवीर्यः । पत्र स०-५० । पिन प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिन्त-८६ । लिपि-कन्नष्ट । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णः ।

#### ग्रन्थ नं० ७६४।

१२७ प्रमेयरत्नमात्ता-आचार्यं अनन्तनीर्य । पत्र स०-२७६ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । त्रिपय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ८०८।

१२८ प्रमेयरत्नमाला-आचार्यं अनन्तवीर्यं। पत्र सं०-८०। पिन प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-६४। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृतः। विषय-न्याय। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ नं०८३०।

१२६ प्रमेयरत्नमाला-आचार्यं अनन्तवीर्य। पत्र सं०-३४। पिन्त प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

#### ग्रन्थ न० २०८।

१३० प्रवचनप्रवेश-आचार्यं भट्टाकलक । पत्र स०→३। पक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपक्ति-५९। लिपि-कन्नरु । भाषा-स-कृत । त्रिपय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ९०८।

१३१ प्रवचनप्रवेश-आचार्यं मट्टाकलक । पत्र स०-६३ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्याय । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ४८९ ।

\* १३२ बृहद्रारण्यकभाष्य- : : । पत्र सं०-२६६ । पित्र प्रतिपत्र-८ । अक्षर अतिपित्त-१९०। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-त्रित जीर्ण । विशेष-इसमें 'आप्तमीमासा' के भी कुछ पत्र हैं ।

#### ग्रन्थ नं० ३९।

\* १३३ भगवद्गीता- '''' '। पत्र सं०-४५।पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-४४। लिपिफन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन। लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम।

# ग्रन्थ न० १११।

\* १३४ भाषापरिच्छेद-विश्वनाय भट्टाचार्य। पत्र स०-३ । पन्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपन्ति-९०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ नं० १११।

\* १३५ मुक्तावलीप्रकाश-महादेव भट्ट। पत्र स०-६१। पत्रित प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपित्त-९०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-न्याय। लेखन काल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० १२०।

१३६ युत्त्यनुशासन-आचार्यं समन्तभद्र। पत्र स०-६४। पिनत प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिनत-८७। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य। विशेष-इसमें संस्कृत टीका भी है। टीकाकार आचार्यं विद्यानन्दी है।

# ग्रन्थ न० २०८।

१३७ युत्तवतुशामन-आचार्यं समन्तभद्र । पत्र स०-३ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-६९। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रथ न० ५७५ ।

१३८ युत्तयतुशासन-आचार्य समन्तभद्र । पत्र स०-३ । पन्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-८० । 'लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ग । विशेष-इसमें आ० मिल्लिपेण कृत 'सज्जनचित्तवल्लभ' के भी तीन पत्र है । ग्रन्थन० ६७६ ।

१३६ युत्त्वनुशासन-आचार्यं समन्तमद्र। पत्र स०-३३ । पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ७५५ ।

१४० युत्तवनुशासन-आचार्य समन्तभद्र । पत्र म०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० ७८३ ।

१४२ युत्तयतुशासन-आचार्यं समन्तमद्ग। पत्र स०-३ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'शारदाष्टक' तथा 'नवदेवाष्टक' भी है ।

# ग्रन्थ नं० १९।

१४२ त्ताघोयस्त्रय-आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र स०-१७२। पनित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-१००। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें आचार्य अभयचन्द्र कृत वृत्ति भी है। यह ग्रन्थ हन्नेरवीड मुनिचन्द्रदेवके द्वारा मजेश्वरके

# ग्रन्थ न० २३५।

१ (३ लघोयख्य-आचार्यं अकलङ्कदेव । पत्र सं०-१७ । पिक्त प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपिक्त-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें आचार्यं अभयचन्द्र कृत तात्पर्यवृत्ति भी है ।

# ग्रन्थ न० ४९२।

१४४ लघीयस्त्रय-आचार्यं अकलङ्कदेव । पत्र स०-४ । पिकत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न०५०२।

१४५ विश्वतत्त्वमकःश-आचार्य भावसेन त्रैविद्य । पत्र स०-११३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१९८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० १९६ ।

\*१५६ चेदान्तकरुपतरु-अमलानन्द । पत्र सं०-३२६। पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-१२०। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ७२४ ।

\* १४७ श्रुख्यस्वर्ष्णस्व । पत्र सं०-१२६। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-११८। निपि-नागरी। भाषा-सस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ७१९।

\*१४८ शिवसूत्रितिशान '। पत्र स०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपक्ति-४५ । लि पकन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-दर्शन । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ न० २८८ ।

१४६ ऋो क्वार्तिक-आचार्यं विद्यानन्दी। पत्र स०-१४५। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिक्त-१००। लिपि-नागरी। भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-जीर्णं।

### ग्रन्थ न० ११ ।

१५० षरमत तर्क- । पत्र स०-३। पक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपक्ति-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय। । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ५२२।

१५१ सत्यशासनपरीन्ता-त्राचार्यं विद्यानन्दी । पत्र स०-४३ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ६५२ ।

१४२ सत्यशासनपरीद्धा-आचार्यं विद्यानन्दी । पत्र स०-१८३ । पित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ६७९ ।

१५३ सप्तभगी- ' । पत्र स०-१४। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिन्त-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें कन्नड टीका सहित गोम्मटसार जीवकाण्डके भी कुछ पत्र है।

# ग्रन्थ न० १७८ ।

\* १५४ सारसंग्रह्-वरदराज । पत्र स०-७२ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शृद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेप-यह वादिराज कृत 'तार्किकरक्षा' की टीका है।

# ग्रन्थ न०३१०।

\* १५५ मारसग्रह-वरदराज । पत्र स०-३७ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-१४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल - 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० १११ ।

\*१५६ सिद्धान्तमुक्तात्रली-विश्वनाथ भट्टाचार्य। पत्र स०-३०। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-९०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

# ग्रन्थ न० ६०१।

१५७ सृष्टिवादपरी त्रा- ''। पत्र स०-१। पक्ति-९। अक्षर प्रतिपक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें न्यायसवधी और भी कुछ पत्र है।

ग्रन्थ नं० ६७१ ।

\* १५८ सांख्यसप्तति । पत्र सं०-२। पत्रित प्रतिपत्र-१६। अक्षर प्रतिपत्रित-१२५। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-दर्शन। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ६०९।

१५६ स्याद्वादिसिद्धि-वादीभसिंह । पत्र स०-१४ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें व्याकरण सबधी और भी कुछ पत्र है ।

ग्रन्थ न० २८२।

१६० स्वमतस्थापन- \*\*\* । पत्र स०-३ । पिक्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिक्त-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# व्याकरण

# ग्रन्थ न० ६४८।

\* १ द्याादिष्ट्वित्ति-दुर्गेसिह । पत्र स०-४५ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । अपूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ७८३ ।

\*२ डगादिष्ट्रत्ति-दुर्गसिंह। पत्र स०-३४। पिनत प्रतिपत्र-७। बक्षर प्रतिपिनत-६७। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसर्में 'सर्वेदोषपरिहारस्रत' तथा 'गोन्मटसार' सबन्वी और भी कुछ पत्र है। ग्रन्थ न० ७९३।

\* ३ खणादिवृत्ति-दुर्गसिह। पत्र स०-३० है। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-५५। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें 'धातुरूपमाला' के भी ३ पत्र है।

# ग्रन्थ न० ३६१।

४ कर्णाटकभाषामू वर्ण-नागवर्म । पत्र स०-६० । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें मूलसूत्र संस्कृतमें और वृत्ति कन्नडमें हैं । दोनोके रचियता नागवर्म ही है । यह बहुत

पुराना कन्नड व्याकरण है।

# ग्रन्थ न्० ४६।

४ कानन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-२०५ । पिन्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिन्त-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ४७।

६ कासन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र स०-२०५ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-६७। लिप-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण त्र्या शुद्ध । दशा-सामान्य ग्रन्थ न० ७९ ।

कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रै विद्य । पत्र स०-१३ । पित्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपित्त-११६ ।
 लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।
 ग्रन्थ न० ८५ ।

द कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य। पत्र स०-१४६।पिक्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-९७। लिपि-कन्नड।भाषा-सस्कृत।विषय-व्याकरण।लेखनकाल-शालि० शक १३०५।पूर्णं तथा शुद्ध।दशा-सामान्य। विशय-सेनगणाग्रगण्य भट्टारक जिनसेनके शिष्य पायण्णके वास्ते श्रवणवेल्गोलके बोगार लिक सेट्टिने इसे लिखवाया है।

### ग्रन्थ न० ११७।

६ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र स०-१३० । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०८ । लिपि-कत्रड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रन्थ न० १५२ ।

१० कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र स०-३६ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-४८ । लिपि-कन्नत । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० १७१ ।

११ **फातन्त्ररूपमाला**—भावसेन त्रैविद्य । पत्र स०-१३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भापा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं ० १७४ ।

१२ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र स०-२७ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । यन्य न० १७९ ।

१३ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र स०-१६३ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रत्य न० १९९ ।

१४ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैनिद्य । पत्र स०-५ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । निषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० २१३ ।

१५ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र स०-११५ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-९८ । िलिप-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्याकरण । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-अन्यत्र 'त्रैविद्य' शब्द का अर्थे आगम, तर्क तथा व्याकरणका ज्ञाता बतलाया गया है ।

#### ग्रन्थ न० २३०।

- १६ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र स०-७९। पक्ति प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपक्ति-५५। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० २५२ ।
- १७ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र स०-१४६ । पिक्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-शालि० शक १२८९ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-शालि॰ शक १२८९, प्लवग संवत्सर श्रावण शुक्ला १५ गुरुवारके दिन कनकप्रभद्रदेवके लिये कल्लह निवासी वैचिसेट्टिने इसे लिखा है।'

#### ग्रस्थ न० २६६। - ''

१८ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य। पत्र स०-५९। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-५६। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० २७०।

१६ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र स०-५२ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-५८ । क्षिप-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा शृद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० २८९ ।

२० कातन्त्ररूपमाला-भावनेन त्रैविद्य । पत्र स०-६३ । पिनत प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिनत-१२७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न०ँ३५९ ।

- २१ कातन्त्ररूपमाला-भावमेन त्रैविद्य । पत्रं स०-२० । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-५७ । किपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विपय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ४५५ ।
- २२ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र स०-१०० । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपक्ति-८८ । हिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य गुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० ५०७ ।
- २३ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य। पत्र स०-११६ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-९१ । किपि-कन्नड । भाषा-स्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य , शुद्ध । दशा-सामान्य । गन्य नं० ५१३ ।
- २४ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-१०७ । पित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-५८ । क्षिप-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रत्य न० ५७१ ।
- २५ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र स०-६८ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-५९ । किपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकर्ण । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्रत्य नं० ५८० ।
- २६ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र म०-२६ । पिक्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'तत्त्वार्थसूत्र' के भी चार पत्र है ।

# ग्रन्थं नं० ६५०।

- २७ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-८३ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । पूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।
  र 'ग्रस्थ न० ७१८ ।
- २८ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रै विद्यं। पत्र स०-३८ । पिन्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिन्त-४१ । लिपि-क्षेत्र । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें सूत्रपाठ तथा परिभाषा-सूत्र भी हैं।

#### ग्रन्य नं०७३२।

२१ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य। पत्र सं०-४०। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-८१। लिपि-कन्नष्ठा भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य स्कृत । विषय-व्याकरण। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य स्कृत । विषय-व्याकरण।

#### ग्रन्थ न० ७५३।

- ३० कातन्त्ररूपमाला- भावसेन त्रैविद्य । पत्र स०-३८ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षरं प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नद्य । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ७५९ । —
- ३१ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य। पत्र स०-८२। पन्ति प्रतिपत्र-८। वक्षरप्रतिपन्ति-१००। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। प्रन्थ न०८१८।
- ३२ कातन्त्रहृपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र स०-५० । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अयाकरण । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ४४१ ।
- ३३ कातन्त्रविस्तर-कवि वर्षमान । पत्र स०-१३४ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ४८० ।
- ३४ कार्करूप- ' '। पत्र स०- ४७। पन्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपन्ति-३६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण। लेखनकाल- ×। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ४७७।
- ३५ कारकरूप- । पत्र स०-२२। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिनत-४०। लिपि-कन्नह । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्थ न० २६५ ।
- ३६ कारकरूप- । पत्र स०-२८। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-४। पूर्ण तथ सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्य न०२०६।
- \* ३७ कारकान्यसम्बन्धपरी सा-पाणिनि । पत्र स०-५१ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसे उपाध्याय पुष्पदन्तने लिखा है । प्रन्य न०५४५ ।
- ३८ काशिकावृत्ति-जिनेन्द्रवृद्धि । पत्र स०-५०। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-१७०। लिपि-कन्नह । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण । विशेष-यह पाणिनीय व्याकरणकी वृत्ति है । ग्रन्थ न० २।
- ३६ चिन्तामणिकी टीका-समन्तभद्र । पत्र स०-५८ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-९७ । लिपि-कन्नष्ठ । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रारम्भिक पद्य-जिनचिन्तामणिमीश नत्वा चिन्तामण स्फुटा टीकाम् ।

- ४० चिन्तामिणिकी टोका-समन्तिभद्र । पत्र स०-३२ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-११२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रत्य न० २९७ ।
- ४१ चिन्तामिणको टीका-समन्तभद्र । पत्र स०-५२ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१२५ । लिपि-कन्नद । मोषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ न० ४०५।

४२ चिन्तामिणवृत्ति-आचार्य यक्षवर्म । पत्र स०-६३ । पिन्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कञ्च । भाषा-मम्कृत । विषय-त्र्याकरण । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह 'शाकटायनव्याकरण' की वृत्ति है ।

### ग्रन्थ न० ५४३।

४३ जैनेन्द्र-आचार्यं पूज्यपाद । पत्र म०-१९६ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१८० । लिपि-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-त्र्याकरण । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्ण तथा मामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इमर्मे संस्कृत वृत्ति भी है ।

# ग्रन्थ नं० ५९८।

४४ जैनेन्द्र-आचार्य पूज्यपाद । पत्र म०-२२ । पिन्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिन्त-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सम्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा मामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्य नं० ५९१। ४५ जैनेन्द्रप्रक्रिया-आचार्य गुणनन्दी। पत्र सं०-५४। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-त्र्याकरण। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य गुद्ध। दशा-अति जीर्ण।

### ग्रन्थ नं० १५२।

४६ घातुपाठ-आचार्यं शाकटायन । पत्र स०-१२ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-त्र्याकरण । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-मामान्य ।

# ग्रन्य न० ३४१।

४७ धातुपाठ-आचार्य शाकटायन । पत्र स०-२२ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-३४ । लिपि-कन्नह । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शृद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्य न० ३८४ ।

४८ घातुपाठ-आचार्यं शाकटायन । पत्र स० १०६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपक्ति-४६ । लिपि कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-शालि शक० १६७९ ईश्वर संवत्सर मागँशीर्षं कृष्ण १० । पूर्णं तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-मूडिवड्रीनिवासी विक्रसेट्टिके पुत्र चन्दम्यने सूरालिनवासी चन्दय्यरसके लिये इसे लिखा है। ग्रन्य नं० ३८५।

४६ घातुपाठ-बाचार्ये शाकटायन । पत्र सं०-२४ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-२६ । लिपि-कन्नद्द । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्य नं० ३९४ ।

५० घातुपाठ-आचार्य्य शाकटायन । पत्र स०-२० । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । मापा-सम्कृत । विषय-न्याकरण । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्य न० ६११ ।

५१ घातुपाठ-आचार्य शाकटायन । पत्र स०-१२ । पन्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपन्ति ४८ । निर्िष-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ७२८ ।

४२ घातुपाठ-आचार्यं शाकटायन । पत्र स०-१७६ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त- ३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्टत । विषय-न्याकरण । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसके लेखक वेणुपुर ( मूडविद्री ) निवासी हिरेबमदि पायण्ण है । ग्रन्य नं० ८६२ ।

१३ घातुपाठ-केगव। पत्र स०-७६। पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

### ग्रन्थ न० २५७।

५४ थातुपाठ-'' । पत्र स०-३८। पनित प्रतिपत्र ७। अक्षर प्रतिपनित-७०। लिपि-कन्नड भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ५१८।

५५ घातुपाठ- । पत्र स०-२१। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा मामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रन्थ न० ७५२।

५६ धातुपाठ (सार्थ) - । पत्र स० - ३ । पितत प्रतिपत्र -७ । अक्षर प्रतिपित्त -४७। लिपि - कन्नड । भाषा - सस्कृत । विषय - व्याकरण । लेखनकाल - ४ अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा - सामान्य । विशेष - व्यर्थ कन्नड भाषामें हैं । इसमें 'कातन्त्र रूपमाला'के भी १२ पत्र हैं ।

ग्रन्थ न० ८१६।

**५७ घातुपाठ-'** । पत्र स०-३३ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ न० ८८३।

४८ धातुपाठ-'। पत्र म०-८।पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें 'ज्योतिष' तथा 'पूजापाठ' सम्बन्धी और भी कुछ पत्र है।

ग्रन्थ न० ५७७।

५६ **धातुरूपमाला- ''** । पत्र स०-२३ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० ८४५ ।

६० **घातुरूपमाला-** ' ' । पत्र स०-२४। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-५५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण। लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न०४९।

६१ प्रक्रियासंग्रह्- ' ' । पत्र स०-२७। पिनत प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिनत-१२६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण। लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य। ग्रन्थ नं० ५२३।

\*६२ प्राकृतमञ्जरी-श्री वररुचि । पत्र स०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-९६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० १८१ ।

६३ रूपसिद्धि-मूर्गन दयापाल । पत्र स०-३४ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपत्र-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ५३८ ।

६४ रूपसिद्धि—मृनि दयापाल । पत्र स०-८१ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-१०० । लिपि-फल्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । , ग्रन्थ न० ८७ ।

**६५ रूपसंग्रह-** । पत्र सं०-७। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-१०३। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण। लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

अन्तिम पद्म-सिद्धरूपमिष्टुत्य प्रणम्य प्रणिघाय च । प्रसिद्ध-रूपसिद्धचर्यं क्रियते रूपसग्रहः ॥ ग्रन्थ नं० ३४३ ।

६६ शब्दमिणिद्रपेण-केशिराज । पत्र सं०-१४४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भापा-कन्नड । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्य नं० ३६२ !

- ६७ शब्दमिणिटर्पेगा—केशिरान । पत्र मं०-१३१। पिन्त प्रतिपत्र—७। अक्षर प्रतिपिन्ति –७७। लिपि कन्नड । मापा—कन्नड । विषय—च्याकरण । लेखनकाल्र— ४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम । यस्य न० ३७९।
- इट शब्दमणिदर्पेण्-केशिराज । पत्र म०-१५८ । पिन प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-क्यड । भाषा-कन्नड । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा मामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्य न० ४६६ ।
- ६९ **राव्दमणिदर्पण-**केशिराज । पत्र स०-३४। पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-५४। लिपि-क्नन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्याकरम । लेवनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-मामान्य । ग्रन्य न० ५२७ ।
- ७० श्वासिंग्रियंग्-केशिराज । पत्र म०-१२३ । पिन प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपत्रि-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण । गन्य न० ७९० ।
- ७१ राज्यमिणिद्रेण-केशिराज । पत्र म०-१२ । पन्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपन्ति-१३४ । लिपि-क्सड । मापा-क्सड । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-शालि० शक १४७३ । अपूर्णे तया नामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-शालि॰ शक १४७३ नल मंबत्मर माद्रपद शुक्ला ८ गुरुवारके दिन उद्दसि-निवासी देवरमके पुत्र बोम्मिप्पने इने लिखा है।

# ग्रन्य नं ८१९।

- ७२ शब्दमणिद्रपेण-केशिराज । पत्र न०-८० । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कप्तड । मापा-कप्तड । विषय-ज्याकरम । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य गृद्ध । दशा-जीर्ण । प्रन्य न०-३८८ ।
- ७३ राव्दरूपावली-'''' । पत्र स०-११ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । असर प्रतिपंक्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्ट्रत । विषय-व्याकरण । छेखनकाल-४ । अपूर्ण नया शुद्ध । दशा-सामान्य । विशय-इसमें वनञ्जय दृत 'नाममाला' के भी कुछ पत्र हैं ।

# प्रन्य न० ३९४।

- ७४ शब्दस्त्पावली- · · · · । पत्र सं०-१७ । पन्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-४७ । लिपि-कन्नड । नापा-सस्कृत । विषय-स्थानरण । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ६७५ ।
- ७५ राव्यस्पावली। पत्र सं०-२२। पत्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपत्रित-५०। लिपि-च्या । निषय-व्यानरम। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा मामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।
  प्रन्य नं० ८४५।
- ७६ शब्दरूपावली-\*\*\*\* । पत्र स०-२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-६१ । लिपि-क्व्नड । नाषा-सस्कृत । विषय-त्र्याकरण । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।
- ग्रन्य र्न० ८८५।
  ७७ शब्द्रूपावली-....। पत्र स०-१। पन्ति-६। व्यक्षर प्रतिपन्ति-९४। लिपि-कन्नड। नापा-संस्कृत । विषय-व्याकरम् । लेखनवाल- 🗙 । पूर्ण तया सामान्य बृद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य नं० ६७५।
- ७८ शब्दबातुरूप-\*\*\*\*\* पत्रं स॰-१४ । पेक्ति प्रतिपत्रं-७ । असर् प्रतिपेक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । मापा-संस्कृत । विषयं-व्याकरेणें । लेखनकाल-ँ र । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । देशा-ंत्रीणें ।

### ग्रन्थ न० ४३०।

७६ शब्दघातुरूप तथा समासचक्र- ः । पत्र स०-८। पित्र प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-६१। लिपि-कन्नड। भाषा-मस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

### ग्रन्थ न० २३।

द० शब्दानुशासन-आचार्य शाकटायन । पत्र स०-२६८ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेप-इसमे 'चिन्तामणि वृत्ति' भी है ।

### ग्रन्थ न० ८३ ।

दिश्वातुशासन-आचार्य शाकटायन । पत्र स०-१२२ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-११४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमे अभयनन्दी कृत 'प्रिक्यासग्रह' नामक वृत्ति भी है ।

### ग्रन्थ न० १२३।

द्भ शब्दानुशासन-आचार्य शाकटायन । पत्र स०-९८ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-१६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० १५०।

दश्राब्दानुशासन-आचार्य शाकटायन । पत्र स०-२३ । पक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सम्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनुकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ५१५ ।

८४ शब्दानुशासन-आचार्य भट्टाकलङ्कः । पत्र म०-९२ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत तथा कन्नड । विषय-व्याकरण । लेखंनकाल- ४ । अपूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीणे ।

### ग्रन्थ न० ८३२।

द्ध् शब्दानुशासन-भट्टाकलद्धः । पत्र स०-२६ । पनित प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपनित-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत तथा कन्नड । विषय-व्याकरण । लेवनकाल- ४ । अपूर्ण तथा सामान्य जुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'एकत्वसप्तित' 'श्रुतावतार कथा' 'तर्त्वार्यसूत्र' एव 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' आदि के भी अधूरे पत्र है ।

### ग्रन्थ न० ८६२।

द्धः शब्दानुशासन--भट्टाकलङ्कः । पत्र स०-१२ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- ४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । देशा-सामान्य ।

# ग्रन्य न० ४०५।

८७ शब्दानुशासन्यरिभाषासूत्र- । पत्र स०-९५। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-शार्विर सवत्सर, ज्येष्ठ कृष्ण ३० के दिन रामभट्टने चरकिल्लिनवासी रिववर्म अरसके लिये इसे लिखा है।

# ग्रन्य न्० २२६।

८८ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह्—आचार्य अभयचन्द्र । पत्र स०-८१। पिक्त प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-१२३। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-जीर्ण। विशेष-इसमें अन्तका एक पत्र नहीं है।

# ग्रन्य नं० २७५।

द**६ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह्**—आचार्य अभयचन्द्र । पत्र मं०-२०९ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अझर प्रतिपक्ति-७६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सम्कृत । निषय-त्र्याकरण । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-देशीगणाग्रगण्य प्रभेन्दुदेवने कल्लहिल-निवासी विजयण्यके शिष्य पद्मके लिये इसे लिखा है ।

# ग्रन्य नं० ४५९।

६० शाकटायनप्रक्रियासंप्रह्—आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- ४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दक्षा-उत्तम ।

विशेष-इसमें स्त्रीयत्यय तक ही है।

### ग्रन्य न० ५१६।

६१ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह्-आचार्यं अभ्यचन्द्र । पत्र म०-८१ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य ग्रुद्ध । दशा-अतिजीर्ण

### ग्रन्य न० ५७१।

**६२ शाकटायनप्रक्रियासंप्रह्**-आचार्य अनयचन्द्र । पत्र म०-६४ । पश्चित प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पश्चि-६९ । लिपि-कन्नड । नापा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- × । अपूर्ण तया सामान्य ग्रुट । दग्रा-डीर्ण ।

# ग्रन्य नं० ५७३।

ह्र शाक्र्यायनप्रक्रियासंप्रह्-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र स०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनवाल-४ । अपूर्ण तया सामान्य श्रुट । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इनमें कवि माव इन 'शिशुपालवव' के भी कुछ पत्र हैं।

### ग्रन्य न० ५८४।

६४ शाक्टायनप्रक्रियासंग्रह्-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र स०-७० । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-१२० । छिपि-कन्नड । भाषा-सम्ऋत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- × । शालि०शक १४७५ । अपूर्णं तया शुद्ध । दशा-जीर्णं ।

विशेष-शास्त्रि । परिषावी सदत्सर कार्निक शुक्त (?) मंगलवारके दिन हपनायककी पौत्री नागम्म नायकीने शास्त्रदानार्थे इसे लिखवाया है।

# ग्रन्य नं ६२२।

हर् शाकटायनप्रक्रियासंप्रह्—जाचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-त्र्याकरण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तया मामान्य सुद्ध । दसा-जीर्ण । ग्रन्य न० ६८६ ।

६६ शाक्टायनप्रक्रियासंग्रह—आचार्य लमयचन्द्र । पत्र स०-११५ । पिक्ति प्रतिपत्र-८ । लक्षर प्रतिपक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । मापा-मंस्कृत । विषय-त्र्याकरण । लेखनकाल- ८ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-बीर्ण तथा खण्डित ।

# ग्रन्य नं० ७११।

६७ शाक्टायनप्रक्रियासंप्रह्—शचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०- १९७ । पित्र प्रतिपत्र- ० । अक्षर प्रतिपन्ति-१० । लिपि-न्त्रह । भाषा-संस्कृत । विषय-त्र्याकरण । लेखनकाल-शालि० शक १७०५ । पूर्ण तथा सामान्य गृद्ध । दशा-दत्तम ।

विशेष-गानि० नक १७०५ ग्रमञ्जन् सवत्तर श्रावण ग्रुक्ना १५ गृहवारके दिन वेणुपुरिनवासी विक्रम निट्टिके पुत्र नोमने म्यानीय त्रिमृतनिलक-चूडामणि चैत्यालयमें इसे लिखा है।

#### ग्रन्थ न० ७१४।

६८ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह्—आचार्यं अभयचन्द्र। पत्र त०-१०। पनित प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-७०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

# ग्रन्य न० ७५०।

**६६ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह**—आचार्य अभयचन्द्र । पत्र स०—६३ । पक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपक्ति— ७७ । लिपि—नागरी । भाषा—सम्कृत । विषय—व्याकरण । लेखनकाल—×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम । ग्रन्थ न० ७९० ।

१०० शाकटायनप्रक्रियासंग्रह्-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र स०-१३ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

# ग्रन्थ न० ८१८।

१०१ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह्-आचार्यं अभयचन्द्र । पत्र स०-९२ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पन्ति-१०८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणं ।

### ग्रन्थ न० २२१।

१०२ शाकटायन श्रमोघवृत्ति-आचार्यं शाकटायन । पत्र स०-१७९ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रति-पंक्ति-९९ । लिपि-कन्नट । भाषा-सस्कृत । विषय-च्याकरण । लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । अन्तिम पद्य-श्रीमत्कारकले ग्रामे माभिश्रेष्ठी सुदृक् सुघी । विशालकीर्तिदेवेभ्योऽमोघा वृत्तिमलीलिखत् ॥

### ग्रन्थ न० ६३६।

१०३ शाकटायन स्रमोघवृत्ति-जाचार्य शाकटायन । पत्र स०-२९ । पिनत प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रति-पिनत-१३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ न० २११।

१०४ पट्कारक-विनश्वरनन्दी । पत्र स०-४० । पित प्रतिपृत्र-७ । अक्षर प्रतिपृत्रि-५१ । लिपि-कन्नत । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० ३६५ ।

१०५ पट्कारक-विनश्वरनन्दी । पत्र स०-२४ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-त्र्याकरण । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० ७१५।

१०६ पट्कारक-विनश्वरनन्दी । पत्र स०-१९ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें आ० पूज्यपादकृत 'सर्वार्थंसिद्धि' के भी कुछ पत्र हैं ।

### ग्रन्थ नं० २८२।

१०७ समासचक्र-''' । पत्र म०-२६ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ३९४।

१०८ समासचक- ' । पत्र स०-४ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सम्कृत । विषय-न्याकरण । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ न० ४९९।

१०६ समासचक्र- ' ' । पत्र सं०-४। पित्रत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपित्त- ५२। लिपि-कन्नह। भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें व्याकरणसवन्धी ८ पत्र और भी हैं ।

# ग्रन्थ न० ६४९।

११० समासचक्र- · · · · । पत्र स०-५ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ न० १०१।

१११ सारस्वतप्रक्रिया- । पत्र स०-४०। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिनत-८२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण। लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ६६८।

११२ सारस्वतप्रक्रिया-\*\*\*\* । पत्र सं०-२५३ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-८८ । लिपि-कन्नह । माषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।



# विषय-कोश

# ग्रन्थ न० १५८।

- १ श्रिमधानिचन्तामिण-आचार्यं हेमचन्द्र । पत्र स०-१५१ । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३७४ ।
- २ स्रभिधानचिन्तामिण्-आचार्य हेमचन्द्र । पत्र सं०-६५ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल- 🗴 । पूर्णं तथा गुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ न० ७७८।

३ स्त्रभिधानरत्नमाला- ' । पत्र स०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपक्ति-१०८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-कोश। लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें 'चतुरास्यनिषण्टु' (कन्नड) के भी २ पत्र है।

### ग्रन्थ न० ८०१।

- अभिघानरत्नमाला-नागवर्म। पत्र स०-२५। पिक्त प्रतिपत्र-१३। अक्षर प्रतिपिक्त-५१। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कोश। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण तथा खण्डित। ग्रन्थ न० ३५६।
- ५ अनेकार्थनाममाला-पण्डित रामचन्द्र । पत्र स०-१७४ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

### ग्रन्थ न० ५1

६ स्त्रमरकोश-अमरसिंह। पत्र स०-२८। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-६६। लिपि-कन्नड़। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष-इसमें प्रारम्मके १७ पत्र नहीं है।

### ग्रन्थ न० २५।

श्रमरकोश-अमरसिंह। पत्र स०-७०। पिनत प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-६०। लिपि-तिमल ।
 भाषा-सस्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

### ग्रन्थ न० १२६।

本 知れरकोश-अमर्रासह । पत्र स०-७६ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-१६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-メ । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-जीणं ।

विशेप-इसमें विस्तृत सस्कृत टीका भी है।

### ग्रन्थ न०१४०।

६ श्रमरकोश-अमर्रासह । पत्र स०-११७ । पित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपित्त-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

### ग्रन्थ न० १९१।

१० श्रमरकोश-अमरसिंह। पत्र स०-९१। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-९०। लिपि-कन्नह। भाषा-सस्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है।

# ग्रन्थ न० २८०।

११ श्रामरकोश-अमर्रासह। पत्र स०-७६। पन्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपन्ति-१७५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें विठल कृत कन्नड वृत्ति है।

### ग्रन्थ न० २८२।

१२ स्प्रमरकोश-अमरसिंह। पत्र स०-७७। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिनत-७८। लिपि-कन्नह। भाषा-सस्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

### ग्रन्थ न० ३९४।

१३ द्यामरकोश (सृतीयकाएड मात्र)-अमरसिंह । पत्र स०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश १ लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्य नं० ३९७।

१४ श्रामरकोश-अमरसिंह। पत्रस०-४१। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-१५२। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

### ग्रन्थ न० ३९७।

१५ स्त्रमरकोश-अमरसिंह। पत्र स०-७९। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-१४९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

### ग्रन्थ न० ४३७।

१६ स्त्रमरकोश-अमरसिंह। पत्र स०-७१। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-१२९। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-सीम्य सवत्सर वैशाख कृष्ण ७ शुक्रवारके दिन पदुमण्णाने इसे लिखा है । इसमें कन्नड टीका भी है।

### ग्रन्थ न० ५२८।

१७ श्रमरकोश-अमरसिंह। पत्र सं०-३६। पिक्त प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिक्त-३६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल-×। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-अतिजीर्णं।

# ग्रन्थ नैं० ६०१।

१८ स्त्रमरकोश-अमरसिंह। पत्र स०-७४। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-४६। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-कोश। लेखनकाल- ×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ न० ६१२।

१६ स्त्रमरकोश-अमरसिंह । पत्र स०-७४ । पिनत प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपिनत-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है।

# ग्रन्य न० ६५१।

२० द्यमरकोश-अमरसिंह। पत्र म०-१२४। पिक्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-९९। लिपि-कन्नड। मापा-संस्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें लिगयसूरिकृत पदिववृति नाम म सस्कृत टीका भी है।

# ग्रन्थ न० ७१६।

२१ श्रमरकोश-अमरसिंह। पत्र स०-६०। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-३८। लिपि-नागरी। भाषा-सस्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ७१७।

२२ द्यमरकोश-अमरसिंह। पत्र स०-४४। पिन्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिन्त-२५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्य नं० ७६०।
२३ त्र्यमरकोश-अमर्रासह। पत्र स०-१७२। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-६८। लिपिकन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-कोश। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य गुद्ध। दशा-सामान्य।
विगेप-इसमें संस्कृत तथा कन्नड टीका है।

### ग्रन्थ नं ० ८३६।

२४ स्त्रमरकोश-अमर्रासह । पत्र स०-१२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-४० । पि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'क्षत्रचूडामणिकाव्य' के भी कुछ पत्र है ।

ग्रन्थ न० ८५८ ।

२५ श्रमरकोश-अमर्रीसह । पत्र सं०-१२ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-२० । लिपि-कन्नड भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ९०० ।

२६ श्रमरकोश-अमरसिंह। पत्र स०-१६३। पिनत प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिनत-५९। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें विटुलकृत 'विदग्धचूडामणि' नामक सस्कृत टीका तथा कन्नड टिप्पणी भी है।

ग्रन्थ नं० ६०७।

२७ श्रमरकोशकी टीका-\*\*\*\*\*\*। पत्र स०-२३। पक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपक्ति-८०। लिपि-कञ्चड। भाषा-सस्कृत । विषय-कोश। लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण। ग्रन्थ नं० २४९।

२८ श्रमरकोशपद्विवृति-लिङ्गयसूरि। पत्र स०-५६। पन्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपन्ति-७९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

### ग्रन्थ न० २८२।

२६ एकात्तरनिघरदु- • • • • • • । पत्र स०-२ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-७८ । लिपि-कन्नस्र । भाषा-संस्कृत । विषय-कोग । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ६५३ ।

३० एकात्तरिनिचएटु- ''' । पत्र स०-२३ । पन्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सरकृत । विषय-कोश । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'हरदनीति' के भी कुछ पत्र हैं।

### ग्रन्थ न० ३७४।

३१ एकात्तरनाममाला-अमरेन्द्र। पत्र स०-१। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिनत-६८। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० १४५।

\* ३२ चतुरास्यिनिधरहु-चतुरास्य । पत्र स०-४ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ५६४।

\* ३३ चतुरास्यनिघएटु-चतुरास्य । पत्र स०-८ । पन्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपन्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कोश । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ६५३।

\* ३४ चतुरास्यनिघर्दु-चतुरास्य । पत्र स०-१६। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-४२। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कोश । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-हन्नावर-निवासी जयकीर्तिदेवने इसे लिखा है ।

### ग्रन्थ न० ७८६।

३५ सानार्थकोश-कवि चक्रवर्ती । पत्र सं०-२१ई । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कप्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं । विशेष-इसमें 'एकाक्षरनिघण्टु' तथा 'त्रिलोकसार' के भी कुछ पत्र है ।

### ग्रन्थ न० ४७ ।

३६ नानार्थरत्नाकर-किन नागवमं । पत्र स०-१५ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कोश । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

#### ग्रन्थ न० ५५३।

३७ नानार्थरत्नाकर्-नागवमं । पत्र स०-५६६ । पिक्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिक्त-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कोश । लेखनकाल-शा० शक १५०४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है । शालि० शक १५०४ विषु सवत्सर ज्येष्ठ शु० ५ रविवारके दिन श्री अकलङ्कदेवके शिष्य हन्नावर-निवासी जयकीतिदेवने धातकीपुरस्थ नेमिनाथ चैत्यालय में इसे लिखा है ।

### ग्रन्थ न० ६५३।

\*३८ नानार्थरत्नाकर-रामचन्द्र द्राविह। पत्र स०-१५। पिक्त प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिक्त-४८। लिपि-कन्नह। भाषा-कन्नह। विषय-कोश। लेखनकाल-शालि० शक-१५०४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-शालि० शक १५०४ विषु सवत्सर, ज्येष्ठ शु० ५ रविवारके दिन श्रीअकलङ्कदेवके शिष्य हन्नावर-निवासी जयकीर्तिदेवने धातकीपुरस्थ नेमिनाथ चैत्यालयमें इसे लिखा है। इसमें कन्नह टीकाके भी कुछ पत्र हैं।

# ग्रन्थ नं० १५३।

३६ नाममाला-महाकवि घनञ्जय । पत्र सं०-४० । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विपय-कोश । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० २३६।

४० नाममाला-महाकवि घनञ्जय । पत्र स०-३७ । पवित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपवित-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ न० २७२।

४१ नाममाला-महाकवि धनञ्जय । पत्र स०-१२ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जौर्ण ।

# ग्रन्थ न० ३१८।

४२ नाममाला-महाकवि घनञ्जय । पत्र स०-६६ । पित्त प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपित-१०० । लिपि-फन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ३५८।

४३ नाममाला-महाकवि घनञ्जय । पत्र स०-९ । पक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-३० । लिपि-कन्नह । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

# ग्रन्थ न० ४६९।

४४ नामनाला-महाकिव धनञ्जय । पत्र स०-३५ । पिकत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिकत-६३ । लिपि-क्षित्र । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

# ग्रन्थ न० ६५३।

४५ नाममाला-महाकवि घनञ्जय । पत्र स०-१५६ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-शा० शक १५०५ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि॰ शक १५०५ चित्रभानु सवस्सर वैशाख शु॰ १२ के दिन हन्नावर-निवासी जयकीतिदेवने इसे लिखा है।

# ग्रन्थ नं॰ ७८२।

४६ नाममाला-महाकि घनञ्जय । पत्र स०-५० । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

### ग्रन्थ न० ८३० ।

४७ नाममाला-महाकवि घनञ्जय । पत्र स०-९ । पक्ति-प्रतिपत्र∸१० । अक्षर प्रतिपक्ति-११२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ४३०।

\* ४८ विदग्धचूडामि -पण्डित विद्वलः । पत्र स०-१०३ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । लिपि-कन्नडः । भाषा-कन्नडः । विषय-कोशः । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्धः । दशा-उत्तमः । विशेष-यह अमर्रोसह कृत 'नामलिङ्गानुशासन' की विस्तृत कन्नड टीका है ।

# ग्रन्थ नं० ४६६।

\* ४६ विद्रधचूडामणि-पण्डित विट्ठल । पत्र स०-२२ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-५४ । लिप-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ४९४।

\* ५० विद्ग्धनूहामिण-पण्डित विट्ठल । पत्र स०-३० । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-१२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणं। विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

# ग्रन्थ न० ५४८।

\* ५१ विदग्धन्त्वामिण-पण्डित विट्ठल । पत्र स०-५४ । पिन्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिन्त-१३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीणै तथा खण्डित ।

विशेप-यह 'अमरकोश' की कन्नड टीका है।

ग्रन्थ न० ७८८।

\* ५२ विद्ग्धचूडामिणि-पण्डित विट्ठल । पत्र स०-८२ । पिक्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिक्त-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह 'अमरकोश' की टीका है ।

ग्रन्थ न० ४९२।

\* ५३ वैजयन्तीकोश- ' ' ' ' । पत्र स०-३०। पिनत प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपिन्त-४०। लिपि-नागरी। माषा-सस्कृत। विषय-कोंश। लेखनकाल- ×। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ७७८।

५४ शब्दमञ्जरी-प्रदोम्यसूरि । पत्र स०-२९ई । पिनत प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपिनत-८४ । लिपि-कन्नड । ाषा-सस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें व्याकरण सम्बन्धी और भी कुछ पत्र है ।



# विषय-काव्य

### ग्रन्थ न० ४९९।

- \* १ श्रामरुशतक-किव अमरुक । पत्र स०-१८ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-८० । सिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें लक्ष्मीधराचार्यके पुत्र चेन्निमट्ट कृत 'श्रृगारदीपिका' नामक संस्कृत टीका है । ग्रन्थ न० ४९९ ।
- \*२ छामरुशत्तक-किव अमरुक । पत्र स०-१० । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें पेह्कोमटिंग वेम भूपाल विरचित 'श्वृगारदीपिका' नामक संस्कृत टीका है । ग्रन्थ न० ५५८ ।
- \* ३ किरातार्जुनीय-महाकवि भारिव। पत्र स०-४३। पिक्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-४०। िलिप-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है।

### ग्रन्थ न० ६१९।

\* ४ किरातार्जुनीय-महाकि भारिव । पत्र स०-३४ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें 'मेघदूत' तथा 'रघुवश' के भी कुछ अपूर्णं पत्र हैं।

# ग्रन्थ न० ४९९।

- \* ४ कुमारसम्भव-महाकवि कालिदाम । पत्र सं०-१० । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- ४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ४९९ ।
- \* ६ कुमारसम्भव-महाकवि कालिदास । पत्र स०-८ । पक्ति प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपक्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणं ।

# ग्रन्य न • ७०५।

- \* ७ कुमारसम्भव-महाकिव कालिदास । पत्र न०-७७ । पिक्त प्रतिपत्र-३ । अक्षर प्रतिपिक्त-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दगा-जीर्ण । ग्रन्य नं० ६०५ ।
- \*द कुमारसम्भवटीका-मिल्लिनाय । पत्र स०-३७ । पिक्त प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपंक्ति-७६ । लिपि-कन्नड । मापा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य गुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्य न० ५३२ ।
- \* ह कुमारसम्भवदीपिका-निन्दमूरि । पत्र स०-१०६ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-६५ । लिपि-कञ्चड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य मुद्ध । दशा-अतिजीर्ण । विशेष-यह कालिदास कृत 'कुमारसम्भव' की टीका है । इनके रचिवता पण्डित नारायणायंके पुत्र प० निन्दमूरि है ।

### ग्रन्थ न० १।

- १० स्त्रचूहामिण-महाकि वादीभिमह। पत्र सं०-२०। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-९०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शृद्ध। दशा-उत्तम।
  ग्रन्थ नं० १३६।
- ११ त्त्रचूडामिण्-त्रादीर्भोसह। पत्र सं०-२२। पिन प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिक्त-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा अगुद्ध। दशा-उत्तम।

### ग्रन्य न० १४१।

- १२ च्त्रचूडामिंग्-वादीर्भोत्तह । पत्र सं०-१६ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य नं० २३९ ।
- १३ च्त्रचूडामिण्-वादीभसिंह। पत्र स०-४७। पक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-७५। लिप-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। लेखनकाल-४। पूर्ण तया सामान्य शृद्ध। दशा-मामान्य। ग्रन्थ नं० ४८४।
- १४ चत्रचूडामिण्-वादीमिसह । पत्र \_सं०-६४ । पिन्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रत्य न० ५२१ ।
- १४ चत्रचूडामिण्-वादीमिन्ह । पत्र स०-३२ । पिक्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य नं ७ ५२३ ।
- १६ त्तत्रचूहामिण्-वादीर्भोसह । पत्र स०-९ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४० । लिपि-कन्नड । नापा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ न० ५२६।

१७ त्तत्रचूडामिण्-वादीभिसह । पत्र स०-९ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सम्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रन्य न० ६३५ ।

१८ त्त्रचृद्धामिणि—वादीभिसह । पत्र स०-६४। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिनत-८०। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ न० ६६८।

१९ त्त्रज्ञामिगा-वादीभसिंह। पत्र म०-२८। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ६४०।

२० त्तत्रचूडामिण्-वादीभिन्ह्। पत्र म०-७७। पिन्त प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिन्त-३०। लिप्-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

### ग्रन्थ न० ६७३।

२१ चत्रचूडामिण्-वादीभसिंह। पत्र म०-१२। पिन्त प्रतिपत्र-१२। अक्षर प्रतिपिन्त-४६। लिप्-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ न० ७१५।

२२ चत्रचूडामिया-वादीमिमह । पत्र स०-१९ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-४० । लिपि-कन्नट । भाषा-सम्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ८२२ ।

२३ त्तृत्रचूडामिण्-वादीर्भासह । पत्र सं०-४१ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-४५ । लिप्-कन्नड । भाषा-सम्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ८५६।

२४ त्तत्रचूडामिण्-वादीमसिंह । पत्र स०-६७ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिन्ति-३३ । लिपि-कन्नट । भाषा-मस्कृत । विषय-कात्र्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'समासचक्र' के भी कुछ पत्र है।

# ग्रन्य नर्० १८७।

२५ च्नत्रचूडामिण टीका- । पत्र स०-६९ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-७८ । लिप-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काच्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्य न० २४०।

\*२६ खरडनग्रन्थ १-श्रीहर्ष । पत्र स०-४३ ।पिनत प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिन्त-१७७ । लिपि-कन्नड । । भाषा-सम्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्य न० ४९९।

२७ गद्यचिन्तामिया-वादोभिमह । पत्र म०-१२ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-७५ । लिप-कन्नट । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-जीर्ण ।

# ग्रन्थ न० ८१९ ।

२८ गद्यचिन्तामिग्-वादीभसिंह। पत्र सं०-८। पिन्त प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-१००। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

१ यह दर्शन ग्रन्थ मालूम होता है। -सम्पा०

### ग्रन्थ न० ४।

द्ध चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र स०-४५ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्ष प्रतिपक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-प्रारम्भके ४८ पत्र नहीं हैं ।

### ग्रन्थ न० ८।

३० चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र स०-४१। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-१००। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ न० ११०।

३१ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र स०-३३ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल 🔀 अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ न० १४३।

३२ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र स०-७९ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसे बिदरे पार्श्वनाथ चैत्यालयमें ब्रह्मचारी वासुपूज्यने लिखवाया ।

# ग्रन्थ न० १६६ ।

३३ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र स०-८९ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें १५ पत्रोमें 'विषमपदपिका' नामक सस्कृत टिप्पणी भी है ।

### ग्रन्थ नं ० २८१।

३४ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र सं०-४३ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१३७ । स्त्रिप-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ नं० २९६।

३५ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र स०-५६ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-११४ । लिपि-कन्नर्ड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- 🔀 । पूर्णे तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्य न० ४१४।

३६ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र स०-५९ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-१५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कान्य । लेखनकेल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ४३० ।

३७ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी। पत्र स०-२०। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-४६। छिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

### ग्रन्थ न० ५५५।

३८ चन्द्रप्रभचरित-महाकिव वीरनन्दी । पत्र स०-४६ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल ×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ५६७।

३६ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र स०-३३ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-६६ । ि लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नै० ६१५ ।

४० चन्द्रश्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र स०-५९ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-७३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णः

### ग्रन्थ न० ६४६।

४१ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र स०-७५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ६८० ।

४२ चन्द्रप्रभाचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र स०-४८ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'द्विसधानकाव्य' के भी ७ पत्र है ।

### ग्रन्थ न० ७४३।

४३ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी। पत्र स०-६०। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-१००। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ न० ८१७।

४४ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी। पत्र स०-५०। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-८७। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।, प्रन्थ न० ११०।

४५ चन्द्रप्रभचरित-च्याख्यान-विद्यार्थी मुनिचन्द्र । पत्र स०-१०० । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-व्याख्यानका नाम विद्वन्मनोवल्लभ है। व्याख्याता अलगचीपुरीके निवासी द्विजोत्तम देवचन्द्रके पुत्र विद्यार्थी मुनिचन्द्र है। यह व्याख्यान प्रमोद्गत सवत्सर माघ शुक्ला प्रतिपत् रोहिणी वक्षत्रमें रचा गया। ग्रन्थ न० ४९४।

\* ४६ चम्पूरामायग्-भोजराज । पत्र स०-१२ । प्रक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ११९ ।

\* ४७ जगन्नाथविजय-\*\*\*\* । पत्र स०-१३३ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-९५ । किपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काव्य । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणै ।

ग्रन्थ न० ३००।

\* ४८ जयनृपकाठय-कवि मगरस । पत्र स०-५३ । पिक्त प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपिक्त-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-निट्टूरु निवासी समन्तभद्रदेवने विदुरेके चन्द्रप्रम चैत्यालयमें इसे लिखा है ।

### ग्रन्थ न० २१९।

४६ ज्ञानचन्द्राभ्युद्य-कल्याणकीति । पत्र स०-७५ । पित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपित्र-७० ॥ लिपि-कन्नर । भाषा-कन्नर । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० १२।

४० धर्मशर्मोभ्युद्य-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र स०-९४ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०० । क्षिप-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीण ।

### ग्रन्थ न० २४।

५१ धर्मशर्माभ्युद्य-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र स०-३९ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-१४५ । 'लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रश्चित्तका प्रारम्भिक पद्य-श्रीमानमेयमहिमास्ति स नेमदाना वश्च समस्तजगतीवलयावतसः ॥ हस्तावलम्बनमवाप्य यमुल्लसन्ती वृद्धापि न स्खलति दुर्गपदेषु लक्ष्मीः ॥१॥

# ग्रन्थ न० २८ ।

५२ धर्मशर्माभ्युद्य-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र स०-४८ । पवित प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपवित-१२८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विपय-काव्य । लेखनकाल - × । पूर्ण तथा शुद्ध । व्झा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३४ ।

५३ धर्मशर्माभ्युद्य-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र स०-६१ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल ४ । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें चित्रबन्धोकी कुछ रचनायें भी है ।

### ग्रन्थ न० ७१।

५४ धर्मशर्मीभ्युद्य-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र स०-५३ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिन्त-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

# ग्रन्थ न० १८३ ।

५५ धर्मशर्माभ्युद्य-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र स०-८७ । पाक्ते प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिकत-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ न० १८४।

४६ धर्मशर्माभ्युद्य-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र स०-४४ । पिक्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । अन्तिम पद्य-आर्द्रदेवसुतेनेद काव्य धर्मजिनोदयम् । रिचत हरिचन्द्रेण परम रसमिन्दरम् ॥ यह पद्य मुद्रित प्रतिम नही मिलता है ।

- ५७ धर्मशर्मोभ्युद्य-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र स०-५७ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-११० । िलिप-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३२२ ।
- ४८ धर्मशर्माभ्युदय-महाकि हरिचन्द्र । पत्र स०-५५ । पिक्त प्रतिपत्र-१५ । अक्षर प्रतिपिक्त-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रत्य न० ३५७ ।
- ५६ धर्मशर्माभ्युद्य-महाकि हरिचन्द्र । पत्र स०-९३ । पित्र प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें बीच बीचमें टिप्पणी भी दी गई है ।

ग्रन्थ न० ४५७। ६० धमशमाभ्युद्य-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र स०-४५ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-१५८ । लिपि-कन्नड ।, भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४।, पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ६२७ ।

६१ धर्मशमोभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र स०-४ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें 'सर्वार्थसिद्धि' के भी कुछ पत्र है।

# ग्रन्थ न० ६८०।

६२ धर्मशर्माभ्युंद्य-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र स०-४० । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें गुणस्थान सबधी और भी कुछ पत्र है ।

### ग्रन्थ न० ६९१।

- ६३ धर्मश्मीभ्युद्य-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र स०-८१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-९० । लिपि-नागरी । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रत्थ नं० ७२० ।
- ६४ धर्मशर्माभ्युद्य-महाकवि हरिचन्द्रः। पत्र स०-३५। पन्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-९१। लिपि-कन्नडः। भाषा-संस्कृतः। विषय-काच्यः। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्धः। दशा-सामान्य। प्रत्य न० ७८४।
- ६५ धर्मरामोभ्युद्य-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र स०-४७ । पक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ७८४ ।
- ६६ धमेशमाभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र स०-५४। पिक्तं प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रत्य न० २४ ।
- ६७ धर्मशर्माभ्युद्यटीका-किव देवर । पत्र स०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रारम्भिक पद्य-अनेकान्तिगरा पत्युरद्धिघ्रद्वयनखानि व । अमृतश्रीरिरसूना सन्तु प्रङ्कारदर्पणा ॥१॥ अरिळश्रेष्ठिन स्नेहादातिनिष्यति दीपिकाम् । धर्मशर्मेति रूढस्य काव्यस्य कविदेवर ॥२॥

विशेष-टीका १२ सर्गाविध है।

#### ग्रन्थ न० ६०१।

- ६८ धर्मशर्माभ्युद्यटीका-कवि देवर । पत्र स०-१८ । पनित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रनिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ७८४ ।
- ६६ धर्मशर्माभ्युद्यटीका-किव देवर । पत्र स०-२० । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-९५ । लिपि-कन्नड । माधा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'अमरकोश,' 'द्विसधानकाव्य' तथा 'धर्मशर्माभ्युदयटिप्पणी' के भी कुछ पत्र है । प्रन्थ न० २८१ ।
- ७० धर्मशर्माभ्युद्यविषमपद्टिप्पग्गी- । पत्र सं०-६ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काच्य । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० १७७ ।
- ७१ नेमिनिवीग्यकाठ्य-वाग्मट । पत्र स०-३ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काच्य । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० ४९१ ।
- ७२ नेमिनिर्वाणकाट्य-वाग्भट । पत्र स०-६ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण । ग्रन्थ न० ४९७ ।
- ७३ नेसिनिवीराकान्य-वाग्भट । पत्र स०-२ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-१५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कान्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ५९४ ।
- ७४ नेमिनिकीग्यकान्य-वाग्भट । पत्र स०-५४ । पक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणी

# ग्रन्थ ने० ६२८।

७५ तेमिनिर्वाणकाठ्य-वाग्भट । पत्र स०-५ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० ७६२ ।

७६ नेमिनिर्वाणकाञ्यटीका- । पत्र म०-२०। पन्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपन्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-काञ्य। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-मामान्य। ग्रन्थ न०१०४।

\*७७ त्रैषधकाव्य-श्रीहर्ष । पत्र स-९७ । पिक्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिक्त-११० । लिपि-कन्नह । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ न० ३३१।

\*७८ नैषधकान्य- श्रीहर्ष। पत्र स०-८७। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-१२७। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

# ग्रन्थ न० ४७२।

\*७६ नैषधकान्य-श्रीहर्ष । पत्र स०-८० । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-४० । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-×। अपूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें नर्रासह पण्डितके पुत्र नारायण कृत संस्कृत टीकाः भी है।

### ग्रन्थ न० ४९६।

\*८० नैषधकाव्य-श्रीहर्ष । पत्र स०-६६ । पितत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिति-९९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सम्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा मामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

# ग्रन्थ न० ३५।

द्धर पार्श्वोभ्युदय-आचार्य जिनसेन। पत्र स०-१६। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-८२। विषय-काव्य। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। लेखनकाल-४। शुद्ध तथा पूर्ण। दशा-उत्तम।

# विशेष-इसमें 'नागकुमार' चरित के कुछ पत्र है 1

# ग्रन्थ न० १६५।

८२ पार्श्वीभ्युदय-आचार्य जिनसेन । पत्र स०-१४ । पनित प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपत्रित-११६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० २४७।

द्र पंपरामायग्-अभिनव पंप (नागचन्द्र) । पत्र स०-१७७ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-प्रजोत्पत्ति सवत्सर भाद्रपद सप्तमीके दिन मलघारी भट्टारक ललितकीर्तिके शिष्य देवचन्द्रके पुत्र कल्लह (?) निवासी चन्दण्णने इसे लिखा है।

# ग्रन्य न० १०५।

\* ८४ भट्टिकाञ्य (रामकथा)-भट्टि॥ पत्र स०-२०६। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-८४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-काञ्य॥ लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें 'जयमगल' नामक संस्कृत टीका भी है।

### ग्रन्थ न० ६१७।

\* ८५ भट्टिकाच्य-भट्टि । पत्र स०-५८ । पितत प्रतिपत्र-३ ॥ अक्षर प्रतिपिक्त-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-×॥ अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

# ग्रन्थ नं ० ४४ 1

द्भ सुनिसुत्रतकाच्य-कवि अर्हह्म । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध ।

विशेष-इसमें 'पदमात्रविवरण' नामक कन्नड वृत्ति भी है।

ग्रन्थ न० १२७ ।

दण मुनिमुद्रतकाट्य-कवि अहंदास । पत्र स०-११ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-१५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्य न० १७७।

८८ मुनिसुत्रतकाव्य-कवि अहंदास । पत्र स०-२१ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ न० २०५।

ক্র मुनिसुत्रतकाञ्य-कवि अर्हदास । पत्र स०-२९ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें श्री श्रुतमुनिकी विस्तृत कन्नड टीका भी है ।

ग्रथ न० ३०४।

६० मुनिसुव्रतकाव्य-किव अहं हास । पत्र स०-८२ । पिनत प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिनत-१२०। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ न० ३०४।

११ मुनिसुत्रतकाठ्य-कवि अर्हहास । पत्र स०-१४ । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-१२४ । िरुपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ न० ३१९।

हर मुनिसुत्रतकाव्य-कवि अर्हहास । पत्र स०-३१ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें विस्तृत संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्य न० ३२६।

६३ मुनिसुत्रतकान्य-किव अर्हदास । पत्र स०-४५ । पन्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कान्य । लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्य न० ३४७।

६४ मुनिसुव्रतकाव्य-किव अर्हद्दास । पत्र स०-७४ । पिनत प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपिनत-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी हैं ।

ग्रन्थ न० ४०६।

ह्य मुनिमुत्रतकाञ्य-किव बहंदास । पत्र स०-१५ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-११७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ न० ४२४।

६६ मुनिसुत्रतकाट्य-कवि अर्हहास । पत्र स०-१३ र्। पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१५७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ४३० ।

हुए मुनिसुत्रतकाट्य-कवि अर्हहास । पत्र स०-२६। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-६०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ न० ४३०।

्ट मुनिसुत्रतकाठ्य-किव अर्हहास । पत्र स०-१५ । पनित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ४८४ ।

हर **मुनिसुत्रतकाञ्य**-किव अर्हद्दास । पत्र स०-४२ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । बिषय-काञ्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ न० ६०४।

१०० मुनिसुत्रतकाट्य-किव अर्हदास । पत्र स०-१४ । पित्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपित्त-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काच्य । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ६३० ।

१०१ मुनिसुत्रतकाव्य-किव अर्हहास । पत्र स०-५७ । पिक्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ८३२ ।

१०२ मुनिसुत्रतकाठय-किव अहंदास । पत्र स०-१३ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'गायत्री' तथा 'आशीर्वाद-पद्य' के भी कुछ पत्र है ।

# ग्रन्थ न० ८९०।

१०३ मुनिसुत्रतकाट्य-किव अर्हहास । पत्र स०-१६३ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० ४१८।

१०४ मुनिसुत्रतकान्य टोका-किन अहँदास । पत्र स०-८२ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-१६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कान्य । लेखनकाल-शालि० शक १७५३ विकृत सवत्सर कार्तिक कृष्ण १३ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार पायसागर वर्णी है। इसमे सिर्फ टीका है।

### ग्रन्थ न० ६६८।

१०५ मुनिसुत्रतकाव्यटीका-किष अर्हहास । पत्र स०-२१६ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-शालि० शक १४२५ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-शालि० शक १४२५ दुर्दुभि सवत्सर आश्वयुज कृष्ण १३ बुघवारके दिन गगुसेन बोवके पुत्र गोपणने मुनि विशालकीर्तिके शिष्य ब्र० घर्मदासका ग्रथ देखकर चद्रप्रभदेवके लिये इसे लिखा है।

# ग्रन्थ न० १६५।

\*१०६ मेघसन्देश-महाकवि कालिदास । पत्र स०-४ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-११४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्य न० ३०१।

\*१०७ मेघसन्देश-महाकवि कालिदास । पत्र स०-१२ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ न० ४९९।

\*१०८ मेघसन्देश-महाकवि कालिदास । पत्र य०-३ । पिन्त प्रिनिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपिन्त-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

### ग्रन्थ न० ७०५।

\*१०६ मेघसन्देश-महाकिव कालिदास । पत्र स०-३९ । पिक्त प्रतिपत्र-३ । अक्षर प्रतिपिक्त-२४ । लिपि-कन्नडः। भाषा-संस्कृतः। विषय-काव्यः। लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्धः। दशा-जीणं।

### ग्रन्थ न० ८१७।

\*११० मेघसन्देश-महाकवि कालिदास। पत्र स०-३७। पिनत प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिनत-६२। लिपि-कन्नहः। भाषा-सस्कृतः। विषय-काव्यः। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्धः। दशा-सामान्यः। विशेष-इसमें मिल्लनायकृत 'सजीवनी' नामक टीका भी है।

### ग्रन्थ न० ५३२।

\*१११ मेघसन्देश टीका-कवि मिल्लिनाथ। पत्र स०-१५। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-६५। लिपि-कन्नरः। भाषा-संस्कृतः। विषय-काव्यः। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा अति अशुद्धः। दशा-अति जीर्णः। ग्रन्थः न०२०५।

११२ यशोधरकाव्य-कवि वादिराज। पत्र स०-२३। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-५५। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० २४२।

११३ यशोधरकाच्य-वादिराज । पत्र स०-४१। पिक्त प्रतिपत्रत-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-७७। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

# ग्रन्थ न० २५५।

११४ यशोधरकाठ्य-वादिराज । पत्र स०-१५ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-७६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- 🔀 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ नं० ३०३।

११५ यशोधरकाठ्य-वादिराज । पत्र स०-३२ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें स्वोपन्न सस्कृत टीका भी है । यह टीका क्षेमपुरके नेमिनाथ चैत्यालयमें रची गई है ।

ग्रन्थ न० ३७०।

११६ यशोधरकाव्य-वादिराज । पत्र स०-६१ । पिक्त प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपिक्त-३६ । लिप-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें तृतीय सर्ग तक कन्नड टीका भी है ।

### ग्रन्थ न० ३७०।

११७ यशोधरकाट्य-वादिराज । पत्र स०-२६ । पन्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपन्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विश्रोष-इसमें द्वितीय सर्ग तक मट्टारक लक्ष्मीसेन कृत संस्कृत टीका भी है।

### ग्रन्थ न० ५२३।

११८ यशोधरकाञ्य-वादिराज । पत्र स०-४ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१४० । लिपि-कन्नड । माषा-संस्कृत । विषय-काञ्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रत्य न०,५६७ । ,

११६ यशोधरकाठ्य-वादिराज । पत्र स०-१० । पित्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपित्त-५७ । लिपि-कन्नडः। भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'प्रायश्चित्तविधि'के भी चार पत्र हैं ।

### ग्रन्थ न० ५७८।

१२० यशोधरकाव्य-वादिराज । पत्र सं०-२२ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ नं० ७०३ ।

१२१ यशोधरकाट्य-वादिराज। पत्र स०-१०३। पिनत प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिनत-२९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दद्या-सामान्य। विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है।

# ग्रन्य नं० ७८० ।

१२२ यशोधरकाव्य-वादिराज । पत्र स०-१० । पिक्त प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपिक्त-५१ । लिपि-क्त्रह । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें संस्कृत टीका भी है ।

# ग्रन्य न० ७९९।

१२३ यशोधरकाट्य-वादिराज । पत्र सं०-२६ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दगा-उत्तम । विशेष-इसमें संस्कृत टिप्पणी है ।

# ग्रन्य नं० ८१२।

१२४ यशोधरकाव्य-वादिराज। पत्र सं०-१४। पिक्त प्रतिपत्र-१३। अक्षर प्रतिपिक्त-९०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें चिक्कणके पुत्र लक्ष्मण कृत संस्कृत टीका है।

# ग्रन्य न० ८१६।

१२५ यशोधरकाव्य-वादिराज। पत्र सं०-३३। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-५०। लिपि-कन्नह। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा गुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसके लेखक पायण्ण है।

### ग्रन्य न० १९९।

१२६ यशोधरकाव्यटीका-पण्डित लक्ष्मण् । पत्र मं०-३२ । पित्र प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपित्त७० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।
अन्तिम पद्य-अकारयिदमां टीकां चिक्कणो गुणरक्षण । अकरोज्जिनदासोऽय चिक्कणात्मजलक्ष्मण ॥१॥
श्रीमत्पद्मणगुम्मटेत्यिभिहितौ श्रीविणिनौ भूतले भातवचावचरित्रवाधिहिमगू तत्प्रीतये लक्ष्मण ।
मन्दो वन्युरवादिराजविद्युप काव्यस्य कल्याणदा टीकां क्षेमपुरेऽकरोद्गुरुतरश्रीनेमिचैत्यालये ॥२॥
विशेष-इस प्रतिमें सिर्फं टीका है । सम्भव है कि मूल अन्यत्र रक्षा गया हो । टीका सुन्दर है ।

### ग्रन्य नं० १५५।

\*१२७ रघुवंशकाव्य-महाकवि कालिदास । पत्र स०-१६ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्य न० २४०।

\*१२८ रघुवंशकाव्य-महाकवि कालिदास । पत्र सं०-७५ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्य नं० ३४९ । \*१**२९ रघुवं**राकाव्य-महाकवि कालिदास । पत्र स०-'७१ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । वक्षर प्रतिपक्ति-६६ । लिपि-कन्नढ । मापा-संस्कृत । विपय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा गृद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न्० ४९९।

\*१३० रघुवंशकाटय-महाकि कालिदास । पत्र स०-३५ । पिक्त प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपिक्त-१३० । लिपि-कन्नड । भाण-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ५५७ ।

\*१३१ रघुवशकाच्य-महाकवि कालिदास । पत्र म०-४२ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-७१ । लिपि-कन्नड । भापा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ६३ ।

१३२ राघवपाएडवीय [ द्विसंघान काञ्य ]-महाकवि घनञ्जय । पत्र स०-१३६ । पक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपक्तित-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य

विशेप-इसमें संस्कृत टीका भी है। टीकाका अन्तिम पद्य इस प्रकार है-

अकारयदिमा टीकामरिळाश्रेष्ठिपुगव । अकरोदमृताश्लिष्टवचनः कविदेवर ।

# ग्रन्थ न० १२५।

१३३ राघवपारख्वीय [द्विसन्धान काव्य]-महाकवि घनञ्जय । पत्र स०-८७ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-११२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य ।

विशेप-इसमें सस्कृत टीका भी है। प्रत्येक सर्गके अन्तमें टीकाका पद्य इस प्रकार है-साधीयसी कृता टीका काव्यस्यास्य लघीयसी। पुष्पसेनार्यवर्यस्य प्रियशिष्येण सूरिणा।। ग्रन्य न० ५०४।

१३४ राघवपाय**ढवीय [ द्विसन्धान काञ्य** ]-महार्काव धनञ्जय । पत्र स०-६ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काञ्य । लेखनकाल- $\times$  । अपूर्ण तथा सामान्य सुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेप-इसमें व्याकरण सम्बन्धी भी कुछ पत्र है।

# ग्रन्थ न० ५५१।

१३५ राघवपारहवीय [द्विसन्धान काच्य]-महाकवि घनञ्जय । पत्र स०-३७ । पित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेप-इसमे सस्कृत टीका है। एव व्याकरणसम्बन्धी कुछ पत्र भी है।

### ग्रन्थ न० ५६२।

१३६ राघवपाएडवीय [द्विसन्धान काञ्य]-महाकवि घनञ्जय । पत्र स०-४० । पक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

### ग्रन्य नं० ५६९।

१३७ राघवपाएडवीय [द्विस्वन्धान काठ्य]-महाकवि घनञ्जय। पत्र स०-६१। पिक्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-१२०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। लेखनकाल-४।पूर्णं तथा सामान्य शृद्ध। दशा-उत्तम।

#### ग्रन्थ न० ६३४।

१३८ राघवपाएडवीय [द्विसन्धान काठ्य]-महाकृषि घनञ्जय । पत्र स०-७८ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

# ग्रन्थ न० ७४३।

१३६ राघवपाडवीय [ द्विसन्धान काव्य ]-महाकवि घनञ्जय । पत्र स०-२१ । पक्ति-प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' के भी चार पत्र है।

# ग्रन्थ न० ८२०।

१४० राघवपाण्डवीय [द्विसन्धान काव्य ]-महाकवि धनञ्जय । पत्र स०-१४ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा गृद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'नाममाला' तथा 'मुनिसुत्रतकाव्य'के भी कुछ पत्र है।

### ग्रन्थ न० ८२७ ।

१४१ राघवपाराडवीय [द्विसन्धान काठ्य ]-महाकवि धनञ्जय। प स०-१९। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-५४। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विपय-काव्य। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा साम न्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें 'वैजयन्तीकोश, 'विषापहारस्तोत्र' आदिके भी कुछ पत्र है।

# ग्रन्थ न० ५४९।

१४२ राघवपाग्डवीय [द्विसन्धान काठ्यं]की टीका-किवदेवर । पत्र स०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- 🔀 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें न्यायसबधी कुछ अपूर्ण पत्र भी है।

### ग्रन्थ न० २७।

१४३ रामचरित [पंपरामायण] - महाकवि पप। पत्र स०-१२९। पित प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रति-पित-१०५। विषय-काव्य। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। लेखनकाल-शालि० शक १३५०। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-देशीगणाग्रगण्य अनेकगुणगणालकृत-सहस्रकीर्तिदेवके शिष्य चिट्टूर नागिसेट्टिके पुत्र सिरियण्णके द्वारा लिखित ।

### ग्रन्थ न० ८४।

१४४ लीलावित—नेमिचन्द्र । पत्र स०-८१। पित प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपिक्त-१४९। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काव्य । लेखनकाल-भाव सवत्सर मार्गेशोर्ष कृष्ण ३। अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसके लेखक गोणियबीड निवासी देवण्णके पुत्र बोम्मरस है।

# ग्रन्थ न० ८३८ ।

१४५ लीलं।वति-नेमिचन्द्र । पत्र स०-६० । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काव्य । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें 'दानविधि,' 'सर्पशकुन' तथा 'कर्मप्रकृति' आदिके भी कुछ पत्र है ।

र र र प्रन्थ न० १७५।

१४६ वर्द्धमानकाव्य-असग । पत्र स०-६ । पित्तः प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्यः।

# ग्रन्थ न० ५०९।

१४७ वर्द्धमानकाञ्य-असग । पत्र स०-१७ । पनित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-१३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण । ' ग्रन्थ न० ५४० ।

१४८ वर्धमानकाठ्य-असग । पत्र स०-१४ । पनित प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपनित-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण । ग्रन्थ न० ५४७ ।

१४६ वर्धमानकाव्य-असग। पत्र स०-१९। पनित प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपनित-८५। लिपि-कन्नह। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शृद्ध। दशा-जीर्ण तथा खण्डित। विशेष-इसमें उदयकीर्ति (?) कृत 'पुष्पाञ्जलिकाव्य' का भी एक पत्र है। ग्रन्थ न० ५५५।

१५० वर्धमानकाव्य-असग । पत्र स०-१८ । पित प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपित्त-१०९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें 'शाकटायनप्रित्रयासग्रह'के भी पाच पत्र है ।

# ग्रन्थ न ७९०।

१५१ वर्धमानकाञ्य-असग । पत्र स०-८ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काञ्य । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इममें अयकीर्ति [?] कृत सस्कृत 'पृष्पाञ्जलिमहाकाञ्य' का भी एक पत्र है ।

### ग्रन्थ न० ३३८।

१५२ विद्ग्धमुखमण्डन-धर्मदास । पत्र स०-२१। पिन्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिन्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० ५२५।

१५३' विद्ग्धमुखमण्डन-धर्मदास । पत्र स०-३३ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-४६ । लिपि-कन्नड । भापा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेप-इसमें 'द्रव्यसग्रह' तथा संस्कृत 'द्वादशानुप्रेक्षा' के कुछ पत्र भी है ।

ग्रन्थ न० २८१ ।

१५४ विषमपदपश्चिका- ' ' । पत्र स०-६। पिक्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-१५३। िर्ह्ण-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-यह महाकवि वीरनित्द कृत 'चन्द्रप्रभकाव्य' की टिप्पणी है इसमें कन्नड अर्थ भी है।

### ग्रन्थ न० १८४।

१४५ विषमपद्पद्धिकाः । पत्र स०-१९। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-७०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत तथा कन्नड। विषय-कान्य। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण। विशेष-यह महाकवि बीरनन्दि कृत 'चन्द्रप्रभकान्य' की टिप्पणी हैं।

# ग्रन्थ न० २८७ ।

\*१५६ शिशुपात्तवध-महाकवि माघ। पत्र स०-१०२। पिनत प्रतिपत्र-६। बक्षर प्रतिपिन्त-७८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३४९ ।

\*१५७ शिशुपालवध-महाकवि माघ । पत्र स०-८४ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-६२। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य।

# ग्रन्थ न० ६१९ ।

\*१४८ शिशुपालवध-महाकवि माघ। पत्र स०-६०। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण तथ खण्डित। ग्रन्थ न० ७९४।

\*१५६ शिशुपालवध टीका-मिल्लनाथ । पत्र स०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६८ । किपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें सुभाषितसबन्धी और भी कुछ पत्र है ।

ग्रन्थ न० ५५०।

\*१६० शृद्धारदीपिका-वेम भूपाल । पत्र स०-६ । पिकत प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिक्त-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-यह कवि अमरुक कृत 'श्रुगारशतक' से सगृहीत हैं ।

ग्रन्थ न० ३६७।

१६१ शृङ्कारसुधाव्धि—कवि मगरस । पत्र स०-७२ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काव्य । लेखनकाल- 🔀 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-जीर्णं ।



# विषय-नाटक

# ग्रन्थ न० ६७।

\*१ श्रिमिज्ञानशाकुन्तल-महाकवि कालिदास । पत्र स०-३२। पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नाटक । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३०१।

\*२ श्रभिज्ञानशाकुन्तल-महाकवि कालिदास । पत्र स०-४० । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-७९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सम्कृत । विषय-नाटक । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० ३०१ ।

\*३ नागानन्द • • • । पत्र स०-३७। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिनत-५२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-नाटक। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

# ग्रन्थ न० ३०१।

\*४ मालविकाग्निमित्र-महाकवि कालिदास । पत्र स०-३१ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय--नाटक । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३०१ ।

\*५ विक्रमोर्वेशीय-महाकवि कालिदास। पत्र स०-११। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-७९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-नाटक। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

# विषय-अलंकार आदि

# ग्रन्थ् न० ५६५।

१ श्रातङ्कारचिन्तामिया-अजितसेन । पत्र स०-७० । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ न० ३।

२ श्रतङ्कारसंग्रह्-अमृतानन्दी । पत्र स०-११ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'कियाकाण्डचूलिका' के भी कुछ पत्र है।

### ग्रन्थ न० ८६।

३ श्रत्बङ्कारसंग्रह-अमृतानन्दी । पत्र स०-३० । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-८७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण । अन्तिम वाक्य-श्रीमतु (?) पुरस्थितस्य चन्दरसनामधेयस्य पुत्रेण चन्दप्पनाथनामधेयेन लिखितस्य ••। विशेष-इसमें 'वृत्तरत्नाकर' आदि और भी कई ग्रन्थोके अपूर्ण पत्र है ।

# ग्रन्थ न० १४२।

४ श्रतङ्कारसंग्रह्-अमृतानन्द ।, पत्र स०-४१ । पित प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपित्त-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्थ न० ६०० ।

५ श्रत्वद्वारसंग्रह्—अमृतानन्दी । पत्र स०-४३ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थःनं० ६०४ ।

६ श्रातङ्कारसंग्रह्-अमृतानन्दी । पत्र स०-२६ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ६७४ ।

७ श्वातङ्कारसंग्रह्—अमृतानन्दी । पत्र स०-२ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें 'नाममाला' तथा 'वृत्तरत्नाकर' के भी कुंछ पत्र है ।

### ग्रन्थ न० ७२७।

द्र श्रत्तक्कारसमह—अमृतानन्दी । पत्र स०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय—अलकार । लेखनकाल- ४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-॑सामान्य । ग्रन्थ न० ७४२ ।

र श्रालङ्कारसंग्रह्-अमृतानन्दी । पत्र स०-१५ । पिन प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपन्ति-१४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य जुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें व्याकरण सम्बन्धी २७ पत्र भी है ।

### ग्रन्थ न० ८१२।

१० श्राताङ्कारसंग्रह्-अमृतानन्दी । पत्र स०-२६। पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ४१२ ।

\*११ काट्यप्रकाश-किव मम्मट । पत्रं स०-९३ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-५९ । लिवि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय अलकार । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ नं० ७४६।

\*१२ काव्यप्रकाश-कवि मम्मट । पत्र स०-३० । पक्ति प्रतिपत्र-१६ । अक्षुर प्रतिपक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-प्रमायी सवत्सर श्रावण कृष्णा प्रतिपदाके दिन नागमगल निवासी अच्यप्पके पुत्र तिम्मय्यने चौड-रसोपाध्यायके पुत्र समन्तमद्रके लिये इसे लिखा है। इसमें 'भाषामञ्जरी'के भी कुछ पत्र है। ग्रन्थ न० ५५६।

\*१३ काठ्यादरी-कवि दण्डी। पत्र स०-५५। पिवत प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिकत-७०। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल- 🔀 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें महोपाध्याय केशव मिश्र कृत सस्कृत टीका भी है।

# ग्रन्थ न० ६१५।

\*१४ काव्यादर्श-किव दण्डी । पत्र स०-१७ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-९० । लिपि-कन्नड । भाषा–सस्कृत । विषय–अलकार । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

# ग्रन्थ न० ५९२।

१५ काव्यानुशासन-आचार्य हेमचन्द्र । पत्र स०-१३६ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध ।-दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ११६।

\*१६ काव्यालोक-आनन्दवर्धन । पत्र स०-२९ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ न० ३३८।

\*१७ काट्यालंकार- · · · । पत्र स०-१५। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर, प्रतिपक्ति-६०। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ न० २१२। \*१८ कुवलयानन्द्-अप्पय दीक्षित । पत्र स०-५९ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल- ४। अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ४०६।

\* १६ कुवलयानन्द्-अप्पय दीक्षित । पत्र स०-३९ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१२३। लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–अलकार । लेखनकाल– 🔀 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम । ,ग्रन्थ न० २४४।

\*२० चन्द्रालोक-जयदेव । पत्र स०-११७ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । , विशेष-इसमें सस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ न्० २१७।

\*२१ प्रतापरुद्रीय-पण्डित विद्यानाथ । पत्र स०-१०३ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-८३ । लिपि-कन्नर्ड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलकार आदि । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० २७६।

\*२२ प्र<mark>तापरुद्रीय</mark>–पण्डित विद्यानाथ । पत्र स०–५३ । पक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपक्ति–१७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल- ४। पूर्ण तथा शुद्ध । दश्ा-सामान्य । विशेष-इसका अपर नाम 'प्रतापरुद्रयशोभूषण' है।

प्रन्य न० ३२८।

<sup>\*</sup>२३ प्रतापरुद्रीय-पण्डित विद्यानाथ । पत्र स०-९१ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय्र-अलकार । लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-एतम ।

# ग्रन्यान० ३३८।

\* २३ प्रतापरुद्रीय-पण्डित विद्यानाथ । पत्र स०-९१ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० ३५०।

\* २४ प्रतापरुद्रीय-पण्डित विद्यानाथ । पत्र स०-१०६ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ११६ ।

\* २५ लोकलोचनालङ्कार-अभिनव गुप्त । पत्र स०-५६ । पन्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपन्ति-१०२ । किपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रत्य न० ३३८ ।

२६ वाग्भटालङ्कार-किव वाग्भट । पत्र स०-२३ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्य न० ४९७ ।

२७ वाग्भटालङ्कार-कवि वाग्भट। पत्र स०-११। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-११८। लिपि-कन्नड। मापा-सस्कृत। विपय-अलंकार। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

# ग्रन्थ नं० ६००।

२८ चारभटालङ्कार-कवि वारभट । पत्र स०-९ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ८१२ ।

२६ वाग्भटालङ्कारिटप्पणी-वालचन्द्र । पत्र स०-९ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिकत-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रत्य न० ४०८ ।

३० श्रद्धारदीपिका-कोमटदेव भूपाल । पत्र स०-८२ । पक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नड । मापा-सस्कृत । विषय-अलकार । लेखनकारु- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।



# विपय-छन्दःशास्त्र

# ग्रन्थ म ५१४।

१ कान्यावलोकन-किव नागवर्मं । पत्र स०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षरं प्रतिपक्ति-१७५ । लिपि-कन्नड । माषा-कन्नड । विषय-छन्दं शास्त्र । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शृद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३४ ।

\*२ वृत्तरत्नाकर-केदार मट्ट । पत्र स०-१० । पन्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपन्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-पण्डिताचार्यं चारुकीर्तिके शिष्य विदुरे सातण्णके द्वारा लिखित ।

### ग्रन्थ नं० १३२।

\*३ वृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट । पत्र स०-३९ । पनित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें पण्डित गोविन्द भट्टके पुत्र पण्डित श्रीनायके द्वारा रिचत संस्कृत टीका भी है। ग्रन्य न० २१७।

\*४ वृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट । पत्र सं०-१९ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी हैं ।

# ग्रन्य न० २३५।

\*४ वृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट । पत्र स०-५ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भापा-सस्कृत । विषय-छन्द.शास्त्र । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० २८४।

\*६ वृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट । पत्र स०-६। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-८७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ५९६ ।

\*७ वृत्तरत्नाकर-केदार मट्ट। पत्र स०-२०। पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-४० । लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ३६९।

\*८ वृत्तरत्नाकर-केदार मट्ट । पत्र सं०-१२ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । लेखनकाल- ४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ न० ६९५।

\*ह बृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट। पत्र स०-६० । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कवि श्रीनाथ विरचित संस्कृत टीका भी है ।

### ग्रन्य न० ७०१।

\*१० वृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट । पत्र स०-९४ । पितत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपित्त-३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । लेखनकाल-शालि० शक १६८० । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-इसमें किव श्रीनाथ कृत संस्कृत टीका है। शालि० शक १६८० वहुघान्य सवत्सर मार्गशिर शुक्ला ५ मंगलवारके दिन लक्ष्मीसेनके शिष्य पाइवँ उपाच्यायने वेणूपुरस्य त्रिभुवनतिलक चैत्यालयमें इसे लिखा है।

### ग्रन्य न० ७२८।

\*११ द्वत्तरत्नाकर-केदार भट्ट। पत्र स०-२४। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिक्त-३४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-छन्द गास्त्र । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ न० ७५९ ।

\*१२ वृत्तरत्नाकर-केदार मट्ट। पत्र सं०-५। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-१०८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-छन्द गास्त्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दगा-उत्तम।

### ग्रन्थ न० ७७६।

\*१३ वृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट । पत्र सं०-२४ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । लेखनकाल-शालि० शक १६९३ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि॰ शक १६९३ खर संवत्सर भाद्रपद शुक्ला १० के दिन केसरीपुर-निवासी सरसिज् ने इसे लिखा है। i

### ग्रन्थ न० ७९५।

- \*१४ वृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट। पत्र स०-१५ । पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-३८। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । लेखनकाल- 🔀 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणं । ग्रन्थ न० २०९।
- \*१५ श्रुतवोध-महाकवि कालिदास । पत्र स०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । • ग्रन्थ न० २८४ ।
- \*१६ श्रुतबोध-महाकवि कालिदास । पत्र स०-५ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० २९२ ।
- \*१७ श्रृतवोघ-महाकवि कालिदास। पत्र स०-३। पन्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-६७। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-छन्द शास्त्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

# विषय-नीति तथा सुभाषित

### ग्रन्थ न० १२८।

- १ नीतिप्रकाशन- : । पत्र स०-१०। पिनत प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपिनत-६०। लिपिकन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।
  विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है । इसका प्रारम्भिक पद्य इस प्रकार है—
  नत्वा जिमेश्वर वीर वक्ष्ये नीतिप्रकाशनम् । शिष्याचार्योक्तिसम्बन्ध प्रश्नोत्तरविधानकम् ॥
  प्रन्य न० ५८० ।
- २ नीसिपकाशक-\*\*\*\*\* । पत्र स०-६। पन्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपन्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-नीति। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें प्राकृत 'श्रुतभक्ति' की कन्नड टीका भी है।
  - ग्रन्य न० १४९।
- ३ नीतिरसायनशतक-शुमचन्द्र । पत्र स०-१० । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-६६ । लिपि-कन्नर । भाषा-कन्नर । विषय-नीति । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० २७७ ।
- ः ४ नीतिरसायन- । पत्र स०-१६। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-४९। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-नीति। लेखनकाल- ×। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।
  - ग्रन्थ न० १६ ।
- ्र नीतिवाक्यासृत—आचार्य सोमदेव । पत्र स०-४६ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१०० । लिपि-क्षंड । भाषा-सस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम । विषय-इसमें संस्कृत टीका घी है ।
  - ग्रन्थ न० ४०।
- ६ नीतिवाक्पामृत-आचार्यं सोमदेव। पत्र स०-३७। पन्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-९४। लिपि-कन्नहः। भाषा-सस्कृतः। विषय-नीति । लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा शुद्धः। दशा-साधारणः। विशेष-इसमें कन्नहः टीका है।

### ग्रन्थ नं ० छ ।

- ७ नीतिवानग्रामृत-आचार्य सोमदेव । पत्र सं०-८९ । पंक्ति प्रतिप्त्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२९ ।
   लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।
   विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है । टीकाकार सेघचन्द्र त्रैविचदेवके शिष्य कवि नेमिनाय हैं ।
  - प्रत्य नं० ३४५।
- ८ नीतिवाक्त्यामृत-आचार्य सोमदेव। पत्र सं०-११४। प्रंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-३३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-नीति। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा शुद्धी दशा-सामान्य। ग्रन्थ नं०३९५।
- ६ नीतिवाक्यामृत-आचार्य सोमदेव । पत्र सं०-८० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्रत्य नं० ६४४ ।
- १० नीतिवाक्यामृत्-आचार्य सोमदेव । पत्र सं०--१७। पंक्ति प्रतिपत्र--१०। अक्षर प्रतिपंत्रित-७०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

# ग्रन्थ नं० ६७६।

- ११ नीतिवाक्यामृत-आचार्यं सोमदेव । पत्र सं०-३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल- 🗴 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० ६९३ ।
- १२ नीतिवाक्यासृत-आचार्य सोमदेव । पत्र सं०-१६० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिप्-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल- × । पूर्णः तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० ६६५ ।
- १३ नीतिसंग्रह- । पत्र सं०-८४। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-४९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत तथा कन्नड। विषय-नीति। लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ नं० ३५४।
- १४ पुराणश्लोकसंग्रह- । पत्र सं०-४। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-४२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-नीति। लेखनकाल- ×। अपूर्णे तथा सामान्य शुद्धः। दशा-सामान्यः। विशेष-इसमें महाभारत आदिके कुछ नीति क्लोक संग्रह किये गये हैं।
- प्रन्य नं २५३ । १५ राजनीतिः ः ः ः । पत्र सं ०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्ष्र प्रतिपंक्ति-३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-नीति । लेखनकालः × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्धः । दशा-उत्तमः । ः ग्रन्थ नं ० १८८ ।
- \*१६ शतकद्वय-[ नीति तथा शृङ्कार ]-किन भर्तृहरि । पत्र सं०-४२ । पंत्रित प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंत्रित-५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ नं ० ३२८।

- १७ सुमाणितसंग्रह- । पत्र सं०-८ । पत्रित प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपतिन-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-सुभाषित । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० ४७९ ।
- १८ सुभाषितसंग्रहः । पत्र संक्निश्च प्रतिपत्र प्रतिपत्रित्र । अक्षर प्रतिपंक्ति ४०। किपि कन्न । भाषा संस्कृत तथा कन्न । विषय सुभाषित । लेखनकाल 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ६१७।

**१६ सुभावितसंग्रह**-'''' । पत्र स०-५३। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपक्ति-६५। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । त्रिषय-सुभाषित । लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण। विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है।

### ग्रन्थ न० ८७५।

२० सुभाषितसंग्रह- । पत्र स०-४२। पनित प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपनित-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत तथा कन्नड। विषय-सुभाषित। लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष-इसमें भजन, सरस्वती भजन आदिके भी कुछ पत्र है।

### ग्रन्थ न० १८२।

२१ सुभाषितसंग्रहःःःः । पत्र स०-४१। पिनतः प्रतिपत्र-९। अक्षरं प्रतिपिनत-६७। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृतं तथा कन्नड। विषय-सुभाषित। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीणं।

# ग्रन्थ न० १६९।

२२ हरद्नीति-सिंहराज । पत्र स०-२४ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंनित-३७ । लिपि-कन्नह । भाषा-कन्नह । विषय-नीति । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य जुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० २३६।

२३ हरदनीति-सिंहराज । पत्र स०-१५ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-नीति । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ६४५।

२४ हरद्नीति-सिंहराज । पत्र स०-१०ई । पिक्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-४२ । लिपि-कन्नह । भाषा-कन्नह । विषय-नीति । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-प्रभव सवत्सर, माद्रपद शुक्ला १२ के दिन बङ्गवाहिस्य शान्तिनाथ-जिनालयमें मृित गुणसागरने इसे लिखा है।



# विषय-पुराण

### ग्रन्थ न० ५२८।

१ अजितनाथपुराण्-महाकवि रन्न । पत्र स०-३०। पित्र प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपित्र-४७। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण्। लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ८२८ ।

२ श्रानन्तनाथपुराणा-महाक्वि, जञ्ग । पत्र स०-११९ । पाक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-शालि । क्षिपे । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसकी रचना शालि०शक११५२ विक्रति सवत्सर चैत्र शुक्ला १०के दिन हुई है। एव शालि० शक१४५० बहुधान्य सवत्सर श्रावण शुक्ला १० रिववारके दिन होललिक निवासी नागेन्द्रके पुत्र पायण्णने इसे लिखा है।

### ग्रन्थ न० ७४।

३ स्त्रादिपुरागा-महाकवि पम्प । पत्र स०-९६ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१०४ । लिपि-कन्नष्ठ । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न०११८ ।

४ झादिपुराग्म-महाकवि पम्प । पत्र स०-१२२ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिन्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल- ४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह ग्रन्थ शालि०शक ८६३ में रचा गया ।

# ग्रन्थ नं० ४१०।

प्र द्यादिपुराण्-महाकवि पम्प । पत्र स०-१०९ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनित-१३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ४४६ ।

६ स्त्रादिपुराग्-महाकवि पम्प । पत्र स०-१०४ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-११० । लिपि-कन्नरः । भाषा-कन्नरः । विषय-पुराण । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ५५९ ।

७ स्रादिपुराग्ण-महाकवि पम्प । पत्र स०-८८ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।

# ग्रन्थ न० ५९२ ।

द्र श्रादिपुराग्य-महाकवि पम्प । पत्र स०-८० । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण । ग्रन्थ न० ६०२ ।

ह श्रादिपुराग्य-महाकवि पम्प । पत्र स०-१६। पिक्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-४०। लिपि-कन्नड। माषा-कन्नड। विषय-पुराण। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीणै। विशेष-इसमें 'सज्जनिचित्तवल्लभ' तथा 'अकलञ्काप्टक' के भी कुछ अपूर्ण पत्र है।

### ग्रन्थ न • ६१४।

१० **आदिपुराग्**—महाकवि पम्प । पत्र स०-१२१ । पक्ष्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ६९० ।

११ आदिपुराण्-महाकवि पम्प । पत्र स०-१३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-शालि० शक १५०० । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-शालि० शक १५०० ईश्वर सवत्सर ज्येष्ठ कृष्णा १४ शुक्रवारके दिन ह्ञावरिनवासी जय-कीर्तिने संगीत-पुरस्य आदिनाय तथा चन्द्रप्रममन्दिरके मध्यस्थित मानस्तभके निकट इसे लिखा है।

# ग्रन्थ न० ७२० ।

१२ म्यादिपुराग्य-महाकवि पम्प । पत्र स०-२४। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-१९१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण । ग्रन्थ नं० ७३६ ।

१३ श्रादिपुराग्-महाकि पम्प । पत्र सं०-५८ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

### 'ग्रन्थ नै० ६४।

१४ श्रादिपुराण-आचार्यं जिनसेन । पत्र स०-२४७ । पिनत प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिनत-६१ । लिपि-कन्नष्ट । भाषा-संस्कृत । निषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-जीर्णं ।

# ग्रन्थ न० २६० ।

१५ आदिपुराण-आचार्यं जिनसेन । पत्र स०-१२५ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अञ्चर प्रतिपिक्त-७५ । लिप-कन्नष्ठ । माषा-स्रुक्त । विषय-पुराण । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० २७८।

१६ श्रादिपुराग्-आचार्यं जिनसेन । पत्र स०-२८९ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-२२४ । किपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखमकाल- × । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ४४२।

१७ श्रादिपुराग्य-आचार्यं जिनसेन । पत्र स०-१७७ । पिन्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिन्त-१६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि०शक १७३० फाल्गुन प्रतिपदाके दिन धर्मस्थलके स्वामी कुमारय्य हेग्डेकी उनके गुरु श्री चारकीर्तिने इसे दिया है।

# ग्रन्थ न० ४४७ ।

१८ स्नादिपुराग्-आचार्यं जिनसेन । पत्र स०-२३४ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-१५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ न० ४४९।

१९ द्यादिपुराग्-आचार्य जिनसेन । पत्र स०-२३७ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-२१७ । क्षिप-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुरांण । लेखनकाल- × । पूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णे । ग्रन्थ न० ४९६ ।

२० द्यादिपुराग्-आचार्यं जिनसेन । पत्र स०-३० । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्णे । ग्रन्थ न० ५०५ ।

२१ द्यादिपुराग्-आचार्य जिनसेन । पत्र स०-३७ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिन्त-७५ । छिपि-कन्नर । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

ग्रन्थ न० ५०९।

# २२ द्यादिपुराग्-आचार्यं जिनसेन । पत्र स०-१५८ । पिनत प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिनत-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विपय-पुराण । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य गुद्ध । दशा-जीर्णं ।

ग्रन्थ न० ५८३।

२३ स्त्रादिपुराग्-आचार्यं जिनसेन । पत्र स०-१३६ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-११० । िलिप-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण । ग्रन्थ न० ५८४।

२४ श्रादिपुराग्।-आचार्य जिनसेन । पत्र स०-१७५ । पिनत प्रतिणत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न०६८१ ।

२५ आदिपुराग्य-वाचार्य जिनसेन । पत्र स०-२०४। पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ ने० ७४७ ।

२६ श्रादिपुराग्-आचार्य जिनसेन । पत्र स०-१२६ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । 'लिप-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । वशा-अति जीर्ण । यिशेप-इसमें 'गोम्मटसार' 'सज्जनचित्तवल्लम' तथा 'आचारसार' आदि के भी कुछ पत्र हैं।

## ग्रन्थ नं० ४१५।

२७ स्त्रादिपुराग् टिप्पग्गी-ललितकीर्ति । पत्र स०-९७ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ५६१।

२८ द्यादिपुराण् टिप्पण्णी-ललितकीर्ति । पत्र स०-१४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-अति जोर्ण ।

## ग्रन्थ न०६२३।

२६ स्त्रादिपुराण टिप्पणी-लिलतकीर्ति । पत्र स०-१६२ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिन्त-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें न० ६६ का पत्र नहीं हैं ।

#### ग्रन्थ न० ४४०।

३० दत्तरपुराग् टिप्पण्री-लिलतकीति । पत्र स०-७२ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-१४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्य न० ४६०।

३१ उत्तरपुराण टिप्पणी-लिलतकोर्ति । पत्र सं०-७२ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-१४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ५३४।

#### ग्रन्थ नं० ३०।

३३ उत्तर-पुराण-क्षाचार्यं गुणभद्र । पत्र स०-१४० । पित्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपित्त-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसके कुछ पत्र खण्डित है ।

## ग्रन्थ नं० ६५।

३४ उत्तरपुराण-आचार्यं गुणभद्र । पत्र स०-१३५ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० ९२।

#### ग्रन्थ नं० १२७।

३६ उत्तरपुराण्-आचार्य गृणभद्र । पत्र सं०-९९ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-१०९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० २८५।

३७ उत्तरपुराग्य-आचार्य गुणभद्र । पत्र स०-१३१ । पिनत प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिन्त-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- × । शालि० शक १४७० । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-शालि॰ शक १४७० कीलक सवत्सर श्रावण शुक्ला १३ सौम्यवार उत्तरानक्षत्र में पण्डित पद्मने इसे लिखा है। मुनि महेन्द्रकीर्तिके शिष्य चन्द्रकीर्तिके लिये कारकल-निवासी मैरव अरस की पटरानी वर्द्धमानक ने इसे उन्हे शास्त्रदान किया है।

#### ग्रन्थ न० ३८७ ।

३८ उत्तरपुराग्म-आचार्यं गुणभद्र । पत्र स०-१३६ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-बट्टगक पुराधी व्यक्ते पुत्र चिविकदप्परसने मुनि ज्ञानचन्द्रके लिये इसे लिखवाया है।

#### ग्रन्थ न० ४२०।

३९ उत्तरपुराग्ण-आचार्यं गुणभद्र । पत्र स०-६६ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-१३० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं ।

## ग्रन्थ न० ४३४।

४० उत्तरपुराग्-आचार्य गुणभद्र । पत्र स०-१४३ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिन्त-१५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० ४३८ ।

४१ उत्तरपुराग्-आचार्यं गुणभद्र । पत्र स०-११३ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१७० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-शालि॰शक ८२४ दुर्दुभि सवत्सर कार्तिक क्रुष्णा ५ बुधवारके दिन यह ग्रन्थ रचा गया ।

## ग्रन्थ न० ५४२ ।

४२ उत्तरपुराग्।—आचार्यं गुणभद्र । पत्र स०-१३५ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपैनित-१३० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ५८५ ।

४३ डत्तरपुराग्-आचार्य गुणमद्र । पत्र स०-४२ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें 'आदिपुराण' के भी कुछ पत्र हैं ।

#### ग्रन्थ न० ६६४।

88 उत्तरपुराग्-आचार्य गुणभद्र । पत्र स०-२५७ । पिनत प्रतिपत्र-९ । कक्षर प्रतिपिनत-६९ । लिप-कन्नड । भाषा-सम्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-शालि०शक १७३४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-डत्तम । विशेष-शालि ०शक १७३४ श्रीमुख सवत्सर जेष्ठ शुक्ला ५ के दिन वेणुपुर (मूडविद्री) निवासी विकामसेट्टिके पुत्र चन्दय्योपाच्यायने स्थानीय त्रिभुवनितलकचूडामणि (श्रीचन्द्रप्रभ ) चैत्यालय में इसे लिखा है ।

#### ग्रन्थ न० २५८।

४५ कन्नडभारत-वेदव्यास । पत्र म०-३५०। पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ८४।

४६ चन्द्रप्रभपुराण्-अग्गलदेव । पत्र सं०-१४ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ नं० १८९ ।

४७ चन्द्रप्रमपुराग्-अग्गलदेव । पत्र सं०-९१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह अग्गलदेव आचार्यं श्रुतकीर्तिके शिष्य हैं ।

#### ग्रन्थ नं० ४२८ ।

४८ चन्द्रप्रमपुराग्। अग्गलदेव । पत्र सं०-१०७। पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ नं ० ५३५।

४६ चन्द्रप्रभपुराण्-अग्गलदेव । पत्र सं०-१३। पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड 'रामायण' के भी १० पत्र हैं ।

## ग्रन्थ नं ५३५।

्र चन्द्रप्रभपुराण्-अग्गलदेव । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा अशुद्ध । दशा-अति जीर्णं ।

## ग्रन्थ नं० ७६७ ।

५१ चतुर्विशतितीर्थंकरपुरागा-मुनि शान्तिकीर्ति । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भापा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शृद्ध । दशा-उत्तम-। विशेष-शालि० शक १६४६ में यह ग्रन्थ रचा गया है । इसमें २४ तीर्थंकरोंकी भवावली तथा पंचकल्याणोंका संक्षिप्त वर्णन दिया गया है ।

## ग्रन्थ नं० ६४२।

५२ त्रिषष्टिलच्चाण्महापुराण्-आचार्य मिल्लिषेण । पत्र सं०-५९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि--कन्नड । भापा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य मुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'अमरकोश' के भी कुछ पत्र हैं।

## ग्रन्थ नं० ५९९।

५३ त्रिपष्टिलाच्राणमहापुराण-चामुण्डराय । पत्र सं०-५८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर पितपंक्ति-९८ । किपि-कन्नड । माषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ नं० ७२।

५४ त्रिपष्टिलत्तर्ग-महापुराग्य-चामुण्ड-राय । पत्र सं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ नं० १०२ ।

४५ धर्मनाथपुराग्-यति वाहुबली। पत्र सं०-१९७। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-८४। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-पुराण। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष:-यह ग्रन्थ शालि॰ शक १२६४ (चतुष्पष्ठद्वयैकांक) में रचा गया है। गुम्मट उपाध्यायके पौत्र आदि उपाध्यायके पुत्र पद्मनाभने इसे लिखा है।

## ग्रन्थ नं० ७८७।

५६ धर्मनाथपुराग-यति बाहुवली । पत्र सं०-१२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-शालि०शक १२७४ नन्दन सवत्सर चैत्र श्रुवला ८ सोमवारके दिन यह ग्रन्थ रचा गया है। ग्रन्थ न० ५५।

५७ नेमिजिनेशसङ्गति ( हरिवशपुराण )-मगरस । पत्र स०-२६४।पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रति-पक्ति-१०४ । विषय-पुराण । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ५०४।

१८ नेमिजिनेशसङ्गति-मगरस । पत्र स०-८ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–पुराण । लेखनकाल– 🗙 । अपूर्णं तथा सुगमान्य शुद्ध । दशा–जीर्णं ।

## ग्रन्थ न० ७८७ ।

४६ नेमिजिनेशसङ्गति–मगरस । पत्र स०–२२ । पक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपक्ति–७५ । लिपि– कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–पुराण । लेखनकाल– × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें 'अमरकोश' 'तीर्थंकरजयमाला' (कन्नड ) आदि के भी कुछ पत्र है ।'

## ग्रन्थ न० ८२९।

६० नेमिजिनेसद्गति-मगरस । पत्र स०-१०६ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१०३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । वियय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दसा-उत्तम ।

विशेष–इसका प्रारम्भ केरेवासे श्रीवर्घमान चैत्यालयमें अलदगढि निवासी चुरूसेट्टिके पुत्र विम्मयने आङ्गीरस सवत्सर ज्येष्ठ कृष्णा ४ को किया था।

#### ग्रन्थ नं० १०३।

६१ नेमिनाथपुराण-कवि कर्णपार्य । पत्र स०-१८० । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल- × । शालि०शक-१३५३ । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-यह कवि कर्णपार्य चारित्रचक्रवर्ती मुनि कल्याणकीर्तिके शिष्य है।

## ग्रन्थ न० ६०२।

। पत्र स०-२१। पन्ति प्रतिपत्र-७। अक्षअप्रतिपन्ति-८६। ६२ नेमिनाथपुराग्य-िपि-कन्नड। भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष–इसमें व्याकरणसवन्धी कुछ पत्र सम्मिलित है।

# ग्रन्थन० ६१६।

६३ नेमिनाथपुराण्-कर्णंपार्य । पत्र स०-१२२ । पनित् प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपन्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–पुराण । लेखनकाल– 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अति जीर्ण । ग्रन्थ न० ७३५।

६४ नेमिनाथपुराण-कर्णपार्य। पत्र स०-७५। पिक्त प्रतिपत्र ८। अक्षर प्रतिपंक्ति-८८। लिपि-कन्नह । माषा-कन्नह । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

# ग्रन्थ न० ४३५ ।

६५ पद्मपुराण-आचार्य रविषेण । पत्र स०-६२ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१९० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-शालि०शक १३३१ विरोधि सवत्सर पुष्य शुक्ला प्रतिपदा । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । द्रशा-उत्तम ।

विशेष-ब्रह्मण्णने कल्याणपुर निवासी वरिष सेट्टिकी धर्मपत्नी सुब्बाविकाके लिये इसे लिखा है।

# ग्रन्थ न० ८०२।

६६ पद्मपुराग्।—आचार्य रविषेण । पत्र स०-३८ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-आंत जीर्ण तथा स्रण्डित ।

## ग्रन्थ न्० ७२५।

- ६७ पाग्रह्मवपुराग्य-श्री वादिचन्द्र । पत्र स०-१६० । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-४८ । लिपि-कञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० २६७ ।
- ६८ पार्श्वनाथपुरागा-कवि पार्क्पण्डित । पत्र स०-८२ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विपय-पुराण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

  ग्रन्थ न० २६२ ।
- ६६ पुष्पद्न्तपुराग् महाकवि गुंणवर्म । पत्र स० १२१ । पक्ति प्रतिपत्र ८ । अक्षर प्रतिपक्ति ७२ । लिपि कन्नड । विषय पुराण । लेखनकाल × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा सामान्य । ग्रन्थ नं ० ४९४ ।
- ७० पुरुपद्नतपुराण-महाकवि गुणवर्म । पत्र स०-६० । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-१३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ६५५
- ७१ पुष्पदन्तपुराग्। महंकिव गुणवर्म । पत्र स०-१२९ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-८२ । लिपि-कन्नड । माषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रत्य न० २९५ ।
- ७२ वर्द्धमानपुराग्य-किव वाणीवल्लभ । पत्र स०-१९९। पिनत प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपिनत-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-१३५१ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशय-शालि०शक १३५१ कीलक सवत्सर चेत्र शुक्ला ७ के दिन यह ग्रन्थ लिखा गया है । ग्रन्थ न० ५६८ ।
- ७३ वर्धमानपुराण-किव वाणीवल्लभ । पत्र स०-८० । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ६१८ ।
- ७४ वर्धमानपुरागा-किव वाणीवल्लम । पत्र सं०-१८५ । पिक्त प्रतिपत्र-३ । अक्षर प्रतिपिक्त-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराणं । लेखनकाल-× । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्धं । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें आदिका एक पत्र नहीं हैं ।

#### ग्रन्थ न० ८९२।

- ७५ वर्षमानपुरागा-किव वाणीवल्लभ । पत्र स०-३२ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।
- ७६ शान्तीश्वरपुराण्-किव कमलभव। पत्र स०-१३४। पिवत प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिक्त-१२०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-पुराण। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-अति जीर्ण। प्रन्थं न०६६१।
- ७७ शैवपुराग्- । पत्र स०-२५ । पैक्ति प्रतिपत्र-२ । अक्षर प्रपिपेक्ति-३९ । िलिप-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा- जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका है । एव 'द्रव्यसग्रह 'व्रतस्वरूपी, आदि के भी कुछ पत्र है ।

# ग्रन्थ नं० २४।

७८ श्रीपुराण्-आचार्य हस्तिमिल्ल । पत्र सं०-२१ । पंतित प्रतिप्त्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-१४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

अन्तिम पद्य-

श्रीपुराणसमाम्नायमाम्नात हस्तिमल्लिना ।

तरण्ड सर्वशास्त्राव्वेरखण्ड धारयन्त्वमुम् ।

विशेष-इसमें २-४ पत्र खण्डित है।

ग्रन्थ न० ५३।

**७६ श्रीपुराण्-आ**चार्य हस्तिमल्लि । पत्र म०-२० । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ६५ ।

८० श्रीपुराण-अाचार्यं हस्तिमल्लि । पत्र स०-१९ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-१७० । लिपि-कन्नड । भाषा-सम्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्य न० १२१ ।

**८१ श्रीपुराग्य**-आचार्यं हस्तिमल्लि । पत्र स०-१८ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं । विशेष-इसमें 'गोम्मटसारके' तथा 'पद्मनित्वपञ्चविक्षति' के भी कुछ पत्र है ।

ग्रन्थ न० १२७ ।

८२ श्रीपुराग्य-भाचार्यं हस्तिमल्लि । पत्र स०-१८ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ४९३ ।

८३ श्रीपुराग्य-आचार्य हस्तिमल्लि। पत्र स०-९६। पनित प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपन्ति-६८। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ५२३।

८४ श्रीपुराण-आचार्य हस्तिमल्लि । पत्र स०-११ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ६४० ।

८५ श्रीपुराण्-आचार्यं हस्तिमिल्लः। पत्र स०-४०। पिनतः प्रतिपत्र-५। अक्षरः प्रतिपिनत-३०। लिपि-कन्नष्टः। भाषा-संस्कृतः। विषय-पुराणः। लेखर्नकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्धः। दशा-अति जीर्णः। ग्रन्थः न०५९२।

८६ हरिवशपुराग्य-आचार्यं जिनसेन । पत्र स०-४४ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-८९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणें ।

# विषय-चरित्र

ग्रन्थ न० १७६।

१ श्रानन्तज्ञतचरित-कवि आदियपा पत्र स०-९ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेप-होगिनूरुके राजा लरक्खभैरवके वास्ते विप्रकुलोत्तम आदियपने इसकी रचना की है ।

ग्रन्थ न० ३००।

२ श्राह्माचरित- · · · · । पत्र स०-१०। पंनित प्रतिपत्र-१३। अक्षर प्रतिपिक्त-११४। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ३८९।

३ स्त्रादिश्वरजन्माभिषेक चरित-विजयवर्णी । पत्र सं०-१०६ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दणा-सामान्य । विशेष-इसमें 'व्रतस्वरूप' के भी कुछ पत्र है ।

#### ग्रन्थ न० १५०।

श्र श्राञ्जनाचिरित ::::: । पत्र स०-१२३ । पिवत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिवत-५९ । िलिप-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चिरित्र । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३७१ ।

्र् कामदेवचरित-'' ''' । पत्र स०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्ति-४० । लिपि-कन्नड । माषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-कन्नडमें इसका नाम 'कामनतोरवि' है ।

## ंग्रन्थ न० ७०४।

\*६ किरातार्जुनचरित- ' ""। पत्र म०-२९। पिक्त प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपिक्त-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-तेलुगु। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण। ग्रन्थ न०१३०।

\* ७ कृष्ण्चिरत- : : : : । पत्र स०-७६। पिन्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिनत-९७। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न०२७२।

द्र गोसटेश्वरचरित-कवि वाहुवली। पत्र स०-३४। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपवित-६९। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा गुद्ध। दशा-सामान्य।

#### ग्रन्थ न० ३२५।

६ चन्द्रप्रभचरित-किव दोहुय्य । पत्र स०-१० । पित्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंतित-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ४६७।

१० चन्द्रप्रभचरित-किव ब्रह्म । पत्र स०-१०० । पिक्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिक्त-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसके रचिता पिक्नमदुगँके स्वामी देवरायके पुश किव ब्रह्म है ।

#### ग्रन्थ न० २३२ ।

११ जिनचरित- · · · · · । पत्र स०-१२ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-७४ । िलिप-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-प्रतिमें इसका नाम 'जिनान्तचरित' लिखा है। इसमें तीयँकरोके लाञ्छन, यक्ष-यक्षी, मुक्तिस्थान आदिका सक्षिप्त वर्णन है।

### ग्रन्थ न० २९२।

- १२ जिनचरित-''''' । पत्र स०-१२। पिक्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-७७। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ८५१।
- १३ जिनद्त्तचरित-किन पद्मनाम । पत्र स०-२६ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-४५ । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । निषय-चरित्र । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसका अपर नाम 'पद्मावतीमाहात्म्य' है। इसमे 'तर्कसग्रह, 'कल्याणमन्दिरस्तोत्र' तथा तत्त्वार्थसूत्र' आदि के भी कुछ पत्र है।

#### ग्रन्थ न० ८५५।

१४ जिनदत्तचरित-कवि पद्मनाभ । पत्र स०-१११ । पिक्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-रक्ताक्षि सवत्सर, आषाढ शुक्ला प्रतिपदाके दिन यह ग्रन्थ लिखा गया है ।

#### ग्रन्न्य न० ८५७।

१५ जिनद्त्तचरित-किव पद्मनाभ । पत्र स०-४६ । पिन्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिन्त-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रन्य न०६४१ ।

े १६ जीवन्घरचिरत-किव ब्रह्मसूरि । पत्र स०-१०। पिक्त प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिक्त-५६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न०१७६।

१७ जीवन्धर्षट्पद्-िकाव भास्कर । पत्र स०-६४। पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-९५। लिपि-कन्नड । भापा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह ग्रन्थ वसवणानके पुत्र, जिनमक्त कवि मास्करके द्वारा पेनुगोण्डेके श्री शान्तिनाथ चैत्या-लयमें रचा गया। रचनाकाल शालि० शक १३४५ क्रोघि सवत्सर फाल्गुन शुक्ला १० रविवार है।

#### ग्रन्थ न० २५६।

१८ जीवन्धरपट्पदि-कवि भास्कर । पत्र स०-८२ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-शालि० शक १३४५ क्रोघि सवत्सर फाल्गुन शुक्ला १० शिनवारके दिन पेनुगोण्डे शान्तिनाथ चैत्यालयमें कवि भास्करने इसकी रचना की हैं।

#### ग्रन्य न० ४२५।

१६ जीवनधर्षट्पिट-किव भास्कर। पत्र म०-५२। पित्तप्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्ति-९०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-'पटपिट' कन्नड छन्द का एक भेद है। शालि०शक १३४५ कोघि सवत्सर फाल्गुन शुक्ला १० सोमबारके दिन मेरिपनगृहिस्य शान्तिनाथ मन्दिरमें यह ग्रन्थ रचा गया है।

#### ग्रन्थ न० ६९०।

२० जीवनधरषट्पद्-किव मास्कर । पत्र स०-३८ ) पिक्त प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपिक्त-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ७९७ ।

२१ जोवन्धरपट्पिद्-किव भास्कर। पत्र स०-२०। पिनत प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपन्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दगा-जीर्ण तथा खण्डित। विशेष-इसमें 'सुकुमारचरित' तथा 'मोक्षप्राभृत'के भी कुछ पत्र है।

#### ग्रन्थ न० ८३१।

२२ जीवंधरषट्पिट-किव भास्कर। पत्र स०-१५२। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-४०। लिपि-कन्नद्ध। भाषा-कन्नद्ध। विषय-चरित्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ न०८८४।

२३ जीवन्धरषट्पदि-कवि भास्कर। पत्र स०-१८। पक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपक्ति-४३। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेप-शालि शक १३४५ कोधि सवत्सर फाल्गुन शुक्ला १० रविवारके दिन पेनुगोण्डे पुरस्य शान्ति-नाथ चैत्यालयमें यह ग्रन्थ रचा गया है । इसमें व्याकरण तथा स्तोत्र सवन्धी और भी कुछ पत्र है ।

#### ग्रन्थ न० १४५।

२४ ज्ञानमास्करचरित्र-नेमण्ण। पत्र स०-६। पितन प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिति-७४। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

#### ग्रन्थ न० ८२०।

२५ **ज्ञानभास्करचरित्र**-नेमण्ण। पत्र स०-१५। पितत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-२१। लिपि-कन्नड। माषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

## ग्रन्थ न० १७५।

२६ ज्ञानचन्द्रचरित-पायण्ण वर्णी । पत्र स०-२२ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ८४३।

२७ ज्ञानचन्द्रचरित-पायण्ण वर्णी। पत्र स०-११। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-४८। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल- ×। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें सिर्फ ६ वाँ आश्वास है।

#### ग्रन्थ न० ८९२।

२८ ज्ञानचन्द्रचरित-पायण्ण वर्णी । पत्र सं०-९ । पित्र प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसका अपरनाम 'ज्ञानचन्द्रचरितपुराण' है ।

## ग्रन्थ न० ४२५।

२६ ज्ञानचन्द्राभ्युद्य-किव कल्याणकीति । पत्र स०-५१।पिक्त प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिक्त-९४। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-शालि० शक १६६२ सिद्धार्थि सवत्सर ज्येष्ठ शुक्ला ५ रविवारके दिन यह ग्रन्थ रचा गया है ।

## ग्रन्थ न० १३०।

\* ३० तुलसीचरित- '। पत्र स०-७। पिनत प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिन्त-९८। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

#### ग्रन्थ नं० ३९८।

३१ तीर्थंकरचरित- । पत्र स०-४। पिक्त प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिक्त-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमे २४ तीर्थंकरोके उत्सेघ, आयु एव मुक्तिस्थान आदिका सक्षिप्त वर्णन दिया गया है।

#### ग्रन्थ न० ३५४।

३२ तीर्थंकरवर्णन- । पत्र स०-४। पिवत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-४५। लिपिकन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।
विशेष-इसमे २४ तीर्थंकरोके उत्सेध, आयु आदिका वर्णन दिया गया है।

#### ग्रन्थ न० १६१।

३३ त्रिपुरदह्नचरित-किव शिशुमायण । पत्र स०-१८ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । शालि०शक १४५० । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेप-यह ग्रन्थ शालि० शक १४५० नल सवत्सर श्रावण कृष्णा चन्द्रवारके दिन लिखा गया है ।

## ग्रन्थ न० ३९८।

३४ त्रिपुरदह्नचरित-किव शिशुमायण । पत्र स०-१० । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-८२ । लिपि-कन्नह । भाषा-कन्नह । विषय-चरित । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ नं० ८४३।

\*३५ त्रिपुरदह्नचरित-किव शिशुमायण। पत्र स०-५२। पन्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपन्ति-४७। लिपि-कन्नड। मापा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। अपूर्णे तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। प्रत्य न० ३१२।

े ३६ नागकुमारचरित-आचार्य मिल्लपेण । पत्र स०-३९ । पनित प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिनत-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ३८६।

३७ नागकुमारचिति-आचार्यं मिल्लिपेण । पत्र स०-३७ । पिन्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिन्त-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-चिरत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रारम्भिक पद्य-श्रीनेमिजिनमानम्य मर्वसत्त्वहितप्रदम् । वक्ष्ये नागकुमारस्य चिरतं दुरितापहम् ॥१॥

## ग्रन्यं न० ४८२ ।

३८ नागकुमारचरित-आचार्यं मल्लिपेण । पत्र स०-४५ । पनित प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सम्कृत । निषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्य न० ४८४ ।

३६ नागकुमारचरित-आचार्य मिल्लपेण । पत्र स०-२०। पिक्त प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिक्त-४८। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ५०८।

४० नागकुमारचरित-आचार्य मिल्लपेण । पत्र स०-१४। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-८६। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणें।

#### ग्रन्थ न० ५२१।

४१ नागकुमारचिति-आचार्यं मिल्लपेण । पत्र स०-२१ । पिनत प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिनत-४०। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं ।

## ग्रन्य न० ५२३।

४२ नागकुमारचित-आचार्य मिल्लपेण । पत्र स०-८ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-१२८। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशां-सामान्य । ग्रन्थ न० ५९५ ।

४३ नागकुमारचरित-आचार्य मिल्लिपेण । पत्र स०-५० । पिन्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-३२ । विश्वि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ६२० ।

४४ नागकुमारचित-आचार्य मिल्लपेण । पत्र स०-३८ । पित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-चिरत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य 'शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें वादीभसिंहमूरि कृत 'क्षत्रचूडामणि' के भी कुछ पत्र सिम्मिलत है ।

#### ग्रन्थ न० ७३२।

४५ नागकुमारचिरत-आचार्य मल्लिषेण। पत्र स०-१८। पनित प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-६४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण। ग्रन्थ न० ७३८।

४६ नागकुमारचित-आचार्यं मल्लिपेण । पत्र स०-१४ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-४२ । छिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । छेखनकाल- 🗙 । अपूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ नं० ८२२।

४७ नागकुमारचरित-आचार्य मिल्लिपेण। पत्र सं०-२०। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-५६। निपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। अपूर्णे तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ८५९।

४८ नागकुमारचिरत-आचार्य मिल्लिषण । पत्र सं०-२६ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-४६ । किपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'रत्नकरण्ड श्रावकाचार'के भी कुछ पत्र है ।

## ग्रन्थ नं० ४३० ।

४६ नागकुमारचित-कवि वाहुवली । पत्र स०-११ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ७३१।

५० नागकुमारचरित-कवि वाहुवली । पत्र स०-२४। पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ७९७।

५१ नागकुमारचरित-कवि वाहुवली । पत्र स०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें चन्द्रनाथाष्टक, अनन्तनाथाष्टक तथा पाश्वीनाथाष्टक भी है ।

## ग्रन्थ नं० ८६१।

५२ नागकुमारचिरत-किव वाहुवली । पत्र स०-८३ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्य नं० ८८९।

५३ नागकुमारचरित-किव वाहुवली । पत्र सं०-२६ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिवत-९० । लिपि-कन्नड । माषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ नं० २३८ ।

५४ पद्मावतीचरित-कवि पद्मनाभ । पत्र स०-१०१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० २७२।

५५ पद्मावतीचरित-कवि पद्मनाभ । पत्र सं०-१७ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दगा-सामान्य । ग्रन्थ नं० ७२ ।

५६ पार्श्वनायचरित-कवि पार्श्वपण्डित । पत्र सं०-९७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-९७ । लिपि-कन्नड । भापा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-यह ग्रन्थ लोकण नायक भ्रीर कामियक्कके पुत्र, नागण्णके लघु भ्राता तथा आचार्य वासुपूज्य-के शिष्य पार्श्वपण्डितके द्वारा रचा गया है।

## ग्रन्य न० ७६८।

५७ पार्श्वनाथचित-मुनि शान्तिकोति । पत्र स०-१० । पक्ति-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-५८। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-यह ग्रन्य शालि०शक १६५५ प्रमादीच संवत्सर, मार्गशिर शुक्ला ५ गुरुवारके दिन तौलवदेशीय वेणुपुर-( मूहिबद्री ) स्य विक्रमसेट्टिवसिंद [ आदिनाय-मन्दिर ] में रचा गया है।

## ग्रन्थ न० ३६८।

५८ पुरुदेवचरित-मृनि शान्ति । पत्र स०-२८ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति- ६२ । लिपि-कन्नरः । भाषा-कन्नरः । विषय-चरित्र । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं । ग्रन्य न० ३३३ ।

५६ प्रमञ्जनचरित-किष मगरस । पत्र स०-७८ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९९ । लिपि-किन्नड । भाषा-किन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रन्थ न० ३२० ।

६० प्रभञ्जनचिरतः ••••••• । पत्र स०-९ । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षरं प्रतिपन्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ५२३।

६१ प्रसञ्जनचित- : : : । पत्र स०-५। पिनत प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिनत-१३०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र। लेखनकाल- ×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

#### ग्रन्थ न० ५३५।

६२ प्रशःखनचित- : : : । पत्र स०-३ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीणं । ग्रन्थ न० १५ ।

६३ प्रसुम्तचरित-पण्डित महासेन । पत्र स०-९७ । पित्त प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपित्त-७० । विषय-चरित्र । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

## ग्रन्थ न० ५०९।

६४ प्रद्युम्नचिरत-पण्डित महासेन। पत्र स०-१३। पिनत प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिनत-१४४। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-चरित। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण। विशेष-इसके रचियता फप्पट गुरुके शिष्य आचार्य महासेन है।

#### म्रन्य व० ६५६।

६५ प्रसुम्नचित्त-पण्डित महासेन । पत्र स०-९४ । पिन्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिन्त-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणं तथा खण्डित । अन्तिम भाग -"इति श्रीसिन्धुराजसक्तमहामहत्तमश्रीपप्पटगुरो पण्डितमहासेनाचार्यंकृते प्रद्युम्नचरिते त्रयोदशम सर्ग ।"

#### ग्रन्थ न० ७९५ ।

६६ बाहुबिलिचरित-कवि चिक्कण। पत्र स०-३०। पिन्त प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिक्त-४७। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-×। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्णं तथा सिण्डित।

#### ग्रन्थ न० २३४।

६७ भरतेशवैभव-कवि रत्नाकर । पत्र स०-८। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-९०। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० २९२।

६८ भरतेशवेभव-किव रत्नाकर । पत्र स०-२० । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० ३७२।

६९ भरतेशवेभव-किव रत्नाकर । पत्र स०-१३८ । पित प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-ज्ञालि शक० १५९८ नल सवत्सर पुष्य कृष्णा ५ बृहस्पतिवार । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ३९८।

७० **भरतेशवेभव**-कवि रत्नाकर । पत्र म०-५ । पित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपित्र-८० । लिपि- । कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० ३९९।

७१ अर्तेश्वेभव-किव रत्नाकर। पत्र स०-५८। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिनत-३९। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-×। अपूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

## ग्रन्थ न० ७१७।

७२ सरतेशवैभव-किव रत्नाकर । पत्र स०-४६ । पिक्न प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेप-इसमें जिनचतुर्विशतिका तथा दृष्टाष्टक भी है ।

# ग्रन्य न० ८६०।

७३ भरतेशवेभव-कवि रत्नाकर । पत्र स०-३० । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

## ग्रन्थ न० ५४।

७४ मण्डूकदेवचरित-किव रायण्ण। पत्र स०-४७। पिक्त प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिक्त-९३। लिप-कन्नड। माषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें समवसरण जाते हुए महाराज श्रेणिकके हाथी के पादाघातसे म्रकर तत्क्षण ही स्वर्गमें देव-पर्यायको प्राप्त करनेवाले मण्डूकका चरित्र विणित हैं। इसमें महाकवि धनञ्जय कृत 'द्विसघान' काव्यके भी कुछ, पत्र है।

#### ग्रन्थ न० १८६।

७५ यशोधरचरित-चन्दन वर्णी । पत्र स०-७ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह श्रुतमुनिके पौत्र-प्रशिष्य शुभचन्द्र मुनिके पुत्र शिष्य चन्दन त्रणींकी रचना है ।

## ग्रन्थ न० ५१२।

७६ यशोधरचरित-कवि चन्द्रम । पत्र स०-१३ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-९३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-शुक्ल सक्तर मार्गशिर कृष्ण १ के दिन वगवाडीस्थ शान्तिनाथचैत्यालय में व्र० गुणसागरने हिंसे लिखा हैं। इसमें कन्नड 'चतुरास्य निघण्टु'के भी तीन पत्र है ।

#### ग्रन्थ न० ५९८।

७७ यशोधरचरित-''''। पत्र स०-२०। पनित प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपनित-४२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शूद्ध। दशा-जीर्ण। ग्रन्थ न० ७९५।

७८ यशोधरचरित-''''। पत्र स०-३२। पिवतं प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड) विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। h

#### ग्रन्थ न० ५००।

७६ यशोधरचिति-कवि पद्मनाम । पत्र स०-२१ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसके रचिता पद्मनाभ श्रुतकीर्तिके शिष्य है ।

#### ग्रन्थ न० ७३२।

८० यशोधरचिरत-वादिराज । पत्र स०-१३ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-शालि० शक १५१३ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ३०१।

\*८१ रामायग्-ः । पत्र स०-३८ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-८० । लिपि-कन्नह । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ५५७।

\*८२ रामायग्- । पत्र स०-१७। पित प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिति-१००। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीणं। विशेष-इसमें 'प्रतापरुद्रीय' के भी कुछ क्लोक है।

## ग्रंन्थ न० ८४३।

८३ रोहिगोचरित-जिनंचन्द्र। पत्र स०-२१। पिक्त प्रतिपंत्र-८। अक्षर प्रतिपिक्त-६४। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसके लेखक विर्मण है।

#### ग्रन्थ न० ३११।

८४ विजयम्मिचरित- ' ' । पत्र स०-४०। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-६०। लिपि-कन्नह। भाषा-कन्नह। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष-इसका अपर नाम 'विजयकुमारीचरित' है। इसमें विजयण्णार्यं कृत 'चन्दनाचरित' के भी कुछ पत्र हैं।

#### ग्रन्थ न० ४३।

द्रभू श्रीपालचिरित्र-मट्टारक सकलकीति । पत्र स०-२० । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-८१ । विषय-चरित्र । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें वीचके तीन पत्र नहीं हैं ।

#### ग्रन्य न० ४३३।

८६ श्रुतकीर्तिमुनिचरित-किव रायण्ण । पत्र स०-८ । पिन्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-शालि० शक १५८१ वहुवान्य सवत्सरमें यह ग्रन्थ रचा गया है ।

## ग्रन्थ न० ७२३।

८७ श्रुतकीर्तिमुनिचरित-कवि रायण्ण। पत्र स०-७। पक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपक्ति-३८। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण। ग्रन्थ न० ६०९।

८८ श्रेगिकचरित • • • । पत्र स०-७। पित प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-१३०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमे कन्नड 'सीताचरित' भी सम्मिलित है।

#### ग्रन्थ न० ७०८।

८६ श्रेएयारोह्णसंधि-कवि रत्नाकर। पत्र स०-१०। पित प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-२७। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-यह भरतेशवैभव का एक भाग है।

## ग्रन्थ न० ६४१।

ह० षोडशस्त्रप्रसिन्ध-कवि रत्नाकर। पत्र स०-५६। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिक्त-५६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-यह भरतेशवैभव का एक प्रकरण है।

#### ग्रन्थ न० ७०८।

ह श्रीताचरित- ....। पत्र स०-११। पनित प्रतिपत्र-१४। अक्षर प्रतिपन्ति-२८। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ४०३।

**६२ सुकुमारचिरत** - ...। पत्र स०-३१। पक्ति प्रतिपत्र—६। अक्षर प्रतिपक्ति—३८। लिपि— कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—चरित्र। लेखनकाल— ×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—जीर्ण। ग्रन्थ न० ५६२।

**६३ सुकुमारचरित— .....।** पत्र स०-५०। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-५९। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ७२९।

६४ सुकुमारचिति - . . . । पत्र स०-२०। पनित प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-६३। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण। विशेष-इसमें 'लिब्बसार' की कन्नड टीकाके भी ४ पत्र हैं।

#### ग्रन्थ न० ७९७।

ह्र सुकुमारचरित-....। पत्र स०-२५। पित प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपित-४०। लिपि-फन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण तथा खण्डित। विशेष-इसमें भरतेश्वरप्रशस्ति (कन्नड) भी है।

## ग्रन्थ न० ५९८।

र्६ सुवर्णभद्रचरित-कवि पदुमण्ण । पत्र स०-१३। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिक्त-४०। िलिप-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा-जीण। विशेष-इसमे आदि और अन्तके पत्र नहीं हैं। इसका सुवर्णभद्रचरित यह नाम अनुमानपरक है। ग्रन्थ न०५००।

६७ सुवर्णभद्रचरित-कवि पदुमण्ण । पत्र स०-८ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## विषय-कथा

#### ग्रन्थ न० २२३।

- । पत्र स०-३६। पित प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपित-४३। लिपि-१ श्रनन्तव्रतकथा----क्संड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ७५१।
- । पत्र स०-३१ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-९२ । लिपि-२ अनन्तव्रतकथा-कन्नड । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम । ग्रन्थ न० ७८० ।
- ३ अनन्तव्रतकथा-....। पत्र स०-९। पन्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-६६। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल- 🗶 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ४०० ।

- । पत्र स०-११। पन्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपन्ति-८४। ४ घरिञ्जयमहारककथा-लिपि-कन्नह । भाषा-कन्नह । विषय-कथा । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ९९।
- । पत्र स०-४५ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-९० । ४ श्रष्टाङ्गपञ्चागुत्रतकथा- ... लिपि-कन्नह । भाषा-कन्नह । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३१८ ।
- ६ श्राण्तिव्रतकथा- ' । पत्र स०-४। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-५०। लिपि-कन्नह । भाषा-कन्नह । विषय-कथा । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० २०३।

। पत्र स०-९ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१०१ । लिपि-७ कौतुककलिकाकथा-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

अन्तिम पद्य-देशीगणतिलकश्रीनेमिन्दुमुनेरनुज्ञया विवृतम् ।

# कौतुककलिकाकथन शुभेन्दुशिष्येण विधिनेदम् ॥

ग्रन्थ न० २९२।

८ गुगारस्रमाला-कवि बोम्मरस् । पत्र स०-६३ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । 🦯 ग्रन्थ न० २१०।

- . ह गौरीव्रतकथा-.. . । पत्र स०-७ । पक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षरप्र तिपक्ति-८४ । विश्वप-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्य न० ३२९।
- १० जिनगुग्सम्पत्तिव्रतकथा- . . । पत्र स०-५ । पनित प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-४० । लिपि-कञ्चड । भाषा-कञ्चड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दर्शा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ९०२।
- ११ जैनकथासप्रह-... । पत्र स०-४६ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । माषा—कन्नड । विषय—कथा । ुलेखनकाल— × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेप-इसमें अप्टाग पचाणुत्रत आदि की २३ कथाए सगृहीत है।

## ग्रन्थ न० २४८।

१२ धर्मकथासंग्रह -.. .। पत्र स०-७७। पश्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपन्ति-७०। लिपि-कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विजेप-इसमें 'पचाणुवत' 'अप्टाग' आदि की कथाए है। अन्त में 'गणघरवलय-पूजा' के कुछ पत्र मी है। ग्रन्थ नं० १७।

१३ धर्मामृत-नयमेन । पत्र सं०-४३ । पिन्त प्रतिणत्र-१० । अक्षर प्रतिपिन्त-८४ । विषय-कथा । हिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । हेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा गृद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० १८०।

१४ धर्मोमृत-नयसेन । पत्र स०-१३९ । पित्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिति-१०३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा मामान्य गृद्ध । दशा-मामान्य । प्रत्य नं० ३०९ ।

१५ धर्मामृत-नयसेन । पत्र स०-३८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१७ । अक्षर प्रतिपक्ति-२६६ । लिपि-कन्नट । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

## ग्रन्य नं० ३१५।

१६ नवनिधिभाग्हार तथा क्लपकुल-व्रतकथा-...। पत्र स०-४।पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-६०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-कथा। लेक्नकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य गुद्ध। दशा-जीर्णं।

## ग्रन्थ न० ३९८।

१७ नागकुमारपद्धमीकथा-आचार्य मिल्ल्पिण । पत्र स०-१० । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-७५ । लिपि-कन्नट । भाषा-सस्कृत । विषय-कया । लेखनकाल-४ । पूर्ण तया सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ५२३ ।

१८ नागकुमार्पद्धमीकथा-आचार्यं मिल्लिपेण । पत्र म०-५ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-१३० । लिपि-कन्नड । नापा-सम्कृत । विषय-कथा । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं नथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ६०९ ।

**१६ नागकुमारकथा**- . . . । पत्र म०-७ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेजनकाल-× । पूर्ण तथा मामान्य शुद्ध । ट्या-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० २६७।

२० तन्दीश्वरत्रकथा-चन्दय उपाच्याय । पत्र सं०-३ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । विक्षर प्रतिपिक्त-८९ । हिपि-कन्नड । निपय-कथा । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ३०९ ।

२१ नन्दीश्वरेत्रतकथा-चन्दनवर्णो । पत्र स०-४ । पक्ति प्रतिपत्र-१५ । अक्षर प्रतिपक्ति-२५० । लिपि-क्तर । माण्य-कन्नट । विषय-कथा । लेखनकाल- × । पूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दश्रा-मामान्य । ग्रन्य नं० ४७८ ।

२२ सन्दीश्वरत्रतंकथा-....। पत्र स०-८। पिन प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-६६। लिपि-क्याड। भाषा-कृत्रड। दिपय-कथा। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य सुद्ध। दसा-सामान्य।

## ग्रन्थ न० ८७८ ।

२३ नन्द्रश्चरत्रतकथा-... । पत्रस०-७५ । पिन प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नट । विषय-त्रथा । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इत्तर्में गीतवीतराग के भी कुछ पत्र है ।

#### ग्रन्य नं० ७०८।

२४ पत्यविधानत्रतकथा-....। पत्र सं०-१२। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। बक्षर प्रतिपक्ति-२६। लिपि-क्सड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। छेन्वनकाल-×। पूर्णं तथा सामान्य गुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें उक्त व्रतना फल भी दिया गया है।

## ग्रन्थ न० २०२।

२५ पार्श्वनाथन्नतकथा- । पत्र स०-९। पिनत प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिनत-६५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-जीर्णं। विशेष-इसमें 'शान्त्यण्टक' 'सिद्धचक्रजयमाला' आदि के भी कुछ खण्डित पत्र है।

# ग्रन्थ न० २४९।

२६ पुर्यास्त्रवकथा-किव नागराज । पत्र स०-१२० । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ७१२ ।

२७ पुरयास्त्रवकथा-मुनि रामचन्द्र । पत्र स०-३६ । पिक्त प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपिक्त-१५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । लेखनकाल- 💢 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्थ न० ३८९ ।

२८ पुरुदेवकथा- ''' । पत्र स०-१८३ । पन्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ३९१।

२६ फलमङ्गलवारत्रतकथा- '। पत्र स०-६। पिष्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—जीर्ण।
ग्रन्थ न०६६२।

३० मुक्तावलीत्रतकथा- ' '। पत्र स०-४। पाँक्त प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिक्त-३४। लिपि-कन्नड। भापा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

#### ग्रन्थ न० ८८० ।

३१ रत्नत्रयव्रतकथा- ' '''। पत्र स०-४। पित प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपित्र-६७। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ न० ८८०। ३२ रोहिग्गीव्रतकथा- : ' । पत्र स०-१०। पवित प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-६७। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। देशा-सामान्य।

## ग्रन्थ न० १९९।

३३ लिब्बिधानञ्जत्कथा- ' ''' । पत्र स०-४ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त- ७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ८७८।

३४ **लब्धिविधानव्रतकथा**- ' '''। पत्र स०-४ है। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-६०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

#### ग्रन्थ न० ७९५।

३५ लिलताङ्गदेवकथा-नयसेन । पत्र स०-३६ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित । विशेष-यह नयसेनकृत धर्मामृतान्तर्गत एक कथा है ।

#### ग्रन्थ नं० ३०९।

३६ वडुाराधना-आचार्यं शिवकोटि । पत्र स०-२० । पिकत प्रतिपत्र-१६ । अक्षर प्रतिपिक्त-२४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० ३०९।

३७ वहाराधना-आचार्य शिवकोटि । पत्र स०-६६ । पितत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिवत-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-शालि०श०१३२५ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-शालि०शक १३२५ सुभानु सवत्सर कार्तिक कृष्ण अमावास्या बुघवारके दिन कल्लप्प सेट्टिने इसे लिखा है ।

## ग्रन्थ न० १५९।

३८ वस्तुकल्याग् व्रतकथा-'' । पत्र स०-७। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-३४। लिपि-कन्नड। माषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दश्चा-सामान्य। ग्रन्थ नं० ५९।

३६ व्रतकथासंग्रह- ' । पत्र स०-१२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-श्रवण-वेल्गोलके भट्टारक चारुकीर्तिके प्रशिष्य, अन्ततकीर्तिके शिष्य, पायण्णके द्वारा लिखित । ग्रन्थ नं० ६२ ।

४० व्रतकथासंग्रह- । पत्र स०-१६५ । पित प्रतिपत्र-८ । प्रक्षर प्रतिपित्त-८ । प्रक्षर प्रतिपित्त-८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ६५८।

४१ व्रतकथासंग्रह- ः ः । पत्र स०-१५ । पित प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपित्र-१८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें 'भक्तामर' आदि स्तोत्रोके कुछ पत्र है ।

## ग्रन्थ नं० ७३४।

४२ व्रतकथासंग्रह- : : : । पत्र स०-४२। पित प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-३१। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ८३७।

४३ त्रतकथासंग्रह्- · · · · · · · · · । पत्र स०-९६ । पिक्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिक्त-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें १० व्रतोकी कथाए सगृहीत है ।

#### ग्रन्थ न० ८६५ ।

#### ग्रन्थ न० ८६९।

४५ त्रतकथासंत्रह्—''''' । पत्र स०-११५ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल- × । पूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें २२ व्रतकथाए है ।

## ग्रन्थ न० ९८।

४६ सम्यत्तवकौमुदी-मुनि धर्मकीर्ति । पत्र स०-२९ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ६५४।

४७ सम्यत्तवकौमुदी-मुनि धर्मकीति । पत्र स०-२२ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृते । विषय-कथा । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें पद्यभाग मात्र है।

#### ग्रन्थ न० ६९७।

४८ सम्यत्तवकोमुद्दी-मुनि धर्मकीर्ति । पत्र स०-५१ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं । विशेष-इसमें 'क्षत्रचूडामणि' के भी कुछ पत्र है ।

#### ग्रन्थ न० ३९८।

४६ सम्यत्तत्वकोमुदी-किन नीलकण्ठ । पत्र स०-१८ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । निषय-कथा । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसके रचिता तिलिविल्णिपुरस्थ श्रीशान्ति तीर्थंकरके भक्त किव नीलकण्ठ हैं। श्रवणबेल्गोलस्थ मट्टारक चारकीर्तिके शिष्य कुबुलेनिवासी प्रभाचन्द्रदेवने इसे लिखा है।

#### ग्रन्थ न० १४८।

४० सम्यक्त्वकोमुदी-कवि मगरस । पत्र स०-८७ । पित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह ग्रन्य यदुवशभूवरसिववान्वयी कवि मगरसके द्वारा शालि०शक १३३१ आश्वयुज शुक्ला प्रतिपदाके दिन रचा गया है। इसमें 'रामचरित,' के भी कुछ पत्र है।

#### ग्रन्थ न० २२८।

प्र सम्यक्तवकौमुदी-कवि मगरस । पत्र स०-९८ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-४१ । लिपि-कञ्च । भाषा-कञ्च । विषय-कथा । लेखनकाल-शालि०शक १४३१ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-शालिवाहन शक १४३१ आश्वयुज शु० १ शनिवारके दिन यह ग्रन्थ लिखा गया ।

#### ग्रन्य न० ३६९।

५२ सम्यवत्वको मुद्दी-किव मगरस । पत्र स०-१२५ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-४६ । लिपि-कन्नड । निपय-कथा । लेखनकाल-शा० शक १५१६ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेप-शालि०शक १५१६ मन्मय सवत्सर्र आषाढ • में रामचन्द्र के पुत्र चन्द्रप्रभने इसे लिखा है । प्रन्य न० ४५२ ।

४३ सम्यक्त्वकोमुद्दे-किव मगरस । पत्र स०-६५ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-८८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-शालि श्विक १७ कीलक सवत्सर भाद्रपद शुक्ला ३ गुरुवार । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-कनकपुरस्य आदिनाथ मन्दिरके अर्चक कोटप्प इन्द्रके पुत्र भास्करने हन्नारग्रामके देवालयमें इसे लिखकर समाप्त किया है।

#### ग्रन्थ न० ८०५ ।

१४ सम्यक्तवकोमुदी-किव मगरस । पत्र स०-९० । पिक्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिक्त-४५ । लिपिकन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं तथा खण्डित ।
विशेष-शालि०शक १४३१ आश्वयुज शुक्ला १ शिनवारके दिन किव मगरसने इसकी रचना की है ।
सीम्य सवत्सर भाद्रपद शुक्ला १४ रिववारके दिन पण्डित देवप सेिंदृके पुत्र भद्रैयने इसे लिखा है ।

## ग्रन्थ न० १५९।

१५ सिद्धचक्रव्रतकथा- ' ' । पत्र स०-९। पिन्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिन्त-३२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल-४।पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें और भी कुछ खण्डित पत्र है।

# विषय-इतिहास

ग्रन्थ न० ८००।

कन्नड । भापा-कन्नड । विषय-इतिहास । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें मूडविद्री जैन मठके पुराने आयव्ययका विवरण दिया गया है। ग्रन्थ न० ८१४।

२ स्त्रायव्ययविवर्ग्य- । पत्र स०-६६। पवित प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिकत-२४। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें मूडिबद्री जैन मठके पुराने आयव्ययका विवरण अिह्नत है। यह ग्रथ नं ० ८०० से भिन्न है। ग्रन्थ न० ३५४।

३ गुराभद्रमशस्ति- .... पत्र स०-३। पनित प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपन्ति-५०। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रशस्ति । लेखन्काल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह भट्टारक गुणभद्रकी गद्यमय प्रशस्ति है।

ग्रन्थ न० ३२९।

४ गोमटेश्वरचरित-कदि चन्द्रप । पत्र स०-४५ । पिवत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिवत-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कार्कलस्य वाहुवली मूर्तिका परिचय अद्भित है।

ग्रन्थ न० ७३७।

५ मृडबिद्रोके जैन मन्द्र- । पत्र स०-७०। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-७०। लिपि-कन्नड । भापा-कन्नड । विषय-इतिहास । लेखनकाल-शा० शक १७५३ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें मूडविद्रीके प्रत्येक मन्दिरमें वर्तमान मूर्तियो एवं बर्तनोकी सविवरण सूची दी गई है। यह सूची शालि॰ शक १७५३ खर सवत्सर आश्वयुज मासमे लिखी गई हैं।

म्रन्थ न० ८४१। ६ विज्ञाप्तिपत्र- । पत्र स० ११ । पवित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपवित-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें श्रवणवेलगोल मठके भट्टारकजीको अर्चक तथा श्रावकोके द्वारा भिन्न-भिन्न समयमें लिखे गये विज्ञप्तिपत्र सगृहीत है।

ग्रन्थ न० ६८५। ७ शासनादिसंग्रह- ... .. पत्र स०-१०१ । पनित प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपनित्-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें वारकूर तथा वटकलसे सम्बन्ध रखनेवाले कुछ शासन तथा भिन्न-भिन्न व्यक्तियोके द्वारा भिन्न-भिन्न समयमें स्थानीय देवालयोंकी संपत्तिकी रक्षाके लिये लिखे गये राजकीय पत्र एव श्रवणवैल्गीलके भट्टा-रकजीके पास लिखे गये कतिपय प्रार्थेनापत्र भी सगृहीत है।

ेग्रन्थ न० ३५३'।

८ सङ्घोत्पत्ति- । पत्र सर्थ-२। पवित प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंवित-३७। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-इतिहास । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें देव, सेन आदि सघोकी उत्पत्तिका वर्णन है । ग्रन्थ न० ३५४।

ह श्रुतावतार-आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र स०-५ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-इतिहास । लेखनकान- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# विषय-आयुर्वेद

#### प्रन्थ न० ३४४।

\*१ श्रष्टांगहृद्यदीपिका-उदयादित्य भट्ट । पत्र स०-३७ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सम्कृत । दिषय-वैद्यक । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह वाग्भट कृत 'अष्टाङ्गहृदय' की टीका है । इसमें सिर्फ शरीरस्थान है । प्रत्य न० ९६ ।

\*२ श्रारोग्यचिन्तामिण्-पण्डित दामोदर भट्ट । पत्र स०-३७ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-तारण सवत्सर मार्गशिर श्रुक्ला ५ । सौम्यवार । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-मुलवागिलनिवासी धनञ्जयदेवके पुत्र ब्रह्मदेवने विजयनगरस्थ चिवकोडेयरङ्गिंड चत्यालयके • मृद्दुमाणिक्य तीर्थेशके निकट आरगके आदिपण्डितके वास्ते इसे लिखा है।

#### ग्रन्य न० ८४६।

\*३ श्रारोग्यिनिन्तामिण्-पण्डित दामोदर भट्ट । पत्र स०-६४ । पिन्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिन्त-४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रन्य न० ३४४ ।

४ इन्दुदीपिका-सुन्दर । पन स०-१७ । पिक्त प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिक्त-१२५ । लिपि-कन्नह । भाषा-सस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सान्य ।

विशेष-इसमें सिर्फ 'सूतस्थान' की टीका है। पर मालूम नही हो सका कि यह किस ग्रन्थका प्रकरण है। ग्रन्थ न० २००।

४ कल्याणकारक-सोमनाथ । पत्र स०-२१ । पित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपित-६२ । निर्िप-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेपनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेप-इसमें वैद्यकविषयक और भी कुछ खण्डित पत्र है। यह 'कल्याणकारक' आचार्य पूज्यपादके संस्कृत 'कल्याणकारक' का कन्नड अनुवाद कहा जाता है।

#### ग्रन्थ न० ६७३।

६ क्रित्रिमविषचिकित्सा-''''' । पत्र स०-३५ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-३० । हिषि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रन्थ न० ५९२ ।

\*७ धन्वन्तरिनिघर्टु-धन्वन्तरि । पत्र स०-२३। पन्ति प्रतिपत्र-१९ । अक्षर प्रतिपन्ति-१००। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यककोश । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० २९९ ।

\*८ योगरत्नाकर-''' । पत्र स०-१३। पन्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपन्ति-१०५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-वैद्यक। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ८५२।

ह योगरत्नावली-कवि पार्व । पत्र स०-२६ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ८११।

१० योगशतक- '''' । पत्र स०-७६ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१४० । लिपि-नागरी । भाषा-सस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-क्षालि० शक १३११ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

# विशेष-शालि शक १३११ शुक्ल संवत्सरके वैशाख मासमें नागराजने इसे लिखा है। ग्रन्थ ण० १९३।

११ रसरत्नाकर-नित्यनाथ सिद्ध । पत्र स०-४३ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-शालि० शक १४१३ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-शालिवाहन शक १४१३ विरोधिकृत् सवत्सर कार्तिक शुक्ला ५ के दिन कुदिहिरनियासी चन्दप्प गौडके पुत्र ? चन्दप्प गौड के वाम्ते स्थानीय आदप्प उपाध्यायके पुत्र वोम्मरसके द्वारा यह ग्रन्थ लिखा गया ।

गन्य न० ३३७।

१२ रसवैद्यसार- ' '। पत्र स०-८। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-३५। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दणा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० ८११।

१३ रसेन्द्रोद्य- · · · · । पत्र सं०-१२। पिनत प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिनत-१४०। लिपि-नागरी। भाषा-सस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-अतिजीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष-यह एक सग्रह ग्रन्थ है। इसमें 'स्कल' 'सारसमुच्चय' 'रहस्यस हिता' आदि ग्रन्थोंके रसप्रकरण का सग्रह है। तथा इसमें वैद्यक सम्वन्वी और भी कुछ खण्डित पत्र सम्मिलित है।

## ग्रन्थ न० ३९१।

१४ विषचिकित्सा- ''' । पत्र स०-३। पिक्त प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपत्र-२७। लिपि-कन्नह। भाषा-कन्नह। विषय-वैद्यक। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य गुद्ध। दशा-सामान्य।

#### ग्रन्थ न० ४०४।

१५ वैद्यसार- ' । पत्र स०-४३ । पिन प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-त्रैद्यक । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी हैं ।

#### ग्रन्थ न० ८५२।

१६ वैद्यसंग्रह- ' ' ' । पत्र सं०-२८ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-७७ । लिपि-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# . विषय-ज्योतिष

## ग्रन्थ न० ३२१।

\*१ द्यात्तरकेलिप्रश्न-\*\*\* । पत्र स०-६ । पन्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ३९१।

२ कालज्ञान-''' । पत्र स०-२। पिक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-३०। लिपि-कन्नड। भाषाकन्नड। विषय-ज्योतिष। लेखनकालҳ। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

## ग्रन्थ न० २१।

ः ३ केवलज्ञानहोराशास्त्र-मृनिचन्द्रसेन । पत्र स०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र ११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेप-इसमें कन्नड टीका भी है ।

#### ग्रन्थ न० ४८३।

#### ग्रन्थ न० ४८३।

४ चितामणिप्रश्न-'' ''। पत्र स०-५६। पिनत प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिवत-२२। लिपि-कन्नह। भाषा-कन्नड। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य।

#### ग्रन्थ न० ८९८।

६ ज्योतिप-' ''। पत्र स०-६३ । पवित प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपवित-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिप । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० ७४९ ।

७ ज्योतिष-'' ''। पत्र स०-१०। पनित प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपनित-३१। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेप-इसमें 'अनन्तनाथपूजा' तथा जयमाला (कन्नड) भी है।

#### ग्रन्थ न० १६९।

द स्योतिष- ' '। पत्र स०-१९। पिन्त प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिन्त-४२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-×। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेप-एक मग्रह ग्रन्थ इसमें ज्योतिप की कुछ वाते वतलाई गई है।

#### ग्रन्थ न० २१५।

६ ज्योतिषसंग्रह्- ° '। पत्र स०-५ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-६२ । लिपि-कन्नह । मापा-कन्नह । विषय-ज्योतिप । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ८७० ।

१० ज्योतिपसग्रह्— । पत्र स०-२४। पिनत प्रतिपत्र-९। अक्षर पितपिनत-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत तथा कन्नड। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें 'दूतलक्षण' 'चद्रगित' आदि ज्योतिषके कितपय विषय सग्रह किये गये हैं।

#### ग्रन्थ न० ८९६।

११ पद्धाङ्गगिति : : : । पत्र स०-६२ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्य न० ९०१।

१२ पंचांगफल-''' । पत्र स०-३०ई । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत तथा कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ८९९।

१३ पंचांगसंग्रह- ' ' ' । पत्र स०-२२९ । पित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपित्र-१४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-शालि० शक १७९२ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० ८९७।

१४ पंचांग तथा जातकसंग्रह्- ' ' । पत्र स०-७१। पिक्त प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिक्त-१८। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत तथा कन्नड। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-शालि० शक १७८५। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-यह पचाग तथा जन्मपत्रोका सग्रह है।

## ग्रन्थ न० ३३९।

१४ प्रश्निचिन्तामिण्- ''''। पत्र स०-७९ । पिनत प्रतिपत्र-८ अक्षर प्रतिपिन्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ३३९ ।

१६ प्रश्निचिन्तामिण्- ' ' पत्र स०-२१ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-३८ । लिपि कन्नड । भाषा-कन्नड । विपय-ज्योतिष । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं ।

ग्रन्थ न० ८५३। १७ मुहूर्तद्पेगाः ः । पत्र स०-११३। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-४५। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

१८ वायसशकुन-.. ..। पत्र स०-१ । पिनत-९ । अक्षर प्रतिपंनित-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शृद्ध । दशा-जीर्णं ।

ग्रन्थ न० ३९८।

#### ग्रन्थ न० ३९८।

१६ वास्तुनिर्मोग्रमुहूर्त- ' ' ' । पत्र सं०-१। पक्ति-११। अक्षर प्रतिपक्ति-७५। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-×। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।
ग्रन्थ न० ४६१।

२० **राकुनशास्त्र—.....**। पत्र स —३। पक्ति प्रतिपत्र—७। अक्षर प्रतिपक्ति—१०४। लिपि—कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—ज्योतिष। लेखनकाल— अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा—सामान्य। ग्रन्थ न० ३३९।

२१ सुत्रीवप्रश्न-सुग्रीव । पत्र स०-१३ । पितत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा सस्कृत तथा कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।



# विषय-गणित

#### ग्रन्थ न० १६९।

१ गिणतिवितास-चन्द्रम । पत्र स०-२९ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गणित । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ नं० ३२७।

२ गिणितसार-आचार्यं महावीर । पत्र स० १३५ । पिक्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-गणित । लेखनकाल-शालि०शक १४४९ । पूर्णं तथा शुद्ध । दश-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ६१३।

३ गिणितसार-आचार्य महावीर । पत्र स०-५७ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-गणित । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ६३८ ।

४ गिएतसार-आचार्य महावीर । पत्र स०-२९ । पेक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-गणित । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेप-इसमें कन्नड टीका भी है ।

#### ग्रन्थ न० ६७७।

 प्रितसार—आचार्य महावीर । पत्र स०-१०१ । पित्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपित्त-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-गणित । लेखनकाल-🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० ८७३।

६ गिणितसार-आचार्यं महावीर । पत्र स०--६४। पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-७९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-गणित । लेखनकाल-शालि०शक १५९६ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीण । विशेष-शालि०शक १५९६ आनन्द सवत्सर भाद्रपद शुक्ला ७ गुरुवारके दिन मुंनिभद्रदेवके शिष्यने वेणुपुरस्य त्रिभुवनतिलक चैत्यालयमें इमे लिखा है ।

#### ग्रन्थ न० ७८१।

७ गिण्तिसार-श्रीघराचार्य । पत्र स०-४५ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-गणित । लेखनकाल-🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं । विशेप–इसमें गणितज्ञ वल्लभ कृत आध्र (तेल्गु )–भाषीय टीका भी है। ग्रन्थ प्रकाशनार्थ है। ग्रन्थ न० ५९०।

🗷 गिण्तिसग्रह्-राजादित्य । पत्र स०-९ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत तथा कन्नड । विषय-गणित । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'गोम्मटाप्टक, 'अकलकाप्टक' तथा 'देवराजवल्लभाष्टक' के भी कुछ पत्र है।

#### ग्रन्य न० २८२।

ह चतुरंगलेखन तथा तण्डुलस्थापनऋम- ः । पत्र स०-२। पिक्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गणित । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

## विषय-मन्त्रशास्त्र

#### ग्रन्थ न० ४५९।

१ गगुधरकल्प- ' । पत्र स०-८। पक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपक्ति-७०। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३२१।

२ गर्णाधरवत्तय-मन्त्र- ''' । पत्र स०-२ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-४० । लिपि-कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल–🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ४३,३ ।

• । पत्र स०–६ । पक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपक्ति–२० । लिपि– ३ गण्धरवलयमन्त्र-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल-🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'समवसरणाप्टक' 'पद्मावतीचरित्र' आदिके भी कुछ अपूर्ण पत्र है।

#### ग्रन्थ न० ४६२।

ा पत्र स०-१६ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-८२ । ४ गण्धरवत्तयमन्त्र जपविधि-लिपि—कन्नड । भाषा—सस्कृत । विषय—मन्त्रगास्त्र । लेखनकाल− × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

## ग्रन्थ नं० ३५३।

४ ग्रामोकारमन्त्रकी श्रास्त्रसंख्या- · · · · · । पत्र सं०-१। पिनत-५। अक्षर प्रतिपिनत-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्य न० ३२१।

६ पार्श्वनाथसन्त्राष्टक-आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र म०-५ । पन्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपन्ति-४५ । लिपि-कन्नर । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसका अपर नाम 'मालामन्त्र' है । इसमे विद्रेषण, उच्चाटन आदि कर्मोंके मन्त्र दिये गये है । यह

'कलिकुण्डयन्त्राराधना' मे भी पाये जाते हैं।

## ग्रन्य न० २०१।

७ पद्धनमस्कारचक्र- । पत्र स०-२८२। पिनत प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपिनत-४५। लिपि-नागरी। भाषा-सस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। लेखनकाल-शालि० शक १२१४ मार्गशिर कृष्णा १३ बूध-वार। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-जीर्णं।

विशेष-इसमें बीचका एक पत्र नहीं है।

## ग्रन्थ न० ८४९।

द बृह्च्छान्तिविधान- · · · · · । पत्र स०-५३। पिनत प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिनत-५५। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेप-इसमें 'नवदेवतापूजा' 'अनन्तव्रतिवधान' तथा शकुन सम्बन्धी और भी कुछ पत्र है।

### ग्रन्थ न० ७४८।

सन्त्रशास्त्र-\*\*\*
 : । पत्र स०-१९ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-२९ । लिपिकन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।
विशेष-इसमें कल्याणकीर्तिकृत कन्नड 'द्वादशानुप्रेक्षा' के भी कुछ पत्र है ।

#### ग्रन्थ न० ४७०।

१० यन्त्रसन्त्रसंग्रह- '''' । पत्र स०-५४ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ८४२ ।

११ सघुशान्तिविधान- · · · · । पत्र सं०-३२ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'अभिषेकपाठ' 'पञ्चपरमेष्ठी' तथा 'नवदेवता पूजा' एवं 'जयमाला'के भी कुछ पत्र सिम्मिलत है । ग्रन्थ न० ८५० ।

१२ लघुशान्तिविधान- · · · । पत्र स०-७ है। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। लेखनकाल- ×। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें 'वास्तुपूजा' के भी कुछ पत्र है।

#### ग्रन्य न० ८९३।

१३ लघुशान्तिविधि : : : । पत्र सं०-१२। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-३४। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। लेखनकाल-×।पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्य न०४००।

१४ सकलीकरण-'''' । पत्र स०-६ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# विषय-लोकविज्ञानं

#### ग्रन्थ न० ४९८।

१ तिलोयपण्यासि [त्रिलोकप्रज्ञप्ति ]-आचार्य यतिवृषभ । पत्र स०-१५१ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-९९ । लिपि-कन्नर । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।

विशेष-इसमें 'गोम्मटसार (जीवकाण्ड)' के भी कुछ पत्र है।

#### ग्रन्थ न० ६४३।

२ तिलोयपण्णिति [ त्रिलोकविज्ञाति ]-आचार्यं यतिवृषम । पत्र स०-८८ । पित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० १०।

३ तिलोयसार [त्रिलोकसार]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-१४० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-९३ । लिपि-कन्नड । मापा-प्राकृत । निषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें आचार्य माघवचन्द्र कृत संस्कृत टीका भी है।

#### ग्रन्थ न० ११ ।

४ तिलोयसार [त्रिलोकसार ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-२५ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० १२४।

४ तिलोयसार [त्रिलोकसार]—आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र स०-५४। पनित प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपन्ति-९२। लिपि-कल्ल । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकनिज्ञान । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें सस्कृत टीका है।

#### ग्रन्थ न० १३५।

६ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स॰-८०। पनित प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें बहुतसे पत्र गायब है।

#### प्रन्थ न० १९२।

७ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-६१ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० २२९।

द्र तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-१५। पनित प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-६४। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० ३०६।

६ तिलोयसार [त्रिलोकसार]-श्रचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र सं०-५३ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राष्ट्रत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-४ । पूर्ग तथा सामान्य शृद्ध । दशा-सामान्य ।

विद्येप-इसमें आचार्य माघवचन्द्रकी संस्कृत टीका भी है।

#### ग्रन्य न० ३५१।

१० तिलोयसार [त्रिलोकसार]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र म०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-७० । लिपि-क्न्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा श्रुह । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्य नं० ४२२।

११ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-८० । पिवतः प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१८० । लिपि-कन्नट । भाषा-प्राहतः । विषय-लोकविज्ञान । लेन्ननकाल-४ । अपूर्णं नथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### गन्य न० ५८२।

१२ तिलोचसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र म०-८३ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-८२ । लिपि-क्सड । मापा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शृद्ध । द्या-सामान्य ।

विशेष-इसमें माषवचन्द्र इत सस्कृत टीका भी है।

## ग्रन्य नं० ६२१।

१३ तिलोयसार [त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्त्र । पत्र न०-१०४ । पन्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपन्ति-५४ । लिपि-नागरी । भाषा-प्राष्ट्रत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य सुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें भाषवचन्त्र कृत सस्कृत टीका है।

## ग्रन्य नं० ६२४।

१४ विलोयसार [ त्रिलोकसार ]-श्रचार्य नेनिचन्द्र । पत्र स०-७२ । पत्रिन प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपत्रि-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य चुद्ध । दश्य-सामान्य ।

#### ग्रन्य नं० ६४४।

१५ तिलोचसार [त्रिलोकसार ]-बाचार्य नेमिचन्छ । पत्र २०-१४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नह । मापा-प्राष्ट्रत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-गालि० शक १४५९ । पूर्ण तया सामान्य गुद्ध । दशा-टत्तम ।

विशेष-शालि॰ शक १४५९ मन्मय संवत्सर आपाट शुक्ला २ वृहस्पतिवारके दिन मरदालिवासी चन्दरसके पुत्र देवरसने चन्दरगके लिये इसे लिखा है। इसमें माववचन्त्र कृत संस्कृत टीका भी है।

#### ग्रन्य न० ७४१।

१६ तिलोचसार [त्रिलाइसार]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-७०। पंक्ति प्रतिपत्र-७। व्यवस् प्रतिपंक्ति-९०। लिपि-कन्नह। नापा-प्राकृत । विपय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-४ । वपूर्ण तथा सामान्य सृद्ध। दग्रा-उत्तम ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका है।

#### ग्रन्थ न० ९०४।

१७ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-४५ । पनित प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपन्ति-१२४ । लिपि-कन्नड । भोषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें सन्दृष्टिया भी है।

#### ग्रन्थ न० १६०।

१८ त्रिलोकशतक-रत्नाकर वर्णी । पत्र स०-१० । पिवत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ५३७ ।

१६ त्रिलोक्स्यतक-रत्नाकर वर्णी । पत्र स०-१२ । पिक्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-२५ । लिपि-कन्नड । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीणं ।

#### ग्रन्थ न० १०९।

२० लोकतत्त्व-आचार्य सिंहसूरि । पत्र स०-५१९ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक-१२३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध दशा-सामान्य ।

अन्तिम भाग—युवत प्राणिदयागुणेन विमलेश्सत्यादिभिश्च व्रतीमिश्यादृष्टिकषायनिर्जयस्चिजित्वेन्द्रियाणा वराम् ॥दग्वा दीप्ततपोऽग्निना विरचित कर्मापि सर्वं मन सिद्धि याति विहाय जन्मगहन शार्दूल (विक्रीडितम्)॥

• वर्द्धमानाईता यत्प्रोक्त जगतो विघानमिखल ज्ञात सुधमीदिभि ॥ आचार्याविलकागत विरचित तिसहसूर्राषणा भाषाया परिवर्तनेन निपुणैस्सम्मान्यता साधुभि ॥ वैश्वे स्थिते रिवसुते वृषभे च जीवे राज • लिकनामिन पाणराष्ट्रे शास्त्र पुरा लिखितवान्मुनिसर्वनिद्ध (दी) ॥ सवत्सरे तु द्वोविशे काचीश सिहवर्मण अशीत्यब्दे शकाब्दाना सिद्धमेतच्छतत्रये ॥ पञ्चादशशतान्याहु षद्त्रिशदिधकानि वै। • • • • • • • ।।

#### ग्रन्थ न० १४४।

२१ लोकस्वरूप-किव चन्द्रम । पत्र स०-१२ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० १४५ ।

२२ लोकस्वरूप-कवि चन्द्रम । पत्र स०-८ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० २६७ ।

२३ लोकस्वरूप-किव चन्द्रम । पत्र स०-१२ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-६७ । लिप-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० २७७ ।

२४ लोकस्वरूप-किव चन्द्रम । पत्र स०-११। पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ६८९ ।

२५ लोकस्वरूप-किव चन्द्रम । पत्र स०-२२ । पिन्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिन्त-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड भावार्थ भी है ।

## **->**:≪-

# विषय-शिन्पशास्त्र

#### ग्रन्थ नं० २२।

१ वास्तु-शास्त्र-सनत्कुमार । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-शिल्पशास्त्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

#### ग्रन्थ नं ० ५२४।

२ वास्तुशास्त्र-सनत्कुमार । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-शिल्पशास्त्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० ६६७ ।

३ वास्तुशास्त्र-सनत्कुमार । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-शिल्पशास्त्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णे तथा खण्डित । विशेष-इसमें 'प्रमाणनिर्णय' 'नाममाला' आदि के भी कुछ खण्डित पत्र हैं ।

#### ग्रन्थ नं० ८८० ।

४ शिल्पशास्त्र-....। पत्र सं०-८। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-९०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-शिल्पशास्त्र । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी हैं।

#### ->::<-

# विषय-लक्षण तथा समीक्षा

### ग्रन्थ नं० १४५।

१ नवरत्नपरीत्ता- · · · · · । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षरं प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कश्चड । भाषा-कन्नड । विषय-समीक्षा । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ नं • ७६।

२ धर्मेपरीचा-वृत्तविलास । पत्र सं०-४७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-समीक्षा । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ नं० २१०।

३ धर्मपरीचा-वृत्तविलास । पत्र सं०-१२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-समीक्षा । लेखनकाल-शालि० शक १४३० । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेप-शालि० शक १४३० शुक्ल संवत्सर चैत्र शुक्ला ५ भानुवारके दिन यह ग्रन्थ लिखकर समाप्त हुआ था ।

#### ग्रन्थ नं० २७१।

४ धर्मपरीद्या-वृत्तविलास । पत्र सं०-९२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-समीक्षा । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ नं० ३०९।

५ धर्मपरी ज्ञा-वृत्तविलास । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-समीक्षा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसके लिपिकार वेलतंगिंड-निवासी पायणण हैं ।

#### ग्रन्थ न० १९२।

६ धर्मेपरीत्ता-आचार्यं अमितगति । पत्र स०-३४।पिकत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१३८। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-समीक्षा । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

रचनाकालसम्बद्धी पद्य-

सवत्सराणां विगते सहस्रे ससप्ततौ विक्रमपाधिवस्य । इद निषिद्धान्यमत समाप्त जिनेन्द्रधर्मप्रतिपादि शास्त्रम् ॥

ग्रन्थ न० ७९०।

भ धर्मपरी त्ता-आचार्य अमितगित । पत्र स०-१७ । पांक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपाक्त-९४ । लिपिकन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-समीक्षा । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।
विशेष-इसमें 'सम्यक्त्वकौमुदी' के भी ३ पत्र है ।

ग्रन्थ न० ६२६।

द्र समयपरोत्ता-कवि ब्रह्मदेव (ब्रह्मशिव) । पत्र स०-१०४ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । ब्रक्षर प्रतिपन्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-समीक्षा । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।



# विषय-कियाकाण्ड

ग्रन्थ न० ३२८।

१ श्रातोचना-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-४ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । प्रतिपन्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ न० ३५४।

२ आलोचना-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-६ । पन्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपन्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उ त्तम । ग्रन्थ न० ७९७ ।

३ श्रालोचना-आचार्यं पद्मनन्दी । पत्र स०-४ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'क्रियाकाण्डचूलिका' के भी कुछ पत्र है ।

ग्रन्थ न० ३८।

४ श्रालोचनाक्रिया- ''' । पत्र स०-७५ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- ४ । अपूर्ण तथा अशुद्ध । विशेष-इसमे 'सगीतसमयसार' और 'नीतिसार' के भी कुछ श्लोक है ।

ग्रन्थ न० १६७।

४ श्रालोचनापाठ- ''''। पत्र स०-५। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-५८। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ न० ६७८।

६ आलोचनापाठ- '''। पत्र स०-४४। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिनत-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत। विषय-िक्रयाकाण्ड। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें कन्नड । टीका है, तथा 'कालज्ञानवासुपूज्ययंत्र' का एक पत्र भी । ग्रन्थ नं० ३४६ ।

७ स्त्रालोचनाप्रतिक्रमणः । पत्र सं०-७। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-५५। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत। विषय-क्रियाकाण्ड। लेखनकाल-४।पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें 'त्रिलोकसार' एवं 'गोम्मटसार' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ४००।

द्वरीपथशुद्धि- '' ''। पत्र सं०-५। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-४६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत तथा प्राकृत। विषय-क्रियाकाण्ड। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ नं० ४००।

१ फियाचूितका- । पत्र सं०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-५५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत तथा कन्नड। विषय-क्रियाकाण्ड। लेखनकाल- ४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-यह पद्मनिव्दकृत से भिन्न है।

ग्रन्थ नं० ७५ ।

१० क्रियाकलाप-आचार्यं कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०-७२। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-११५। '
लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत तथा प्राकृत। विषय-क्रियाकाण्ड। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।
विशेष-इसमें कन्नडवृत्ति है। वृत्तिकार माघनन्दी है, जिनका काल शालि० शक १५१० है।

#### ग्रन्थ नं० १४७।

११ क्रियाकलाप-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-१३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- 🗵 अपूर्ण तथा शुद्ध ।
दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

## ग्रन्थ नं० १२२।

१२ कियाकलापटीका- : : । पत्र सं०-४५। पंक्ति प्रतिपत्र-१३। अक्षर प्रतिपंक्ति-१५०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कियाकाण्ड। लेखनकाल- ×। अपूर्णं तथा शुद्ध। दशा-जीर्ण। विशेप-यह 'कियाकलाप' की विस्तृत सुन्दर संस्कृत टीका है।

## ग्रन्थ नं० ३८३।

- १३ कियाकाण्डचूितका-आचार्यं पद्मनन्दी। पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । किपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कियाकाण्ड । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० १३४ ।
- १४ क्रियापाठ-आचार्यं कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ नं ०१५२।

१५ कियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-६७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ नं० २२९।

१६ कियापाठ-आचार्यं कोण्डकुन्द पूज्यपाद आदि । पत्र स०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-कियाकाण्ड । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० २३३।

१७ क्रियापाठ—आचार्यं कोण्डकुन्द आदि । पत्र स०-२७ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६२-। लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा सस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाछ- 🔀 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० २३७।

१८ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-३५ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-सरकृत तथा प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० २५३।

१९ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र स०-४६ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा सस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० २५८।

२० क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र स०-९९ । पक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपिक्त-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० २५९।

२१ क्रियापाठ-आचार्यं कोण्डकुन्द आदि । पत्र स०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत तथा प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ११५।

२२ फ्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र स०-३४ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा सस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० ३५५ ।

२३ क्रियापाठ-आचार्यं कोण्डकुन्द आदि । पत्र स०-१० । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-ई८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-४ । अपूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ३७३।

२४ क्रियापाठ-आचार्यं कोण्डकुन्द आदि । पत्र स०-३७ । पक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा सस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- 💢 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ५३०।

२५ ऋियापाठ-आचार्यं कोण्डकुन्द आदि । पत्र स०-४६ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं ।

#### ग्रन्थ न० ५९३।

२६ ऋियापाठ-आचार्यं कोण्डकुन्द आदि । पत्र स०-१०० । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नडः। माषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य गुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ५९७।

२७ ऋियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र स०-२१ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-४० ।

लिपि-कन्नरः। भाषा-प्राकृत तथा संस्कृतः। विषय-क्रियाकाण्डः। लेखनकाल- 🗴 । अपूर्णे तथा सामान्य शुद्धः। दशा-जीर्णे।

## ग्रन्थ नं० ६०६।

२८ क्रियापाठ-आचार्यं कोण्डकुन्द आदि । पत्र स०-८३ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । क्षिप-कन्नड । माषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-४ । अपूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णे ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

## ग्रन्थ न० ६०८।

२६ क्रियापाठ-आचार्यं कोण्डकुन्द आदि । पत्र स०-१३०। पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-६०। लिपि-नागरी । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणं ।

#### ग्रन्थ न० ६६२।

३० कियापाठ-आचार्यं कोण्डकुन्द आदि । पत्र स०-३६ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ नं० ६८८।

३१ क्रियापाठ-आचार्यं कोण्डकुन्द आदि । पत्र स०-१८८ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा सस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ७९७।

३२ फ्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र स०-६ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणं।

विशेष-इसमें कन्नड श्रीपालचरित शान्तिनाथाष्टक आदि के भी कुछ पत्र है।

## ग्रन्थ नं० ७५३।

३३ क्रियापाठ-आचार्यं कोण्डकुन्द आदि । पत्र स०-७० । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- × । पूर्णं, तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें प्रमाचन्द्रकृत संस्कृत टीका है।

#### ग्रन्थ न० ८२०।

३४ कियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र स०-१८ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

#### ग्रन्थ न० ३५३।

\* ३५ गायत्रीव्याख्यान-\*\*\* । पत्र स०-६ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- 🗴 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-अक्षय सवत्सर, निज ज्येष्ठ शुक्ला ५ के दिन रामराज ने इसे लिखा है।

## ग्रन्थ नं० ४७१।

३६ चत्तारिद्रष्डक तथा थोस्सामिद्र्डक- । पत्र स०-३ । पत्रित प्रतिपत्र-९ । अक्षर

प्रतिपंक्ति—६०। लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—ित्रयाकाण्ड । लेखनकाल— 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ४००।

३७ चैत्यमिकि-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-३३ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-३७ । किपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० ३३।

३८ दशभक्ति-आचार्यं कोण्डकुन्द । पत्र स०-७४ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- 🗙 । अशुद्ध तथा अपूर्णं । दशा-जीर्ण ।

विशेष —इसमें 'रत्नकरण्ड-श्रावकाचार,' 'नक्षत्रमाला', 'जिनमुनितनय' आदि अनेक ग्रन्थों के शिथिल पत्र है।

#### ग्रन्थ न० ४००।

३९ दशभक्ति-आचार्यं कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र स०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा सस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ४०७।

४० दशभक्ति-आचार्यं कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र स०-३०। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-७१। लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा सस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ७५४।

४१ दृशभक्त्यादिसंग्रह्—आचार्य कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र स०-११२ । पक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-७४ । लिपि-कप्रह । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-स्तोत्र क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० ३४६।

४२ दैनिकप्रतिक्रमण्-''''। पत्र स०-२०। पिनत प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिनत ४५। लिपि-कन्नढ । भाषा-प्राकृत तथा सस्कृत । विषय-त्रियाकाण्ड । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ३५१।

४३ देवसिकप्रतिक्रमग्- ''। पत्र स०-१२। पन्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-५८। लिपिकन्नड। भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत। विषय-क्रियाकाण्ड। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-जीर्ण।

#### ग्रन्थ न० ४०१।

४४ देवसिकप्रतिक्रमण्-''' । पत्र स०-१५ । पनित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा सस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ४१७।

४५ देवसिकप्रतिऋमगा- ' '। पत्रस०-२२ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-५० । लिपि-नागरी । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं ।

#### ग्रन्थ न० २०९।

४६ नन्दीश्वरसिक्त-आचार्यं कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र स०-२ । पित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत तथा प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- ४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्य न० ४५० ।

8७ नन्दीश्वरमिक्त-आचार्यं कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र स०-४० । पिक्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें ज्योतिष तथा पूजा सवधी भी कुछ पत्र है।

ग्रन्थ न० ६३७।

४८ नन्दिश्वरभक्ति-आचार्यं कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र स०-७ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० ४००।

४६ निर्धाणभिक्त-आचार्यं कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र स०-१० । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त ४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- 🗴 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें आचार्य-भितत तथा योगिभनित भी है।

ग्रन्थ न० १६७।

५० पान्तिकप्रतिक्रमण्-'''। पत्र स०-४। पन्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपन्ति-६५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-क्रियाकाण्ड। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ३४६।

५१ पात्तिकप्रतिक्रमण- । पत्र स०-३५। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-५६। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय- क्रियाकाण्ड। लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

# ग्रन्थ न० ३५१।

५२ पाचिकप्रतिक्रमण-''' । पत्र स०-२७। पित प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिति-८१। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत। विषय-क्रियाकाण्ड। लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण। ग्रन्थ न०१८५।

५३ प्रतिक्रमग्र-' '' । पत्र स०-४३। पिनत प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिनत-६४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत तथा प्राकृत। विषय-क्रियाकाण्ड। लेखनकाल- ×। अपूर्ण तथा मामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

# ग्रन्थ न० ३३४।

५४ प्रतिऋमण्-''' । पत्र स०-३९ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-िक्रयाकाण्ड । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य। विशेष-इसमें कन्नड टीका हैं।

## ग्रन्थ नं० ७००।

५५ प्रतिक्रमण्-ःःः । पत्र स०-७८। पिक्त प्रतिपृत्र-५। अक्षर प्रतिपिक्त-३४। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-×्। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

# ग्रन्थ'ने० ७४५।

' ५६-प्रतिक्रमण्-····। पत्र'स०-१३। पक्ति 'प्रतिपत्र-१३। अक्षर व्यतिपक्ति-६६। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत। विषय-क्रियाकाण्ड। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें 'प्रायश्चित्त' के भी कुछ पत्र हैं।

## ग्रन्थ न० १९७।

५७ प्रतिक्रमग्रत्रय की टीका-पण्डित प्रभाचन्द्र । पत्र स०-८४। पि प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपिक्त-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसके मूल-रचिता गौतम स्वामी है ।

यन्मोक्षेश्चिदपि (?) प्रसन्नवचने निश्शेषशुद्धिप्रद, व्याख्यात प्रवर प्रतिक्रमणसद्ग्रन्थत्रय भीमता ।

तद्येन\_प्रकटीकृत भवहर शव्दार्थतो निर्मेल स श्रीमान्निकिलोपकारनिरतो जीयात्प्रभेन्दुर्ब्घ ॥ पटेलापद्रके श्रीचन्द्रप्रभदेवपादानामग्रे श्रीगीतमस्वामिकृतप्रतिक्रमणत्रयस्य टीकात्रय श्रीप्रभाचन्द्रपण्डितेन कृतिमिति मङ्गलम् ।

#### ग्रन्थ न० १६७।

४८ बृहत्पान्तिकप्रतिक्रमण्-'। पत्र स०-२३। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-४८। रेलपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत तथा प्राकृत। विषय-क्रियाकाण्ड। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ न० ४०१।

५६ शृहरपात्तिकप्रतिक्रमग्रा— । पत्र स०-२३। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-५३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-त्रियाकाण्ड। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ५७८।

६० सहान्नतप्रतिक्रमण्- । पत्र स०-२४। पिनत प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपन्ति-२६। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत तथा सस्कृत। विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें गणितसंबधी ५ पत्र भी है।

## ग्रन्थ न० १६७ ।

६१ श्रावकप्रतिक्रमण्- ः । पत्र स०-१५। पिन्त प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपन्ति-२६। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-क्रियाकाण्ड। लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

## प्रन्य न० ४६२।

६२ श्रावकप्रतिक्रमग्। ''' ''। पत्र स०-६। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-८२। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत। विषय-क्रियाकाण्ड। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

#### ग्रन्थ न० ८५१।

६३ श्रावकप्रतिक्रमग्रा—'। पत्र स०-७।' पिनत प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत। विषय-क्रियाकाण्ड। लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें 'क्रियाकाण्ड' 'रयणसार' आदि के भी 'कुछ'पत्र है।

## 'ग्रन्थ न० ५८०।

६४ श्रुतमक्ति तथा चारित्रमिक्त-आचार्यं कोण्डकुन्द । पत्र स०-६ । पनित प्रतिपत्र-८ । असर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नह । भाषा-प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है तथा 'त्रिलोकसार' के ११ पत्र है।

## ग्रन्थ न० २०५।

६५ सामाधिकपाठ-आचार्यं अमितगति । पत्र स०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । श्रम्थ न० ४०० ।

६६ सामायिकस्तव- ः ः । पत्र स०-३३ । पित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-४० । लिपि-भन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'चत्तारिदण्डक' एव 'थोस्सामिदण्डक' भी हैं।

ग्रन्थ न० ३५४।

६७ सध्यावन्द्ना-' ''। पत्र स०-४। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ न० ८७९।

६८ संध्यावन्द्ना- ''। पत्र स०-१४। पिनत प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपिनत-३४। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-ित्रयाकाण्ड। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें 'लोकस्वरूप' के भी कुछ पत्र है।

ग्रन्थ न० ८८९।

६९ संध्यावन्द्ना-''''। पत्र स०-६। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिनत-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-क्रियाकाण्ड। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम।

# **->**:≪--

# विषय-स्तोत्र

ग्रन्थ न० १८२।

१ द्यक्तंकस्तोत्र-आचार्य अकलकदेव । पत्र स०-४। पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-८०। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ न० १८५।

२ श्रकलंकस्तोत्र-आचार्य अकलकदेव । पत्र स०-३। पिक्त प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिक्त-६५। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ न० २७२।

३ त्रमकलंकस्तोत्र-भाचार्य अकलकदेव । पत्र स०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० २८४ ।

४ श्रकलंकस्तोत्र-आचार्य अकलकदेव । पत्र स०-१ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ न० ३१८। १ श्रकलंकस्तोत्र-आचार्यं अकलकदेव । पत्र स०-१६ । पत्रित प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिक्त-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ न० ३३५।

६ श्रकलंकस्तोत्र-आचार्य अकलकदेव । पत्र स०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३४१ ।

७ ध्यक्तंकस्तोत्र-आचार्य अकलकदेव । पत्र स०-१० । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपाक्त-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

## ग्रन्य नं० ३८०।

८ अकलंकस्तोत्र-आचार्य सकलंकदेव । पत्र सं०-१।पंक्ति प्रतिपत्र-१०। यक्षर प्रतिपक्ति-१०। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य गृद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्य न०५१७ ।

६ श्रक्तंकस्तोत्र-श्राचार्य अकलकदेव । पत्र स०-२ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपित्त-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ६२८ ।

१० श्रक्लंकस्तोत्र-आचार्यं अकलंकदेव । पत्र स०-१ । पिक्न प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-१०० । किपि-कन्नड । भाषा-सस्तृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्य न० ८६७ ।

११ श्रक्तकस्तोत्र-आचार्यं अकलक्देव । पत्र मु०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विधेष-इमर्में 'अर्हत्स्तोत्र' तथा 'प्रश्नोत्तररत्नमाला' के भी कुछ पत्र है ।

## ग्रन्य न० ६७५।

१२ श्रकलंकस्तात्र-आचार्य अकलंकदेव । पत्र सं०-५ । पिन प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा नामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नट टीका है तथा प्राम्यगीत के भी कुछ पत्र सम्मिलित हैं ।

## ग्रन्थ न० २३७।

- १३ श्रकृतिमचैत्यालयवन्दनाष्टकः— ::। पत्र स०-ई। पक्ति प्रतिपत्र—६। अक्षर प्रतिपक्ति— ७५। लिपि—कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—४। पूर्ण तथा शृद्ध। दशा—सामान्य। ग्रन्य न० २९२।
- १४ श्रस्रसालिकास्तोत्र-' ••••। पत्र म०-२। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-६४। लिपि-कन्नड। माषा-सम्दृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ३८६।
- १४ द्राद्याष्ट्रक-\*\*\* । पत्र स०२। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-५६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-×। पूर्णं तथा मामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'समवसरणाप्टक' भी है ।

## ग्रन्य न० ३९३।

१६ श्रनन्तनाथाष्ट्रक- । पत्र स०-२। पत्रित प्रतिपत्र-७। असर प्रतिपत्रिन-३३। लिप्-कन्नड। भाषा-त्रञ्जड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल- 🔀 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

#### ग्रन्य न० ३९८।

१७ **श्चनन्तनाथाप्टक-ः ःः।** पत्र सं०-१। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-७५। लिपि-कन्नड। मापा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य गृद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्य न० ३३४।

१८ ब्राहेत्सिद्धस्तोत्र- ' पत्र स०-५ । पवित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपवित-७३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्ट्रत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ नं , ३४६।

१६ ग्रह्त्त्स्तोत्र-'' ''। पत्र सं०-६। पिन्त प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपन्ति-४५। लिपि-कन्नह। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य गुद्ध। दशा-सामान्य।

विशैष-इसमें कन्नड 'गोमटेश्वराष्टक' भी सम्मिलित है। ग्रन्थ न० ६६२।

२० द्याहेस्स्तोत्र-पण्डित आशाधर। पत्र स०-२६। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षरः प्रतिपक्ति-३३-। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ न० २३७।

२१ द्याहेद्दक- ' ''। पत्र स०-१। पिन प्रतिपत्र-६। अक्षर'प्रतिपिन्त-७२। लिपि-कन्नड। मापा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

## ग्रन्थ न० २५९।

२२ द्राहें दृष्टक-किव नागचन्द्र । पत्र स०-१ । पित प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपिक्त-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ५०३ ।

२३ द्यादिनाथाष्टक-ः ः । पत्रःस०-८ । पित्रत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपित्र-३१८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३८० ।

२४ ऋषिमण्डलस्तोत्र-श्री गुणनन्दी। पत्र स०-५। पाँक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-५६। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्धः। दशा-जीर्णः।

## ग्रन्थ न० ४७९।

२५ ऋषिमण्डलस्तोत्र-श्री गुणनन्दी। पत्र स०-२। पन्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंन्ति-७१। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत'। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ३५५।

२६ एकीभावस्तोत्र-वादिराज । पत्र स०-३ । पित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ३३६।

२७ एकीभावस्तोत्र-वादिराज । पत्र स०-२३ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण, तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम् ।

#### ग्रन्थ न० ४०० ।

२८ एकीभाषस्तोत्र-वादिराज । पत्र स०-४ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-४८ । लिपि-कन्नष्ठ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० ६६२।

२६ एकी मावस्तोत्र-वादिराज । पत्र स०-२३ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० ७६२।

३० एकी भावस्तोत्र—वादिराज । पत्र स०-३६ । पित्रत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपित्त-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शृद्ध । दशा–सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ७९७ ।

३१ एकीभावस्तोत्र—वादिराज । पत्र स०-९ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्रस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शृद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें संस्कृत टीका भी ह ।

#### ग्रन्थ न० ५७२।

३२ एकीभाव तथा विषापहारस्तोत्र-वादिराज तथा घनजय। पत्र स०-४। पिक्त प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिक्त-६०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इगमें 'लघीयस्त्रय', 'युनत्यनुशासन', 'द्रव्यसग्रह', 'इष्टोपदेश' तथा 'स्वयभस्तोत्र' आदिके भी कुछ अपूर्ण पत्र है।

## ग्रन्थ न० २३७।

३३ एलापुरनेमीश्वराष्ट्रक- । पत्र स०-१। पित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-७३। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ३५३ ।

३४ कलिकुर्**डस्तोत्र**- । पत्र स०-१। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-३७। लिपि-कन्नड। भाणा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

## ग्रन्थ न० ३५४।

३५ कल्याण्मिन्दिरस्तोत्र-कुमुदचन्द्र । पत्र स०-७। पक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपक्ति-४२। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्य न० ३८६ ।

३६ कल्याण्मिन्द्रस्तोत्र-कुमृदचन्द्र । पत्र स०-४ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-४६ । लिपि-कन्नट । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्य न० ४०० ।

३७ कल्याग्रमन्दिरम्तोत्र-कुमुदचन्द्र । पत्र स०-४। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-५०। लिपि-कन्नट । भाषा-सम्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ४५८ ।

३८ कूष्माण्डिनीस्तोत्र । पत्र स०-२। पिक्त प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिक्त-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह नेमिनाथ तीर्थन्द्वरकी यक्षी कूष्माण्डिनीका स्तोत्र हैं।

# ग्रन्थ न० १९७।

३१ कोल्लिपाकापुरचन्द्रनाथस्तोत्र • • • । पत्र स०-३६ । पित प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-रतोत्र । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रारम्भिक पद्य-स जयित जिनचन्द्रस्सद्गुणाम्बोधिचन्द्र कुगतिगजमुगेन्द्रस्तुगभद्रो नगेन्द्र ।

शमदमयमरुन्द्रश्चारुचारित्रसान्द्रश्चरणनतसुरेन्द्र कोल्लिपाकापुरेन्द्र

पाठान्तर-चन्द्रनाथो जिनेन्द्र ॥१॥

## ग्रन्थ न० ३७८।

४० गगुधरगद्य- ''। पत्र स०-४। पिनत प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिन्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

## ग्रन्थ न० ३३४।

४१ गग्राधरस्तोत्र ' । पत्र स०-१६ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ६६२ ।

४२ गग्राधरस्तोत्र-'' । पत्र स०-४। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-×। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्य नं २९८।

४३ गोन्मटिन्निनाष्टक-''''''। ५३ सं०-ई । पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-७०। लिपि-कप्तड । नाषा-संस्कृत । त्रियय-स्तोत्र । लेखनकाल- ४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## प्रत्य नं ३५३।

४४ गोन्मटेशाप्रक-''''। पत्र ५०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-५। जसर प्रतिपक्ति-४१। लिपि-जन्नड। मापा-कन्नड। विषय-न्तोत्र। लेखनव्यल-४। पूर्ण तया गुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-यह श्रवगदलगेलस्य श्री बाहुदली स्वामीकी स्तुति हैं ।

### ग्रन्य नं० ३१३।

४५ गोन्मदेशाष्ट्रकः ''''। पत्र च०-२। पंक्ति प्रतिपत्र-९। व्यवर प्रतिपंक्ति-४३। लिपि-क्यह। नापा-क्यह। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तया सामान्य गृह । दशा-सामान्य।

#### म्रन्य नं ० ३८६।

४६ चतुर्विरातिस्तोत्र-''' । पत्र सं०-२० । पत्ति प्रतिपत्र-५ । अलर प्रतिपत्ति-७० । निर्पि-कन्नह । नापा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । केखनकाल- 🗙 । पूर्ण तया गृह । दशा-इत्तम ।

## प्रन्य नं० ४००।

४७ चतुर्विशतितीर्थङ्करस्तोत्र-त्रती मावनन्दी । पत्र स०-२ । पत्ति प्रतिपत्र-८ । यक्षर प्रतिपत्ति ४६ । लिपि-न्त्रह । माषा-संस्हृत । विषय-स्तोत्र । लेखवनाल-४ । पूर्ण तया मामान्य गुढ़ । तथा-सामान्य ।

## प्रत्य नं० ३२८।

४८ चतुर्विशतितीर्थेद्धरस्तोत्र- \*\*\*\* । पत्र म०-१६ । पिक्त प्रतिणत्र-६ । यसर प्रतिणेक्त-९२ । व्यिन-कन्नड । मापा-चंस्कृत । विषय-स्तोत्र । व्यवनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य द्युद्ध । दशा-सामान्य ।

#### प्रन्य नं० ३८३।

४६ चारणाष्टक-'''' । पत्र मं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । व्यस प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कन्नह । माषा-कन्नड । विषय-स्तीत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शृद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ नं ० ३०१।

५० चारुकीर्तिपरिहताचार्यस्तुति-\*\*\*\* । पत्र सं०-४ः। पन्ति प्रतिपत्र-७ । व्यसर प्रतिपन्ति-३० । निपि-कन्नह । भाषा-कन्नह । विषय-क्तोत्र । नेत्वतकाल-४ । पूर्ण तथा व्ययुद्ध । वद्या-सामान्य ।

विशेप-यह श्रवपबेन्गोलस्य मट्टार्ड डीकी स्तुनि है।

## ग्रन्य नं० ३८४।

५१ चन्त्रमगद्य-चिव राज्यब्रह्म । एवं मं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । असर प्रतिपक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । नापा-संस्कृत । विपत्र-स्तीत्र । नेकनकाल-४ । पूर्ण तथा अगृद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह सिंहगुरस्य चन्त्रप्रमस्त्रामीका स्तोत्र है । प्रतिमें इसका नाम 'दशहरणमालिकापूला' मी लिखा मिलता है ।

#### ग्रन्य नं० ४००।

**५२ चन्त्रभस्तोत्र**-न्नाचार्यं समन्तमद्र । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । असर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाण-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णे तथा सुद्ध । दशा-सामान्य । एन्य नं० २३७ ।

**५३ चन्द्रभाष्टक-'''' ।** पत्र मं०-१।पिक्त प्रतिपत्र-८। बसर प्रतिपक्ति-९६। लिपि-कन्नह। माण-करह। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४।पूर्ण तथा मामान्य गुद्ध। दशा-खीर्ण।

# गन्य नं० ३९८।

१४ चन्द्रनाथस्तोत्र-\*\*\* । पत्र र्स०-१: । पत्रिन प्रतिपत्र-८ । यसर प्रतिपत्रि-६७ । लिपि-कन्द्र । नापा-कन्नद्र । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्व तथा सामान्य शुद्ध । वसा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ३२८।

४५ चन्द्रनाथाष्टक-मृनिचन्द्र । पत्र स०-१३ । पिन्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिन्ति-८३ । लिपि-कन्नड । माषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० ४००।

५६ चन्द्रसाथाष्टक- ' '' । पत्र स०-१ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-५० । लिपि-कन्नड । मापा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ३९३ ।

५७ चन्द्रनाथाष्टक- ' । पत्र स०-१३ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० २३७।

१८ जिनचतुर्विशतिका-कवि भूपाल। पत्र स०-१। पक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपक्ति-७२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

#### ग्रन्थ न० २६७।

५६ जिनचतुर्विशतिका-किन भूपाल । पत्र स०-३ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-६६ । लिपि-कन्नड । भापा-सस्कृत । विपय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० २६६।

- ६० जिनचतुर्विशतिका-कवि भूपाल । पत्र स०-२३ । पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-६५। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ३७३ ।
- ६१ जिनचतुर्विशतिक।-कवि भूपाल । पत्र स०-५ ,। पक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।
- ग्रन्थ न॰ ४००। ६२ जिनचतुर्विशतिका-कवि भूपाल। पत्र स०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-४४। लिपि कन्नड। भाषा-संकृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

#### ग्रन्थ न० ५७२।

- ६३ जिनच्तुर्विशतिका-किन भूपाल । पत्र स०-१६ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । निषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ७९१ ।
- ६४ जिनचतुर्विशतिका-किन भूपाल । पत्र स०-१२ । पित्तः प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपित्त-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

#### ग्रन्थ न० ७९७।

६५ जिनचतुर्विशतिका-किव भूपाल । पत्र स०-६३ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें सस्कृत टीका भी है ।

#### ग्रन्थ न० १२२ ।

६६ जिनशतक-आचार्य समन्तभद्र । पत्र स०-१० । पिनत प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपिनत-१५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तीत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित । विशेष-इसमें महाकवि नर्रासह भट्ट कृत संस्कृत वृत्ति भी है ।

## 'ग्रन्थ न० २०५।

६७ जिनशतक-आचार्यं समन्तभद्र । पत्र सं०-७ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ नं० ३६६।

६८ जिनसहस्रनाम-आचार्य जिनसेन। पत्र स०-७। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिनत-५६। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

## ग्रन्थ न० ५१७।

- ६९ जिनसहस्रनाम-आचार्य जिनसेन । पत्र स०-६ । पित प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपित-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ नं० ६३७ ।
- ७० जिनसहस्रनाम-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-९ । पिन्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिन्त-४६ । िलिप-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें नागार्जुनके कुछ यत्र भी है ।

# ग्रन्थ न० ६६२।

- ७१ जिनसहस्त्रनाम-आचार्य जिनसेन । पत्र स०-४५ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपित-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ६७५ ।
- ७२ जिनसहस्रनाम-आचार्य जिनसेन । पत्र स०-७ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-५० । किपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । ग्रन्थ न० २९२ ।
- ७३ जिनाच् रमाला-महाकवि पोन्न। पत्र स०-२५ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिन्त-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ६४९ ।
- ७४ जिनात्त्र्यमाला-महाकवि पोन्न । पत्र स०-२३ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३९८ ।
- **७५ तीर्थङ्कराष्टक** ' '''। पत्र स०-१३ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ न० २३७।

- ७६ त्रेलोक्यरत्तामिण्स्तव-"" । पत्र स०-१। पित प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपित-७५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० २६७।
- ७७ त्रैलोक्यचूडामिण्स्तव-'' ''' । पत्र स०-३। पिनत प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिनत-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा-सामान्य।

## ग्रन्थ न० ३५५।

- ७८ त्रैलोक्यचूडामिश्वस्तव-····। पत्र स०-६। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-४५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विपय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ नं० ३६८।
- ७६ त्रैलोक्यचूडामिण्स्तव-''''। पत्र स०-५ द्वा पिक्त प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिक्त-४३। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष–इसका अपर नाम 'छत्तीसरत्नमाला' मिलता है।

#### ग्रन्थ न० ३७१।

८० त्रेलोक्यचिन्तामिण्स्तव- · · । पत्र स०-४२ । पतित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ४००।

८१ **हष्टाष्टक-मु**नि सकलचन्द्र । पत्र स०-१६ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ५७२।

८२ हुन्दान्दक-मुनि सकलचन्द्र । पत्र स०-१ । पन्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपन्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ६६२।

८३ हुष्टाष्टक-मृनि सकलचन्द्र । पत्र स०-२ । पिक्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिक्त-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ३९१ ।

८४ नवरेवतास्तोत्र- '' । पत्र स०-२ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाळ-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ६८९।

द्ध् निजाष्टक-आचार्यं योगीन्द्रदेव । पत्र स०-२५ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'द्रव्यसग्रह' भी है ।

# ग्रन्थ न० ८२७।

द् नित्यानन्दाष्टकः । पत्र स०-३ । पित्र प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित । विश्रेष-इसमें वालचन्द्र कृत कन्नड टीका भी है एव 'तार्किकरक्षा', 'द्रव्यसग्रह' तथा 'नागकुमारचर्ति' आदिके कुछ पत्र है ।

#### ग्रन्थ न० ३९८।

८७ निर्मलरूपस्तवन-\*\*\*\* । पत्र स०-२६ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३७१ ।

कञ्च । भाषा-कञ्च । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० २९९।

८६ निरञ्जनाष्टक- ''। पत्र स०-५। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-४८। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

#### ग्रन्थ न० ६८९।

१० निरञ्जनाष्टक- ः । पत्र स०-२ । पनित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

#### ग्रन्थ न० २५१।

ह१ निर्वागुलद्मीपतिस्तोत्रः । पत्र सं०-४। पन्ति प्रतिपत्र-४। अक्षरं प्रतिपन्ति-७५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

# ग्रन्थ नं० ३४४ ।

६२ निर्वाणलच्मीपतिस्तोत्र- ११ । पत्र स०-१६ । पित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिति-१२५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल– ×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण । ग्रन्थ न० ३८३।

**१३ निर्वाण्तच्मीपतिस्तोत्र-'''।** पत्र सं०-३। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-९२। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० ४६२ ।

**६४ निर्वाण्लदमीपतिस्तोन्न- : ा पत्र स०-२। पन्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंनित-८४।** लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ६६२।

ह्य निर्वाण्लच्मीपतिस्तोत्र- पत्र स०-२ । पत्र प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपत्रि-३३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्नोत्र । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० २९२ ।

ह्६ नेमिनाथस्तोत्र- । पत्र स०-४। पित प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिन्ति-५२। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३५३।

**९७ परमानन्दस्तोत्र-'''।** पत्र स०-३। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-४०। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० ७५६ ।

ह्ट परमानन्दस्तोत्र- । । पत्र स०-१। पिनत-९। अक्षर प्रतिपिनत-९४। लिपि-कन्नड। ाभाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९८ । **६६ पार्श्वजिनाष्ट्रक्**-' '' । पत्र-१६ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### गन्थ न० ३५३।

१०० पार्श्वनाथाष्ट्रक- · · · । पत्र स.०-३ । पक्ति प्रतिपत्र-(१) × । अक्षर प्रतिपक्ति-२९ । लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-यह कनकगिरिस्थ श्री पार्श्वनाथका स्तोत्र है। ग्रन्य न० ७७१।

१०१ पार्श्वेनाथाष्टक-आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र स०-७३ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-७३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह मत्राक्षरयुक्त स्तीत्र है। इसमें प० श्रुतकीर्ति विरचित संस्कृत टीका तथा दूसरा भी एक मत्राक्षर-युक्त 'पार्श्वनाथाष्टक' है ।

ग्रन्थ न० ८८०। १०२ पार्श्वनाथाष्टक- ' ' । पत्र स०-३। पन्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपन्ति-४०। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'कलिकुण्डाराघना' 'गोम्मटाष्टक' तथा 'वेदीप्रतिष्ठा' आवि कई विषयोंके अधरे पत्र है।

## ग्रन्थ न० ३२०।

<sup>-</sup>१०**३ पार्श्वनाथस्तो**त्र–विद्यानन्दी । पत्र स०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ३७८।

१०४ पार्श्वनाथस्तोत्र—' '' । पत्र स०-४६ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-प्रतिमें इसका नाम 'पार्श्वनाथघोष' लिखा मिलता है ।

# ग्रन्थ नं० २३७।

१०५ पञ्चनमस्काराष्टक ''' । पत्र स०-६ । पन्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपन्ति-७२ । लिप-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० २३७।

१०६ पद्धपदाष्टक- ' '' । पत्र स०-१। पिनत-६। अक्षर प्रतिपन्ति-७०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

## ग्रन्थ न० ३९८।

१०७ पद्भपरमेष्टिस्तोत्र- । पत्र स०-१ । पित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० १८२ ।

१०८ भक्तामरस्तोत्र-आचार्य मानतुग । पत्र स०-४ । पन्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपन्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ३१५ ।

१०६ भक्तामरस्तोत्र-आचार्य मानतुग । पत्र स०-५ । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३५४ ।

११० भक्तामरस्तोत्र—आचार्य मानतुग। पत्र स०-२०३। पिक्त प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपिक्त-४२। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें संस्कृत टीका भी है।

## ग्रन्थ न० ३८६।

१९१ भक्तामरस्तोत्र-आचार्यं मानतुग । पत्र स०-७ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० ३९८।

- ११२ भक्तामरस्तोत्र—आचार्य मानतुग । पत्र स०-५६। पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-८० । लिपि-कन्नड । भोषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ४०० ।
- ११३ मक्तामरस्तोत्र-आचार्यं मानतुग। पत्र स०-५। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।
- ग्रन्थ न० ४५९। १९४ भक्तामरस्तोत्र-आचार्य मानतुग। पत्र स०-४। पक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपक्ति-४८। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ७७७।
- ११५ भक्तामरस्तोत्र-आचार्यं मानतुग । पत्र स०-४६ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-५४ । लिपि-नागरी । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विषय-इसमें सस्कृत 'पाइवेंनाथाष्ट्क' मी है ।

## ग्रन्थ न० ६६७।

- ११६ **भैरवपद्मावतीस्तोत्र**—आचार्य मिल्लिषेण । पत्र स०-१ । पिक्त-११ । अक्षर प्रतिपिक्त-५० । लिपि-कन्नड । भोषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा मामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३६६ ।
- ११७ मैलापुरनेमीश्वरस्तोत्र- ''' । पत्र स०-१। पक्ति-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-६४। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ३८३।
- ११८ मेलापुरनेमीश्वराष्ट्रक- : : । पत्र स०- १ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-८० । किपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० ३९३।

११६ मैलापुरनेमिश्वराष्टक- '''' । पत्र स०-२३ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ८९३।

- १२० **मङ्गलाष्टक** । पत्र स०-९। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिन्ति-२९ । लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रन्थ न०३९६।
- १२१ वर्द्धेमानस्तवन- : : । पत्र स०-५ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत तथा कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा अगुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ न० ३९३।

१२२ वल्लभाष्टक- ' '''। पत्र स०-१३ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । 'पि विशेष-इसके प्रत्येक पद्यके अन्तमें 'वल्लभ' शब्द है ।

## ग्रन्थ न० ३५५।

- १२३ विषापहारस्तोत्र-महाकवि धनजय। पत्र स०-३। पित प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपित्त-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ३६६।
- १२४ विषापहारस्तोत्र-महाकवि धनजय । पत्र स०-२३ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शृद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ६६२ ।
- १२५ विषापहारस्तोत्र-महाकवि घनजय । पत्र स०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-४० । लिपि-कन्नढ । भाषा-सम्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।
- ग्रन्थ न० ७६२ । **१२६ विषापहारस्तोत्र**—महाकवि वनजय । पत्र स०-३५ । पक्ति प्रतिपत्र—५ । अक्षर प्रतिपक्ति—५० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । लेखनकाल— × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—इसमें 'स्वप्नावली' भी हैं ।

## ग्रन्थ नं० ७९७।

१२७ विषापहारस्तोत्र-महार्काव घनजय । पत्र स०-१२ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-४८ । लिपि-कन्नड भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इममें संस्कृत टीका भी है ।

## ग्रन्थ नं ० ८०४।

- १२८ विषापहारस्तोत्र-महाकवि धनजय । पत्र स०-३ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्य न०१९७ ।
- १२६ वृषभनाथगद्य-\*\*\*\* । पत्र स०-४ । पिक्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-६५ । लिपि-कन्नड । भोषा-संस्कृत । विषय-रंतीत्र । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० २३७ ।
- १३० वृषभनाथगद्य- ' । पत्र स०-२। पिनत प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिनत-५४। छिपि-कन्नह । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ५७२।
- १३१ **युषभनाथगद्य**-कवि हस्तिमरल । पत्र स०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नष्ट । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रत्य न० ४०० ।
- १३२ यृपभाष्टकः । पत्र स०-१। पवित-८। अक्षर प्रतिपवित-४७। लिपि-कन्नहः। भाषा-सस्कृतः। विषय-स्तोत्रः। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्धः। दशा-उत्तमः। ग्रन्थः न०३९८।
- १२३ **ष्ट्रषभजिनाष्टक** । पत्र स०-ई । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ३३४ ।
- १३४ शारदास्तोत्र- ः । पत्र स०-१। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-७०। लिपि-कन्नर्छ। भाषा-मस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।
- ग्रन्थ न० ४००। १३५ शारदास्तोत्र- ' । पत्र स०-१।पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-४६। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।
- ग्रन्थ न० ३९३ । १३६ शङ्कद्वाण्टक-भानुकीति । पत्र स०-२ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-३० । लिपि-कन्नह । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।
- ग्रन्य न० ३९८। १३७ शङ्कृदेवाष्ट्रक-भानुकीति । पत्र स०-३ । पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शृद्ध । दशा-उत्तम ।
- ग्रन्थ न० ४९९। १३८ शङ्खदेवाष्ट्रकः—भानुकीर्ति। पत्र स०-१। पक्ति-९। अक्षर प्रतिपक्ति-१००। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्णं।
- ग्रन्थ न० ४७१। १३८ शान्त्यप्टक-आचार्य पूज्यपाद। पत्र स०-४६। पिक्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-६०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तीत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है।
- ग्रन्थ नं० ८०६। ४ १४० शान्त्यष्टक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-२। पन्ति प्रतिपत्र-५। सक्षर प्रतिपन्ति-४५। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणं तथा खण्डित ।

विशेप-इसमें न्यायसम्बन्धी तथा 'दशवैकालिक' आदि के भी कुछ खण्डित पत्र है।

# ग्रन्थ न० ३७४।

- १४१ शान्त्यष्टकटीका- ' । पत्र स०-५३ । पत्रित प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्य न० ८१३ ।
- १४२ शान्तीश्वरनः ज्ञानाला- । पत्र म०-६। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिनत-२१। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल- ×। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ न० ३५३।
- १४३ षडारचक्रमाला-देवनन्दी । पत्र स०-१ । पित्त-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ न० ११।

१४४ समवसरणाष्टक-आचार्य विष्णुसेन । पत्र म०-५ । पक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

## ग्रन्य न० १४९।

१४५ समवमरणस्तोत्र-आचार्य विष्णुसेन । पत्र स०-५ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० ३४८।

१४६ समवसरणस्तोत्र-आचार्य विष्णुसेन । पत्र स०-८३ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-४० । लिपि-कञ्चल । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कञ्चल टीका है ।

#### ग्रन्थ न० ३८३।

१४७ समवसरणस्तोत्र-आचार्य विष्णुसेन । पत्र म०-३ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-८१ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नै० ३९८ ।

१४८ समवसरणस्तोत्र-आचार्यं विष्णुसेन । पत्र स०-३ । पवित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विपय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० ५४७।

१४६ समवसरणस्तोत्र-आचार्य विष्णुसेन । पत्र स०-२८ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्णं ।

विशेप-इसमें कन्नड टीका भी है, एव 'शात्यप्टक' 'एकीभावस्तोत्र' भीर 'विपापहारस्तोत्र' के कुछ खिण्डत पत्र भी है।

#### ग्रन्थ न० ७४९।

१५० समवसर्यास्तोत्र-आचार्यं विष्णुसेन । पत्र स०-६ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-३७ । लिपि-कन्नढ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दना-उत्तम । विशेष-इसमें 'सुप्रभातस्तोत्र' तथा 'स्वप्नावली' के भी कुछ पत्र है ।

# ग्रन्थ न० ७५६।

१५१ समवसरणस्तोत्र-थाचार्य विष्णुसेन । पत्र स०-१ । पवित-९ । अक्षर प्रतिपवित-११९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

## ग्रन्थ न० ८१९।

१५२ समवसरगुस्तोत्र-आचार्यं विष्णुसेन । पत्र स०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षरं प्रतिपक्ति-९७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'नागकुमारचरित' के भी कुछ पत्र है।

ग्रन्थ न० ४००।

१५३ समवसरणाष्टक-''' । पत्र स०-१। पन्ति-७। अक्षर प्रतिपन्ति-४८ । लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्य न० ३९८।

१५४ सरस्वतीरगले-' ' । पत्र स०-२। पिक्त प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिक्त-६७। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ न० ३४६।

१४४ सरस्वतीस्तोत्र- । पत्र स०-४। पिनत प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपिनत-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ न० ४५९।

१५६ सरस्त्रतोस्तोत्र-' '। पत्र स०-६। पिक्त प्रतिपत्र-१३। अक्षर प्रतिपिक्त-६०। लिपि-कन्नट। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न०६६२।

१५७ सरस्वतीस्तोत्र-आचार्यं पद्मनन्दी । पत्र स०-३। पिनतः प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिनत-३३। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ६६२।

१५८ सरस्वतीस्तोत्र- ः । पत्र स०-२। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-२०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें संस्कृत 'रत्नत्रयस्तोत्र' भी हैं।

ग्रन्थ न० ७५१।

१५६ सरस्वर्तास्तात्र- '। पत्र स०-४। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-९०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमे अग्गलदेव कृत कन्नड 'समवसरणगद्य' भी है।

ग्रन्थ न० ७५३।

१६० सरस्वतीस्तोत्र-पण्डित आशाघर । पत्र स०-६६ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ न० ८३४।

१६१ सरस्वतीस्तोत्र- ः । पत्र स०-१। पित्त-७। अक्षर प्रतिपित्ति-६४। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'जिनसहस्रनाम', पचपरमेष्ठिपूजा,'जिनचतुर्विशतिका' एव 'एकीभावस्तोत्र' आदि ग्रन्थोके भी अधूरे पत्र है।

ग्रत्थ न० १५२।

१६२ सहस्रतामस्तोत्र-आचार्यं जिनसेन । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० ३९६।

१६३ सिद्धगद्य- ' ' । पत्र म०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा अगुद्ध । दथा-जीर्ण ।

## ग्रन्थ न० ६६२।

१६४ सिद्धस्तोत्र-पण्डित आशावर । पत्र स०-२ । पत्तिन प्रतिपत्त-८ । अक्षर प्रतिपत्ति-३१ । लिपि-कन्नढ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दथा-उत्तम ।

## ग्रन्य न० ८८५।

१६५ सिद्धपरमेष्ठिगद्य- : : : । पत्र सं०-१०। पित्र प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपित्त-३४। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें तीर्यं द्धरणद्य भी है।

## ग्रन्य न० १९८।

१६६ सिद्धिप्रियस्तोत्र-आचार्य देवनन्दी । पत्र स०-८ । पिन प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-७ । लिपि-कन्नड । मापा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसका अपरनाम 'पडारचक' है । इसमें संस्कृत टीका भी है ।

# ग्रन्थ न० ३०८।

१६७ सुप्रभातस्तोत्रः । पत्र म०-६। पिन्त प्रतिपत्रम्६। अक्षर प्रतिपित्रम्५। लिपिम् कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-×। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

## ग्रन्य न० ४००।

१६८ सुप्रभातस्तोत्र- ' ''। पत्र स०-१ई । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-मामान्य ।

# ग्रन्थ न० ४९९।

१६६ सुप्रभातस्तोत्र तथा स्वप्नावली- : : । पत्र म०-२। पिततः प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिति-१००। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणं । विशेष-इसमें कन्नड 'निर्वाणलक्ष्मीपतिस्तोत्र' भी हैं।

# ग्रन्थ न० ३२।

१७० स्तोत्रसंग्रह्-( पचस्तोत्र, चतुर्विश्वतिस्तोत्र आदि ) '''। पत्र स०-४३। पिनन प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिन्त-७२। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा अशुद्ध। विशेष-इसमें 'तत्त्वार्यसूत्र' और 'दशमित' के भी कुछ पत्र है।

## ग्रन्य न० ९३।

१७१ स्तोत्रसंग्रह्- " । पत्र सं०-४१। पित प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-७३। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत तथा सस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल- ×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीणं। विशेष-इसमें 'थोस्सामि दण्डक' आदि कुछ स्तोत्र है।

## ग्रन्य न० १०७।

१७२ स्तोत्रसंग्रह्—किव भूपाल आदि । पत्र स०-५० । पिवत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिवत-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा अगुद्ध । दशा-जीणं । विशेष-इसमें 'जिनचतुर्विशतिका', 'विषापहार', 'अकलक', आदि स्तोत्र तथा 'तत्त्वार्यंसूत्र' भी है । ग्रन्थ नं० १६३ ।

१७३ स्तोत्रसंग्रह्-किव माणिकदेव। पत्र सं०-२५। पित्र प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-३४। लिपि-कन्नड। मापा-कन्नड। विपय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-यह ग्रन्थ मटूरके सुकवि माणिकदेवके द्वारा रचा गया है। इसमें चतुर्विशिक्तव, पादर्वनाथ-स्तोत्र, जिनस्तवन आदि कई स्तोत्र है।

## ग्रन्थ न० ५१९।

१७४ स्तोत्रसग्रह्—आचार्य कोडकुन्द आदि । पत्र स०-३६ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ७५३।

१७५ स्तोत्रसंग्रह्-आचार्य मानतुग आदि । पत्र स०-९ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नष्ट । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'भनतामर', 'समवसरण', निर्वाणलदमीपति' आदि स्तोत्र सग्रह किय़े गये हैं ।

ग्रन्थ न० ७८३।

१७६ स्तोत्रसंग्रह-पण्डित आशाघर आदि । पत्र स०-५ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'अर्हुत्स्तोत्र' 'सिद्धस्तोत्र' 'गणघरस्तोत्र' 'रत्नत्रयस्तोत्र' तथा 'सरस्वतीस्तोत्र' है ।

ग्रन्थ न० ८८९। १७७ स्तोत्रसंग्रह्-किन भूपाल आदि । पत्र स०-१४३ । पनित प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । निषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'जिनचतुर्विशतिका', 'मगलाष्टक', 'दृष्टाष्टक', 'समवसरणाष्टक' 'अद्याष्टक' तथा अहेत्-स्तोत्र है, एव 'सिद्धभित' 'नन्दीश्वरपूजा' तथा 'सिद्धपूजा' के भी कुछ पत्र है।

#### ग्रन्थ न० ४००।

१७८ स्वप्नावितस्तव-' । पत्र स०-२। पवित प्रतिपत्र-८। बक्षर प्रतिपक्ति-४०। लिपि-कन्नइ। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ३६६।

१७६ स्वयम्भूस्तोत्र-आचार्यं समन्तभद्र। पत्र स०-११। पवित प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-६८। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

१८० स्वयम्भूस्तोत्र-आचार्य समन्तभद्र। पत्र स०-११। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-४९। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य। प्रन्थ न०५१७।

१८१ स्वयम्भूस्तोत्र-आचार्यं समन्तभद्र। पत्र स०-९। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-६०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ७७७।

१८२ स्वयम्भूस्तोत्र-आचार्यं समन्तभद्र । पत्र स०-२४। पन्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं । विशेष-इसमें 'जिनचतुविक्तिकास्तोत्र' आदि के भी कुछ पत्र हैं ।

# विषय-भजन तथा गीत

## ग्रन्थ न० ३२३।

१ **टद्यराग** [प्राभातिक-गीत] - ' ' । पत्र स०-४३ । पित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपित्त-२८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा मामान्य गुद्ध । दगा-मामान्य । ग्रन्थ न० ३९१ ।

२ नेमिकुमारगीत- ' ''''। पत्र स०-३। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-गीत। लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा मामान्य गुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्य न० ३९१।

३ तन्दीश्वरगीत- : । पत्र स०-१०। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दणा-जीर्ण।

## ग्रन्थ न० ३२९।

४ पद्मावतीभज्ञन- ' । पत्र स०-२। पिन्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिन्ति-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-भजन। लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

## ग्रन्थ न० ८८८।

५ पार्श्वेनाथपछ्चकल्याणका गीत- '। पत्र स०-१९। पक्ति प्रतिपत्र-८। यक्षर प्रतिपक्ति३४। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य गृद्ध । दशा-उत्तम ।
विशेष-इसमें 'नेमीश्वरमगलारती' 'पचाणुव्रतगीत' 'त्रिलोकचरित' तथा 'आदिनाथयक्षगान' भी है ।

## ग्रन्य न० २९२।

६ भजनसंग्रह्-''' । पत्र स०-१२। पक्ति प्रतिपत्र-९। श्रक्षर प्रतिपक्ति-९०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-भजन। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा मामान्य गुद्ध। दगा–सामान्य।

# ग्रन्य नं० ३३२।

७ भजनसंग्रह्- • • • । पत्र सं०-७२ । पिक्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिक्त-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्य नं० ३८६।

द भजनसंग्रह- · · · · । पत्र म०-६। पिन्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिन्त-५४। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दगा-उत्तम । ग्रन्य न० ३९३ ।

**६ भजनसंत्रह-ःःः** । पत्र सं०-१९। पिनत प्रतिपत्र-१२। अक्षर प्रतिपिनत-३९। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-भजन । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्य न० ४६५।

१० भजनसंग्रह्- : । पत्र स०-१०४। पक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपक्ति-६६ । लिपि-कन्नड। मापा-कन्नड। विषय-भजन। लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा अगुद्ध। दशा-सामान्य।

# ग्रन्य नं० ४८२।

११ सजनसंग्रह्- । पत्र स०-१०। पिक्त प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपिक्त-२०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-मजन। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

# ग्रन्य नं० ८१५।

१२ भजनसंग्रह- · · · । पत्र स०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-७९ । लिपि-क्षत्र । भाषा-कन्न । विषय-भजन । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ८६६।

**१३ भजनसंग्रह**— ' '। पत्र स०-९। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-२९। लिपि-कन्नरु। भाषा-कन्नरु। विषय-भजन। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० ८८६।

१४ सजनसम्रह- ''' । पत्र सं०-२५ । पित्र प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा सामान्य श्रद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें 'सध्यावन्दना' 'नवग्रहमत्र' एव २४ तीर्थंकरोकी जयमाला, भी है ।

ग्रन्थ न० १४५ ।

१५ षोडशभावनोदयराग- । पत्र स०-२। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-८५। छिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-गीत। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

# ->:≪-

# विषय-प्रकीर्णक

### ग्रन्थ न० २०६।

१ गायज्यादिसग्रह्—' । पत्र स०-२४। पित प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपिक्त-४४। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृतं। विषय-विविध। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-यह एक सग्रह-ग्रन्थ है। इसमें कई विषय है।

#### ग्रन्थ न० २८४।

२ रत्नकरण्डश्रावकाचारादिसग्रह्-आचार्यं समन्तभद्र आदि । पत्र स०-२५। पिन्त प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिन्ति-६५। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत तथा कन्नड। दिषय-विविध। लेखनकाल-×। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

#### ग्रन्थ न० १८८।

३ वाक्यमखरी-अनन्तपण्डित । पत्र स०-१६ । पिन्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिन्ति-८८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-विविध । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ४५१ ।

४ विवेकविलास-जिनदत्तसूरि । पत्र स०-५५ । पनित प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपनित-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म, ज्योतिष बादि । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ४५४।

- प्रविवेकविलास्-जिनदत्तसूरि । पत्र स०-७६ । पित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्म, शिल्प आदि । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ुग्रन्थ न० २८४ ।
- ६ सुभाषितसम्रह्—ः । पत्र स०-२२। पनित प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपन्ति-७८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-विविध। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ६५७।

७ सुभाषितसग्रह् । । पत्र स०-३७। पिकत प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपिक्त-२२। लिपिकन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-विविध। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।
विशेप-इसमें कुछ ग्राम्यगीत भी सम्मिलित है।

# ग्रन्थ नं० २८२।

द्व सुभाषित-वैद्य- क्योतिषादिसंग्रह- । । पत्र स०-२७ । पश्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिति-४५ । स्त्रिप-कन्नड । भाषा-सस्कृत तथा कन्नड । विषय-विविध । लेखनकाल- 🗶 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० ५४१।

ह सुक्तिमुक्तावली-पण्डित जल्हण । पत्र स०-१०१ । पन्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपन्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-विविध । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष-यह एक सग्रहग्रन्थ हैं । इसके सग्रहकर्ता जल्हण राजा अरिवृन्दनाथके पुत्र हैं । इनके महीधर, शाम्ब और गगाधर नामके तीन सहोदर थे । इनमें से महीधरने राजा विज्जणको युद्धमें परास्त किया था । यह उल्लेख ग्रन्थके प्रारम्भिक पद्योमें मिलता हैं । इसमें 'प्रतापरुद्रीय' के भी कुछ खण्डित पत्र है ।

### ग्रन्थ न० २२०।

१० सृक्तिसंग्रह्- ' । पत्र स०-११०। पित्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपित्त-९४। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-विविध । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

# ग्रन्थ न० ६९४।

११ संग्रह- \* \* \* \* \* । पत्र स०-६० । पित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत, सस्कृत तथा कन्नड । विषय-विविध । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कई विषयोंके अपूर्ण पत्र सग्रह किये गये हैं ।

## ग्रन्थ न० ७३९।

१२ संग्रह्- । पत्र स०-३७। पिवत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-४६। लिपि-कन्नह। भाषाप्राकृत, सस्कृत तथा कन्नह। विषय-विविध। लेखनकाल- ×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-र्जाणं।
विशेष-इसमें 'भाषामजरी' 'क्षत्रचूडामणि' 'धन्यकुमारचरित' आदि कतिपय ग्रन्थोके अपूर्ण पत्र
संग्रह किये गये है।

## ग्रन्थ न० ७५७।

**१३ संग्रह**—आचार्य समतभद्र आदि । पत्र स०-६० । पक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपक्ति⇒४० । लिपि— कन्नड । भाषा—सस्कृत तथा कन्नड । विषय–विविध । लेखनकाल—४ । अपूर्ण तथा सामान्य शृद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—इसमें 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' 'श्रृतभक्ति' आदि कई ग्रन्थोके अपूर्ण पत्र स'ग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ न० ७६५।

१४ संग्रह- '' । पत्र स०-२६। पिनत प्रातपत्र-९। अक्षर प्रतिपिनत-४४। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-विविध। लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'शाकटायनप्रक्रिया' 'समवसरणस्तोत्र' आदिके अपूर्णं पत्र सग्रह किये गये हैं ।

## ग्रन्थ न० ७६६।

१५ संग्रह- : : : । पत्र स०-१३० । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत, संस्कृत तथा कन्नड । विषय-विविध । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमे व्याकरण, धर्म, न्यायादि अनेक विषयोके अपूर्ण पत्र सगृहीत है ।

#### ग्रन्थ न० ८०३।

**१६ संग्रह**-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र स०-६८ । पित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपित्त-५४ । स्तिप-कन्नड । भाषा-प्रकृत, संस्कृत तथा कन्नड । विषय-विविध । लेखनकाल- ४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'प्रतिक्रमण' 'वृत्तरत्नाकर' 'प्रश्नोत्तररत्नमाला' आदिके अपूर्ण पत्र सगृहीत है ।

## ग्रन्थ न० ८१०।

१७ संग्रह्-पण्डित आशाघर आदि । पत्र स०-७६। पिक्त प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिक्त-४७। लिपिकन्नड । भाषा-सस्कृत तथा कन्नड । विषय-विविध । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।
विशेष-इसमें 'सरस्वतीस्तोत्र' 'गणधरस्तोत्र' पचपरमेष्ठिस्तोत्र' तथा 'रघुवश' आदिके अपूर्ण पत्र सगृहीत है ।
ग्रन्थ न० ८२६।

१८ संग्रह्-आचार्यं समन्तभद्र आदि । पत्र स०-१२४ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत, प्राकृत तथा कन्नड । विषय-विविध । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' 'मुनिसुव्रत-काव्य' आदि कई ग्रन्थोंके अपूर्ण पत्र सगृहीत है। ग्रन्थ न० ८३३।

१६ संग्रह-कल्याणकीर्ति बादि। पत्र स०-९३। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-३५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड, प्राकृत, संस्कृत तथा तिमल । विषय-विविध । लेखनकाल-४। अपूर्णे तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें 'ज्ञानचन्द्राभ्युदय' 'दृष्टाष्टक' 'मगलाष्टक' आदि कई ग्रन्थोंके अपूर्ण पत्र सगृहीत है। ग्रन्थ न० ८८७।

२० सम्रह्—भ० चारुकीति आदि । पत्र स०-४६ । पित्र प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपित्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-विविध । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें 'गीतवीतराग' 'मगलाप्टक' 'महाभिषेक' तथा पूजा आदि कई विषयोके अपूर्णं पत्र सगृहीत है ।



# मूडबिद्री जैनभवनके ताडपत्रीयग्रन्थ

# विषय-सिद्धान्त

## ग्रन्य न० २०४।

१ कम्मपयि [कमेप्रकृति ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-२४ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पिक्त-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वम्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० ४७।

२ कमें प्रकृतिनिरूपण्-आचार्य अभयनन्दी । पत्र स०-८ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-८७। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० २३६ ।

३ गोस्मटसार [जीवकाएड] -आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-१५ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

क्शिय-इसमें केशवण्णकी कर्णाटकवृत्ति है।

# ग्रन्य न० १८४।

श्र गोम्मटसार [ जीवकाएड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-४७ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रति-पिक्त-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल ।

विग्रेष-इसमें कन्नड टीका है।

## प्रत्य न० ५९ ।

४ गोम्मटसारकर्मकाण्डस्थसंदृष्टि- · · · · · । पत्र सं०-२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-२० । अक्षर प्रतिपक्ति-२५ । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-काग्रज । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्य न० ११७ ।

६ चतुर्वेन्घनिरूपण्- '''' पत्र स०-११। पिन्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिन्त-५१। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल- 🗶। पूर्णं तथा शृद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसके प्रतिलिपिकार पायण्ण सेट्टि है।

# ग्रन्य नं० ७।

७ तत्त्वानुशासन-मृनि नागसेन । पत्र स०-६ । पिन्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिन्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० ११७ ।

द तत्त्वानुशासन-मुनि नागमेन । पत्र म०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० ८७ ।

६ तिभंगी-सिद्धान्तचक्रवर्ती कनकनदी। पत्र सं०-४। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-८०। िलिप-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

#### ग्रन्थ न० ८७ ।

१० दसणसार [ दर्शनसार ]-भाषार्यं देवसेन । पत्र स०-१० । पत्रित प्रतिपत्र-९.। अक्षर प्रतिपत्रित-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताहपत्र । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ न० २९। ्

११ द**्वसंगह [ द्रव्यसंग्रह ]**-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-३६ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-पित्त-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें केशवण्णकी कन्नड टीका है इसमें दो पत्र नहीं है।

## ग्रन्थ न० १८१।

१२ द्व्वसंगृह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-३४ । पिन्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पिन्त-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल ।

विशेष-इसमें श्री बालचन्द्रदेवकी कन्नड टीका भी है।

## ग्रन्थ न० २०४।

१३ द्व्वसंग्रह [ द्र्व्यसंग्रह ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-१८ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० २०६।

१४ द्व्वसंगह [ द्रव्यसंप्रह ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-५ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तुं-ताडपत्र । लेखनकाल- ४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसकी गाथा सख्या ८९ है।

#### ग्रन्थ न० ९।

ंश्य् पदार्थसार्-आचार्यं माघनन्दी। पत्र स०-२२५। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-८३। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत और कन्नड। विषय-सिद्धान्तः। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-यह आचार्यं माघनन्दी कुमुदचन्द्रदेवके शिष्य है। अन्तिम पद्य-नमो नम्रजनानादस्यन्दिने माघनन्दिने। जगत्प्रसिद्धसिद्धान्तवेदिने चित्प्रमोदिने॥ सिद्धान्तसारसर्वस्वकोशावासैकमूर्तये। नमः श्रीमाघनन्द्याख्यविश्वविख्यातकीर्तये॥

#### ग्रन्थ न० ७८ ।

१६ पदार्थसार्-आचार्य माघनदी । पत्र स०-८६ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा कन्नड । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र ।

#### ग्रन्थ न० २२८।

१७ पदार्थसार—आचार्यं माघनन्दी । पत्र स०-५० । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-८६ । किपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा कन्नड । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-अति विधिल ।

# ग्रन्थ नं० २४० ।

१८ पद्मश्रेसार्-आचार्य माघनन्दी । पत्र स०-३३ । पिनत प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंनित-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा कन्नड । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ग्रन्थ न० ५ 1

१६ प्रयासार [प्रवचनसार]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र स०-८३ । पत्रित प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपत्रित-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १४६५ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि शक १४६५ विकारी सं श्रुतपञ्चमीके दिन पेश्वलु शाति सेट्टीके पुत्र वर्धमान सेट्टीने इस ग्रन्थको लिखकर पूर्ण किया था। इसमे मुनि वालचन्द्रकी कन्नड टीका भी है।

# ग्रन्थ न० १६।

२० पंचित्यकाय [ समयसार ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र स०-९४ । पित प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिक्त-१२३ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें नयकीर्तिदेवके शिष्य मुनि वालचन्द्रकी कन्नड टीका है।

## ग्रन्थ न० ११७।

२१ पद्धसंसारिवस्तर '''' । पत्र स०-५ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । मञ्जलाचरण-पञ्चससारमुक्तेभ्य. सिद्धेभ्य. खलु सर्वेदा । नमस्कृत्वा प्रवक्ष्येऽह पञ्चससारिवस्तरम् ॥

#### ग्रन्थ न० २९।

२२ भव्यराशिपरिमाण-''''। पत्र स०-७ । पनित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपनित-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दृशा-उत्तम । ग्रन्थ न० १२२ ।

२३ वीसपरूवणा [विशतिप्ररूपण]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-४० । पनित प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपनित-९३ । लिपि-नागरी । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है। इसके प्रतिलिपिकार भट्टारक सोमसेनके प्रिय शिष्य अभिनव समन्त्मद्रदेव है।

# ग्रन्थ न० ७१ ।

२४ सकम्मपंचिय [ सत्कमंपिञ्चका ]- ... । पत्रं स०-१२३। पिनत प्रतिपत्र-२५। अक्षर प्रतिपिनत-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। वस्तु-कागज। लेखनकाल-सन् १९४१। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

# ग्रन्थ न०५।

२५ समयसार-भाचार्यं कोण्डकुन्द । पत्र स०-५१ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-शालि० शक १४६५ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमे मुनि वालचन्द्रकी कन्नड टीका है । प्रतिलेखक वर्षमान सेट्टि है ।

## ग्रन्थ न० २३७।

्र स्याद्वाद्मतसिद्धान्त-श्री चन्दय्य उपाध्याय । पत्र स०-१६ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# विषय-अध्यातम

## ग्रन्थ न० १२२।

१ **आत्मानुशासन**-आचार्यं गुणभद्र । पत्र सं०-२८ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-९३ । लिपि-नागरी । भाषा-सस्कृत । विषय-अव्यातम । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें संस्कृत टीका है । इसके प्रतिलिपिकार अभिनव समन्तभद्रदेव हैं ।

## ग्रन्थ न० १९२।

२ श्रात्मानुशासन-आचार्यं गुणभद्र । पत्र स०-८८ । पत्रित प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अघ्यात्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा श्रुद्ध । दशा-अति शिथिल ।

वियेष-इसमें कन्नड टीका है।

## ग्रन्थ नं० २३१।

३ श्वारमानुशासन-आचार्यं गुणभद्र । पत्र स०-५८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यातम । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि०शक १३०० । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-अति शिथिल ।

विशेप-इसमें कन्नड टीका है

#### ग्रन्य न० २६६।

- ४ श्वात्मोद्यसार- । पत्र स०-१५। पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-३९। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा गृद्ध । दशा-अति गिथिल । ग्रन्थ न०११७ ।
- ५ चिन्मयचिन्तामिण्-श्री कल्याणकीर्ति । पत्र स०-१३ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णे तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्य न० १३८ ।
- ६ चिन्मयचिन्तामिण्-मृनि कल्याणकीति । पत्र सं०-४। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-७०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-अध्यात्म। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्णे तथा शृद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्य न० २४३।
- ७ विन्सयचिन्तासिंग्-मृनि कल्याणकीर्ति । पत्र स०-५ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-,शिथिल । ग्रन्थ नं० १५० ।
- द्र जीवसम्बोधन-श्री वंधुवर्मं । पत्र स०-११४ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यातम । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह ग्रन्य प्रकाशनीय है ।

## ग्रन्थ नं० १३७।

ह परमात्मयासु (परमात्मप्रकाश)-आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पक्ति-७६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-इसमें मुनि वालचन्द्रकी कन्नड टीका भी है । मञ्जलाचरण-जे आया झाणग्गीये कम्मकलक उहेवि । णिच्च णिरंजणणाणमया ते परमप्प णवेवि ॥

## ग्रन्थ न० २४६।

१० परमात्मस्वरूप-आचार्य अमितगति । पत्र स०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-५७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शृद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसका अपर नाम 'सामायिकपाठ' भी है।

## ग्रन्थ न० २९।

११ समाधिशतक-आचार्यं पूज्यपाद । पत्र स०-२५ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यातम । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें केशवण्णकी कन्नड टीका भी है ।

## ग्रन्थ न० १८१।

१२ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-१७ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिक्त-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल । विशेष-इसमें श्री वालचन्द्रदेवकी कन्नड टीका भी हैं ।

# ग्रन्थ न० २९।

१३ स्वरूपसम्बोधनपञ्चिविंशति-आचार्य अकलद्भदेव । पत्र स०-६ । पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । वग्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णे तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें केशवण्णकी कन्नड टीका है।



# विषय-धर्म

#### ग्रन्थ न० ८७।

१ श्रानगारधर्मामृत-पण्डित आशाधर । पत्र स०-२७ । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-सरकृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗶 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ११७ ।

२ स्थाप्तस्कर्प- ' ' ' ' । पत्र स०-५ । पित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-४२ । लिपिकन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।
मङ्गलाचरण-सर्वेन्द्रस्तुत्यपादाव्ज सर्वज्ञ दोपर्विजतम् । श्रीजिनाधीश्वर नौमि परमानन्दमक्षयम ॥
आप्तागम प्रमाण स्थाद्यथावद्वस्तुसूचक । यस्तु दोपैविनिर्मृक्तस्सोऽयमाप्तो निरञ्जनः ॥

## ग्रन्थ न० २९।

३ श्राराह्णासार [श्राराधनासार]–आचार्य देवसेन । पत्र स०-२०। पक्ति प्रतिपत्र−७ । अक्षर प्रतिपक्ति– ६५ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल- ४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा–उत्तम । विशेष–इसमें केशवण्णकी कन्नड टीका है ।

## ग्रन्य न० ७१।

४ श्राराधनासमुच्चय-मुनि रविचन्द्र । पत्र स०-१४ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताटपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ८७।

४ श्राराधनासमुक्त्रचय-मुनि रिवचन्द्र । पत्र स०-७ । पिन्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिन्त-८० । लिपि-कन्नर । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम । विशेष-इसे मुनि रिवचन्द्रने पनसोगे ग्राम में रचा है ।

## ग्रन्य न० २९।

६ इष्टोपदेश-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-१४ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-६५ । लिप-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें केशवण्णकी कन्नड टीका है ।

## ग्रन्य न० ११७।

७ उपासकसंस्कार—आचार्य पदानन्दी। पत्र स०-४। पिक्त प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिक्त-३८। लिपि-कत्रड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।
 विशेष-यह 'पद्मनिन्दिपञ्चविद्यति' का एक प्रकरण है।

## ग्रन्य न० १३७।

द उपासकसंस्कार-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-८६ । लिपि-कन्नर । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताइपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह'पद्यनन्दिपचिकाति' का एक प्रकरण है ।

#### ग्रन्थ नं० २९।

६ एकत्वसप्ति—आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-२३। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-७०। लिपिकन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।
विशेप-इसमें केशवण्णकृत कन्नड टीका है ।

## ग्रन्थ न०१८१ ।

१० एकत्वसप्ति-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र म०-५ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विष्य-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल । विशेष-इसमें श्री वालचन्द्रदेवकी कन्नड टीका है ।

#### ग्रन्य न० २९।

११ गुगाप्रकाशक- । पत्र स०-७। पिनत प्रांतपत्र-७। अक्षर प्रतिपिनत-६८। लिपि-कन्नड। माया-सस्कृत । विषय-धर्माधर्मस्वरूपविवरण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-उत्तम । श्रीवर्धमानमानम्य धर्माधर्मस्वरूपकम् । गुणप्रकाशक नाम वक्ष्ये भव्योपकारकम् ।

#### ग्रन्थ न० ४४।

१२ जिनमुनितनय-नागचन्द्र । पत्र स०-१४ । पिनतः प्रतिपत्र-५ । अक्षरः प्रतिपिनतः-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताहपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ९० ।

- १३ जिनमुनितनय~कवि नागचन्द्र । पत्र म०-१२ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्मे । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णे तथा शुद्ध । दर्शा-सामान्य । ग्रन्थ न० १३४ ।
- १४ जिनसुनितनय-किव नागचन्द्र । पत्र सं ०-२९ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-अति शिथिल । ग्रन्थ न० २५४ ।
- १५ जिनसुनितनय-कवि नागचन्द्र । पत्र स०-८। पिनत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिनत-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ नं० ७६।

१६ तत्त्वार्थसूत्र-आचार्य उमास्वामी । पत्र स०-४ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संम्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शृद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० २७२ ।

१७ तत्त्वार्थेसूत्र—आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र स०-२७ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-७६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० १९० ।

१८ तीर्थेङ्करनांमावली- : । पत्र सं०-२०। पिनत प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिन्त-२१। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें पचभरत और पंच ऐरावत क्षेत्रोंके त्रिकाल तीर्थंङ्करोंके नाम प्रतिपादित हैं।

## ग्रन्थ नं० ३१।

१६ त्रेविशिकाचार-श्री ब्रह्मसूरि । पत्र सं०-७२ । पक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७६ । लिपि-क्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-्उत्तम । ग्रन्थ नं० ५१ ।

२० त्रैवर्णिकाचार-श्री ब्रह्मसूरि । पत्र स०-४६ । पक्ति प्रतिपत्र-४० । अक्षर प्रतिपक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-कागज । लेखनकाल-सन् १८३९ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मैसूरके ब्रह्मदेवय्य है ।

## ग्रन्थ नं० १३०।

२१ त्रेवर्णिकाचार-श्री ब्रह्मसूरि। पत्र स०-६०। पिक्त प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिक्त-६७। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-वर्म। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्य नं० ५७ । २२ दानसार—ऋषि वासुपूज्य । पत्र स०-८४ । पिक्त प्रतिपत्र-१७ । अक्षर प्रतिप्रक्ति-१८ । लिपि-कन्नड । भोषो-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-कागज । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्य न० ४२।
२३ द्वाद्शानुपेत्ता-विजयण्ण । पत्र सं०-५७ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-७७ । लिपिकन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।
ग्रन्थ न० १३१ ।

२४ द्वादशानुप्रेज्ञा-विजयण्ण । पत्र म०-१२९ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह 'सागत्य' पद्य में है ।

# ग्रन्थ नं० १८५।

२५ द्वादशानुप्रेत्ता-विजयण्ण । पत्र स०-७२ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्मे । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्य न० २३०।

२६ द्वादशानुप्रेत्ता-विजयण्ण । पत्र स०-५७ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-६९ । लिपिकन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वर्म । वस्तु-ताहपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा गृद्ध । दशा-उत्तम ।
विशेष-इसके प्रतिलिपिकार श्री शान्तिमागरवर्णी है ।

## ग्रन्य न० २४५।

२७ हाद्शानुप्रेचा-विजयण्ण । पत्र स०-५४ । पिनतः प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिनत-३४ । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय- मं । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० १३७।

२८ द्वादशानुप्रे ह्या-आचार्य सोमदेव। पत्र स०-४। पिनत प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिनत-६३। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-धर्म। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४।पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ न० २५१।

२९ द्वादशानुप्रेचा-वादीभसिंह। पत्र स०-४१। पिनत प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपिनत-६२। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेप-यह 'क्षत्रचूडामणि' काव्य से उद्धृत हैं । इसमें कन्नड टीका भी हैं ।

## ग्रन्थ न० ३८।

\* ३० द्विज्ञवद्नचपेटा-अश्वघोष भिक्षु । पत्र स०-१० । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेप-इसका अपर नाम 'लघुणड्दर्शनसमूच्चय' भी है ।

## ग्रन्थ न० १३७।

३१ **नीतिसारसमुच्चय**-आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र स०-४ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपित-९६ । लिपि-कन्नड । भापा-सस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० १४०।

३२ पद्मनिन्द्पञ्चिवशिति-आचार्यं पद्मनन्दी । पत्र स०-४२ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-घर्मं । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० २६६।

३३ परमागमसार- । पत्र स०-८। पिन्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिन्त-३८। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-शिथिल । विशेष-यह कन्नड गद्यरूप है ।

#### ग्रन्थ न० ११७।

३४ पायिद्यति [प्रायिश्यति ] विधि— । पत्र स०-१६ । पक्ति प्रतिण्त्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भोषा-प्राकृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

#### ग्रन्थ न० १६५।

३५ पञ्चपरमेष्ठिच्याख्यान- । पत्र स०-५३। पक्ति प्रंतिपत्र-८। अक्षरप्रतिपक्ति-५०। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० २४२।

३६ पञ्चपरमेष्ठिञ्याख्यान— । पत्र स०-२८।पन्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-७६। लिपि कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-शिथिल।

## ग्रन्थ न० १३७ ।

३७ प्रश्नोत्तरत्नमाला-अमोघवर्षं । पत्र स०-७ । पिनत प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिनत-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० १७३।

३८ प्रश्नोत्तरस्त्रमाला- । पत्र स०-४। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-४२। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- ४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । २७

#### ग्रन्थ न० ८७।

३६ प्रायश्चित्त- ' '''। पत्र स०-२। पिक्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपदित-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-धर्मं । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## प्रन्थ न० १८९।

४० प्रायश्चित्तविधि- : : । पत्र स०-८।पिक्त प्रतिपत्र-६।अक्षर प्रतिपिक्त-४६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

# ग्रन्थ न० २४६।

४१ प्रायिश्चत्तिविधान- ''' । पत्र स०-५ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिन्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह कन्नड गद्यमें हैं ।

## ग्रन्थ न० २९।

४२ बारस श्रागुपेहा [द्वाद्शानुप्रेत्ता]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र स०-१८ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें केशवण्णकी कन्नड टीका भी है।

#### ग्रन्थ न० ४०।

४३ वारस श्रापुपेहा [द्वादशानुप्रेत्ता]-आचार्यं कोण्डकुन्द । पत्र स०-५ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्मं । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्णं तथां शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ४१।

४४ बारस श्रागुपेहा [द्वादशानुप्रेचा]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र स०-७ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० ८७।

४५ बारस अगुपेहा [द्वादशानुप्रेत्ता]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र स०-२ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न०४४।

४६ भव्यामृत- ' । पत्र स०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्मे । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णे तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० २५४।

४७ भव्यामृत- : : । पत्र स०-७। पिन्त प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपिन्त-६४। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल- ×। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

#### ग्रन्थ न० ८७।

४८ भव्यानन्दशास्त्र-पाण्ड्यभूपति । पत्र स०-४ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० ४०।

४**६ रत्नकर**ण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र स०-६४। पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । माषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है। इसके प्रतिलिपिकार मूलकी अनन्नय्य इन्द्रके पुत्र चन्दय्य इन्द्र है। ग्रन्थ न० ७०।

५० रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्यं समन्तभद्र । पत्र स०-४३३ । पिक्त प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रति-पिक्त-४७ । लिपि-नागरी । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-कागज । लेखनकाल-विक्रम शक १९२९ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें प॰ सदासुखकी हिन्दी वचनिका भी है।

### ग्रन्थ न० ७६।

५१ रतकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तमद्र । पत्र स०-४६ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-९८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताइपत्र । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० १२२।

५२ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तमद्र । पत्र स०-३२ । पिक्त प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिक्त-९३ । लिपि-नागरी । माषा-सस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-इसमें आचार्य प्रभाचन्द्रदेवकी संस्कृत टीका भी है। इसके प्रतिलिपिकार भट्टारक सोमसेनके प्रिय शिष्य अभिनव समन्तभद्रदेव है।

#### ग्रन्थ न० १७०।

५३ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र स०-१०८ । पिन्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिन्त-२३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा- उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

## ग्रन्थ न० २०४।

५४ रत्नकरग्रहश्रावकाचार—आचार्यं समन्तभद्र । पत्र स०-२३ । पित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- ४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दका-उत्तम । विशेष-इसमें १९२ क्लोक है । विचारणीय है ।

## ग्रन्थ न० २९४।

पूर् रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र स०-६० । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिन्त-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल ।

विशेप-इसमें कन्नड टीका भी है। इसकी श्लोकसंख्या २०४ है।

#### ग्रन्थ न० २७।

५६ रत्नमाला-आचार्यं शिवकोटि । पत्र स०-४ । पवित प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपवित-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न १९३ ।

्र द्वमाला—आचार्यं शिवकोटि । पत्र स०-४ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्थ न० २४६।

प्ट रत्नमाला-आचार्य शिवकोटि । पत्र म०-३ । पितत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिति-६१ । लिपि-कृष्ण । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेख्नकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ नं० ४१।

५६ रयग्रसार-आचार्य कुदकुद । पत्र स०-१४ । पन्नि प्रतिपत्र-८ । यक्षर प्रतिपत्रि-४० । लिपि-कन्नड । नाषा-प्राष्ट्रत । विषय-वर्म । वन्तु-नाडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्य न० २५६।

ह० विद्यादिपद्धति-\*\*\*\* । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिनत्र-१२ । अक्षर प्रतिपक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सम्कृत । विषय-वर्ष । वस्तु-नाडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तया शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'विद्यापद्धति' 'दानपद्धति' आदि वारह पद्धतियाँ है ।

## ग्रन्य नं० ११७।

**६१ व्रतस्त्रह्म-**त्राचार्यं प्रभावन्द्र । पत्र स०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । त्रक्षरः प्रतिपक्ति-३३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-नाडपत्र । लेलनकाल-४ । पूर्ण तथा शृद्ध । दशा-उत्तम ।

## प्रन्य नं० १३७।

६२ त्रतस्त्रक्त्प-आचार्यं प्रभाचन्द्र । यत्र स०-३ । पिक्त प्रतिपत्त-११ । अक्षर प्रतिपिक्त-९० । छिपि-कन्नड । भाषा-सम्हत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । छेखनकाल- 🗴 । पूर्णं तथा धृद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्य न० १०१।

६३ शास्त्रमारसमुच्चय-आचार्य मावनन्दी । पत्र स०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-६२ । लिपि-क्षण्ड । भाषा-सम्कृत और क्षण्ड । विषय-वर्म । वस्तु-नाटपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण नया शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## ग्रन्य नं० ९५।

६४ शिवलिङ्गमाहात्म्य-\*\*\* । पत्र स०-९। पंक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपक्षित-४१। लिपि-कञ्ड । भाषा-चन्कृत । विषय-वर्म । वस्तु-ताहपत्र । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-मामान्य ।

## प्रन्य नं ० १०१।

६५ श्रावकाचार-आवार्यं मावनन्दी । पत्र मं०-१२८ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षरः प्रतिपिक्त-६२ । लिनि-म्बर । भाषा-कन्नड । विषय-वर्षे । वस्तु-ताहरत्र । लेखनकाल-वालि० शकः १६४२ । पूर्णे तया बुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसके प्रतितिषिकार नगलेग्रामके राजय्य है। इसे नगले देवरसम्बक्ते पुत्र वोम्मरसय्यने लिखवाया है।

#### ग्रन्य न० १०।

६६ सन्जनचित्तवल्लभ-आचार्य मिल्लपेण । पत्र स०-११ । पिन्न प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रनिपिन्त-५० । लिपि-नप्ट । मापा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-नाडपत्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शृद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें मृति वालवन्द्रकी कन्नड टीका है।

#### ग्रन्थ नं ० ४०।

६७ सरजनचित्तवत्त्स-आचार्य मिल्लपेण । पत्र सं०-२१ । पन्नि प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपित्र-५४ । तिपि-कन्नह । माषा-संन्कृत । विषय-वर्षे । वस्तु-ताहपत्र । लेखनजाल-४ । पूर्णे तथा गृह । दशा-उत्तम । विशेष-इनमें आचार्य चन्द्रकीतिके शिष्य श्रुतकोतिकी नग्नट टीका है ।

#### ग्रन्य नं ० ४१।

६८ मन्जनचित्तवल्लभ-ञाचार्य मिल्लिपेण । पत्र सं०-८ । पिन्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । निपि-कन्नढ । भाण-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-तादपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम।

#### ग्रन्थ न० ११७।

६९ सन्जनित्तन्तम्-आचार्यं मिल्लिपेण । पत्र स०-३ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-सम्कृत । विषय-धर्मे । वम्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णे तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० १९८ ।

७० सज्जनचित्तवल्लभ-आचार्यं मिल्लपेण। पत्र स०-१५। पिनत प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिनत-३९। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-धर्मं। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल- ×। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

#### ग्रन्थ न० १६५।

**७१ समवसरणस्वरूपविवरण**-मृनि विजयण्ण । पत्र स०-१६ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा **शुद्ध** । दशा-उत्तम ।

विशेप-यह षट्पदिपद्यमें है। प्रकाशनीय है।

## ग्रन्थ न० ८७।

७२ सागारधर्मामृत-प० आशाघर । पत्र स०-१०।पिक्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-८०। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० १०६।

७३ सागारधर्मामृत-पण्डित आशाधर । पत्र स०-५० । पित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-१०२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताटपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

#### ग्रन्थ न० १२८।

७४ सागारधर्मामृत-पण्डित आशाघर । पत्र स०-१२४ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेप-इसमें स्वोपज्ञ टीका है । इसका अपर नाम भथ्यकुमुदचन्द्रिका है । इसके प्रतिलिपिकार ब्रह्मसूरि है ।

#### ग्रन्थ न० २१।

७५ सिद्धपरमेष्टिस्वरूप- · · · · । पत्र स०-१२। पित प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपित्त-७९। िलिप-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल- ×। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ न० ४०।

७६ सूक्तिमुक्तावली-आचार्यं सोमप्रभ । पत्र स०-२६ । 'पन्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपन्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-सोमप्रभदेव आचार्यं अजितदेवके शिष्यं विजयसिंहके प्रशिष्य हैं ।

#### ग्रन्थ न० ४१

७७ सूक्तिमुक्तावली-आचार्यं सोमप्रम । पत्र स०-४३ । पित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपित्त-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्थ न० १९८ ।

७८ सृक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र स०-५८ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

# विषय-योगशास्त्र

#### ग्रन्य नं० १७।

१ योगामृत- . . . । पत्र सं०-१३। पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नह। भाषा-कन्नड । विषय-योगदास्त्र । वस्तु-ताइपत्र । लेखनकाल-जालि०शक-१७८२। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इमके प्रतिलिपिकार मुखवित्री चोलसेट्रिवसदि मंजप्प इन्द्रके पुत्र पूरोहिन पाचप इन्द्र है।

#### ग्रन्य नं० २७९ ।

२ योगामृत- ... । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-योगगास्त्र : वस्त्-ताडपत्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा गृद्ध । दशा-सामान्य ।

# **->**∜**←**-

# विषय-प्रतिप्रा

#### ग्रन्य नं० १२।

१ जिनसंहिता-आचार्यं एकसंघि । पत्र सं०-६२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तया शुद्ध । दशा–उत्तम । विशेष-इसमें अन्तके दो पत्र नहीं हैं। ग्रन्य सटिप्पण है।

#### प्रन्य नं० १३।

२ जिनसंहिता-आचार्य एकसंघि । पत्र सं०-१०९। पंक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपंक्ति-६५। लिपि-कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल– 🗙 । अपूर्ण तथा शृद्ध । दशा–उत्तम । विशेष-अन्तके दो पत्र नहीं हैं। क्लिप्ट शब्दोंका अर्थ भी दिया गया है।

## ग्रन्य नं० ३४।

३ जिनसंहिता-आचार्य एकसंघि। पत्र सं०-५९। पंक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपंक्ति-५७। किपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेप-इसमें कठिन शब्दोंका अर्थ भी दिया गया है।

#### ग्रन्य नं० २४१।

४ जिनसंहिता-आचार्य एकसंघि। पत्र सं०-३८। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-९०। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । दिषय-प्रतिष्ठा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल । ग्रन्थ नं० १८९।

४ जिनसंहिता-आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०-६६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपत्र-७० । लिपि-कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल– × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

## ग्रन्थ नं० १९४।

६ पञ्चकल्याग्विधि-नेमिचन्द्र। पत्र सं०-५७। पंक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय−प्रतिष्ठा । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल– 🗙 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम । विशेप–इसके प्रतिलिपिकार मूडिवद्री हिरेबसदि पाचप्य इन्द्र हैं।

#### ग्रन्थ नं० ५१।

७ प्रतिष्ठाकल्प-मट्टाकलंकदेव। पत्र सं०-७४। पंक्ति प्रतिपत्र-४०। अक्षर प्रतिपंक्ति-४१। लिपि-कन्नड । मापा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । वस्तु–कागज । लेखनकाल–सन् १८३९ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेप-इसके प्रतिलिपिकार मैसूरके ब्रह्मदेवस्य हैं।

ग्रन्थ न० ४७।

द प्रतिष्ठाकल्पिटप्पिग्-आचार्यं कुमुदचन्द्र । पत्र सं०-३२।पिक्त प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपिक्त-१०९। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ न० ५३।

६ प्रतिष्ठाकलपटिष्पणि-याचार्यं कुमुदचन्द्र । पत्र स०-४१ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-वीर शक २४५२ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ न० ११।

१० प्रतिष्ठातित्तक-नेमिचन्द्र । पत्र स०-१०९ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-८८ । लिपि-कन्नड भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-इसके अन्तमें ग्रन्यकर्ताकी प्रशस्ति है। मुद्रित प्रशस्तिसे इसमें इतनी विशेपता है-

श्रीजैनागमवेदी गुणमणिगणरचितभूपणघारी।
सोमरसमामसूर्र्जयित जिनेशाडि वनजलीनालि ॥१॥
पायात्सदा निर्मलदिव्यचित्त रत्नत्रयालडकृतसौख्यदेहम्।
श्रीपार्श्वनायस्सुजनैकसेव्य सोमात्तनामाङकितभव्यरत्नम् ॥२॥
श्रीवीरद्भुमपत्तनावृतनदीतीरे सुचैत्यालये
पीठे निर्मलसिह्लाञ्छनयते सरूढपाव्यं प्रभो।
नित्याद्यचैनतत्परस्य लिखितः श्रीनेमिचन्द्रोत्तमे
नात्तः सोमरसाह्वयस्य सकलप्रीत्यहंपूजाकम ॥३॥
श्रीमत्स्वणमहीधराप्रविलसञ्ज्रीपार्श्वनाथाडि निल्याद्यद्विपत्तम् स्वित्राच्याद्विपत्त्वस्य च।
श्रीवत्सान्वयपूर्णचन्द्रसदृशश्रीशान्तिनाथस्य च।
श्रीवत्सान्वयपूर्णचन्द्रसदृशश्रीशान्तिनाथस्यसत्त्पुत्रेणाहंमहामह् विलिखित सोमात्तनाम्ना च ते॥४॥

ग्रन्थ न० १५ ।

११ प्रतिष्ठातिलक-ब्रह्मसूरि । पत्र स०-४४ । पित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपित्त-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें न० ३१ मे ४९ तक के पत्र नहीं है।

ग्रन्थ न० ५१।

१२ प्रतिष्ठातिलक-ब्रह्मसूरि । पत्र स०-११० । पिवत प्रतिपत्र-४० । अक्षर प्रतिपिवत-२५ । लिपि-कन्नड भाषा-संस्कृत ।विषय-प्रतिष्ठा । वस्तु-कागज । लेखनकाल-सन् १८३९ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-प्रतिलिपिकार मैसूर के ब्रह्मदेवय्य है ।

ग्रन्थ न० २६ ।

- १३ प्रतिष्ठाविधि श्रथवा विधान-हस्तिमल्ल । पत्र स०-९ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-६८ । लिपि-कन्नट । भाषा-सस्कृत ।विषय-प्रतिष्ठा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ५२ ।
- १४ प्रतिष्ठासारसग्रह-पण्डित अय्यप्पार्य। पत्र स०-१०९। पित प्रतिपत्र-१२। अक्षर प्रतिपत्रि-३७। लिपि-देवनागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । वस्तु-कागज । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसका अपर नाम 'जिनेन्द्रकल्याणाभ्युदय' है।

### ग्रन्थ नं० १७।

१५ प्रतिष्ठासारोद्धार-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-५६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भापा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसका अपरनाम 'जिनयज्ञकल्प' है । इसे विजयण्ण स्वामीके शिष्य पार्श्वने लिखा हैं ।

### ग्रन्थ नं० १८६।

१६ प्रतिष्ठासारोद्धार-पण्डित आशाधर। पत्र सं०-७८। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेप-इसके प्रतिलिपिकार श्रीचारुकीर्ति पण्डिताचार्यके शिष्य मुनिचन्द्रदेव है।



# विषय-पूजापाठ, आराधना तथा व्रतविधान

### ग्रन्थ नं ० २४१।

१ अष्टमनन्दीश्वरपूजा-विद्यानन्द । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० १९१ ।

२ त्र्याराधनायन्त्रसंग्रह-····। पत्र सं०-२०। पंक्ति प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपंक्ति-२०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ नं० २५१।

- ३ ऋषिमण्डलाराधना-मुनि गुणनन्दी । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० २७१ ।
- ४ ऋषिमण्डलाराधना-मुनि गुणनन्दी । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विपय-आराधना । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशां-उत्तम । ग्रन्थ नं० २१ ।
- ५ कमदहनाराधना- · · · · । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० ३६ ।
- ६ कर्मदहनविधान-श्री चन्छकीति । पत्र सं०-३८।पंक्ति प्रतिपत्र-११।अक्षर प्रतिपंक्ति-४७।छिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × '। पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० ५५।
- ७ कमेदहनादिविधानसंग्रह- : : । पत्र सं०-७१। पित प्रतिपत्र-१८। अक्षर प्रतिपंतित-२०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। वस्तु-कागज। लेखनकाल-सन् १९२७। पूर्ण तथा अगृद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसके प्रतिलिपिकार पहुंचसदि पाचप्प इन्द्र है ।

### ग्रन्थ नं ० ८१।

द्र चेत्रपालपूजाः । पत्र सं०-१३। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-३७। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-ंउत्तम।

### ग्रन्थ न० ३६।

ह गगाधरवत्यविधान-\*\*\*\*। पत्र स०-१७। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-३१। लिपि-कन्नड । 'भाषा-पस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपेत्र । लेखनकाले--- × । पूर्ण तथा अगुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ६७।

१० गराधरवलयाराधना- : : । पत्र स०-११ । पक्ति प्रतिपत्र-१५ । अक्षूर प्रतिपक्ति-१९ । लिपि–कन्नड । भाषा–पस्कृत । विषय–आराधना । वस्तु–कागर्ज । लेखनकाल– ४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

प्रन्य न० ६७ । ११ गोमारियन्त्राराघना— र् ःः। पत्र स०–३। पन्ति प्रतिपत्र–१५ । अक्षर प्रतिपन्ति,–१९ । लिपि– कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–आराधना । वस्तु–कागज । लेखनकाल– × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम । ग्रन्थ न० ३६।

१२ चक्रवालव्रतविधान- ''''। पत्र स०-२। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-३८। लिपि-कन्नड । भाषा–सस्कृत । विषय–त्रतविधान । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल– 🗶 । पूर्ण तथा शुद्ध । दंशा–उत्तम । 🦳

### ग्रन्थ ने॰ १०६।

१३ चारित्रसिद्धित्रतविधान- १०१ । पत्र स० १३ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-१०२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्रतविधान । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । देशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० ३६।

१४ जिनगुग्**संपत्तिन्नतविधान-** : : : । पत्र स०-७ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-३८ । लिपि—कन्नड । भाषा–सस्कृत । विषय—त्रतविघान । वस्तु–तृाडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० ३७।

१४ ध्वजाचेनाविधि-''' । पत्र स०-६। पनित प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपनित-३९। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० ९६ ।

१६ नान्दिमङ्गलिधान ः । पत्र स०-८६। पन्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपन्ति-३४। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्य नं० १९७ ।

१७ नान्दिमङ्गलविधान- ''' । पत्र स०-५६। पन्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपन्ति-५०। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० १५४।

१८ नान्दिमङ्गलादिपूजापाठसंग्रह-\*\*\*\* । पत्र सं०--१७० । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनक़ाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० १२० ।

१६ नित्यपूजाविधि- ... । पत्र स०-१२७ । पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपृक्ति-४४। लिपि-कम्नड । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल-कालि० वक १७२२ । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें मगलाष्टक, वज्रपाणि, भूमिशुद्धिविघान, पंचपरमेष्ठि-नवदेवता-षोडशभावनापूजा, महा-भिषेकविषान, बि.मानशुद्धिविधान आदि कई विषय है । —शालि० शक १७२२ रौद्री से० भाद्रपद शु० ९ मडविद्वि कोटि सेट्टि बसदिमें पद्मय्य उपाध्यायने इसे लिखा है।

### ग्रन्य मं० २१।

२० पत्यिवधान- : । पत्र स०-४। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-सम्कृत । विषय-त्रतिवधान। वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-आचार्यं महावीर्यं प्रणम्य (?) कल्याणनायकम् । भक्त्या पत्योपवास-लक्षणं विधीयते सम्यक् ॥

प्रतिलिपिकार नेमण्ण उपाघ्याय है।

### ग्रन्य नं० ३६।

२१ पल्यविधान-\*\*\*\* । पत्र सं०-८। पिन्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिन्ति-३९ । लिपि-कन्नट । भाषा-सस्कृत । विषय-त्रतिवधान । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णे तथा गुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्य न० ३५।

२२ पूजापाठसंग्रह्-\*\*\*\* । पत्र स०-१३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । वस्नु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ नं० २२४।

२३ पूजासंग्रह्- · · · · । पत्र स०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-५७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न ४७।

२४ पूजाफ्लादिलक्त्स्एसंग्रह्- । पत्र स०-२५। पिनत प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिनत-८५। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ न० ८१।

२५ पूजापृजकलक्तरा-आचार्यं इन्द्रनन्दो । पत्र सं०-२६ । पिन्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिन्त-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा अगुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

### ग्रन्थ न० ४७।

२६ पद्धपरमेष्टिश्चाराधना- ' ' । पत्र सं०-१३। पनित प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपत्रिन-७४। लिपि-कन्नह। भाषा-सस्कृत। विषय-आराधना। वस्तु-ताढपत्र। लेखनकाल- ×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्य न० ११६।

२७ पंचमंद्रपूजा-''''। पत्र सं०-२४। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-७१। लिपि-कन्नड। मापा-सम्कृत । विषय-पूजा। वस्नु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा अगृद्ध। दशा-गिथिल। विशेष-इसमें अष्टमनन्दीक्वरद्वीपकी पूजा भी है।

### यन्य नं० ३६ ।

२८ भुजवलीकल्याणत्रतिवधान-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र स०-५ । पन्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-त्रतिवधान । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा युद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इमके रचयिता पद्मनदी हैं। यह देवेंद्रकीर्तिके शिष्य श्रुतकीर्तिके प्रशिष्य है।

### ग्रन्य न० ६६।

२६ भेरवाराघना- · · · · । पत्र सं०-१०। पंक्ति प्रतिपत्र-१७। अक्षर प्रतिपंक्ति-१९। लिपि-कत्रड। नापा-संस्कृत । विषय-आरावना । वस्तु-कागज । लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### प्रन्य न० ९४।

३० महामिषेकादिपूजाविधि- ' ' ' पत्र म०-१२१। पक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति ज

४०। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। वस्तु—ताडपत्र। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—सामान्य।

विशेष-इसमें महाशाति, वास्तु, नान्दीमगल आदि भी है।

### ग्रन्थ न०१४७।

३१ सहासिषेकादिपूजासंग्रह-\*\*\*\* । पत्र स०-६०। पिक्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-५३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा तथा आराधना। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें 'कलिकुण्ड', 'वज्रपजर', 'मृत्युजय' आदि आराधनाओका सग्रह भी है।

### ग्रन्थ न० ३६।

३२ मुक्तावितिविधान-'' '''। पत्र स०-२। पिक्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-३९। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-व्रतिविधान। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ न०३६।

३३ रत्नत्रयविधान
। पत्र स०-७। पिनत प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिनत-४२। लिपिकन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-व्रतिविधान। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ न० २५१।

३४ शान्तिचक्राराधना- : । पत्र स०-१४। पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-६४। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-आराधना । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ मं० २१।

३५ श्रुतस्कन्धाराधना-विजयवर्णी । पत्र स०-१२ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-आराधना । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-श्रीमूलसघ, सरस्वतीगच्छ, वलात्कारगणके आचार्य महेन्द्रकीर्तिके शिष्य, ज्ञानभूषणके प्रशिष्य विजयवर्णीने श्रीमुख स० कार्तिक शु० १४ में इसकी रचना की है।

### ग्रन्थ न० ११६।

३६ श्रुतस्कन्धाराधना—मुनि विजयकीर्ति । पत्र स०-३१ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-आराधना । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा अज्ञुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० ३६ ।

३७ श्रुतज्ञानविधान-विजयवर्णी । पत्र स०-१९ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-३८ । लिवि-कन्नह । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रतिविधान । वस्तु-ताहपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-श्रीचन्द्रमके पुत्र पादवंनायने इसकी प्रतिलिपि की है ।

### ग्रन्थ न० ३६।

३८ सर्वदोषपरिहारविधान- : । पत्र स०-४। पिनत प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिनत-३८। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-न्नतिवधान। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ न० २१।

३६ सहस्रनामाराधना-\*\*\*\* । पत्र सं०-३० । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-४५ । िलिप-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसे नेमण्ण उपाध्यायने लिखा है ।

### ग्रन्थ न० ५६।

४० सहस्रतामाराधना-\*\*\* । पत्र स०-७१ । पंक्ति प्रतिपत्र-२० । अक्षर प्रतिपत्रित-२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । वस्तु-कागज । लेखनकाल-सन् १९२७ । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसे पडुवस्ति पाचप्य इन्द्रने लिखा है।

### ग्रन्थ न० १९।

४१ सिद्धचकाचैनाष्टक-पण्डित आशाधर। पत्र स०-८। पन्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-७२। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

सिद्धचक प्रणम्यादी सिद्धचकाचैनाष्टके ।

निबन्ध रचयन्त्येते श्रुतसागरसूरयः ॥ १ ॥ विशेष-इसमें श्रुतसागरकी संस्कृत टीका भी है ।

# प्रन्थ न० ८७।

अन्य न० ८७। ४२ सिद्धंचक्रपूजा-पण्डित आशांधर। पंत्र सं०-३। पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-८०। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपंत्र । लेखनकारू- 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध । देशा-उत्तम ।

ग्रन्थ न० ३६। ४३ संचित्तश्रुतज्ञानविधान-उपाध्याय चन्द्रम। पत्र स०-४। पक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपक्ति-३८ । लिपि-कन्नेड । भाषा-सस्कृत । विषय-ब्रॅलेविधान । वस्तुं-तिडिपत्र । लेखनकलि- ४ । पूर्ण 'तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# विषय-न्याय तथा दर्शन,

### ग्रन्थ न० २१२।

१ श्राप्तमीमांसा-आचार्य समन्तभद्र । पत्र स०-५ । पत्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपत्रित-३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा घृद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० २२०,।

२ तत्वार्थम्होकवार्तिकालंकार-स्वामी विद्यानन्द । पत्र स०-७१ । पक्ति प्रतिपत्र-१४ । बङ्गर प्रतिपंक्ति १०२। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-त्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-अति शिथिल ।

# ग्रन्थ न० २५२।

\* ३ तर्कचिन्तामणि-महामहोपाध्याय गगेश्वर । पत्र, स०-९१ । पतित प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपत्रित १००। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-अति शिथिल ।

ग्रन्थ नं ० २६८। \* ४ तर्कसंग्रह- · · · · · । पत्र स० - ३१। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपक्ति-३२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-त्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ न० ८८ । \* ५ तार्किकरचा-वरदराज। पत्र सं०-६। पॅक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-६०। लिपि-कन्नडे। भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🔀 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० १।

६ न्यायविनिश्चयालंकार-मूलकर्ता-अकलकदेव । टीकाकर्ता-वादिराजर्स् रि । पत्र म्सं ०-३०२ । पंक्ति-प्रतिपत्र- । अक्षर प्रेतिपक्ति- । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-तादपत्रः । लेखनकाल- × । पूर्णे तथा भुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इंसका अपर नाम 'व्याख्यानरत्नमाला' है। ग्रन्थ नं० ७२।

७ न्यायविनिश्चयात्तकार-अकलकदेव । पत्र स०-२७७ । पंक्ति प्रतिपत्र-×। अक्षर प्रतिपक्ति-×। लिपि-कन्नड । भाषा-सःकृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ८८ ।

द्ध पत्रपरीक्षा-आचार्यं विद्यानन्दी । पत्र स०-११ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपाक्त-४५ । लिपि-कन्नढ । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इस में 'आप्तपरीक्षा' के मूलक्लोक भी है ।

ग्रन्थ न० ८८।

६ परीक्तामुखसूत्र- आचार्यं माणिक्यनदी । पत्र स०-६ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० २५८ ।

१० परीचामुखसूत्र-आचार्यं माणिक्यनन्दी । पत्र स०-६ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० २५८ ।

११ 'प्रमेयरत्नमाला-आचार्य अनन्तवीर्य । पत्र स०-५८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-६९ । िलिप-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० ४७ ।

१२ प्रवचनपरीत्ता-आचार्यं अभयचन्द्र । पत्र स०-२१ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९९ । क्षिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० २१२ ।

१३ षड्दश्तेनप्रपंच-'''''। पत्र स०-६। पन्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-३६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

# विषय-कोश

### ग्रन्थ न० ८६।

- १ अभरकोश-अमरसिंह। पत्र सं०-४६। पश्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-४१। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-कोश। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य। गन्थ<sup>(</sup>नं०१७३।
- २ श्रमंदकोश-अमर्रसिंह । पंत्र स०-७५ । पन्ति प्रतिपत्र-८'। अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम। विशेष-इसमै श्री विट्टलकृत विद्यषचूडामणिनामक कन्नड टीका है ।

### ग्रन्थ नं० ११२।

३ श्रमरकोश-अमरीसह। पत्र सं०-६५। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-३५। लिपि-कन्नड। भाषा-मम्कृत। विषय-कोश। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। प्रत्य नं० २२५।

४ म्रामरकोरा-अमर्रानह । पत्र स०-५३ । पित्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपत्र-३६ । लिपि-कन्नड । माया-संस्कृत । विषय-कोश । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तया शुद्ध । दशा-मामान्य । विद्यय-इमर्पे 'वनजय नाममाला' भी है ।

### ग्रन्थ न० २४४।

प् असरकोश-अमरसिंह। पत्र मं०-१३५। पित्त प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-३५। लिपि-कन्नड। भाषा-मम्कृत । विषय-कोष। वस्नु-ताडपत्र । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा ज्ञुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडविद्री होसबसिंद पाचप्प इन्द्र है ।

### ग्रन्य न० २४७।

६ स्मर्कोश-अमरसिंह। पत्र स०-२२। पितः प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-५५। लिपि-कन्नह। भाषा-संस्कृत। विषय-कोष। वस्तु-ताहपत्र। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा शृद्ध। दशा-सामान्य।

### ग्रन्य नं० ८७।

७ नाममाला-महाकवि घनजय । पत्र सं०-६ । पिन्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिन्त-८० । लिपि-कन्नड । भाया-संस्कृत । विषय-कोष । वस्तु नाडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्य न० १३३।

द नाममाला-महाकि वनंजय। पत्र मं०-१८। प्रंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिक्त-४१। लिपि-कन्नड। मापा- संस्कृत। विषय-कोष। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा गृद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें शब्दरूपावली, घातुपाठ और नमासचक भी है।

### ग्रन्य न० १७३।

र नाममाला-महाकिव घनजय । पत्र सं०-१२ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-४५ । लिपि-कन्नट । भाषा-संस्कृत । विषय-कोग । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗴 पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० १९३ ।

- १० नाममाला-महाकवि यनजय। पत्र स०-१२। पिन प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपिक्त-३४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कोष। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ नं० २२३।
- ११ नाममाला-महाकिव घनजय । पत्र सं०- ४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५१ । लिपि-कन्नड । नाया-संस्कृत । विषय-कोष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णे तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० २३४ ।
- १२ नाममाला-महाकिव घनजय । पत्र स०-४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । असर प्रतिपक्ति-३० । लिपि-कप्रड । भाषा-चंस्कृत । विषय-कोष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इममें क्याड टीका है ।

### ग्रन्य नं ० २५४।

१३ नाममाला-महाकि वनजय। पत्र सं०-४४। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रपक्ति-६४। लिपि-फत्रड। भाषा-मंस्कृत। विषय-कोण। वस्तु-नाडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

### विषय-व्याकरण

### ग्रन्य न० २१८।

१ कातन्त्र-शवंवमं । पत्र स०-८ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा शृद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसका अपर नाम 'कोमार' है ।

### ग्रन्थ न० २५७।

२ कातन्त्ररूपमाला-मानसेन त्रैविद्य । पत्र स०-६८ । पित्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपित्त-५४ । िर्णि-कन्नड । भाषा-स॰कृत । विषय-ज्याकरण । वस्तु ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा- उत्त म ।

### ग्रन्थ न० १९९।

३ धातुपाठादिसंग्रह्-आचार्यं शाकटायन । पश स०-४५ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याकरण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तया शृद्ध । दशा- सामान्य ।

विशोप-इसमें 'शब्दरूपावली' 'समासचक्र' आदि भी है ।

### प्रन्य न० १०२।

४ मन्त्रव्याकरण्— ''। पत्र स०-१६। पिक्त प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपिक्त-५६। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसके अतमें 'इति समन्तमद्रस्वामिकृत मत्रव्याकरणम्' यह वाक्य मिलता है ।

### ग्रन्थ न० १६२।

४ शाकटायनप्रिक्षासम्बद्ध-आचार्यं अभयचन्द्र । पत्र स००७७ । पिक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-५० । लिपि-कञ्चड । भाषा-संस्कृत । विषय-ध्याकरण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० २०२।

६ शाकटायसप्रिक्तयासंग्रह-बाचार्य अभयचन्द्र । पत्र स-४१ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० १८।

\* ७ सारस्वतञ्याकरण्- । पत्र स०-३४। पिन प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिनतः-९१। लिपिकन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-न्याकरण। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।
प्रणम्य परमात्मान बालधीवृद्धिसद्धये। सारस्वतीमृजू कुर्वे प्रक्रिया नातिविस्तराम्।।

### ग्रन्थ न ९१।

\* द्वारस्वत- ' ' ' । पत्र स०-९० । पिन्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिन्त-५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसके प्रतिलिपिकार कवि निम्मण्णके पुत्र महावल है ।

# त्रिपय-कान्य

### ग्रन्य नं० २००।

- १ काट्यसारसंग्रह-\*\*\*\*। पत्र मं०-५६। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-८३। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-काव्य। वस्तु-नाडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्णे तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ न० १६७।
- २ त्तत्रचूहामिं (ग्नादीभिंसह । पत्र सं०-३९। पिन्त प्रतिपत्र-८। अक्षरं प्रतिपिन्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य। वस्नु-नाडपत्र। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा गृद्ध। दशा-मामान्य। ग्रन्य नं० २०५।
- ३ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र म०-९८ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कान्य । वस्तु-ताडगत्र । लेखनकाल- × । पूर्णं तया शुद्ध । दशा-शिषिल । ग्रन्य न० २२ ।
- ४ जयनृपकान्य-प्रभुराज मगरस । पत्र सं०-१२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । पटपिद । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४। पूर्ण तया गुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्य नं० १७१ ।
- ४ जयनृपकाव्य-प्रभुराज मगरस । पत्र स०-८५ । पिनत प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपिनत-४७ । विषि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम । ग्रन्य न० ७७ ।
- ६ **ज्ञानचन्द्राभ्युद्य**-कवि कल्याणकीति, १ पत्र म०-५२ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । निपय-काव्य । वस्नु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० १३७ ।
- ७ नागकुमारकान्य-आचार्यं मिल्लिपेण । पत्र सं०-१५ । पिनतः प्रतिणत्र-८ । अक्षरः प्रतिपिन्ति-९३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृतः । विषय-कान्यः । वस्तु-ताडपत्रः । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्धः । दशा-उत्तमः । ग्रन्यः नं० २३१ ।
- ८ नागकुमारकान्य-श्राचार्य मिल्लियेण । पत्र स०-१७ । पिक्त प्रतिप्रत्र-८ अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कान्य । वस्नु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तया शुद्ध । दशा-अतिशियल ।

### ग्रन्य न० १६८।

- ९ सुनिसुत्रतकाव्य-पण्डित अर्हृहास । पत्र सं०-५४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । कुसर प्रतिपत्रित-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । वस्तु-नाडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णे तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० १९५ ।
- १० सुनिसुत्रतकाञ्य-पण्डित अर्हहाम । पत्र स०-४० । पक्ति प्रतिपत्र-६ । असर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० २५७ ।
- ११ सुनिसुन्नतकाट्य-पण्डित बहुँद्दास । पत्र मं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६९ । छिपि-कन्नड । भाषा-मंम्कृत । विषय-काट्य । वस्तु-नाडपत्र । छेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । जन्य नं० १३२ ।
- १२ यशोघरकाञ्य-महाकवि वादिराजमूरि। पत्र सं०-१७। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षरप्रतिपंक्ति-५०। लिपि-कन्नड । नापा-सस्कृत । विषय-साहित्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें सिर्फं वार सर्गं है ।

# विषय-अलङ्कार आदि

ग्रन्थ न० ७९।

१ श्रालङ्कार संग्रह—अमृतानन्दी। पत्र स०-३१। पिनत प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपंनित-६५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-अलङ्कार। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ न०१४०।

\* २ काट्यादश्री-महाकवि दण्डी । पत्र स०-२३ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलङ्कार । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# विषय-छन्दः शास्त्र

ग्रन्थ न० २७७।

\* १ वृत्तरत्नाकर-केदारभट्ट । पत्र स०-१२ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-३५ । लिपि-कर्नेड । भाषा-सस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा शृद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० २७७ ।

\* २ शृङ्कारमञ्जरी- '''' । पत्र सः-१२। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-३५। लिपि-कन्नष्ट । भाषा-सस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । वस्तु-ताडक्त्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शृद्ध । दशां-उत्तम ।

### ->:≪-

# विषय-नीति तथा सुभाषित

ग्रन्थ न० १४३।

१ नीतिश्लोकसम्रह- ' । पत्र स०-५१ । पन्ति प्रतिपंत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-नीति । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० २०० ।

२ नीतिसारसंग्रहें - ''''। पत्र सं०-२१। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपक्ति-११४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत और कन्नड। विषय-नीति। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

### ग्रन्थ न० २४८।

\* ३ शतकत्रय-श्री भर्तृहरि । पत्र स०-२३ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-नीति आदि । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि०शक १७११ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडिवद्री चन्दय्य सेट्टि है।

ग्रन्थ नं० १२५।

४ सुभाषितपर्द्यसंग्रह्- • • • • • । पत्र स०-२५ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत और कन्नड । विषय-सुभाषित । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा अशुद्ध । देशा-सामान्ये ।

**─≫**:≪─

# विषय-पुराण

### ग्रन्थ न० २१७।

१ श्राद्धनेमिपुराग्-किव नेमिचन्द्र । पत्र स०-१०३ । पित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० २७४ ।

२ ऋद्धेनेपिपुराण्-किव नेमिचन्द्र । पत्र स०-१०३ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-६१ । लिपि-किन्नड । भाषा-भन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । देशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ४ ।

३ त्रादिपुराण्-महाकवि पंप । पत्र स०-१२९ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-७३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १४८५ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसे शालिवाहन शक १४८५ दुर्मति सवत्सर ज्येष्ठ शुक्ल १७, वृधवार के दिन मेलू बगवाडी के पद्मरस ने लिखकर पूर्ण किया था।

### ग्रन्थ न० ८।

४ म्रादिपुराण्-महाकवि पंप। पत्र स०-११३। पिनत प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपानत-८९। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-पुराण। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसे आदिशान्तय्यके पुत्र गुम्मटने लिखा है । उम्मक्क-पम्मक्कने शास्त्रदानके लिये इनसे लिखवाया है।

### ग्रन्थ नं० १७६।

४ श्रादिपुराण्-महाकवि पप। पत्र स०-१०१। पवित प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपक्ति-९७। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-पुराण। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

### ग्रन्थ नं० ९८।

६ स्त्रादिपुराण-आचार्य जिनसेन । पत्र स०-१६३ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० २४६ । \_

७ स्त्रादिपुराग्य-----। पत्र स०-२१। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-८२। लिपि-कन्नड। माषा-कन्नड। विषय-पुराण। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-यह कन्नडगद्यरूप है।

### ग्रन्थ नं० २।

८ उत्तरपुरागा-आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०-१६१। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-११२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-शालि०शक १८२४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें क्लिष्ट शब्दों का अर्थ भी दिया गया है। ग्रन्थ नं ७ ७४।

६ उत्तरपुरागा-आचार्यं ग्णभद्र । पत्र स०-१८६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-९७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक ८२४ । पूर्णं तथा ,शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें ग्रन्थममाप्तिकाल शकनृपकालानितसवत्सरशतेषु अष्टसु चतुर्विशत्यधिक दुंदुिम स० कार्तिक कृष्ण ५। यो लिखा है।

### ग्रन्य नं० ७४।

१० डत्तरपुराण् टिप्पण्री-····। पत्र सं०-४१। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-१००। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णे तथा शृद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्य नं० १६३।

११ चतुर्विशतितीर्थं करलघुपुराण-\*\*\* । पत्र चं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्तर प्रतिपंक्ति-२४ । लिपि-कन्नड । नापा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-इसमें कई स्त्रोत्रोंका संग्रह ह। इसके प्रतिलिपिकार मूडिवद्री चार्कीति पण्डिताचार्यके शिष्य कंचिदेशके अय्यण्ण हैं।

### ग्रन्य नं० ७ ।

१२ चंद्रप्रभपुराण्-अग्गलदेव । पत्र सं०-१८० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिप-कन्नेड । नापा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १४३८ । पुर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि॰ शक १४३८, घातृ सं॰, आपाङ् कृष्ण ५, बृहस्पति वारके दिन कोणसूर विट्टिदेवरसके पुत्र पुट्टदेवरसने इसको प्रतिलिपि की है।

### ग्रंय नंब्द ।

१३ चन्द्रप्रभपुराग्- अग्गलदेव । पत्र सं-९७।पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-८३। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗶 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्य नं० ४८।

१४ त्रिषष्टिलत्त्र्ग्यमहापुराग्य-चामुण्डराय। पत्र सं-१३१। पिन्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-८२। लिपि-कन्नड। नाया-कन्नड। विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १६०२। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

### ग्रन्य नं० २७३।

१५ त्रिपष्टिलच्चणपुराण्-त्री चाउण्डराय । पत्र सं-२०३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । नापा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसका रचनाकाल शालि० शक ९०० हैं । आरगद विदूर लक्कप्प सेट्टिके पुत्र शान्तण्ण सेट्टिने इसे लिखवाकर महेन्द्रकीर्तिके शिष्य अनन्तर्कार्तिको शास्त्रदान किया है ।

### ग्रन्य नंऽ ४४।

१६ तीर्थं करपुराण्-\*\*\*\*। पत्र सं-१२। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-२६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-पुराण। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

### ग्रन्य नं० ६।

१७ धर्मनायपुराण्-पण्डित वाहुवली । पत्र सं-२३३।पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १३४२ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसे कार्कलके भट्टारक ललितकी तेंके शिष्य भंडारी देवर सेट्टीने लिखकर स्थानीय शांतिनायमंदिर को दान किया था ।

### ग्रन्थ नं ० ९९।

१८ नेमिनाथपुराण-श्री कर्णपार्य। पत्र स-१५०। पिनत प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्त-१००। िलिप-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-पुराण। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मनियण्ण है। यह समन्तभद्रदेवके शिष्य है।

### ग्रन्थ न० ३।

१६ पद्मपुराण्-आचार्यं रिवषेण । पत्र स-२२४ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-६०७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १२०४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसके दो पत्र खण्डित है।

### ग्रन्थ न० १८७।

२० पुष्पदन्तपुराण्-श्री गुणवर्म । पत्र स-९७ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिनिनत-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १४२२ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशारूउत्तम । विशेष-इसके प्रतिलिपिकार भुजवली हैं ।

### ग्रन्थ न०१२७।

२१ रामचन्द्रपुराग्-महाकि अभिनव पप। पत्र स-१३२। पिन्त प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिन्त-१५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-पुराण। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-शालि० शक१३५९। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-अ शिथिल।

विशेप-इसमें कई पत्र खण्डित है। इसके प्रतिलिपिकार कोनण नगरके सिरियण है। इस प्रयके रचयिता अभिनव पप मुनि बालचन्द्रके शिष्य है।

### ग्रन्थ न० २७६।

२२ लघुपुराण्- \*\*\* । पत्र स-६। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-६५ । लिपि-कञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । वस्तु-ताडगत्र । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा गुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न०४९।

२३ वृषभनाथपुराण-हस्तिमिल । पत्र स-२२ । पित्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपित्त-११८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसका अपर नाम 'श्रीपुराण' है ।

### ग्रन्थ न० ५४।

२४ वृषभनाथपुराण्-हरितमिल्ल । पत्र स-५२ । पिनत प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिनत-३३ । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । वस्तु-कागज । लेखनकाल-सन् १९३५ । पूर्ण तथा अश्रद्ध । द्रशा-उत्तम । विशेष-श्रीरुराणसमाम्नायमाम्नात हस्तिमिल्लिना । तरण्ड सर्वशास्त्राब्धेरखण्डं धारयत्वमृम् ॥ इसे पजिकल्लु प० अनन्तराजेन्द्र ने लिखा है ।

### ग्रन्थ न० ४१।

२५ संचिप्तचतुर्विशतितीर्थंकरपुराण्-चामुण्डराय । पत्र स०-९७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षरं प्रतिपक्ति-४०। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४।पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ नं० १७४।

२६ हरिवंशपुरागा-प्रमुराज मगरस । पत्र स०-२३६ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-८७ । लिपि-कन्नड । माषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ह । विशेष-इसके प्रतिलिपिकार कावल गांवके मजुनाथ

### ग्रन्थ न० २१०।

२७ हरिवंशपुराण-प्रभुराज मगरस'। पत्र स०-४२।पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-७०। लिपिकन्नड। माषा-कन्नड। विषय-पुराण। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।
ग्रन्थ न० १८०।

२८ हरिवंशपुराग्य-प्रभुराज मगरस । पत्र स०-२२२ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसके प्रतिलिपिकार बगर गोत्रके चन्दस्य उपाध्याय है ।



# विषय-चरित्र

### ग्रन्य न० १५५ ।

१ श्रनन्तकुमारीचरित-वर्णी शान्तण्ण । पत्र स०-१७ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १७८६ । पूर्ण तथा शृद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इस ग्रन्थके रचयिता वर्णी शान्तण्ण भारगीपुरके निवासी है। प्रतिलिपिकार मूडविद्री पहुवसिद पुरोहित पद्मय्य इन्द्रके पुत्र चन्दप्य इन्द्र है।

### ग्रन्थ न० १७५।

२ श्रमन्तकुमारीचरित-वर्णी शान्तण्ण । पत्र स०-२८ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णे तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ६१ ।

३ श्रहिसाचरित-वर्णी पायण्ण । पत्र स०-३७ । पक्ति प्रतिपत्र-२० । अक्षर प्रतिपक्ति-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-कागज । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० १५५।

४ द्यहिंसाचिरत-वर्णी पायण्ण । पत्र स०-१८ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १७८६ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इस ग्रन्थ का रचनाकाल शालि॰ शक १३६९ है। इसके प्रतिलिपिकार मूडिबद्री पडुवसिंद पुरो-हित पद्मय्य इन्द्र के पुत्र चन्दप्प इन्द्र है।

### ग्रन्थ न० १७५।

्र ऋहिसारचित-वर्णी पायण्ण । पत्र स०-२९ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसके प्रतिलिपिकार किपुर के गुम्मस्य है ।

### ग्रन्थ न० २४।

६ स्प्रजनादेवीचिरत-मायण्ण सेट्टि। पत्र स०-११४। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिक्त-९५। लिपि-कन्नड। माषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-विरोधिकृत् स०, चैत्र शु १० के दिन स्वामी विद्यानन्दी के शिष्या शांनमती अव्वे के लिये मायण्ण सेट्टि ने इस की रचना की।

### ग्रन्थ न० १३५ ।

७ चन्द्रप्रभचिरत-किव दोड्ड्य्य । पत्र स०-१९१ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह चरित्र 'सामन्य'पद्म में हैं ।

### ग्रन्थ न० ४६।

द्र जिनदृत्तरायचिरत—कवि पद्मनाभ । पत्र स० ९० । पवित प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपक्ति—५३ । लिपि- क्षित्र । भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल— 🗴 । अपूर्णे तथा शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—इसका अपर नाम 'पद्मावतीचरित' है ।

### ग्रन्थ न० १०५।

ह जिनदत्तरायचिरत-कविपद्मनाभ । पत्र स०-२०। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिनत-५४। लिपिकन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ता₅पत्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-अतिशिथिल ।
विशेष-इसमें वीच २ के कई पत्र नहीं हैं ।

### ग्रन्थ न० १२४ ।

१० जिनद्त्तरायचिरत-कवि पद्मनाभ । पत्र स०-८१ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १६९० । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेप-इसके प्रतिलिपिकार मूडिवद्री ब्रह्मय्य है। इसमें ७ से १० तक के चार पत्र नहीं है। यन्य न० १८३।

- ११ जिनदत्तरायचिरत-किन पद्मनाभ । पत्र स०-८८ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-८९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णतथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० २६१ ।
- १२ जिनद्त्तरायचिरत-किव पद्मनाभ । पत्र म०-७२ । पिन्त प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिन्त-५४ । लिपि-कन्नड । निपय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शृद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० २६४ ।
- १३ जिनद्त्तरायचरित-कवि पद्मनाभ । पत्र स०-११५ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा- सामान्य । ग्रन्थ न० २२८ ।
- १४ जीवन्धरषद्पद्-किव वोम्मरम।पत्र स०-५९।पित प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-७३। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×।पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-यह 'षट्पदि' कन्नड छन्दका एक भेद है।

### ग्रन्थ न० १११।

१५ जीवन्धरपट्पद्-किवभास्कर। पत्र स०-२१८। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-२४। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल- ×। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसका रचनाकाल शालि० शक १२४५ है। इसकी रचना पनगोडे श्री शातिनाथ चैत्यालयमें हुई है।

### ग्रन्थ न० १४१ 🐪 🕛

१६ जीवन्धरपट्पद्-किव भास्कर । पत्र स०-८३ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६४ । किपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल । विशेष-इसमें प्रथम पत्र नहीं हैं ।

### ग्रन्थ न० १६९।

१७ जोवन्धरषट्पदि-कवि भास्कर। पत्र स-९। पिक्त प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिक्त-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० २१८।

१८ जीवन्घरषट्पदि—किव भास्कर। पत्र स०-७१। पिनत प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिनत-७४। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४।पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-प्रथ रचनाकाल शालि० शक १३४५ है। इसके प्रतिलिपिकार पम्मण्ण है।

### ग्रन्थ न० २२७।

१६ जीवन्धरषट्पदि-किव भास्कर। पत्र स०-४१। पिक्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-११८। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मुनिभद्रदेवके शिष्य लघु मुनिभददेव है। इसकी प्रतिलिपिक्षेमपुर में हुई है। ग्रन्थ न०२५९।

२० जीवन्धर्षट्पद्-किव भास्कर । पत्र स०-३५ । पिक्त प्रतिपत्र-अक्षर प्रतिपिक्त-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- ४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ २०२६७ ।

२१ जोवन्धर्षट्पदि-किव भास्कर । पत्र स०-६२ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताहपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथल । ग्रन्थ न० १३९ ।

२२ जैमिनिभारत-कवि लक्ष्मीश । पत्र स०-६८ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-६ , । कृषि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० १००।

२३ ज्ञानचन्द्रचित-वर्णी पायण्ण । पत्र स०-१७१ । पन्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपन्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-१५८१ । पूर्ण तथा शृद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इमका रचनाकाल शालि० शक १५८१ है। प्रन्य न० १८८।

२४ ज्ञानभास्करचिरत-नेमण्ण । पत्र स०-२० । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-१९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इस ग्रयका रचनाकाल शालि० शक १४८२ हैं ।

### ग्रन्थ न० २६०।

२५ ज्ञानभास्करचरित-नेमण्ण । पत्र स०-७ । पिन प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-कालि० शक १७४५ । पूर्ण तथा शृद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० २६२।

२६ ज्ञानचन्द्राभ्युदय-मुनि कल्याणकीर्ति । पत्र स०-४७ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न०र १५५ ।

२७ त्रेलोक्यभृषगाचित-चन्दय्य उपाध्याय। पत्र स०-२। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-७०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-शालि० शक १७८६। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसके रचियता मूडिबड़ी निवासी हैं। प्रतिलिपिकोर भी मूडिबड़ी पडुवसिंद पुरोहित पचय्य इन्द्र के पुत्र चन्दप्प इन्द्र हैं।

### ग्रन्थ नं० २६०।

२८ त्रैलोक्यभूषणचरित-श्री चन्दय्य उपाध्याय । पत्र स०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७१ । लिगि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णे तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ नं० ६१।

२९ धन्यकुमारचरित—किव आदिनाथ । पत्र सं०-४६ । पित प्रतिपत्र-२० । अक्षर प्रतिपंक्ति-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-कागज । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० १५५।

३० धन्यकुमारोचिरित-किव आदिनाथ । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-ज्ञालि० शक१७८६ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इस ग्रन्थके रचियता आदिनाथ चङ्गदेशके चप्परग्रामके निवासी हैं। प्रतिलिपिकार मूडिविद्री पडुवर्सिद पुरोहित एवाय्य इन्द्रके पुत्र चन्दप्प इन्द्र हैं।

### ग्रन्थ नं ० १७५।

३१ धन्यकुमारचरित-किव आदिनाथ । पत्र सं०-२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इस ग्रंथके रचियता चंगनाड् चप्पर गांवके निवासी हैं।

### ग्रन्थ नं० ६८।

३२ नागकुमारपंचमीचरित-आचार्यं मिललवेण। पत्र सं०-१६। पंक्ति प्रतिपत्र-८। सक्षर प्रतिपंक्ति-७२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ नं० ३०।

३३ नागकुमारचिरत-कवि वाहुवली । पत्र सं०-२०० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति -६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रन्थ नं० ११८ ।

३४ नागकुमारचरित-किव वाहुवली । पत्र सं०-२१६ । पंक्ति प्रतिगत्र-१० । प्रक्षर प्रतिपंक्ति-५४। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १७२८ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इशके प्रतिलिपिकार मूडिबद्री चन्दय्य उपाध्याय हैं।

### ग्रन्थ नं० ४४२।

३५ नागकुमारचरित-किव बाहुवली । पत्र सं०-१५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-अति शिथिल ।

विशेष-इसमें बीच २ के कई पत्र नहीं हैं।

## ग्रन्थ नं० १५३।

३६ नागकुमारचरित-कवि वाहुवली । पत्र सं०-१७९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-७५ । । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा शुद्ध । दर्शा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० १६९।

३७ नागकुमारचरित-किन बाहुबली। पेत्रे स०-५०। पित प्रतिपत्र-७। अक्षरप्रतिपिक्त-६०। लिपि-केन्नेड । भाषा-केन्नेड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनेकाल- 🗴 । अपूर्ण तथा शुद्ध । देशा-सामान्य । ग्रन्थ न० १७८।

३८ नागकुमारचित्त-कवि वाहुबली । पत्र स०-२२२ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भोषी-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-अति शिथिल ।

विशय-इसके प्रतिलिपिकार हामि गुम्मट सेट्टिके पुत्र कोडे अतण्ण सेट्टि है। ग्रन्थ न० २०१।

३६ नागकुमारचरित-कवि बाहुवली । पत्र स०-८८ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षरं प्रतिपिक्त-१०२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रत्यं न० १८२ ।

४० नोगकुमारपट्पद्-विजयण्ण । पत्र स०-३१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-९५ । लिप-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-शिथिल । प्रिन्थं न० २३२ ।

र्४१ नीगकुमीरंषट्पदि-मुर्नि कल्याणकीर्ति । पत्रं स०-५१ । पत्रिन प्रतिपत्र-८ । अक्षर पतिपक्ति-५/६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णे तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । र्रेन्य न १७९

४२ नेमिजिनेशर्सगति-प्रभुराज मगरस । पत्र स०-२३३। पेक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिक्त-६०। लिपि-कन्नर्ड । भीषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शृद्ध । देशी-उत्तम । विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मालद वसदि ब्रह्मर्थ्य इन्द्रके पुत्र चन्द्रप्प इन्द्र है ।

### ग्रन्थ न० ६२।

र्४३ चाहुँबिलिचरित-पण्डित चिक्कण्ण । पत्र स०-११५। पिक्त प्रतिपत्र-२०। अक्षरं प्रतिपिक्त-२६। छिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड षट्पदि। विषय-चरित्र । वस्तु-कागज। लेखनकाल- ४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्थ न० २२७ ।

४४ **चाहुंबेलिचरित**-पण्डित चिक्कण्ण । पत्र स०-१८ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । मापा- कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-उत्तम । भ्रन्थ न० ६० ।

४५ बुद्धिसाँगरचरित-कवि चिदानन्द । पत्र स०-१०५ । पक्ति प्रतिपत्र-२१ । अक्षर प्रतिपक्ति-२६ । किपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-कागज । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० १६० ।

प्रदे बुद्धिमागॅरचिरित-कवि चिदानन्द । पत्र स०-१५९ । पनित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-५४ । लिपि-कन्नर्ड । मीपा-कन्नर्ड । विपिय-चिरित्र । वस्तु-तार्डपत्र । लिखनेकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० १०९ ।

श्रेष सरतेश्वेसव-रत्नाकरवर्णी । पत्र स०-१६२ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र 1 वस्तु-नाडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ न० ११० । ४८ भरतेशवैभव-रत्नाकरवर्णी । पत्र स०-२५३ । पिक्त प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिक्त-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्नु-तांडपत्र । लेखनकाल-कोल्ल स०८७१ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-समन्तभद्रके शिष्य, नन्दावरके निवासी चन्द्रमने शान्तिकीर्तिके ग्रन्थपर से इसकी प्रतिलिपि की है। ग्रन्थ न० १७७।

४६ भरतेश्वैभव-रत्नाकरवर्णी । पत्र स०-१२९ । पन्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-९६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्य न० १५९ ।

५० यशोधरचरित-चन्दण्ण वर्गी। पत्र स०-१६। पिन्त प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिन्त-४१। लिपिकन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-नाडपत्र। लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।
विशेष-इसमें प्रारम्भके चार पत्र नहीं है। यह पट्पिद पद्यमें है। इसमें जैनव्रतकथाओका भी सग्रह है।
इनमें 'रुक्मिगी' और 'सिद्धचकत्रतिविधान' को कथायें सस्कृतमें शेष कन्नडमें है।

### ग्रन्थ न० ८५।

प्र रत्नशेखरचरिन-पट्टाभिराम। पत्र स०-११८। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिन्त-३७। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ६१।

प्र रोहिग्गोचिरत-जिनचन्द्र । पत्र सं०-३८ । पक्ति प्रतिपत्र-२० । मक्षर प्रतिपक्ति-२६ । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा अगुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह जिनचन्द्र मेशनन्दीके शिष्य है ।

### ग्रन्य न० ६१।

५३ लोभदृत्तचरित-कवि नेमरस। पत्र सं०-३९। पंक्ति प्रतिपत्र-२०। अक्षर प्रतिपक्ति-२६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-कागज। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा गुद्ध। दगा-उत्तम।

### ग्रन्थ न० २६२।

५४ लोभदत्तचरित-कवि नेमरस । पत्र स०-४० । पिक्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिक्त-३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-नाडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल । ग्रन्थ नं० ६८ ।

५५ वर्धमानचरित-किन पदा। पत्र सं०-७०। पित प्रनिपत्र १८। अक्षर प्रतिपिक्त-२७। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-कागज। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा गुद्ध। दशा-उत्तम। प्रन्य नं० २४।

५६ वसंतितत्तकाचरित-कवि नेमिचन्द्र । पत्र स०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । गाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० २३०।

५७ विजयकुमारोचिरति-श्रुतकीतिदेव । पत्र स०-६६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६६ । िक्षि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-उत्तम । विशेप-इत्तका रचनाकाल शालि० शक १४८८ है । इसके प्रतिलिपिकार शान्तिसागरवर्णी है ।

### ग्रन्य नं० १५७।

४८ विजयकुमारोचरित-श्रुतकोतिदेव । पत्र स०-७८ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-नाडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १४८८ । पूर्णे तया गृद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्य न० १४५।

५६ श्रीपालचरित-इन्द्रदेवरस । पत्र स०-३२ । पिक्त प्रातिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-६० । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-नाडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ न० १५५।

६० श्रीपात्तचरित-इन्द्रदेवरस । पत्र म०-१७ । पिन प्रतिपत्र-९ । अक्षर पतिपक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-चरित्र । व तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १७८६ । पूर्ण तथा शुद्ध । दणा-उत्तम ।

विशेप-इस ग्रन्यके प्रतिलिपिकार मूडविद्री पडुवसिंद पुरोहित पद्मय्य इन्द्रके पुत्र चन्द्रप्य इन्द्र हैं। ग्रन्य न०१७५।

६१ श्रीपालचरित-इन्द्रदेवरस । पत्र स-३२। पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा उत्तम ।

### ग्रन्थ न० ७५।

६२ श्रीपालचरित-कवि वर्षमान । पत्र स०-८२ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कई पत्र नहीं है ।

### ग्रन्य न० १०४।

६३ श्रेगिकचरित-जिनदेवण्ण । पत्र स०-३० । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष--यह 'सागत्य'पद्य में हैं ।

### ग्रन्य नं० १४५।

६४ श्रेगिकचरित-जिनदेवण्ण । पत्र स०-५९ । पितः प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपित्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल । विदोप-इसमें कई पत्र नहीं है ।

### ग्रन्थ न० २४।

६५ होसर्चरित- ' '''। पत्र स०-५। पित्रत प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपित्त-९६। लिपि-कन्नह। मापा-कन्नह। विषय-चरित्र। वस्तु-ताहपत्र। लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा शृद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसे आनन्द स० पुष्य वृषवार, मट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य हिरिय माणिक्कस्वामी ने पद्मश्री अजिका के लिये कारिडगे जिनमिदरमें लिखकर सपूर्ण किया था।

# विषय-कथा

### प्रन्य न० २०९।

द्याद्यांगकथादिसग्रह्- \*\*\*\*। पत्र स०-५३ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-कथा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० २१३।

२ गोरोत्रतकथा-\*\* ''। पत्र स०-३। पन्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-७२। लिपि-कन्नह। भाषा-कन्नह। विषय-कथा। वस्तु-ताहपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा,-उत्तम।

### ग्रन्थ न० ४९।

३ चन्द्रनपष्ठिकथा-\*\* '। पत्र स०-२ । पन्ति प्रतिपत्र-१० अक्षर प्रतिपन्ति-११३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० ४९।

४ चन्द्रपष्ठिकथा-साचार्यं माववचन्द्र । पत्र स०-२ । पिन्त प्रतिपत्र-१० । सक्षर प्रतिपिनत-११३ । किपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह माधवचन्द्र सा० नेमिचन्द्रदेवके शिष्य, मेघचन्द्र सिद्धान्तदेवके प्रशिष्य है ।

### ग्रन्थ न० २३५ ।

्र चन्द्रषट्ठयादित्रतकथा- ःः। पत्र स०-५०। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-४२। लिपि-क्त्रड। भाषा-कृत्रड। विषय-कथा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा गुढ़। दशा-उत्तम्। विशेष-इसमें ६ व्रतकथाएँ है।

### ग्रन्थ न० २४६।

६ जयकुमारकथा- । पत्र स०-२०। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-७२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शृद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-यह गद्यरूप में है।

### ग्रन्थ न० १९।

७ त्रैलोक्यविधानकथा-अभ्रदेव । पत्र स०-३। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-७६। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शृद्ध । दशा-उत्तम । इय कथाभ्रदेवेन कथिता दु:खहारिणी ।

# एव सस्त्यते भन्यैर्लभ्यते मोक्ससपदम् ॥ (?)

# ग्रन्य न० २२६।

द्र धर्मीमृत-नयसेनदेव । पत्र स०-१५७ । पित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिति-७२ । किपि-कन्नह्र । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम् । ग्रन्थ न० २५३ ।

ह ध्रमीमृत-नयसेन् । पत्र स०-१३८। पिनत प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिनित-७२ । जिति-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम् । ग्रन्थ नं० ७३ ।

१० पुण्यास्त्रवकथा-मुनि रामचन्द्र। पत्र स०-२१। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-१३५। लिपि-कन्नहः। भाषा-संस्कृतः। विष्य-कथा। वस्तु-ताडपत्रः। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्धः। दशा-उत्तमः

# ग्रन्थ न० ७३।

११ पुरयास्त्रवकथा-किव नागराज । पत्र स०-११७ । पित् प्रतिपृत्र-९ । अक्षर प्रतिपितृत-१३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम्। ग्रन्थ न० २५१ ।

१२ पद्धमोझतकथा-\*\*\* । पत्र स०-१२। पंत्रित प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपक्ति-६२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

### ग्रन्थ नं० ४९।

१३ रत्नत्रयकथा-आचार्य पद्मनन्दी'। पत्र स०-२। पन्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपैक्ति-११३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। वस्तु-ताड्यत्र। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ न० ४९।

१४ इक्मिग्गीकथा-पण्डित सोमदेव । पत्र स०-२।पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपक्ति-११३। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० ६५।

१५ वहाराधनाकथा-आचार्य शिवकोटि। पत्र सं०-२७। पनित प्रतिपत्र-१८। अक्षर प्रतिपंक्ति-१६। लिपि-कन्नड। मापा-कन्नड। विषय-कथा। वस्तु-कागज। लेखनकाल- ×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ न० २८।

१६ श्रतकथा-----। पत्र स०-१६९। पिन्ति प्रतिपत्र-९। बक्षर प्रतिपिन्ति-१२१। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'नदीश्वरत्रतकथा' आदि ७८, कन्नड क्याएँ है। साथ-माथ रत्ननन्दिवरिचत 'पल्यव्रतविधान' क़ी संस्कृत कथा भी।

### ग्रन्थ न०५५।

१७ ज्ञतकथा- । पत्र स०-४०१। पन्ति प्रतिपत्र-१८। अक्षर प्रतिपन्ति-२०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नह । विषय-कृया । वरत्-कागज् । लेखनकाल-सन् १९२७ । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-उत्तम् । विशेष्ट-इसम् ८३ कथाएँ है । इसके प्रतिलिपिकार मुडविद्री पड्वसिद पाचप्प इद्र हैं।

### ग्रन्य न० १२६।

१८ व्रतकथा- । पत्र सं ० - ७५ । पन्ति प्रतिपत्र - ८ । अक्षर प्रतिपन्ति - ९० । लिपि - कन्न ह । भाषा-कन्नह । विष्यं-कुषा । व्स्तु-ताहपत्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें ७३ कथाएँ है। इसे सण्णिम्म सेट्टितिने प्रतिलिपि कराकर ज्ञानचन्द्रदेवको शास्त्रदान किया है।

### ग्रन्य न० १२९।

१६ व्रतकथा- । पत्र सं०-१७५ । पित्रत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । वस्नु-नाडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'पुष्पाजलिवत' सादि ४३ वतकयाएँ है ।

### ग्रन्य न० २५०।

२० व्रतकथा- । पत्र सं०-१२०। पन्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपन्ति-६२। लिपि- कन्नड। भाषा-कन्नह । विषय-कथा । वस्तु-ताड्पत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शृद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'पोडशमावनाव्रतकथा' आदि ४० कथाएँ हैं।

### ग्रन्य न० ४३।

ं २१ सम्यक्त्वकोसुदी-मगरस । पत्र स०-८३ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-२९ । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-कथा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० ५८।

२२ सम्यक्त्वकौमुदी-मंगरस । पत्र स०-३१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपक्ति-२३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । वस्तु-कागज । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० ९२।

२३ सम्यक्त्वकौमुदी-मगरस । पत्र सं०-१२५ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपृक्ति-६५ । लिपि-कञ्चड । भाषा–कञ्चड । विषय–कथा । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–शालि० शक १४३१ । पूर्ण तथा शृद्ध । दशा– उत्तम ।

### ग्रन्य न० १८२।

२४ सम्यून्त्यकौमुदी-मगरस । पत्र सं०-५८ । पिन्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८९ । लिपि-कन्नड । माषा–कन्नड । विषय–कथा । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल– × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा–उत्तम । विशेष-यह पट्पदिपद्यमें है।

### ग्रन्य न० २२७।

२५ सम्यक्त्वकौमुद्गी-मगरस । पत्र स०-६०। पन्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-९७। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड । विषय-क्रया । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इस ग्रन्थका रचनाकाल शालि० शक १४३१ है।

# ग्रन्थुनं ०। २३१।

२६ सम्यक्तवकौमुदीकथा-मुनि धर्मकीति। पत्र स-४९। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-७२। लिपि–क्स्नड । भोषा–संस्कृत । विषय–कया । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल− × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

इतिहास

### ग्रन्य नं०४९।

२७ सिद्धचक्रत्रतकथा-\*\*\*\*। पत्र सं-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-११३ । लिपि-कन्नह । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । वस्तु-ताहपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्य नं० ४९ ।

२८ सुगंघदृशमोऋया- ' ' । पत्र सं०-५ । पिनतः प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिन्ति-११३ । लिपि-कन्नड । नाषा-संस्कृत । विषय-कया । वस्तु-नाडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तया सृद्ध । दशा-उत्तमः ।

### ग्रन्य नं ० ७६।

२६ सिहप्रायोपगमन-केशियण्ण । पत्र सं०-१०। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-१०५। लिपि-क्यह । भाषा-कन्नह । विषय-कथा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णे तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# विषय-इतिहास

### ग्रन्य नं० २२२।

१ गोम्मटेश्वरचिरत-चन्द्रम । पत्र स०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-३३ । लिपि-क्न्नड । मापा-कन्नड । विपय-इतिहास । वस्तु-ताटपत्र । लेखनकाल-ग्रालि० शक १७६१ । पूर्ण तया शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कार्कलस्य बाहुवलीस्वामीके मस्तकामिषेकका वर्षन है।

### ग्रन्य नं० २६१।

२ गोम्मटेश्वरचरित-चन्द्रम । पत्र सं०-९ । पंन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-६८ । लिपि-नन्नड । मापा-कन्नड । विषय-इतिहास । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-द्यालि० यक १७६० । पूर्णे तया खुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्य नं० २७५ !

३ गोन्मटेश्वरचिरत-गुरुराम । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७१ । लिपि-नन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्णे तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विगेष-मूडविद्रीके शासक चन्द्रगेनर चौटने वेणूरस्य श्री बाहुवली स्वामीका मस्तकमिषेक करवाया था ।

इसमें इसीका वर्णन है।

### ग्रन्य नं० १८८।

४ लोर्गोद्धारचरित्र-····। पत्र सं०-२४। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-२६। लिपि-कत्रह। मापा-कन्नड। विपय-इतिहास। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें मूहिदद्री त्रिभृवनचूढामणि नामक श्री चन्द्रनाथ मिदरका जीणोंद्वार विषयक वर्णन है। इसका रचनाकाल शालि० शक १६६८ है। प्रकाशनीय है।

### ग्रन्य नं० २५१।

४ तीर्थयात्राचरित्र-चन्दव्योपाव्याय । पत्र मं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । वक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । निष-कन्नह । नापा-कन्नह । विषय-इतिहास । वस्तु-ताहपत्र । छेखनकाल-४ । पूर्ण तया शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें दक्षिण कन्नह जिल्लाके जैनमन्दिरोंका वर्णन है ।

### ग्रन्य नं ३ २०० 1

्ह पंपारेबीगद्य-कविराज चन्द्रधेखर। पत्र स०-५। पंक्ति प्रतिपत्र-६। जलर प्रतिपंक्ति-१०१। लिपि-मप्तद। मापा-कन्नद। विषय-इतिहास। वस्तु तादपत्र। लेखनकाल-४१ पूर्ण तेया शुद्ध। दशा-उत्तम।

### ग्रन्थ न० १७५।

७ बेल्लिबोडुचरित्र-श्री चन्दय्य उपाध्याय । पत्र स० ३। पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-८७ । लिपि-कन्नड । माषा-कन्नड । विषय-इतिहास । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- ४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० २१९ ।

८ लद्मण्बंगप्रशस्ति- । पत्र स०-४। पन्ति प्रतिपत्र-१३। अक्षर प्रतिपन्ति-४६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-इतिहास। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

# विषय-आयुर्वेद

ग्रन्थ न० २७।

१ कल्यागाकारक-उग्रादित्य । पत्र स०-१९५ । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वैद्यक । बस्तु-ताडगत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

### ग्रन्थ न० १६४।

२ खगेन्द्रमिण्दिपेण-मगरस । पत्र स०-५९ । पिक्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिक्त-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नछ । विषय-वृद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० २११ ।

३ ख्रोन्द्रमिण्द्रपेण्-मगरस । पत्र स०ं-८२ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ७१ ।

४ धन्वन्तिरिनिघटु-धन्वन्तिरि । पत्र स०-३७ । पिक्त प्रतिपत्र-१० अक्षर प्रिनिपिक्त-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० १२० ।

्र धन्धन्तरिनिघटु-धन्वन्तरि । पत्र स०-३४ । पक्ति प्रतिपत्र-५ अक्षर प्रतिपक्ति-१४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वैद्यककोश । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य।

### ग्रन्थ न० १५६।

६ रसराजिन्तामिणि—' ''। पत्र स०-३६। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-६०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-वैद्यक। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण। तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें बीच वीच के पत्र नहीं हैं।

### ग्रन्थ ह० ४५।

७ वैद्य- · · · · । पत्र स०-१२० । पन्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० १४४।

द्वेद्यनिघंदु- ' । पत्र स०-१२० । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत और कन्नड । विषय-वैद्यककोश । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसका अपर नाम औषिषकोश भी है । इसमें अकरादिकमसे शब्दोका अर्थविवरण दिया गया है ।

### ग्रन्थ र्न० ६३ ।

रु वैद्यचिकित्सा- ' । पत्र स०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-,६ । अक्षर प्रतिपक्ति-२३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड (कदपद्य) । विषय-वैद्यक । वस्तु-कागज । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्य नं० ६९।

१० वेद्यसीर- \*\*\* । पत्र चं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-२१ । अर्कार प्रतिपंक्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-तैद्यक । वस्तु-कागज । लेखनकाल- × । पूर्ण तयो धृद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्य न० ३२।

११ वेद्यसंप्रह्— ""। पत्र स०-१०२। पिन्त प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिन्त-७७। छिपि-कन्नह। नाषा-कन्नह। विषय-वेद्यक। वस्तु-ताह्यत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा गृहः। दशा-सामान्य।

### ग्रन्य नं० ३३।

१२ वेद्यसंग्रह्-भोनराज। पत्र सं० १८०। पिन्न प्रतिपत्र-८। असर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-वेद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा गुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्ये न० ५० ।

१३ वैद्यसंप्रह्—ःःः । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षरे प्रतिपंक्ति-६२ । छिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तया शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्यं नं० ७१।

१४ वेंद्यसंप्रह-\*\*\* । पत्र चं०-९। पंक्ति प्रतिपंत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-केन्नडे । भाषा-चक्रत । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनेकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा अशुद्ध । देशा-सामान्ये ।

### गन्य नं ० ८३।

१५ वेंद्यसंग्रह-... । पत्र सं०-५६। पंक्ति प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपंक्ति-२४। लिपि-कन्नह। मापा-कन्नट। विषय-वेंद्यक। वस्तु-ताइपत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तया अशुद्ध। दशा-अति शियिल।

### ग्रन्य नं० ९७ 1

१६ वेंचसंग्रह-\*\*\*\* । पत्र सं०-२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-२३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नट । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताढपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्य नं० ११४।

१७ वैद्येसंग्रहे-\*\*\*\* । पत्र चि०-६७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । ब्रेश्वर प्रतिपंक्ति-२४ । लिपि-कन्नँह । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तया श्रुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्य न० १२३।

१८ वैद्यसंप्रह्-\*\*\*\*। पत्र सं०-१४९। पेक्ति प्रतिपत्र-६। बक्षरे प्रतिपक्ति-३४। छिपि-कन्नड। मापा-केन्नेट। विषये-वैद्यक। वेन्ने-ताडरत्र। छेखनकाल-४ । पूर्णे तथा शुद्ध। देशा-उत्तम। विद्येष-इसके प्रतिलिपिकार सिद्धप्त है।

# प्रन्य नं० १४६।

१६ वेद्यसंप्रह-\*\*\* । पत्र सं०-१२० । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । असर प्रतिपक्ति-४० । लिपि-कप्तह । नापा-संस्कृत और कप्तह । विषय-ताहपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सृद्ध । दग्ना-शियल ।

### ग्रन्थ नै० १९६।

२० वेद्यसंग्रह्- · · · । पत्र स०-४० । पिन्त प्रतिपत्र-८ । बसर प्रतिपिन्ति-३८ । लिपि-कन्नड । नापा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शृद्ध । दशा-सामान्य ।

### ब्रन्य नं० १३६।

२१ वैद्यामृतसंप्रह्—ःःः। पत्र सं०-४०। पंत्र्यि प्रतिपत्र-१३ वसर. प्रतिपंक्ति-७०। लिपि-कप्रद। मापा-कप्रद। विषय-वैद्यक। वस्तु-नाट्पत्र। लेखनकाल-४।पूर्णं तथा शुद्ध। क्या-उत्तम।

### ग्रन्थ न० ५३८।

२२ वैद्यामृतसंग्रह- ::: । पत्र स०-१३२'। पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रेतिपन्ति-४४'। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखर्नकाल- ४ । पूर्ण तथा विद्य । दशो∸सामान्य ।

ग्रन्थ नं ० ११५।

, , , २३ वैद्यमंत्रवादसंग्रह्— ः । पत्र, स०-६० ॥ पक्ति-प्रतिपत्र-९ । अक्षरःऽप्रतिपक्ति≓१९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक तथा मत्रवाद । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकोल- × ा रेपूर्ण तथा अशुद्धा दशा-सामान्य।

# 

# विषय-ज्योतिष

१ अन्तरप्रश्नचिन्तामिया- । पत्र स०-८। त्पिनत् प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपन्ति-३२ । छिप-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० १६६। १ । - 11 1, IT & २ कमेंपरीचा-कविमाल नागार्जुनः। पत्र स०-१९। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-३३। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिए । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'मरणसूचना', 'नेत्रस्फुरण', भुजस्पदन' आदि का शुभाशुभ फल दियात्न्या।है,। ३ करराप्रकाशिका-गणक ब्रह्मदेव । पत्र स०-१७ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० २७। 👫 💛 👫 ४ कालज्ञान- '। पत्र स०-६। पिनत प्रतिप्रत्र-९। अक्षर प्रतिपिनिकन्न । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल--> । पूर्णं तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० ११३। ४ केवलङ्गानचूडामिण्-आचार्यं समन्तगृद्ध(?)पत्र स०-१०। पिन्त प्रतिपत्र-८। अक्षरप्रतिपिन्त-५२। लिपि-कन्नह । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । वृस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तृथा शुद्धः । दशा-उत्तम । ध्रत्य न० १४८।, ६ केवलज्ञानचूंडामणि-आचार्यं संमन्तभद्र (?) पत्र स०-९। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षरं प्रतिपंक्ति-५७। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ ने १४८। ७ गर्सप्रश्तं- · · ोपत्रं सँ०-३। पिक्त प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्तिं दें । लिपि कन्न है। मोषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकार्ल-ं × । पूर्णे तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह ग्रन्थ केन्द्र पेंद्यमें है । ' ं ं ं ं ं ा । प्रत्यानव ११३॥, । । । ।

८ गर्भेप्रश्तशास्त्र- · · · । पत्र स०-३ । पक्ति - प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नर । विषय-ज्योतिषं । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-×-। पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । 💎 विशेष--यह ग्रन्थ,कन्नड 'कन्द' पद्योमें हैं। ग्रन्थ न० ११३।

-\*, ह ्गार्ग्यसिहता-ग्रीषि,। पत्र स०-८ू । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-५२ । , लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम, । कु

### ग्रन्थ नं० १४८।

ा १९० गाग्यसंहिता—गर्गेषि । पत्र स०-८५ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्णे तथा शुद्ध । दशा-उत्तम

- । ' । ११ प्रहृद्शाफल- र । पत्र स०-२५ । पित्र प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपित्त-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० ६५।

- १२ प्रहृदशाफलाफल-'''। पत्र स०-६। पिक्त प्रतिपत्र-१७। अक्षर प्रतिपिक्त-१९। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। वस्तु-कागज। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थं न० ६४।
- १३ चन्द्रोन्मोलनप्रश्न- '''। पत्रास०-१६'। पनित प्रतिपत्र-२०। अक्षर प्रतिपन्ति-२०। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-कागज । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० २४९ ।
- १४ जातकसार-\*\*\*। पत्र सं०-१३३। पिनत प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिन्ति-५०। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्य न०१७३।
- १५ जिनेन्द्रमाला • • । पत्र स-१५ । पित्रंत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कंन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड गद्य में अर्थ मात्र है ।
- ग्रन्थ न०४७ १६ ज्योतिर्ज्ञानविधि-श्रीघराचार्य । पत्र सं-९। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिनत-७४। लिपि-कन्नड।भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । मंगलाचरण

प्रणिपत्य वर्षमान स्फुटकेवलदृष्टतत्त्वमीशानम् । ज्योतिर्ज्ञानविघानं वक्ष्ये स्वायम्भुव सम्यक् ।

१७ ज्ञानप्रदीपिका- ' ' ' । पत्र स० २२। पंक्ति प्रतिपत्र-२०। अक्षरप्रतिपक्ति-२५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। वस्तु-काग्ज। लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शृद्ध। दशा-उत्तम। प्रन्थ न० ८८।

१८ ज्ञानप्रदीपिका-पंत्र स०-६।पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-५७। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकोल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ११३। १६ ज्ञानप्रदीपिका—ः । पत्र स०—३३। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपक्ति—५२। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । वस्तु—ताडपत्रः। लेखनकाल— × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा—उत्तम । ग्रन्थ न० १४८।

२० ज्ञानप्रदीपिका-\*\*\*। पत्र सं०-२५। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-५७। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल- ४:। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रंन्थ न०''१७३।

२१ ज्ञानप्रदीपिका- । पत्र सं-२०। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-५५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा उत्तम।

ग्रन्य	न्०	६४	ı	
		-		4

२२ दीचापटल-\*\*\*\*। पत्र स०-२। पक्ति प्रतिपत्र-२२। अक्षर प्रतिपक्ति-२२। लिपि-कन्नड। भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । वस्तु—कागज । लेखनकाल— 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा— सामान्य । 'ग्रन्थ न० २१५। '

२३ देवझवं सम-श्रीपति । पत्र स-७४ । पन्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-५० । छिपि-कन्ने । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० २७ ।

२४ नरपि । वित्न न्यूभचन्द्र । पत्र स०-४ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-४९ । लिपि-कन्न हैं। भाषा-कन्नह । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताहपत्र । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह शकुन-शास्त्र है।

### ग्रन्थ न० ९३।

२४ नत्तत्रतिलक-\*\*\*\*। पत्र स-३७। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भापा—कन्नड । विषय—ज्योतिष । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल–शालि० शक १६७९ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष—इसके प्रतिलिपिकार मूडिबद्री सुराल चन्दय्य है।

ग्रन्थ न० ९५।

२६ पंचांगफल- \* \* \* । ,पत्र स०-४१ ।, पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-५० । लिपि-कन्नड । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल— 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

> मग्लाचरण प्रणम्य शिरसा नित्य देवदेव जिनेश्वरम् । यस्यार्थं सप्रवक्ष्यामि पचागफलमुत्तमम् । -- र । २०। ग्रन्थ न०। ३९।

२७ भाषाकेवलीप्रश्न-'''। पत्र स०,। ९ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-तृत्तम ।

्रान्य न०। १४९। २८ मुहुर्तदूर्पण-पण्डित माधवभट्ट । पत्र स०-१७९। पक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-४७। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध । दृशा-उत्तम । विशेष-इसमें न० १ से २० तकके पत्र नहीं है । कन्नड टीका भी है । ग्रन्थ न० २१।

२६ शंकुस्थापनादिमुहूर्ते- । । पत्र सु ् ७ । पनित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-६०, । लिपि-कन्नड । गाना-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । -ग्रन्थ न० ६४ ।

३० सामुद्रिकशास्त्र-\*\*\*। पृत्र स्०-४। पनित प्रतिपत्र-२३। अक्षर प्रतिपनित-२६। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-कागज । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । 

आदिदेव नमस्कृत्य सर्वज्ञ सर्वदिश्वनम् । सामुद्रिकं प्रवक्ष्यामि शुभागं पुरुषस्त्रियोः ॥ - स्वर्षे क्रिके ग्रन्थ ,न०, ,१६७, ।

३१ सुम्रीवसतशकुन-\*\*\* । पत्र स०-६ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेख्नकाल- 🗙 । पूर्णं,तथा-शुद्धः। दशा,-उत्तम । 🕠

विशेष-यह कद पद्ममें है। प्रकाशनीय है। कि

# विषय-मन्त्रशास्त्र

### ग्रन्य न० ८९।

१ गिणितविलास-कवि चन्द्रम । पत्र मं-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति- ५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गणित । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शृद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्य न० २१८ ।

२ गिणितविलास-कवि चन्द्रम । पत्र स०-१० । पिन्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गणित । वन्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका सिहत'नाममाला'भी है ।

# विषय-मन्त्रशास्त्र

### 🕖 ग्रन्थ नं० २१।

१ उत्पातदोषशान्तिकर्म-\*\*\*\* । पत्र सं०-१६ । पिन्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिन्ति-५७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-मत्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा गृद्ध । दशा-उत्तम । अय शान्तिजिन नस्त्रा शान्तिकान्तिमृत्वप्रदम् ।

उत्पातदोपशान्त्यर्थं शान्तिकर्म प्रयुज्यते ॥

### ग्रन्य न० ६३।

२ कामचाएडालिनीकल्प-आचार्यं मिल्लिपेण । पत्र सं०-४ । पित्रत प्रतिपत्र-२९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२० । लिपि-कन्नड । मापा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । वस्तु-कागज । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दश्च- सामान्य ।

# ग्रन्य नं० ७१।

३ कामचाण्डालिनीकरुप-आचार्यं मिल्लिपेण । पत्र स०-५ । पिन्त प्रतिपत्र-९ । यक्षर प्रतिपिन्त-८० । र्ह्णिप-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय- मंत्रशास्त्रं । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्य न० ६४।

४ गण्घरवलयकल्प-'''' । पत्र सं०-५ । पिन्त प्रतिपत्र-२४ । अक्षर प्रतिपिन्त-४० । लिपि-कन्नद । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । वस्तु-कागज । लेखनकाल-४ । पूर्ग'तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य नं० २४८ ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडिवड़ी पडुवसिद पद्मय्य इन्द्र है।

### ग्रन्य नं० १५। '

६ ज्वालिनीकल्प-आचार्य इद्रनन्दी। पत्र सं०-१६ । पन्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपक्ति-६३। लिपि-कन्नढ। भाषा-संस्कृत । 'विषय-भैत्रशांस्त्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल→×। पूर्ण तथा गुढ़। दशा-उत्तम। ग्रन्य नं० ७१।

७ क्वालिनीकल्प-आचाँमै इन्द्रनन्दी। पत्र सं०-१४। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-कप्तर । भाषा-चस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । वन्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-७६१। पूर्णं तथा गृह । दशा-उत्तम । विशेष-इसके रचिवता इन्द्रनन्दी आचार्य वप्पनन्दीके शिष्या है । इसे। खेटकटकर्मे अक्षयतृतीयाके दिन रमा है।

### ग्रन्थ न० १५ ।

द्धालिनीकल्प-आचार्यं मल्लिपेण । पत्र स०-१०१। पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🔀 । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा- उत्तम ।

### ग्रन्थ न० ७१।

६ ज्वालिनीकर्लप-आचार्यं मिल्लिषेण । पत्र स०-१०'। पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिन्त-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । वस्तु-तांडपत्र । लेखनंकॉल-शालि० शक १०८०'। पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-व्योमवसुरन्द्रमितके वर्षे शकेमू मुजे विलम्यव्दे । कल्पो ज्वालिन्याख्यो लिखित श्रीमल्लिषेणकृत ॥

्यन्य न० १५ । १० त्रह्मविद्याविधि----। पत्र,स०-१२ । पित्र,प्रित्पत्र-१०। अक्षरं प्रतिपित्त-७०। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्णं तथा शुद्ध । दश्या-उत्तम ।

1 1 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1

मगलाचरण ।

श्रीमद्वीरं महासेन ब्रह्माण पुरुषोत्तमम् ॥ जिनेश्वर च त वन्दे मोक्षालक्ष्म्येकनायकम् ॥ १ ॥ चन्द्रप्रभाजिन नत्वा सर्वज्ञ । त्रज्ञ व्यवस्थिति वश्ये यश्वविद्योपदेशतः ॥ २ ॥ प्रम्थ न० ८१।

१९ वालम्रहिचिकित्सायन्त्रमन्त्रसंग्रह्-ःःः । पत्रे स०--३६। पिक्तिप्रतिपत्र-७। अक्षराप्रतिपिक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल- ×। पूर्णं तथा अशुद्ध। दशा-सामान्य। प्राप्ति । प्र

१२ बीजाचरकोष-\*\*\* । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-२२ । अक्षर प्रतिपक्ति-२२ । लिपि-केन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । वस्तु-कागज । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जत्तम ।

१३ भैरवपद्मावतीकल्प-आचार्य मिल्लिषेण । पत्र स०-८ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-मत्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । वस्ता-उत्तम । ग्राम्य नं० ७१ । ग्राम्य नं० ७१ ।

१४ भैरवपद्मावतीकल्प-भाचार्थः मल्लिपेणः। पत्र स्तर्भ-१२॥ पन्ति अतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपन्ति-८०। लिपि-कन्नडं। भाषा-सस्कृत । विषय-मत्रशास्त्रः। वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-प्रं । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ न० ७१'।
१५ भैरवपद्मावतीकल्प-आचार्य मिल्लिपेण । पत्र स०-४० । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति८० । लिपि-कन्नड । भोषा-संस्कृत । विषय-मत्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध ।
दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें वंध्रषेण की सस्कृत टीका भी है। 👝

१६ भैरवपद्मावतीकल्प-आचार्यं मिल्लिषेणः। पत्र स्त०-७७ । प्रक्तिः प्रतिपत्र-७। अक्षरः, प्रतिपत्तिः ५७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृतः। विषय-मत्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्रः। लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा शुद्ध । वृद्धा-चत्तम ।

### ग्रन्थ न०, २५।

१७ मुद्रालच्यासंग्रह-\*\*\*: । पत्र स०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपत्केत-२१ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-मत्रशास्त्र । वस्तु-तादपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'अक्षरकेवलिप्रश्न' तथा कई कन्नड पद्योके पत्र भी है ।

### ग्रन्थ न०,२६९।

१८ मृत्रशास्त्रसम्भह-ःः। पत्र स०-१५। पक्ति, प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपक्ति-३२। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-मत्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० १५।

१६ विद्यानुवादांग- ःःः। पत्र स०-१६ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मत्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्धे । दंशी उत्तम । ग्रन्थ न० २६५ ।

२० विद्यानुवादांग- । पत्र स०-४४। पनित प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपनित-६१। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-मत्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा- अतिशिथल ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है।

### ग्रन्थ न०, १५।

२१ सरस्वतीकल्प-आचार्यं मिल्लिषेण । पत्र, स०-४ । पिनतः प्रतिपत्र-८ । अक्षरः प्रतिपिनत-६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-मत्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेप-इस ग्रन्थके रचियताः मिल्लिषेण श्रीषेणके पुत्र या शिष्य है ।

### ग्रन्थ न० ७१।

२२ सरस्वतीकलप-आचार्य मिललपेण। पत्र स०-३।पिक्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-मत्रशास्त्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४।पूर्णं तथा शुद्ध दशा-उत्तम। ग्रन्थ न० ६४।

२३ सरस्वतीकल्प-मुनि विजयकीर्ति । पत्र स०-५ । पिक्त प्रतिपत्र-२२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-मत्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# विषय-लोकविज्ञान

# मृत्य न० ४७।

१ जम्बृद्विवपण्णिति, [जम्बृद्वीपश्रक्षिति ]-आचार्य पद्मनदी । पत्र\_स०-२४ । पिति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिति-९९ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत, । विषय-लोकविज्ञान । वस्तु-ताडपत्र, । लेखनकाल-, ४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ न० १५१। २ तिलोयसार त्रिलोकसार]-आचार्य नेमिंचन्द्र । पत्र स०-१५५ । पनित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपनित-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दर्शा-चंत्रम ।

# विशेष-इसमें सस्कृत टीका है।

ग्रन्थ न० ९७ । रिकार का राज्य का राज्य

३ लोक्स्वरूप-कवि चन्द्रम । पत्र स०-१९ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-लोकविज्ञान । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-१७८२ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-६सके प्रतिलिपिकार मूडिबद्री चोलसेट्टि वसदिके पुरोहित पाचप्प इन्द्र हैं ।

717

# विषय- लंक्षण तथां समीक्षा

ग्रन्थ नं० ९३ । '

' श्रश्चपरीत्ता-भ्नी अभिनवचन्द्रम । पत्र स०-४६ । पिन्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिन्त-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अश्वलक्षण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- ४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह'ग्रथ'कन्नड कन्दपद्यो में रचा गर्या है । इसमें प्रथम पत्र नहीं है ।

### ग्रन्थ न० ६४।

२ रत्नशास्त्र- । पत्र स०-८ । पित्र प्रतिपत्र-२२ । अक्षर प्रतिपित्ति-२४ । लिपि-कन्नह । भाषा-सस्कृत । विषय-रत्नपरीक्षा । वस्तु-कागज । लेखनकाल-४ पूर्ण तथा शृद्ध । दशा-उत्तम ।

### मगलाचरण ।

रत्नत्रयाय मुवनत्रयवंदिताय । कृत्वा नमः समवलोक्य च रत्नशास्त्रम् ॥ रत्नप्रवेकमधिकृत्य विमुच्य फल्गून् । सक्षेपमात्रमिति वृद्धजनोपदिष्टम् ॥

# ग्रन्थ न० ६४।

३ नवरंत्नपरीद्या-\*\*\* । पत्र स०-७ । पक्ति प्रतिपत्र-२२ । अक्षर प्रतिपक्ति-२४ । लिप-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-रत्नपरीक्षा । वस्तु-कागज । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० ४७।

४ संगीतलचार्ग् । । पत्र स०-१५। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिन्ति-१९। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-सगीत। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तमं।

### मगलाचरण ।

ये चित्रणः स्युनिधयो नवेषु । श्वासिधानो नवमो निधियं ॥ काव्यानि तूर्याणि च नाटकानि । सर्वाणि तत्रैव समुद्भवन्ति ॥

### **-≫**:≪-

# विषय-क्रियाकाण्ड

### ग्रन्थ न०१०। 🙃

१ क्रियाकलाप-आचार्यं कोण्ड कुंद तथा पूज्यपाद । पत्र स०-७९ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत और सस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें मुनि वालचन्द्रकी कन्नड । टीका है ।

# ग्रन्थ न०१४। 🕠

२ क्रियाकलाप-आचार्यं कोण्डकुन्द । और पूज्यपाद । पत्र स०-९७ । पिनत प्रतिपत्र-९ । वक्षरप्रति-पिनत-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । तथा प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक । १७६२ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें मृति वालचन्द्रकी कन्नड टीका है। शालि० शक १७६२ शुमेक्टत् स० पुष्य कृष्ण ३० चन्द्रवारको इसे अलुबन्दर्गाड पार्श्व सेट्टिके पुत्र, कार्कलके भट्टारक ललितकीर्तिके शिष्य पद्यय सेट्टिके श्री शातिसागरवर्णीके लिये लिखा है।

### ग्रन्थ न० ८४ ।

क् 'क्रियांकलाप-आचार्यं कोण्डकुन्द और पूज्यपाद । पत्रसं ०-१०० । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रति-पक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियांकाण्ड । वस्तु-ताहपत्र । लेखनेकाल-×। पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'दशमितं' 'पचस्तीत्र' तथा 'तत्वार्थं सूत्र' भी [सिटप्पण] है ।

🚅 ग्रन्थ न० १५२:। 🔩

४ ऋियाकलाप-आचार्य कोण्डकुन्द और पूज्यपाद । पत्र स०-११५ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत**्वोर**्प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड<sub>े</sub>। वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । ा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें [कन्नड टीका सहित, ] 'दशभवित' पचस्तोत्र' और 'स्वयभूस्तोत्र' आदि है । इसके अन्तमें पूर्णे तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

तामिल लिपिके दो पत्र और है।

ग्रन्थ न० २२९।

थ् क्रियाकलाप-आचार्य कीण्डकुन्द और पूज्यपाद । पत्र स०-७९ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'दशमन्ति' 'स्वयभूस्तीत्र' 'सहस्रनाम' आदि [कन्नड टीका सहित] है। ं ग्रन्थं नं० १९ ।

६ क्रियाकलाप-पण्डित आशाधर। पत्र स०-३६। पवित प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपवित-१२१। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्डे । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विज्ञेष-इसमें श्री आशाधरकृत 'सुप्रभातस्तीत्र', 'स्वप्नावली', 'दशभिक्त' आदि है । इसकी प्रतिलिपि वेलतङ्गिडिके वाचण्णने की थी । ग्रन्थ नं ० ११७। '' '' '

७ क्रियाकार्यं विका-आचार्यं पद्मनन्दी । पत्र स०-४ । पिकत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम।

विशेप-यह 'पद्यनिद्यिचशित'का एक प्रकरण है।

ग्रन्थ नं० ७६।

८ दशमक्ति-आचार्यं कोण्डकुन्द । और पूज्यपाद । पत्र स०-३३ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिप-क्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय∸िक्रयाकांण्ड । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'स्वयमूस्त्रीत्र' तथा 'पचस्त्रीत्र' भी है।

ग्रन्थ न० २४३।

ह दशभक्ति-आचार्य कोण्डकुन्द और पूज्यपाद। पत्रःस०-५५। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-७३। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत और संस्कृतः। विषय-क्रियाकाण्ड। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-🗶। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-अति शिथिलः।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकर श्री गुणभद्रदेवके शिष्य माणिक्यदेव हैं।

१० **दशभत्त्रयादिसंग्रह्**-आचार्य कोण्डकुन्द ओर पूज्यपाद । पत्र स०-७३ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति—२० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । और संस्कृत । विषय—क्रियाकाण्ड, ।, वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्य ्न० २३३/।

११ दशभक्त्यादिसंग्रह-आचार्यं कोण्डकुन्द और पूज्यपाद । पत्र स०-२५७ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति—६५ । लिप्नि—कन्नड । भाषा—प्राकृत तथा संस्कृत । विप्य्—क्रियाकाण्ड । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-इसमें 'दशभक्ति' 'स्वयभूस्तोत्र' आदि [कन्नुड टीका सहित् ],है।

### ग्रन्थ न० २३।

१२ दशभक्तवादिसंग्रह्—मुनि वर्धमान । पत्र से० ६७ । पिन प्रतिपत्र—११ । अक्षर प्रतिपिन्ति—६५ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—िक्रियाकीण्ड । वस्तु—तोर्डपत्र । लेखनकालं—४ । पूर्ण तथा शुद्धे । दशा— अति शिथिल ।

विशेष-इसमें इतिहास से सबन्घ रखने वाली बहुतसी वार्ते हैं। ग्रन्थ प्रकाशनीय है। ं ग्रन्थ न०'५६।

- १३ दशभत्तयादिसंग्रह-मृनि वर्षमान । पत्र स० ९३ । पक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-क्रियांकाण्ड । वस्तु-कागज । लेखनकाल- 🔀 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशाँ-उत्तम । ग्रन्थ न० १३८ ।
- १४ पिंडकमण [प्रतिक्रमण] । पत्र स०-११। पिंत प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिक्त-६०। लिपि-कन्नड। मापा-प्राकृत। विषय-कियाकाण्ड। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। देशा-उत्तम। ग्रन्थ न०७६।
- १५ पिडकमण् [प्रतिक्रमण्] । पत्र स०-१०। पित प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपित्त-७०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-क्रियाकाण्ड। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। प्रत्य न०११७।
- १६ श्रुतभक्ति-पण्डित आशाधर। पत्र स०- ३। पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-४६। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ११७।
- १७ सिद्धभक्ति-पण्डित आशाधर । पत्र स० ३ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-४६ । छिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाळ्- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-ज्तम ।

# विषय-स्तोत्र

11,

### ग्रन्थ न० २४३।

- १ श्राक्लंकस्तोत्र-भट्टाक्लकदेव।पत्र स्०-२।पैक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-६६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्रं । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । देशा-उत्तम । ग्रन्थं न० ११७ ।
- २ श्रष्टकसंग्रह्—''''। पत्र स०-१०। पिनत प्रतिपत्र ८। अक्षर प्रतिपिनत-४६। लिपि-कंप्सेड । भाषा— कन्नड । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष- इसमें नारणाख्यक चन्द्रनाथाध्यक गुम्मटाष्ट्रक चतुर्विशतितीर्थंकराष्ट्रक शान्तिनाथाप्यक आदि कई अध्यक है।

ग्रन्थ न० २००। ३ ध्राष्ट्रकसंग्रह- ' । पत्र स०-३२। पित्त प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपृत्ति-८३। लिपि-कन्नह। भाषा-कन्नह। विषय-स्तीत्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। ग्रन्थ न० २४३।

४ श्रष्टकसंग्रह्- । पत्र स०-१८। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपृक्ति-६६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत और कन्नड। विषय-स्तोत्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल- 🔀 । पूर्णे तथा सुद्ध। दशा-सामान्य।

### ग्रन्थ न० २४८।

४ श्रष्टकसंग्रह्- । पत्र स०-५६। पिक्त प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपंक्ति-४२। लिपि-कन्नह। भाषा-सस्कृत और कन्नह। विषय-स्तोत्र। वस्तु-ताहपत्र। लेखनकाल-शालि० शक १७११। पूर्ण तथा शृद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडिबद्री पडुयदि पद्मय्य इन्द्र है।

### ग्रन्थ नं० ११७।

६ म्प्रहिद्भक्ति-पण्डित आज्ञाघर। पत्र स०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-४६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

### ग्रन्थ न० २००।

७ श्रीगुक्तशतक-''' । पत्र स०-४। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०१। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ न० १२१।

८ चतुर्विशतिस्तव—केशवसेन । पत्र सं०-४। पिक्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-७१। लिपिकन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।
ग्रन्थ न० २००।

ह श्रीचन्द्रचूडामिण्शतक-\*\*\*\*। पत्र स०- ४। पिक्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह प्रकाशनीय हैं । इसमें ६६ पद्य हैं।

### ग्रन्थ नं० २१।

१० चन्द्रप्रभस्वामिघोष-आचार्य पूज्यपाद । पत्र स०-६ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-५० । किपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा अश्द्ध । दशा-सामान्य । विशेष इस लेखक नेमण्ण उपाध्याय है ।

### ग्रन्थ नं० २६६।

११ छत्तीसरत्नमाला-\*\*\*\* । पत्र सं०-६ । पित्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपित्त-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-शिथिल । प्रन्थ न० ८८ ।

१२ जिनशतक-आचार्यं समन्तमद्र । पत्र स०-४९ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें नरसिंह भट्ट की संस्कृत टीका है ।

### ग्रन्थ न० १४०।

१३ जिनशतक-आचार्य समन्तभद्र । पत्र स०-३२। पिक्त प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिक्त-६९। लिपि-फन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें नर्रसिहभट्ट की संस्कृत टीका है ।

### ग्रन्थ नं० ७६।

- १४ जिनसहस्त्रनामस्तोत्र-आचार्य जिनसेन । पत्र स०-३ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-७० । जिप-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शृद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्थ न० १३८ ।
- १४ दृष्टाष्ट्रकादिसंग्रह्-''''। पत्र स०-६०। पंक्तिप्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-७२। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तीत्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें 'पचस्तोत्र', 'पचपरमेष्ठिक्याख्यान', 'तत्त्वार्थसूत्र' और 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' भी है।

### प्रन्थ न० २४८।

१६ पद्मावतीदेवीस्तोत्रसंग्रह-\*\*\*\* । पत्र स०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत और कन्नड । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १७११ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडिबद्री पहुबसि पद्मय्य इन्द्र है ।

### प्रन्थ न० २०७।

१७ भक्तामरस्तोत्र-आचार्यं मानतुग। पत्र स०-४। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-५४। लिपि-कन्नरः। भाषा-संस्कृतः। विषय-स्तोत्रः। वस्तु-ताडपत्रः। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्धः। दशा-सामान्यः।

विशेष-इसमें क्लोक नं० ३२ से 'गभीरताररवपूरित' इत्यादि चार क्लोकोके स्थानपर 'नाथापर. परमधैर्य' इत्यादि भिन्न ही चार क्लोक दिये गये हैं।

### ग्रन्थ न० २६६।

१८ योगाष्टक-श्री उदयाकं । पत्र स०-२ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

प्रन्थ न० २४३। १६ श्रुतदेवतास्तवन-आचार्यं पद्मनन्दी । पत्र स०-२ । पिन्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिन्त-६६ । छिपि-कन्नह । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताहपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा श्रुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्थ न० २४२ ।

२० षडारचक्र-आचार्य वेवनन्दी । पत्र स०-३। पिनत प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपिनत-६६ । लिपि-कन्नड । माषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसका अपर नाम ,सिद्धिप्रयस्तोत्र' है ।

### ग्रन्थ न० २०८।

२१ समनसरग्रस्तोत्र-मृनि विष्णुसेन । पत्र स०-१० । पिन्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिन्त-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथल । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

### ग्रन्थ न० १६१।

२२ समवसरणाष्ट्रकादिसम्ह- । पत्र स०-५२। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-३६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रन्थ न० १०८।

२३ सहस्रनाम-" "। पत्र स०-३। पांक्त प्रातपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-५०। लिपि-कल्लह । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताहपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

,विशेष-इसका अपर नाम 'लघुसहस्रनाम', है । 🕠 🕡

### 

# विषय-भजन तथा गीत

ग्रन्थ न० ९०।

r +1 1 1 1 1 1 1 1 1

१ श्रभिसन्युयत्त्रगान- । पत्र स०-२०। पन्ति प्रतिपत्र-४ । व्यक्षर प्रतिपंक्ति-३४। लिपि- व कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-गीत। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

२ आदिनाथयन्त्रगान-श्री सदानन्द । पत्र स०-७१ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-५३ । क्षिप्-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 💢 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# ्रप्रत्य नं ० ४०।

३ उद्यरागपर्संग्रह-'''''। पत्र सं०-५। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपत्र-७२। लिपि-कन्नड। विषय-गीत। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न० १०७।

४ गीतवीतराग-श्री चारुकीर्ति । पत्र स०-९३ । पिन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिन्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-गीतः। वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शृद्ध । दशा-उत्तम । विश्रीप-इसमें कन्नड टीका है ।

#### ग्रन्थ न० २०३।

४ जिनभजनसंग्रह्- । पत्र स०-२० । पित्त प्रतिपत्र-५ । श्रव्य र प्रतिपित्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । 'ग्रन्थ न० २७८ ।

६ नागिर्णीतारखवादिसंग्रह- ' ' ' । पत्र स--१८ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्तिदेवीके समस्यापद्य भी है ।

#### ग्रन्थ न० १०८ ।

७ पद्मावतीयत्त्रगान-श्री वाहुवलो । पत्र सं०-३७ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗶 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । गुन्य नं० २६० ।

८ पद्मावतीयत्तगान-श्री राष्ट्रार भट्ट । पत्र स०-४९ । पवित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-७१ । क्षिप-कप्तड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १७४५ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ न० २७६। ' ' '

ह पारिजातयत्तगान- · · · · । पत्र स०-५ । पिन्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ व० ११९ ।

१०, रामायण्यस्त्रगान- \* \* \* : । पत्र स०-१५१ । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-५७ । लिपि-फन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'भारतयक्षगान' के भो कुछ पत्र है । 🖟 🖟

## , , , , ग्रन्थ न० १७२।

११ शोभनपद्यसंप्रह्-'''। पत्र स०- २५ । पंक्ति 'प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न० २३९ ।

१२ शोभनसमह ' - ' ' । पत्र सर्- १५५ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗶 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

१३ शोभनपद्संग्रह्-\*\*\*\* । पत्र स०-७० । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंन्ति-२२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शद्ध । दशा-सामान्य ।

# विषय-प्रकीर्णक

ग्रन्थ न० ८२ ।

१ लोकोपकारक-चामुण्डराय । पत्र स०-१८४ । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-प्रकीर्णक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १५५४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है । गोवैद्य अश्ववैद्य आदि सब तरह की चिकित्साए इसमें प्रतिपादित है । इसके प्रतिलिपिकार अप्पय है ।



# मूडिवद्रीके श्रन्य ग्रन्थभग्डार

# विपय-सिद्धान्त

# ग्रन्थ नं० ३२।

१ कम्मपयि [कर्मप्रकृति]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१० । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शृद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-प० नेमिराज सेट्टि मूडविद्री ।

विशेष-यह गोम्मटसार [कर्मकाण्ड] का एक अश है। इसमें 'त्रिलोकसार' के भी कुछ पत्र है। ग्रन्थ न०१।

२ कर्मप्रकृति- · · · · · । पत्र सं०-३३।पिक्त प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपिक्त-४३। लिपि-कन्नढ। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान- प० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री।

#### ग्रन्थ न० ३२।

३ कर्मेत्रकृति- ''' । पत्र स०-८। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-७१। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल- ×। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। प्राप्तिस्यान-प० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री।

#### ग्रन्थ न० १४।

४ गोम्मटसार[कर्मकाण्ड]-आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र स०-५३। पिनत प्रतिपत्र-१०। असर प्रति-पिनत-१०६। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त वसदि, जैन पच, मूडविद्री।

विशेप-इसमें सदृष्टि भी है। प्रति अति प्राचीन है। इसे श्री रेचण्णने लिखवाकर आचार्य माघनन्दीको शास्त्रदान किया था ।

#### ग्रन्थ इ० १४।

प्राम्मटसार् जीवकायह]-आचार्यं निमचन्द्र । पत्र स०-३८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पक्ति-११९ । लिपि-प्राचीन कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त वसदि, जैन पच, मूडविद्री ।

विशेष-इसमें सदृष्टि भी हैं। प्रति अति प्राचीन है। इसे श्री रेचण्णने लिखवाकर आचार्य माघनन्दीको शास्त्रदान किया था।

#### ग्रन्य न० १७।

६ गोम्मटसारादिसंप्रह्-आचार्य नेमिचन्द्र आदि । पत्र स०-४५ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पित्त-९० । लिपि-कन्नड । मापा-प्राकृतः विषय-विद्यान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त वसदि, जैन पच, मूडबिद्री ।

#### ग्रन्य न० ३२ ।

७ गोम्मटेसार[जीवकाएड]-श्राचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्रीप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री ।

### ग्रन्थ नं ० ७ ।

द्र जयधवला टीका-आचार्य वीरसेन और जिनसेन । पत्र स०-५१८ । पक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपिक्त-१३८ । लिपि-प्राचीन कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त वसदि, जैन पच मूडविद्री ।

विशेष-इसके मूल गाथासूत्रोका नाम कषायप्राभृत है। आचार्य श्री गुणघरने सोलह हजार पदीके पेजज-पाहुड को सिक्षप्त करके १८० गाथाओं में इसे रचा है। इसपर आचार्य यितवृषभने छह हजार परिमित चूर्णी-सूत्र एवं उच्चारणाचार्यने वारह हजार प्रमाण उच्चारणासूत्र नामक टीका लिखी। इसी पर आचार्य बीरसेन और उनके शिष्य जिनसेनने अयघवला नामक बृहट्टीका वनाई जिसके श्लोक परिमाण ६०००० है। प्रारभ के २०००० पद्य परिमित टीकाको आचार्य वीरसेनने और अवशिष्ट ४०००० पद्य परिमित टीकाको आचार्य जिनसेनने रचा है। इसे चिक्कमय्यके विल्लसेट्टिने लिखवाकर सिद्धान्तमूनि पद्मसेनको शास्त्रदान किया है। इस टीकाका रचनाकाल शालि०शक७५८ है। प्रतिलिपिकार भुजवली अण्ण है।

#### ग्रन्थ न० ८।

र जयधवला टोका-आचार्यं वीरसेन और जिनसेन । पत्र स०-,०६७ । पक्ति प्रतिपत्र-१६ । अक्षर प्रतिपक्ति-४८ । लिपि-नागरी । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-कागज । लेखनकाल वीर नि०स० २४३० । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त वसदि, जैन पच, मूडविद्री ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मिरजके प० गजपित शास्त्रो हैं। उन्होंने वीर नि०स० २४३० में प्रारम्भ कर वीर० नि० स० २४३७ माम सुदी ४ के दिन इसे संपूर्ण किया था।

#### ग्रन्थ न० २।

१० जयघवलाटीका-आचार्यं वीरसेन और जिनसेन । पत्र स०-९७४ । पिक्त प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपिक्त-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत् और सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-कागज । लेखनकाल-वीर नि० स० २४३१ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त वसदि, जैन पच, मृडविद्री ।

विशेप-इसके प्रतिलिपिकार मूडिवदी कलुवसदि शान्तप्प इन्द्र है।

#### ग्रन्थ न० १०।

११ जयधवलाटोका-आचार्य वीरसेन और जिनसेन। पत्र स०-२०९६। पिन्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्ररिपिन्त-७४। लिपि-कन्नड। वस्तु-कागज। लेखनकाल-वीर नि० स० २४३१। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त वसादे, जैन पच, मूडविप्री।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडविद्री देवराज सेट्टि है।

#### ग्रन्थ न० १५।

१२ तत्त्वार्थराजवार्तिक-आचार्य भट्टाकलक । पत्र स०-४०० । पिक्त प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रति-पिक्त-१०८ । लिपि-नागरी । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णे तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त वसदि, जैन पच, मूडविद्री ।

#### ग्रन्थ न० १।

१३ द्व्यसगह-[द्रव्यसग्रह]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४८ । प्रिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-४२ । लिपि-कन्नडः। भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- ४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्ति-स्थान-प० नेमिराजसेट्टि, मूडविद्री ।

विशेष-इसमें 'मव्यानुग्राहि' नामक कन्नड टीका भी है ।

#### ग्रन्थ न० ३२।

१४ द्व्यसंग्रह [द्र्व्यसंग्रह]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री ।

#### ग्रन्थ न० २ ।

१५ धवलाटीका-आचार्यं वीरसेन । पत्र स०-१४१७ । पिनत प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपिनत-१३६ । लिपि-प्राचीन कन्नड । भाषा-प्राकृत, और सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताष्ठपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिन्यान-सिद्धान्त वसदि जैन पंच, मूडिवद्री ।

विशेष-इस प्रतिको राजा गण्डरादित्यके सेनापित मुल्लिदेवने लिखवाकर सिद्धान्तमुनि श्री कुलभूषण को शास्त्रदान किया था।

#### ग्रन्थ न० ३।

१६ धवला टीका-आचार्ये चीरसेन । स०-६०५ । यंक्ति प्रनिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपिक्त-१३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राक्तत और सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-शिथिल । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त वसदि, जैन पच, मडविद्री ।

विशेष-इसमें वीच २ के सैकडो पत्र नहीं है।

# ग्रन्थ नं० १।

१७ धवला टीका-आचार्य वीरसेन पत्र स०-५९२। पिक्त प्रतिपत्र-१४। अक्षर प्रतिपिक्त १३८। लिपि-प्राचीन कन्नड। भाषा-प्राकृत अर्र सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शृद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त वसिद जैन पच मूडविद्री ।

विशेष-इसके मूलसूत्रों का नाम पहलाडवगम है। इसके रचिता पुष्पदन्त एवं भूतविल है। इसकी रचनाकाल शालि श्वाक ७३८ है। इसमें २, ७१ और ७२ न० के पत्र नहीं है। इसको मण्डलीनाडु मुजवली गगपेमिंडि की सास देमियक ने कोपषतीर्थ के प्रसिद्ध दानी जिल्लाप के द्वारा प्रतिलिपि कराकर विलिक्तरे उत्तंग जिनचैत्यालय के सिद्धान्तमूनि श्री शुभचन्द्रदेव को अपने श्रीपचमीत्रत की उद्यापना के उपलक्ष में शास्त्रदान किया था।

#### ग्रन्थ सं० ४।

१८ घवला टीका-आचार्य वीरसेन । पत्र सं०-१३०३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१६ । अक्षर प्रतिपक्ति-४८ । लिपि-नागरी । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-कागज । लेखनकाल-वीर नि स० २४२३ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त वसदि, जैन पच मूडविद्री ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मिरजके प० गजपित शास्त्री है। उन्होंने इसे वीर नि०सं०२४२३ में प्रारम कर वीर नि० स० २४३० में लिखकर सपूर्ण किया है

# ग्रन्थ नं० ५।

१६ धवला टीका-आचार्य वीरसेन । पत्र स०-१३९२ । पित्त प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपिक्त-५४ । लिपि-कन्नड । माषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-कागज । लेखनकाल-वीर नि० स० २४२६ पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त वसदि, जैन पच मूडविद्री ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडिवद्री कल्लुवसि शान्नप्प इन्द्र है।

#### ग्रन्थ न० ६ ।

२० घवला टीका-आचार्य वीरसेन पत्र स०-२७६०। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपक्ति-४८। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-कागज । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त वसदि, जैन पंच मूडविद्री।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूड्विद्री देवुराज सुट्टि हैं।

ग्रन्युन०१।

्र्१ पर्मागमसार--: । पत्र सं०-७। पंक्तिं प्रतिपत्र-११। बुद्धार प्रतिपक्ति-३२। लिपि-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗴 । पूर्णं सामान्य शद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान- मा० देवराज् सेट्टि, मूडविद्री ।

विशेष-इसमें वैद्यक तथा 'वोडशभावना' सम्बन्धी और भी कुछ पत्र है। ग्रन्य न० ११।

२२ महात्रन्य-आचार्ये भूनविल । प्रत्र् स०-१७६ । पिन्त प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपत्रित-१७० । लिपि-प्राचीन कन्नह् । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णू, तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्यान-सिद्धान्त वसदि, जैन पच, मूडविद्री ।

त्या-उत्तर । आजास्याग-ासद्धान्त वसाद, जन पच, मूडावद्रा । विद्योप-इसके वीच २ के कुछ पत्र नहीं है । इसके प्रतिप्रतिलिपिकार श्री सदयादित्य है । इसकी राजा शान्तिसेन की पत्नी मल्लिकव्या देवी ने लिखवाकर अपने श्री पचमीव्रत की उद्यापना के उपलक्ष में श्री सिद्धान्त मुनि माघनन्दी को शास्त्रदान किया था।

ग्रन्य नु० १२। २३ महावन्ध-आचार्यं भूतविल । पत्र स०-५१८। पंक्ति प्रतिपत्र-१४। असर प्रतिपक्ति-६०। लिपि-नागरी । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-कागज । लेखनकाल-वीर नि० स० २४४२ । पूर्ण तया सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्न वसदि ।

विशेप–इसके प्रतिलिपिकार मूडविद्री वि० लोक्ताय शास्त्री हैं।

ग्रन्य न० १३।

२४ महावन्ध-आचार्यं भूतविल । पत्र सं०-८८५ । पिनत प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपिनत-३२ । लिपि–कन्नड । मापा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । वस्तु–कागज । लेखनकाल–वीर नि० स० २४३९ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा--मामान्य । प्राप्तिस्यान-सिद्धान्त वसदि, जैन पच मूडिवद्गी ।

विशेष-इमके प्रतिलिपिकार मूहविद्री प० नेमिराज सेट्टि हैं।

ग्रन्य नं० १४।

२५ लद्धिसार [ल'व्यसार]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४१ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । असर प्रतिप-क्ति-१०८ । लिपि-प्राचीन कम्नुड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तया शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्यान-मिद्धान्त वसदि, जैन पंच मूहविद्री ।

विशेष-यह अति प्राचीन प्रति है। इसे श्री रेचण्ण ने लिखवाकर आचार्य माघनन्दी की शास्त्रदान किया है।

ग्रन्य न० ११ । २६ मत्तकम्मपितश्रा– \*\*\* । पत्र स०-२७। पन्ति प्रतिपत्र-१४ । अक्षर् प्रतिपन्ति-१७० । लिपि-प्राचीन कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र-लेखनकाल-× । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त वसदि, जैन पंच मूडिबिद्री । विशेष-इसके प्रतिलिपिकार श्री उदयादित्य हैं । इसे राजा शान्तिनाय ने लिखवाकर आचार्य श्री माघ-

नन्दी को शास्त्रदान किया है।

ग्रन्थ न० १२ ।

ग्रन्थ न० १२ । २७ सत्तकम्मपिक्शा- । । पत्र स०-६७ । पिक्त प्रतिपत्र-१४ । अझर प्रतिपक्ति-५५ । लिप्-नागरी । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-कागज । लेखनकाल-वीर नि० स० २४४१ । पूर्ण तथा सामा-न्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त वसदि, जैन पच मूडविद्री ।...

# विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडिबद्री विर्ेलोकनाथ शेरित्री हैं। ग्रन्थ नर्० १ रे।

२८ सत्तकम्मपंजिन्छा- ' । पत्र स०-११५ । पनित प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । किपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-कागज । लेखनकाल-वीर नि० सं० २४३९ । पूर्ण तथा शुद्ध । बशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त वसति, जैन पंच मूडबिद्री ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडिबद्री पं० नेमिरांज सेट्टि है।

ग्रन्थ न० १४।

२६ सिद्धन्तालाव [सिद्धान्तालाप]-----। पत्र स---२०। पक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रति-पित्त-१२२। लिपि-प्राचीन कन्नड। भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-तार्रपत्र । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त वसदि, मृडविद्री।

# विष्य-अध्यातम

१ समाधिशतक-आचार्यं पूज्यपाद । पत्र स०-५ । पित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनंकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं । प्राप्ति-स्थात-प• नेमिराज सेष्ट्रि मूडिबद्री ।

# **->**:≪-

# विषय-धर्म

ग्रन्थु नं ० ४ ।

१ श्राचारसार-वीरनन्दी । पत्र स०-२५ । पिनत प्रतिपत्र-१० अक्षर प्रतिपिनत-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूर्ड[बद्री ।

#### ग्रन्थ नं० २३।

२ कल्याणमाला-\*\*\*\* । पत्र स०-६ । पिक्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिक्त-२० । लिपि-कन्नड । भापा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा सामान्य घुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-प० नेमिराज सेष्टि, मूडिबद्री ।

विशेष-इसमें शान्तिनाथ के पचकल्याणो का, वर्णन है। इसके अतिरिक्त इसमें 'स्वयम्भूस्तोत्र' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३५ ।

३ छत्रिमाछित्रिमचैत्यालयों का विवरण्-... । पत्र स०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-१० अक्षर प्रतिपक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडिबद्री ।

विशेष-इसमें २२ परीषहजय सबन्धी कुछ पद्य भी है ।

थं जिन्मुनितनंय-चंन्द्रसागरवर्णी । पत्र स०- १२ पंक्ति प्रतिपंत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्त-३९ । लिप-कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—धर्म । लेखनकाल-ं× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । प्राप्तिस्थान प० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें 'मक्तामर' 'समवसरण' 'पार्श्वनाथ' तथा पद्मावतिस्तोत्र के भी कुछ पत्र हैं। ' ' े े ग्रन्थ न० १ ।

४ तत्त्वार्थे सूत्र—आचार्यं उमास्वित । पत्र स०-१३ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अशर प्रतिपिनत-३२ । लिपि-कन्नह । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि महविद्री।

विशेष-इसमें 'भक्तामरस्तोत्र' तथा आशीर्वाद पद्य भी है। <sub>ः सः । । प्र</sub>ग्नन्थ न०१।

६ द्वादशानुप्रेचा-विजयण्ण । पत्र स०-८० । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-५६ । लिपि-कन्नहः। भाषा-कन्नह । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-शान्तिराज इन्द्र होसबसादि, मूडविद्री ।

ग्रन्थ न० ११।

७ द्वादशानुप्रचा-\*\*\*\* । पत्र स०-२९ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-२४ । लिपि-कन्नह । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-प० ने।मराज सेट्टि मूडविद्री।

ग्रन्थ न ०५।

ं ८ नन्दीश्वरद्वीपवर्णन-ं-----। पत्र स०-ं७। पक्ति प्रतिपत्र-ं८। अक्षर प्रतिपक्ति-३१। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अर्थं तथा सामान्य शृद्ध । देशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-जिन-इन्द्र, वैकणतिकारि बसदि, मूडविद्री ।

विशेष-इसमें ज्योतिष सबन्धी और भी कुछ पत्र हैं। ग्रन्थ न० ३९।

ह पंचनंमस्कारमावंना-\*\*\* । पत्र स०-१० । पन्ति प्रतिपत्र-४ । वसर प्रतिपन्ति-४९ । लिपि-कर्नार । भाषा-कन्नड । विषय-वर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्धं। दशा-उत्तर्म । प्राप्तिस्थान-प० नेमिराज सेट्टि, मुडबिद्री । ग्रन्थ नं रे रे ने

'१० पंचपंरमेष्ठिस्वरूपं- ''' । पत्र स०-४५ । पित प्रतिपंत्र-५'। वक्षर प्रतिपंक्ति-५२'। लिपि-कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य । 'प्रास्तिस्थान—प∙' नेमिर्साज n Into i सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ न० ३९ 📭

११ पंचपरमेष्टिस्तरूप- \* \* \* । पत्रास०-६० । पांक्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कञ्चड । माषा-कञ्चड । विषय-वर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । 'प्राप्तिस्थान-प• नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रम्य नं० ३९।

१२ यतिधर्म- \* \* \* । पत्र स०-८ । षक्ति 'प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कमर । भाषा-कन्नड । विषय-धर्मे । लेखनकाल-🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्यान-पं॰ नेभिदाज सेट्टि, भूडविद्री ।

विशेष-उसमें 'शीतलब्रुत,',सन्यासविधि,','सामायिक,' तथा श्रावको की प्रतिमाओ का स्वरूप आदि भी है। ग्रन्थ न० २३।

१३ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्यं समन्तभद्र। पत्र सं०-४६। पक्ति प्रतिपत्र-६। शुक्षरः प्रति-पंक्ति-१४। लिपि-क्त्रडः। भाषा-सम्कृतः। विषय-धर्मः। लेखनकाल- 🛪 । पूर्णं तथा शुद्धः। दशा-उत्तमः। प्राप्तिस्थान-प० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्रीः।

#### ग्रन्थ न० १ ।

१४ त्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र स०-१० । पत्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपत्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सायान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है, और 'रत्नाकरशतक किन्नड], तथा 'गायत्रीव्याख्यान [कन्नड] के भी कुछ पत्र है।

#### ग्रन्थ न० १ ।

१५ षोडशभावनाविवरण- " पत्र स०-२। पिनत प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिनिते-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखेनेकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य। प्रतिस्थ न-मा० देवरीज सेट्टि, मूडबिद्री।

" विशेष-इसमें "गुम्मेटाष्टक" तथा सरस्वती स्तोत्र आदि के भी कुछ पत्र है । ' ं ं ं ' ' ं ं ं विशेष

## ग्रन्थ न० १३।

१६ सज्जन् चित्तवहाभ-मिल्लिषेण । पत्र स०-२ । पित्ति प्रतिपत्र प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पद्मनाम शास्त्री, मूडविद्री ।

# ग्रन्थ न० ३५।

१७ सज्जनिचत्तवल्लभ-आचार्य मिल्लिषेण । पत्र सुर्वे । पित्र प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं नेमिराज सिंह, मूडविद्री । प्रन्थ न० ७ ।

१८ सागारधर्मामृत-पण्डित आशाघर। पत्र स० २७५ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-४८। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-घमं । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेहि, मूडविद्री । विशेष-इसमें स्वोपन्न संस्कृत टीका भी है :

#### प्रन्यःृनं**०**ः१३ः। ।

्रिम्क्तिमुक्तावली-आलार्यं सोमप्रभ । पत्र सं०-७ । पित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८८ । लिपि-क्ष्रइ-। आपा-संस्कृत् । विषय-धर्मे । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध ॥ दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थात-प्रानाभ शास्त्री, मुडविद्री ।



# विषय-योगशास

#### ग्रन्थ न० ३२ ।

१ ध्यानस्वरूप- ''' । पत्र स०-११ । पिनतः प्रतिपत्र-८ः। अक्षरः प्रतिपन्ति-६१ । लिपि-कन्नद्धः । भाषा-सस्कृतः । विषय-योगशास्त्रः । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्धः । दशा-सामान्यः । प्राप्तिस्थान - प० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्रीः ।

विशेष-इसमें 'एकत्वसप्तति' स्वरूपसबोधन' तथा 'इप्टोपदेश' के भी कुछ पत्र है।

#### ग्रन्थ न० ३९।

२ घ्यानलच् ग्या- • • • । पत्र स० – १४ । पिनत प्रतिपत्र – ५ । अक्षर प्रतिपिनत – ५२ । लिपि – कन्नड । भाषा – कन्नड । विषय – योगशास्त्र । लेखनकाल – × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा – उत्तम । प्राप्तिस्यान – प० नेमिराजं सेट्टि मूडविद्री ।

#### ग्रन्थ न०३।

३ योगामृत- ' ' ' । पत्र स०-१५ । पनित प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंत्रित-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-योगशास्त्र । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, म्डविद्री ।

विद्योप-इ समें 'सरस्वतीस्तात्र' 'सृष्टिवाद' 'बाह्मणवाद' तथा 'वृत्तरत्नाकर' के भी कुछ पत्र हैं।

# विषय-प्रतिष्ठा

# ग्रन्थ न० २।

१ जिनसंहिता-इन्द्रनन्दी । पत्र सं०-१२४ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य पूद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-अनन्तराज इन्द्र पडुवसंदि मूंडविद्री ।

विशेष-इसमें पूज्यपाद कृत 'महामिषेक' [ पश स०-१७ ] मी है।

#### ग्रम्थ न० ४।

२ जिनसंहिता-इन्द्रनन्दी । पत्र सं०-११४ । पित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नहें । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकील-४ 1''पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूडविद्री ।

#### ं ग्रन्थ'न० र्३ ।

'३ जिनसंहिता-इन्द्रनन्दी । पत्र 'स०-५० । पित प्रिंगित-६ । अक्षर प्रतिपंति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जितम । प्राप्तिस्थान-पय-नाम शास्त्री, मूडबिद्री ।

श्रे प्रतिष्ठाकरूप-मद्दांकलंक देवें । पत्र सं०-१०३ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर । प्रतिपक्ति-९४। लिप-कंत्रड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-धालि । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-धालि । विषय-प्रतिष्ठा । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-धालि । प्राप्तिस्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूडविद्री ।

विशेष-शालि क्षेत्र १६५५, जय संवत्सर आह्वयूज कृष्ण ८ के दिन यह ग्रन्थ लिखा ग्रामा है।।

# ग्रन्थ नं० १५।

४ प्रतिष्ठाकल्प-भट्टाकलंकदेव । पत्र सo-१८२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्ति-स्थान-जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूर्डावद्री । 👫 🕛

६ प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणी-कुमुदेन्दु । पत्र स०-१६१ । सक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपत्रित-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शृद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्ति-स्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री ।

## ग्रन्थ न०५।

७ प्रतिष्ठातिलक-ब्रह्मसूरि। पत्र स०-५४।पिक्त प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपति-६३। लिपि-कन्नद्र। भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री।

# ः ग्रन्थ न०१३। ,

८ प्रतिष्ठातिलक-ब्रह्मसूरि । पत्र स०-१२२ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-८६ । लिप्-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-्उत्तम । प्राप्तिस्थान-पद्मनाभ, शास्त्री, मूडबिद्री।

#### ग्रन्थ न० ६।

६ प्रतिष्ठसारोद्धार-पण्डित वाशाधर। पत्र स०-१०। पन्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपन्ति-७५। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-अनन्तराज इन्द्र। पडुबसदि, मूडिबद्री।

विशेष-इसमें कन्नड टिप्पणी भी है।

# ग्रन्थ न० २४।

१० प्रनिष्ठासारोद्धार-पण्डित आशाघर । पत्र स०-४३ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिप-कंत्रड । भाषा-सस्कृतं । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा संण्डित । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, वैकणतिकारि वसदि, मूडिबद्री ।

# विषयं-आराधना, पूजापाठ, तथा वतविधान

#### ग्रन्थ न० ८।

१ अनन्तव्रतविधान- \*\*\*\* । पत्र स०-११। पन्ति प्रनिपत्र-७। अक्षर प्रतिपन्ति-४०। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-त्रतविधान । ,लेखनकाल्- 💢 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पद्मताम, शास्त्री, मुहबिद्री। िवशेष-इसमें 'अरवपरीक्षा' तथा रवान आदि के शकुन के भी कुछ पत्र है।

#### मृन्य न्०,२९,।

२ श्राराधनासंग्रह-गुप्पाः। पृत्र,स०-१६। पित्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-२९। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराष्ट्रना । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्ति-स्थान-प नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्रो ।

विशेष-इसमें वज्जपजर, गर्भरक्षा, तथा सर्वरक्षा इन आराधनाओं का सम्रह है।

# प्रन्थ नं ० ७ ।

३ कलिकुएडाराधनादिसंग्रह-विद्यानन्दी आदि । पत्र स -१२६ । पित्र प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पक्ति-३२ । लिपि-कन्नह । भाषा-सस्कृत । विषय-आराधना तथा पूजा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूडिबद्री ।

विशेष-इ समें कई प्रकार की आराधनाए तथा पूजाए सग्रह की गई है।

#### ग्रन्थ न० २५।

४ नन्दीश्वरपूजा- । पत्र स०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२१ । लिपि-कन्नड । भाषा—सम्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्ति-स्यान-प० नेमिराज सेट्टि, मूडिबद्री ।

#### ान्य न० ४।

४ पूजापाठसंग्रह- · · । पत्र सं०-२०। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर् प्रतिपक्ति-२९। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूडविटी।

विशेष–इसमें 'अभिषेकपाठ' 'पचपरमेष्ठिपूजा' तथा आरती आदि सग्रह किये गये है । 'नान्दीमगल,' तया आशीर्वादपद्य के भी कुछ पत्र हैं।

#### ग्रन्य नं० ४।

६ पूजःपाठसम्रह्- ः ः । पत्र स०-८७ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । लेखनकाल– ४ । शालि० शक १७३३ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम । प्राप्तिस्थान–शान्तिराज इन्द्र, होसवसदि, मूडविद्री ।

विशेष-इसमें 'अभिषेकपाठ' तथा 'नान्दीमगल' है। शालि शक १७३३ प्रजोत्पत्ति सवत्सर,श्रावण शुक्ला ७ शनिवार के दिन मृडविद्री निवासी पड्ब्सिद पदुमय्य इन्द्र के पुत्र पाचप्प ने स्थानीय चोलसेट्टि वसदि [चैत्यालय] में इसे लिखा है।

#### ग्रन्थ नं ०५।

७ पूजापाठसम्मह---- । पत्र स०-१४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-अनम्त-राज इन्द्र, पड्वसदि, मूडविद्री ।

विशेष–इसमें प्रतिष्ठासारसग्रहोक्त कई पूजाए संग्रह की गई है। इनके अतिरिक्त इसमें 'शान्तिविधान' तथा पण्डित आशाघर कृत 'महाभिषेक' के भी कुछ पत्र है।

# ंग्रन्थ न०५।

। पत्र स०-१२०। पनित प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपनित-४०। लिपि-८ पूजापाठसंग्रह-\*\* कन्नड । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । लेखनकाल– ४ पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ा प्राप्तिस्थान्– शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडिबद्री ।

विशेष–इसमें 'सघ्यावन्दना' 'अभिषेकपाठ' एव 'नान्दीमगरु' है ।

# , ग्रन्थ न०६।

पूजापाठसंग्रह- ः । पत्र स॰-१३२ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । लेखनकाल– × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान्– शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिद्री **।** 

विशेष-इसमें 'महाभिषेक', 'लधुशान्ति', 'षोडश-भावनापूजा' आदि सप्रह किये गये हैं।

# ग्रन्य नं ० १७ ।

१० पूजापाठसंग्रह्- ' ' । पत्र स०-११० । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-४२ । लिपि-कन्नह । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तया सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्यान-जिनराज इन्द्र, वैकणतिकारि वसदि, मूडविद्री।

विशेष-इसमें 'महाभिषेक' 'विमानशुद्धि' 'वास्तुप्जा' तथा 'शान्तिविधान' है ।

#### ग्रन्थ न० १९।

११ पृजापाठमंग्रह-\*\*\* । पत्र स०-१०९ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । लेखनकाल– ×ं। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा–समार्न्य । प्राप्तिस्यान– जिनराज इन्द्र, वैकर्णातकारि वसदि, मूडविद्री।

विशेष-इसमें 'नान्दीमगल' 'त्रिकालतीर्थंकरपूजा' तया 'नन्दीश्वरपूजा' आदि सग्रह किये गये है। '

# ग्रन्य नं० १८।

१२ व्रतिवधान-\*\*\*\* । पत्र स०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-२२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-त्रतिविधान । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्ये । प्राप्ति-स्थान-प० नेमिराज सेट्टि, मुडविद्री।

विशेष-इसमें १७ वतो का विधान है।

# ≫∷≪−

# विषय-न्याय तथा दर्शन

#### ग्रन्थ न० ३१।

१ युक्त्यनुशासन-आचार्यं समन्तभद्र । प्रत्र स०-४ । पंक्ति प्रतिगत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-३७ । लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-छनि। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य ।,प्राप्ति-स्यान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री ।

# - ग्रन्य नं० ३१।

२ नयलक्तरा- । पत्र म० – २६। पंक्ति प्रतिपत्र – ९। अक्षर प्रतिपिकृत् – ३५। लिपि – कृत्रह । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-मृामृान्य । प्राप्तिस्थान-पृं० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री।

विशेष-इसमें 'सप्तमंगी' के भी कुछ पत्र है।

#### ग्रन्य नं १३१।

\* ३ शारीरिकसूत्र गर्मा पत्र म०-१०। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-३५। लिपि-कृन्नड। भाषा-पंस्कृत । विषय-दर्शन । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्यान-प० नेमि-राज सेट्टि, मूडविद्री।

विशेप-इसमें कन्नड टीका भी है।

# ग्रन्थ न० १३।

४ षड्दराँन : : : । पत्र सं-२३। पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिप्रन्ति-४२ । लिपि-कन्नर । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । लेखनकील- 🗴 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । 'दशा-सामान्य 🦒 प्राप्तिस्थान-पद्म-नाम शास्त्री, मूहविद्री ।

विशेष-इसमें 'वज्जपञ्जराराघना' 'चिन्तामणिस्तव' तथा 'बारोग्यचऋ' बादिके भी कुछ पत्र हैं।

# विष्य-च्याक्रण

# युन्ध न० १६।

१ काशिकावृत्तिविवृरगापंचिका—आचार्यं जिनेत्द्रबुद्धि । पत्न स०-२१७ । पितः प्रतिपत्र्व-१० । अक्षर प्रतिपिक्त-१२० । लिपि-कन्नष्ठ । माषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । वस्तु-ताडपुत्र । लेखनकाल- । व्यप्तणं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त बसदि, जैन पत्न, मूडविद्री ।

#### मगलाचरण-

जयन्ति ते सदा सन्तं सत्त्वे या यैष्पाजितम् । गुणाना सुमहद्द्वन्द्व दोषाणां च विविजितम् ॥ अन्यतः सारमाकृष्य कृतेषा काशिका यथा । वृत्तिरस्य यथाविका ऋयते पिचका स्या ॥ .

### ग्रन्थ तु० २।

२ गण्पाठ- · · · · । पत्र स०-११ । पित्र प्रतिपत्र-८। अध्रर प्रतिपत्रित-६९। लिपि-कञ्छ । भाषा-मस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडविद्री ।

## ग्रन्थ न० १९ ।

३ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह्-आचार्यं सभयचन्द्र । पत्र स०-७५। पिन्त प्रतिपत्र-१२ । सक्षरप्रतिपिक्त-१४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-मस्कृत । विषय-व्याकरण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल्- × । पूर्णं तथा शृद्ध । दशा-उत्तमु । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त वसदि, जैनपच, मूडविद्री ।



# विषय-कोश

#### ग्रन्थ नं० २ ।

१ स्नारकोश-अमर्रासह। पत्र सं ०-११६। पिवत प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-६४। लिपि-कन्नह। मापा- 'स्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूहविद्री।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

#### ग्रन्थ न०३।

२ श्रमरकोश्-अमरसिंह। पत्र स०-२१। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-३९। लिपि-कृत्तड। भाषा-मंस्कृतः। विषय-कोशः। लेखनकाल- ×। अपूर्णं तथा शुद्धः। दशा-सामान्य। प्राप्तिस्थान-शान्तिराज इन्द्र, होसबसिंद, मूडबिंदी।

ग्रन्थ तं० ३ ।

३ ऋमरकोश-अमरसिंह। पत्र स०-१४५। पिति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपृक्ति-४५ । लिपि-कन्नह। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-मामान्य। प्राप्ति-स्थान-प० नेभिराज सेट्टि, मूडविद्धी।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

#### ग्रन्थ न० ७।

४ ग्रामरकोश-अमरसिंह। पत्र स०-७६। पिक्त प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-४५। लिप्रि-कन्नर। मापा-सस्कृत। विवय-कोश। लेखनकाल-४। ब्पूणं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीणं। प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, महिन्दी।

विशेष-यह द्वितीय-काण्ड तक है।



# विषय-काव्य

# ं ग्रन्थ नं० ३।

१ सुनिसुन्नतकाञ्य-अर्हद्दास । पत्र सं०-६८। पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काञ्य । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र वैकणतिकारि वसदि, सूडविद्रो ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका है।

#### ग्रन्थ नं० १।

२ विद्ग्धमुखमण्डन-धर्मदास । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज-इन्द्र, वैकणतिकारि वसदि, मूडबिद्धी ।

# ->::

# विषय-छन्दःशास्त्र ।

## ग्रन्थ नं० १०।

\* १ वृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट । पत्र सं०-५८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री ।

विशेष-इसमें श्रीनाथ कृत संस्कृत टीका भी है।



# विषय-नीति तथा सुभाषित

# ग्रन्थ नं० १।

१ सुभाषितसंग्रह-\*\*\*\* । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिन-राज इन्द्र, वैकणतिकारि वसदि, मूडविद्री ।

# ग्रन्थ नं ० १ ।

२ सुमाषितसंग्रह-\*\*\*\* । पत्र सं०-४। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-७६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत तथा कन्नड। विषय-सुभाषित। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, वैकणतिकारि वसदि, मूडविद्री।

# ग्रन्थ नं ० ९।

३ सुभाषितसंग्रह- । पत्र सं०-१५। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-३४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । लेखनकाल- ×। पूर्णं तथाः सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्ति-स्थान-जिनराज इन्द्र, वैकणतिकारि वसदि, मूडविद्री ।

विशेष-इसमें न्यायसंवन्धी और भी ५ पत्र हैं।

# ग्रन्य नं० १२।

४ सुभाषितसंग्रह्- । । पत्र सं०-८। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-६८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत तथा कन्नड। विषय-सुभाषित। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-जीर्ण। प्रिष्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि वसदि, मूडविद्री। विशेष-इसमें 'वायसशकुन' तथा किसी न्यायग्रथके भी ११ पत्र हैं।

४ सुभाषितसंग्रह-\*\*\*\* । पत्र स०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२९ । लिपिकन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-प० नेमिराज सेट्टि, मुडविद्री ।

->:-

# विषय-पुराण

### ग्रन्थ न० १८।

१ उत्तरपुराग्-आचार्यं गुणमद्र। पत्र स०-२७। पित्त प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-१२०। लिपि-कन्नड। मापा-सस्कृत। विषय-पुराण। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्णं तथा शुद्ध। दशा-सामान्य। प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त वसदि, जैन पच, मूहविद्री।

विशेष-इसमें सिर्फ श्री अनन्तनाथ पुराण तक है।

## ग्रन्थ च० ११।

२ चन्द्रप्रभपुरागा-अग्गलदेव । पत्र सं०-२०३ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-शालि०शक १६४२ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्ति-स्यान-पद्मनाभ शास्त्री, मूडविद्री ।

#### ग्रन्थ नं - १।

३ वीर्थकरभवावली-\*\*\* । पत्र स०-९। पिक्त प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपिक्त-५३। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-पुराण। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-शान्तिराज इन्द्र, होसवसिद, मूडविद्री।

विशेष-इसमें वर्तमान २४ वीर्यंकरों के पूर्वभवों का वर्णन संक्षेपमें दिया गया है।

## ग्रन्य न० ९।

\* ४ पुराणश्लोकसंग्रह- । पत्र चं०-११। पक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-३२। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण। लेखनकाल- ×। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, वैकणतिकारि वसदि, मूडविद्री।

विश्रेप-इसमें हिन्दू पुराणो के कुछ श्लोक सम्रह किये गये हैं।



# विषय-चरित्र

#### ग्रन्थ न० ५ ।

१ द्यनन्तमतीचरित-सातणवर्णी । पत्र स०-३७ । पिन्तः प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिन्तं-५४ । लिपि-कन्नड । निषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णे तथा अशुद्ध । दशा-जीर्णे तथा खण्डित । प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूडविद्री ।

विशेष-इसके रचियता सातणवर्णी श्रुतमृनिके शिष्य है। विरोधि सवत्सर पुष्य कृष्णा १० शुक्रवारके दिन पायसेट्टिके पुत्र ब्रह्मण्ण ने लिखा है। इसमें गीत तथा वैद्यक आदिके भी कुछ पत्र हैं।

#### ं ग्रन्थ न० २४ ।

२ श्रादितीर्थंकरचरित- ११ । पत्र स०-२२ । पति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-२४ । लिपि∸कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चिरित्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडविंद्री ।

## ग्रन्थ म० १।

३ श्रंजनाचरित-शिशुमायण । पत्र स०-१३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य तथा खण्डित । प्राप्ति-स्थान-चौटर घर्म साम्राज्यय्य, मूडबिद्री।

विशेष—स्वभानु सवत्सर कार्तिक शुक्ला ३ चन्द्रवारके दिन यह प्रति लिखी गई है।

## ग्रन्थ नं० ३।

४ श्रंजनाचरित-शिशुमायण। पत्र स०-११६। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-११५। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्यान-चौटर घर्मसाम्राज्यय्य, मुडबिद्री।

# ग्रन्थ न्० १४।

४ श्रांजनेयचरित-मायण्ण । पत्र स०-९० । पन्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपन्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पद्म-नाम शास्त्री, मूडविद्री ।

## ग्रन्थ न० ६।

६ जिनद्त्तचित-कवि पद्मनाभ । पत्र स०-७८। पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणं तथा खण्डित । प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूडिबद्री।

विशेष-इसका अपर नाम 'पद्मावतीचरित' है।

#### ग्रन्थ न० ७।

७ जिनदत्तचरित-'कवि पद्मनाभ । पत्र सं०-१'२७। पंक्ति प्रतिपत्रि-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नरः । भाषा-कन्नरः । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्धः । दशा-जीर्णः । प्राप्ति-स्थान-अनन्तराजं इन्द्र, पडुबसदि, मुर्हिबद्री ।

विशेष-देसमें प्रारंग्निमक पत्र नहीं है।

## ग्रन्थ नं० ३ ।

८ नागकुमारचरित-कवि बाहुब्ली। पत्र स०-१६५। पंनित प्रतिपत्र-१२। अक्षर प्रतिपक्ति-५५। लिपि-कन्नह। भाषा-कन्नह। विषय-चरित। लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। प्राप्ति-स्थान-मा॰देवराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष-इसका अन्तिम भाग कवि वर्घमान का रचा हुआ है।

ग्रन्य न० ९ । ६ नेमिनाथपंचकल्याणसंघि-\*\*\* । पत्र सं०-४ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-ं× ।पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं तथा खण्डित । प्राप्तिस्थान-मा॰ देवराज सेट्टि, सूहविद्री । 5 t t 7 1 t

्र ग्रन्थ चं ० ९ ।

१० नेमिजिनेशसंगति-मंगरस । पत्र स०-१६१ । पंक्ति , प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-९० । लिपि-केनड । माषा-केनड । विषय-चरित्र । लेखनेकाल-× । पूर्ण तथा व्युद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-प्सनाभ शास्त्री, मूडबिद्री।

1 1 1 11

विशेप-इसम 'परीषहजय' सवन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ न० २।

११ रायविजय-देवप्य । पत्र स०-१०९ । पैक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल- × । पूर्णे तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रार्थेप्तस्थान-नीटर धर्म-साम्राज्यय्य, मूडविद्री ।

#### ग्रन्थ न० १७ ।

१२ श्रीपालचिरत—मगरस । पत्र स०-९२ । पंक्ति श्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पद्मनाम-शास्त्री, मूडविद्री ।

विशेष-इसमें वीचका एक पत्र नहीं है।

#### ग्रन्थ न० ७।

१३ सुकुमारचिरत-शान्तिनाथ। पत्र सँ०-१७५। पन्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-३६। लिपिकन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-×। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। प्राप्तिस्थान-शान्तिराज इन्द्र, होसवसदि, मूडविद्री।

विशेष-इसमें अन्तिम एक पत्र नही है।

#### ग्रन्थ न० ३।

१४ सुद्रशंतचिति—नेमरस। पत्र स०-१६। पित प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपित्त-१०५। लिपिफन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य। प्राप्तिस्थानचौटर धर्मसाम्राज्यय्य, मूडविद्री ।

विशेष-इसका रचनाकाल शालि०शक ४४०६ है।



# विषय-कथा

#### ग्रन्थ न० ३९ ।

१ दपसर्गनिवारगञ्जतकथा-\*\*\*\* । पत्र स०-६० । पिन्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा,-उत्तम । प्राप्तिस्थात-प० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री ।

#### ग्रन्थ न० २।

२ दीपावित्रवित्रवानः । । पत्र स०-१२३ । प्रेक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्ति-स्थान-प० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री ।

#### ग्रन्थ न० १६,।

३ तन्दीश्वरत्रतकथा- । । पत्र सं०-२१०। पिनत प्रतिपत्र-६। बक्षर प्रतिपिनत-९६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-पद्मनाम शास्त्री, मूडविद्री।

#### ग्रन्थ न० १५।

४ व्रतकथासंग्रह- । पत्र स०-१९२। पन्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-१००। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूहविद्री।

विशेष-इसमें ७५ वतो की कथाएं है।

# ग्रन्थ नं० ३९। 🕠

# विषय-इतिहास

### ग्रन्थ नं० ६।

१ गुम्मटस्वामिचरित-कवि चन्द्रम । पत्र स०-१३ । पित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपित्त-२८ । िलिप-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कारकलस्य श्री गोम्मटेश्वरमूर्ति का इतिवृत्त अङ्कित है ।

## ग्रन्थ न० ९।

२ गुम्मटस्वामिचरित-किव चन्द्रम । पत्र स०-७७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

# विषय-श्रायुर्वेद

#### ग्रन्थ न० ३३।

१ श्रोषधगुरापाठ-बाहट । पत्र स०-२९ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-३३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडिबद्री ।

विशेष-इसमें कन्नड टिप्पणी है।

#### ग्रन्थ न० ८।

२ खगेन्द्रमिण्दिपेण्-मगरस । पत्र स०-९९ । पित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपित्त-४० । लिपि-फन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-प० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्रो ।

## ग्रन्थ न० ३४।

३ द्रव्यगुण्पाठ-\*\*\*\* । पत्र स०-२८ । पिक्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-प० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री

#### ग्रन्थ नं० ६।

४ धन्वन्तरिनिघएटु- । पत्र स०-५२ । पित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपित्त-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृतः। विषय-वैद्यक [कोश] । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-प० नेमिराज सेट्टि, मूहनिद्री ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है।

# 'ग्रन्थ न० ३४।'

४ नाडीविद्यान- • • • • । पत्र स०-१३। पनित प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपनित-५८। लिपि-कद्मड। भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-प० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री ।

#### ग्रन्य न० ३।

६ बालग्रहचिकित्सा-देवेन्द्रमुनि । पत्र स०-६० । पन्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपन्ति-५६ । लिपि-कन्नड । विषय-वैद्यक तथा मत्रशास्त्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रा-प्तिस्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूर्डविद्री ।

#### ग्रन्थ न० २८।

७ योगशतक-वररुचि । पत्र स०-७१ । पिन्त प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपिन्त-६४ । लिपि-कन्नरु । भाषा-सस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्राप्तिस्थान-प० नेमि-राज सेट्टि, मूहविद्री ।

विषय-इसमें कन्नड टीका है।

#### ग्रन्थ न० ३८।

द वैद्यशास्त्र " । पत्र स०-४० । पन्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपन्ति-३२ । लिपि-कन्नह । भाषा-कन्नह । विषय-वैद्यक । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्राप्तिस्थान-प० नेमि-राज सेट्टि, मूडविद्री ।

विशेप-इसमें सुवर्णनिर्माण तथा भस्म आदि बनाने की विधि भी उक्त है।

#### ग्रन्थ न० ५

६ वैद्यसग्रहः । पत्र स०-२८। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिन्त-३२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-वैद्यक। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण। प्राप्तिस्थान-प० नेमि-राज सेट्टि, मूडविद्री।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

#### ग्रन्थ न० ८।

१० वैद्यसंग्रह्-\*\*\*\* । पत्र स०-६० । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिनत-३३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-प० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री ।

#### ग्रन्थ न० ८।

११ वैद्यसंग्रह- '' '। पत्र सं०-३६। पिक्त प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिक्त-२४। लिपि-कन्नड। माषा-कन्नड। विषय-वैद्यक । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण। प्राप्तिस्थान-प० जिनराज इन्द्र, वैकणतिकारि बसदि, मूडविद्री।

#### ग्रन्थ न० ९।

१२ वैद्यसंग्रह-\*\*\*\* । पत्र सं०-३७ । पिक्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिक्त-२८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्यान-प० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री ।

#### ग्रन्थ न० १०।

१३ वैद्यसंग्रह-\*\*\* । पत्र स०-१९। पित प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिक्त-४५। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत तथा कन्नड। विषय-वैद्यक। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। प्राप्तिस्थान-जिनराजं इन्द्र, वैकणितकारि वसदि, मूडविद्री।

विशेष-इसमें 'त्रैवर्णिकाचार, के भी कुछ पत्र है।

#### ग्रन्थ न० १ 📢

१४ वैद्यसंग्रह्- । पत्र स०-४१। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपिक्त-४२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-वैद्यक। लेखनकाल- ×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-पं० नेभिराज सेट्टि, मूडविद्री।

## ग्रन्य तं० १४।

१५ वैद्यसंग्रह्- · · · · । पत्र सं०-१९३ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षरप्रतिपंक्ति-१८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दद्या-जीर्ण । प्राप्तिस्यान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री ।

#### ग्रन्य न० १४।

१६ वैद्यसंप्रह्-''''। पत्र स०-९५। पित्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपित्त- २८। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-वैद्यक । लेखनकाल- ४ । अपूर्णं तथा सामान्य गुद्ध। दशा-जीर्णं तथा सण्डित। प्राप्ति-स्यान-जिनराज इन्त्र, वैकणितकारि वसदि, मूडविद्री ।

# ग्रन्य नं० १६ ।

१७ वैद्यसंग्रह-\*\*\*\* । पत्र सं०-१७६ । पिन्त प्रतिपत्र-७ । वसर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिन-राज इन्द्र, वैकणितकारि वसिंद, मूडविद्री ।

#### ग्रन्थ नं० १७ ।

१८ वैद्यसंग्रह-\*\*\*\* । पत्र सं०-५२ । पितत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिनिक्त-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-मामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री ।

विशेष-इसमें 'सट्टमत' एव यत्र-मंत्र संबन्धी और भी कुछ पत्र है।

### ग्रन्थ न० २२ ।

१६ वैद्यसंप्रह-\*\*\*\* । पत्र सं०-४२। पंक्ति प्रतिपत्र-१६ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-२९ । लिपि-कन्नह । भाषा-कन्नह । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री ।

विशेप-इसमें यंत्र-भन्न संबन्धी और भी कुछ पन है।

#### ग्रन्य नं० २३।

२० वैद्यसंग्रह्- · · · · । पत्र स०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नह । माषा-कन्नह । विषय-वैद्यक । छेखनकाल- × । अपूर्ण नृद्या सामान्य शुद्ध । दश्त-सामान्य । प्राप्तिस्थान-जिन-राज इन्द्र, वैकणतिकारि वसदि, मूडविद्री ।

## ग्रन्य नं० ३७ ।

२१ वैद्यसंग्रह-'''' । पत्र स०-३० । पित्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । माप्रा-कन्नड । विप्य-वैद्यक । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तया सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्त्रिस्थान-प० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री ।

ग्रन्य नं० ३६। २२ वैद्यसार-\*\*\*\* । पत्र स०-६२ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखन्काल्-४ । पूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूहविद्री ।

विशेष-इसमें 'गौलीपतनफल' 'दीक्षानक्षत्र' तृथा ग्रंत्र मंत्र आदिके मी कुछ पत्र है ।

# ग्रन्थ नं० ३।

२३ वैद्यामृत-श्रीघरदेव । पत्र सं०-९० । पंक्ति प्रतिपृत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-३८ । लिपि-कन्नह । मापा-कन्नह । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दश्ा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-अनन्तराज इन्द्र, पहुवसदि, मूहिबद्धी ।

विशेष-इसमें ज्योतिष संबन्धी भी कुछ पत्र है ।

२४ वैद्यामृत-श्रीषरदेव । पत्र स०-११४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—वैद्यक । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । प्राप्तिस्थान—अनन्त-राज इन्द्र, पहुंबसदि, मूहविद्री।

विधेप-इसमें वैद्यक तथा मनतास्त्र सबन्धी और भी कुछ पत्र है।

ग्रन्थ न०१०।

२५ वैद्यामृत-श्रीघरदेव । पत्र स०-८३ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । असर प्रतिपक्ति-१० । लिपि-कन्नह । भाषा<u>-</u>कन्नर । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । पूर्णं तया शृद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्यान-पद्मनाम शास्त्री, मुडविद्री ।

्र--विशेष-इसमें 'नित्यपूजा' बादिके भी कुछ पत्र है।

ग्रन्य न० १३ । २६ वैद्यामृत-श्रीवरदेव । पत्र स०-१२८,। पन्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नह । भाषा-कन्नह । विषय-वैद्यक । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-प० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री ।

विशेप-इसमें यत्र-मत्र सवन्धी और भी कुछ पत्र है।

# विषय-ज्योतिष

ग्रन्थ न० १५ ।

१ श्रष्टमत [ मेघलच्या ]-अष्ट अयवा अर्हदास । पत्र सं०-५३ । पृक्ति प्रतिपृत्र-८ । अस्र प्रतिपिक्त-४० । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्ति-स्यान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें मेघसे सबन्ध रखनेवाली बहुत सी वाते वतलाई गई हैं।

ग्रन्य न० १।

२ केवलज्ञानचूढामणि- '''। पत्र स०-६। पत्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-६४। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिय । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि वसदि, मूडविद्री। ग्रन्य नं १३५ ।

\*-३ गार्ग्यसहिता-यति गर्गेः। पत्र स०--३०। पन्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपन्ति-४५। लिपि-कन्नह । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्यान-प० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री । ् ग्रन्थ नं ०८।-

४ स्योतियसग्रह्-: '। पत्र सं०-१८। पिनत प्रनिपत्र-६। अक्षर प्रतिपन्ति-२४। लिपि-कन्नह। भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-जिनराजइन्द्र, बैकणतिकारि वसदि, मूडविद्री।

विशेष-इसमें केवल प्रश्तभाग है।

प्रन्य नं० १८।

प्रन्य नं० १८। कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिन-राज इन्द्र, वैकणतिकारि बसवि, मुखबिद्री ।

विशेष-कीलक सबत्सर कार्तिक कृष्णा प्रतिपदा के दिन द्रविड देशीय अप्पण्ण सेट्टिने मूडविद्री निवासी विकमसेट्टि बसदि पदुमप्प इन्द्र के लिये इसे लिखा है। इसमें 'मुनिसुन्नतकाव्य' के भी कुछ पत्र है।

# ग्रन्थ न० २४।

६ तीथैंकेवलिप्रश्न- • • । पत्र स०-४७ । पिनत प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपिनत-८ । लिपि-कन्नह । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-प० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री ।

विशेष-इसमें कन्नड टिप्पणी है।

## ग्रन्थ न० २६ ।

७ तीर्थकेवितप्रश्न- ' ' । पत्र स०-४२। पिनत प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपंक्ति-१६। लिपि-कन्न । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्यार्न-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडिबद्री ।

विशेष-इसमें कन्नड टिप्पणी है।

## ग्रन्थ न० १।

द त्रैलोक्यदीपिका [ सर्वतोभद्रचक्र ]-····। पत्र स०-१०। पिक्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-३९। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-अनन्तराजद्दन्द्र, पहुवसदि, मूडविद्री ।

## ग्रन्थ न० १।

९ प्रश्नशास्त्र—केशवार्य । पत्र सं०—७२६ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपक्ति—३७ । लिपि—कन्नह ।
 भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । लेखनकाल—४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम । प्राप्तिस्थान—अनन्त-राज इन्द्र, पहुवसदि, मूद्धविद्री ।

विशेष- इसमें संस्कृत टीका है।

## ग्रन्थ नं० ६.।

१० प्रश्निचन्तामिण-\*\*\*\*। पत्र सं०-१०८। पिन्त प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपिन्त-२४। लिपिकन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-शालि० शक १५८२। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।
प्राप्तिस्थान-पद्मनाम शास्त्री, मूडबिद्री।

विशेष-इसे शालि॰ शक १५८२ शार्विर संवत्सर वैशाख शुक्ला ११ चुघवार के दिन मसूर पण्डित ने लिखा है।

# प्रन्थ नं० ३५।

११ बीजारोपग्गनत्तन्न-\*\*\*\* । पत्र स०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-३३ । लिपिकन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थानप० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

## ग्रन्थ नं ० ६ ।

१२ मुहूर्तदर्पेग-विद्यामाघव । पत्र स०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-२३ । लिपि-फन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्ति-स्थान-जिनराज इन्द्र, वैकणतिकारि वर्साद, मूडबिद्री ।

# ग्रन्थ नं ० ५ ।

१३ सामुद्रिक-'''' । पत्र सं०-१९५ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री ।

विशेष-इसमें कब्बड टीका है।

## ग्रन्थ नं० ४।

१४ सुप्रीवप्रश्त- • • • • । पत्र स०-२२ । पिन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२२ । लिपि-कन्नह । माया-कन्नह । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-प०नेमि-राज सेट्टि, मृडविद्री ।

विशेष-इसमें सस्कृत'समवसरणचूलिका' भी हैं। इण्के लेखक मूडविद्री निवासी पबुवसदि पदुमय्य है।

## ग्रन्थ मं० २० ।

१५ स्वप्नफल- : : । पत्र स०-३१। पन्ति प्रतिपत्र-१२। अक्षर प्रतिपंक्त-३२। लिपि-कन्नड। मापा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-प०नेमिराज सेट्टि, मूढविद्री।

विशेप-इसमें कन्नड टीका है। तथा गौलीपतन, गार्वम एव वायस आदि के शकुन भी दिये गये हैं।



# विषय-गणित

#### ग्रन्थ नं० ७ ।

१ गणित्वितास-राजादित्य । पत्र स०-१६ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नद । भाषा-कन्नद । विषय-गणित । लेखनकाल-× । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्ति-स्यान-जिनराज इन्द्र, वैकणतिकारि वसदि, मूडविद्री ।



# विषय-मंत्रशास्त्र

#### ग्रन्य न• २।

१ गण्धरवलयमंत्र-\*\*\*\* । पत्र स०-६६ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-क्ष्मड । मापा-प्राकृत । विषय-मत्रशात्र । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-शान्ति-राज इन्द्र, होसवसिंद, मूडविद्री ।

विशेष- इसमें कलड़ टिप्पणी हैं।

#### ग्रन्य न० ८।

२ भैरवपद्मावतोकलप-आचार्य मिल्लिपेण । पत्र स०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिषंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मत्रशास्त्र । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणं तथा खिल्डत । प्राप्तिस्थान-अनन्तराज दुन्द्र, अपडुवसदि, भूहविद्वी ॥

विशेष-इसमें वन्युपेण कृत सस्कृत टोका ह। इसको एक टिप्पणी में 'उमयमापा' का अर्थ प्राकृत तथा गीर्बाण कहा गया है। इसके अतिरिक्त इसमें कवि शान्तिनाथ कृत सस्कृत पारवेंनाथ स्तोत्र का भी एक पत्र है।

#### ग्रन्य नं० १९।

३ मंत्रसंग्रह-\*\*\*\* । पत्र सं०-११ । पिनत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिनत-२८ । लिपि-कन्नह । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-५० नेमि-राज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें 'दृष्टिदोषनिवारण' मूषिकवाधानिवारण' वादि कई विषयों के मन हैं।

# ग्रन्थ ने० २।

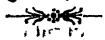
४ यंत्रमंत्रसंग्रह- ' ' । पत्र सं०-८५ । पत्रित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपत्ति-२५ । लिपि-कन्नर । माषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य श्रुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-

विशेष-इसमें ग्रहोच्चाटन आदिके कुछ यंत्र तथा मंत्र संग्रह किये गये है।

४ श्रीदेवताकल्प-अरिष्टनेमि । पत्र सं०-२७३ । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंन्ति-२० । लिपि-कन्नड । भोषा-संस्कृत । विषय-मत्रशास्त्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्ति-स्थान-जिनराज इन्द्र, वैकणतिकारि वसदि, मूडविद्री ।

अन्तिम पद्य-''श्रीयुवितसदनपद्म राजेन्द्रशिरस्सु शेखरीकृतपद्मम । भव्याना हितपद्मं श्रीवीरसेनपदयुगपद्मम् ॥ शिष्या श्रीवीरसेनस्य विद्वद्विनयनायकः । गुणसेनो महीख्यातो वदवादीभकेसरो ॥ तस्य शिष्यो भुवि ख्यातो विद्वदम्भोजभास्करः । विशिष्टारिष्टनेमीशो दुष्टवादिमदापहः ॥ रिचतं नेमिनाथेन श्रैविद्येन यतीशिना । स्येयाच्छी- देवताकल्प यावच्चन्द्रदिवाकरी ॥ "

विशेष-इसमें पूजाबाठ संबन्धी और भी फुछ पत्र है। प्रकृत कल्प में प्रारंभिक भाग नहीं है।



# विषय-लोकविज्ञान

#### मन्य न० १४।

१ तिलोयसार [त्रिलोकसार]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-५१। पन्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपन्ति-१०९। लिपि-प्राचीन कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- 🗴। पूर्ण तथा षुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त बसदि, जैन पच, मूडिबद्री ।

विशेष-यह अति प्राचीन ग्रथ है। इसे श्री रेचण्ण ने लिखवाकर आचार्य माघनन्दी को शास्त्रदान किया है।

ग्रन्थ न० १८। २ तिलोयसार [त्रिलोकसार]-आचार्य निर्मचन्द्र। पत्र स०-३८। पनित प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपन्ति-१४०। लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शृद्ध। दशा-उत्तमः। प्राप्तिस्थान-सिद्धान्तवसदि, जैन पच, भूड्बिद्री ।

# ->0

# विषय-शिरप

प्रन्थु नुं० ३७।

१ वास्तुलच्या-\*\*\*\* । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपत्रित-२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-जिल्म । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-प० नेमिराज सिट्ट, मूडविद्री ।

# ->0

# विषय-लक्षण, समीक्षा तथा पाकशास

१ श्रिश्वशास्त्र-अभिनवचन्द्र । पत्र सं०-१२३ । पतित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपृतित-३७ । लिपि-कन्नड । मार्था-कन्नड । विषय-प्राणिशास्त्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्ति-स्याम-पं० नेमिराज सेष्टि, मुडबिद्धी ।

# ग्रन्थ नं ० २।

२ धूर्मेपरीचा-वृत्तविलास। पत्र स०-५२। पक्ति प्रतिपत्र-७। बक्षर प्रतिपक्ति-१०४। लिपि-कन्नसः। भा ा-कन्नड । विषय्-समीक्षा । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-जीर्णं । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, वैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री।

#### ग्रन्थ न० २।

३ सूपशास्त्र-मंगरस । पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-७२ । लिपि-कस्तर । माषा-कन्नड । विषय- सूपशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-परानाम शास्त्री, मूडविद्री।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है। ग्रन्थ प्रकाशनीय है।



# विषय-क्रियाकाण्ड

# ग्रन्थ न० १३।

१ क्रियाकार्ग्ड-\*\*\* । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-५२ । लिपि-कन्नह । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्रे, बकणतिकारि बसदि, मूहविद्री।

विशेष-इसमें कन्नड व्याख्यान भी है।

#### ग्रन्थ न० १।

२ दशुभक्ति-आचार्यं कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र स०-३८ । पिन्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-५४। लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाळ- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्यान-शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडविद्री ।

विशेष-इसमें 'कम्प्रकृति' [कलड़ ] के भी कुछ पत्र हैं।

#### प्रन्य न० ३।

३ संध्यावन्दना- । पत्र स०-५। पनित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपृक्ति-३५ । किप्-क्ष्मद । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

प्राप्तिस्यान-शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडविद्री ।



# प्रत्य न०९।

१ अकुलंकाष्ट्रक्-आचार्य अकलक्देव । पत्र स०-२३ । पनित् प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । माया-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-जिन्दाज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, सूडविद्री।

#### ग्रन्थ ने० १।

२ ऋषिमण्डलस्तोत्र-गीतर्मस्वामी । पत्रं स०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाळ- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रा-स्तिस्यान-मा० देवराज सेट्टि, मूडविद्री ।

विशेष-इसमें 'दीक्षाविधि' तथा 'दीक्षानक्षत्र' सम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

# ग्रन्थ नं० २०।

३ गुम्मटाष्टक- · · · · । पत्र सं०-१। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-५६। लिपि-कन्नह। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्यान-जन-राज इन्द्र, वैकणतिकारि वसदि, मूडविद्री ।

विशेष-इसमें सरस्वतीपूजा, स्तोत्र, नान्दीमंगल, वैद्यक, ज्योतिष आदि कई विषयोके पत्र है।

ग्रन्थ नं० २३।

४ चतुर्विशतिस्तोत्र-माघनम्दी । पत्र सं०-६ । पिनत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिनत-१६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-५० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री ।

ग्रन्थ नं० १८।

५ जिनसहस्रनाम-आचार्य जिनसेन। पत्र स०-२३। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-२०। लिपि-कन्नढ। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-प० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री।

## ग्रन्थ न० २३।

६ जिनसहस्रनाम-आचार्यं जिनसेन। पत्र सं०-२३।पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-१६। किपि-कन्नड।भाषा-सस्कृत।विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×।पूर्णं तथा शुद्ध।दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-प॰ नेमिराज सेट्टि, मूहविद्री।

## ग्रन्थ नं० २५।

७ जिनसहस्रनाम-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४ । किपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रा- प्रितस्थान-प० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री ।

# ग्रन्य नं० २०।

८ पार्श्वनाथस्तव-पदाप्रभदेव । पत्र स०-४। पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-४९ । लिपि-कन्नह । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, वैकणितकारि वसदि, मूडिबद्री ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका है।

## ग्रन्थ नं० ६।

६ महर्षिपयुपासन-\*\*\*\* । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नर । मापा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्ति-स्वान-अनन्तराज इन्द्र, पद्वसदि, मूदविद्री ।

विशेप-इसमें विस्तृत कन्नड टीका है।

# ग्रन्थ नं० ६।

१० शान्तीशनुति-किन चन्द्रम । पत्र स०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । निपय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणं । प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूर्डावद्री ।

विशेप-इसके रचयिता कवि चन्द्रम आचार्य श्रुतसागरके शिष्य हैं।

# ग्रन्य नं० ६।

११ समवसर्ग्यस्तोत्र-आचार्यं विष्णुसेन । पत्र सं०-८ई । पॉक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । मापा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्ति-स्पान-अनन्तराज इन्द्र, पदुबसदि, मूडबिद्री ।

# विशेष-इसमें कन्नड टीका और [सस्कृत] क्षेत्रपालपूजा एव स्तोत्र भी है। ग्रन्थ न० १३।

१२ सुप्रभातस्तोत्र-\*\*\* । पत्र स०-१ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-५० । लिपि-कन्नह । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री।

#### ग्रन्य न० १३ ।

१३ स्वप्नावली- : : । पत्र स०-२ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नस्र । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिन-राज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री।

#### ग्रन्थ न० ४।

१४ स्तोत्रसंग्रह्- \* \* \* \* । पत्र स०-४० । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-४२ । लिपि-फन्नड । भाषा-प्राकृत तथा सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्ति-स्थान-जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री।

विशेष-इसमें 'पचपरमेष्ठिस्वरूप' तथा 'तीर्यंकरलघुपुराण' [कन्नड] आदिके भी कुछ पत्र हैं।

#### ग्रन्थ न० ६।

१५ स्तोत्र संग्रह-पण्डित आशाघर । पत्र स०-२८ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-९६ । लिपि-कन्नह । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–×। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान– अनन्तराज इन्द्र, पडुवसदि, मूडविद्री ।

विशेष-इसमें पण्डित आग्राघरकृत 'अर्हत्स्तोत्र' 'रत्नत्रयस्तोत्र' एव 'सरस्वतीस्तोत्र' [कन्नड टीका सहित] सग्रह किये गये है ।

#### ग्रन्थ न० ६।

१६ स्तोत्रसंप्रह्-आचार्य मानतुग आदि । पत्र स०-१७ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-७५ । लिपि–कन्नड । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल– × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान-अनन्तराज इन्द्र, पहुबसदि, मूडविद्री ।

विशेष-इसमें कन्नड टीकाके साथ 'मक्तामरस्तोत्र ' कल्याणमन्दिरस्तोत्र' एव 'विषापहारस्तोत्र' सग्रह किये गये है। ग्रन्थ मॅं० ३।

१७ स्वयम्भूस्तोत्र-आचार्यं समन्तभद्र । पत्र स०-१९६ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-३४ । लिपि—कन्नड । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । लेखनकाल—× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान-शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिद्री ।

#### ग्रन्थ न० २० ।

१८ म्बयम्भूस्तोत्र-आचार्यं समन्तभद्र । पत्र स०-१० । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्यान-जिनराज इन्द्र, वैकणतिकारि बसदि, मूडविद्री।

#### ग्रन्थ न० २७ ।

१६ स्वयम्भूस्तोत्र-आचार्य समन्तभद्र। पत्र स०-६९।पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-५४। लिपि–कन्नड । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल– ⋉ । पूर्णे तथा शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान– प॰ नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री।

विशेष–इसमें कन्नड व्याख्यान भी है। —≫ॐ≪—



# विषय-भजन तथा गीत

ग्रन्थ न० २२।

१ भ जनसंग्रह- । पत्र सः -२७। पित्र प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिक्त-६०। लिपि-क्ष्यह्न। भाषा-कन्नड। विषय-मजन। लेखनकाल- ×। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। प्राप्तिस्यान-जिनराष इन्द्र, वैकणितकारि वसिंद, मूडिनद्री।

विशेष-इसमें वर्तमान २४ तीर्थंकरोकी 'सुपनाजिल' (कन्नड) भी है।

# ग्रन्थ नं ० ११.।

२ भजनसंग्रह- \*\*\*\* । पत्र स०-१२ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-३० । लिपि-कन्नहः । भाषा-कन्नहः । निषय-भजनः । लेखनकाल- × । प्रणं तथा सामान्य शुद्धः । दशा-सामान्यः । प्राप्तिस्यान-जिनराज इन्द्रं, वैकणतिकारि वसदि, मूंडविद्री । '

विशेष-भजनके अतिरिक्त इसमें पूजापाठ सवन्धी और भी कुछ पत्र है।

## ग्रन्थ न० १६।

३ भजनसंप्रह्— ''' । पत्र स०-४५ । पित्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंत्रि-८ । ितृपि-कन्नह । भाषा-कन्नह तथा तुलू । विषय-भजन । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्ति-स्थान-प० नेमिराज सेट्टि, महविद्री ।

विशेप-इसमें मूर्डविद्रीके जिनमन्दिरोंसे सवन्ध रखनेवाले कुछ भजन संग्रह किये गये है।

#### ग्रन्थ न० ८ ।

थ रामायग् यत्त्रगात— '''। तत्र स ८८। पिक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-३५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-गीत। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शृद्ध। दशा-जीर्णं तथा खण्डित। प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, मृडविद्री।

#### ग्रन्थ न० ८।

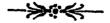
४ शान्तोश्वरपचकल्याग्रगोत-\*\*\*\*। पत्र स०-१३। पांक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-३२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-गीत। लेखनकाळ-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्णं। प्राप्ति-स्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूडविद्री।

विशेष-इसमें 'भरतेशवैभव' तथा भजन स्वन्धी शीर भी कुछ पत्र है।

# , ग्रन्थ नं ० २१।

्रामनगोतसंग्रह-्राः। पत्र,स०-७६,१ पिन प्रतिपत्र-७। अक्षरःप्रतिपंक्ति-३२ । लिपिन क्षप्त । भाषा-कष्तरः। विषय-गात । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्यान-जिनराज इन्द्र, वैकणतिकारि वसदि, मूडविद्रो ।

विशेष-इसमें गर्भाघान आदि १६ सस्कारों में गाये जाने वाले गीत सग्रह किये गये हैं।



# विषय-प्रकीर्णक

# ग्रन्थनं० ४०।

१ वारू द त्रादि वनानेको विधि-\*\*\*\* । पत्र स०-३०। पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-३६। लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-कौतुक । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडिबद्री ।

बिग्रेप-इसमें सातराबाज आदि वनानेका कम दिया है।

#### ग्रन्थ न० ३।

२ भाषाकुसुममंत्ररी-विश्वनाथ । पत्र स -८ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रकीणक । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्ति-स्थान-शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मुड्बिद्री ।

विशेष-यह 'सस्कृतपाठावली' के समान है । इसके रचयिता कोल्हापुर मठाघीश लक्ष्मीसेन भट्टा-रक के शिष्य हैं ।

#### ग्रन्थ न० २१।

\* ३ शिवतत्त्वरत्नाकर-'' '''। पत्र स०-५४। पिक्त प्रतिपत्र-७। वक्षर प्रतिपिक्त-२७। लिप-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-विविध। लेखनकाल-×। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्णं तथा खण्डित। प्राप्तिस्थान-प० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री।

विशेष-इसमें वैद्यक, सामूद्रिक तथा तत्रशास्त्र आदि कई विषय है । इन सब पर क्रिंड-टीर्का भी है ।



# श्री जैनमठ कारकलके ताडपत्र श्रीर कागज पर लिखे गये हस्तलिखित श्रन्थोंकी सविवरण-सूची

# विपय-सिद्धान्त

#### ग्रन्थ न० १।

१ गोम्मटसार [जीवकाएड]-आचार्यं नेभिचन्द्र । पत्र सं०-१६१ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रति-पक्ति-१३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें आचार्यं अभयचन्द्र के शिष्य केशण कृत 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नड वृत्ति है। ,

## ग्रन्थ नं २३।

२ गोम्मटसार [जीवकायड]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२८ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रति-पक्ति-१६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । पूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ नं० २५।

३ गोम्मटसार [जीवकाएड]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२५७ । पनित प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-शालि० शक १४७० । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें केशण रचित 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नड वृत्ति हैं । शालि० शक १४७० कीलक सबत्सर कार्तिक शुक्ला ५ के दिन होय्सल देशान्तर्गत होलेयमुल्ल्र के निवासी देवरसोपाध्याय के पुत्र सातप्प ने मजुपाध्याय के पुत्र परारसोपाध्याय के लिये इसे लिखकर दिया ।

#### ग्रन्थ न० ४८ ।

४ गोम्मटसार [जीवकाएड] —आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-११४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य श्द्ध । दशा-अति जीर्णे ।

विशेष-इसमें गोम्मटसार [ कर्मेकाण्ड ], क्षपणसार आदि कई विषयो के अधूरे पत्र सिम्मलित है। ग्रन्थ नं० ५८।

४ गोम्मटसार [जीवकाएड]-आचार्ये नेमिचन्द्र। पत्र स०-२९। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रति-पंक्ति-१००। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें केशण कृत कन्नड टीका है ।

#### ग्रन्थ नं० १२३।

६ गोम्मटसार [जीवकार्यं ने भिचन्द्र। पत्र स०-१३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रति-पंक्ति-१६०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें केशण कृत 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नड टीका है।

#### । ग्रन्थ 'चं० १।

७ गोस्मटसार [कर्मकाएड]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-७५ । पन्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रति-पन्ति-१३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें आचार्यं अभयचन्द्र के शिष्य केशण कृत 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नड वृत्ति है।

## ग्रन्थं व०२।

द्र गोम्मटसार [कर्मकाएड]-अन्वार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-१५४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रति-पक्ति-१३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-शालि० शक १५२१ । पूर्णे तथा । सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें आचार्य अभयचन्द्र के शिष्य केशण कृत 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नस्र वृत्ति है। शालि॰ शक १५२१ विलिम्ब सवत्सर आषाढ शृक्ला ५ के दिन सरस्वती गच्छ-बलात्कारगण आचार्य कोण्डकुन्दान्वयी महेन्द्रकीर्ति के शिष्य वगवाडी निवासी चन्द्रकीर्ति के लिये उलमय सेट्टिके पुत्र जोगिसेट्टि के बन्धु, मियन्द सेट्टि ने इसे लिखवाकर दान किया है।

#### ग्रन्थ न० २३।

र गोम्मटसार [कर्मकाण्ड]—आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-३१ । पित प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रति-पिनत-१३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० २६।

१० गोम्मटसार[कमैकाएड]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-१७४ । पिक्त प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिप-क्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें केशण कृत कन्नड वृत्ति है ।

## ग्रन्थ न० ३४।

११ गोम्मटसार[कर्मकाण्ड]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र सं०-८० । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पक्ति-१४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्णं तथा खण्डित ।

# ग्रन्थ न० ५८।

१२ गोम्मटसार [कर्मकाएड]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-८५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रति-पिक्त-१४० । किप-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णे ।

विशेष-इसमें केशण कृत कन्नड टीका है।

#### ग्रन्थ न० ५९।

१३ गोम्मटसार [कमकायह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-६५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

## 'ग्रेन्थ'न० १२७।

१४ गोम्मटसार [कर्मकाएड] आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं ०-१३ । पन्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-१२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें केशण कृत 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नड टीका है।

# ग्रन्थ च० ११६।

१४ गोम्सटसारः[जोवकाएड तथा कर्मकाएड]-आचार्य नेमिचन्द्रः। पत्र स०-७८। पन्ति प्रतिपत्र-१५। अक्षर प्रतिपक्ति-७०ः। लिपि-कञ्चडः। भाषा-प्राकृतः। विषय-सिद्धान्तः। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्धः। दशा-सामान्यः।

विशेष-इसमें सदृष्टिया भी सम्मिलित है।

## ग्रन्थ व०५८।

१६ लिख्सार [लिब्सार]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-३२ । पिक्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पिक्त-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- ४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० ५८।

१७ लिद्धिसार [लिब्धसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-४० । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षेर प्रति-पन्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- शालि० शक १५४० । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि०शक १५४० पिंगल सवत्सर भाद्रपद श्वनला ७ गुरुवार को वालम्म सेट्टि ने सरस्वती-गच्छ-बलात्कारगण-कोण्डकु-दान्वयी-मृिन हेमकीति के शिष्य चन्द्रकीति को मल्यण्ण से इसे लिखवाकर निर्द्र-खसप्तमीत्रतोद्यापन के निमित्त दान किया है।

# ग्रन्थ न० १२६।

१८ समयपाहुड [समयप्राभृत ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र स०-१० । पक्ति प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रति-पक्ति-१७० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष-इसमें सस्कृत टीका है।

# ग्रन्थ न० १२६।

१६ समयसार-आचार्यं कोण्डकुन्द । पत्र स०-६९ । पक्ति प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपक्ति-१७० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- 🗶 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं । विशेष-इसमें संस्कृत टीका है ।

**→>**:≪—

# विषय-अध्यात्म

# ग्रन्थ न० ९१ ।

१ रत्नाकरशतक-रत्नाकर वर्णो । पत्र सं०-१५ । पन्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यातम । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

# विषय-धर्म

#### ग्रन्थ नं० ८४।

१ उद्योगसागर-बालचन्द्र । पत्र स०-२२ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ,ग्रन्थ,न० ८७।

२ रपासकसस्कार-आचार्यं पद्मनन्दी । पत्र स०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपिन किन्न । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा,शुद्ध,। दशा-उत्तम । विशेष-यह 'पद्मनन्दिपचविशति' का एक प्रकरण है।

ग्रन्थ न० १३२।

३ उपासकसंस्कार-आचार्यं पद्मनन्दी । पत्र स०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

#### ग्रन्थ नं० ८७ ।

\* ४ गायत्री-'''' । पत्र स०-४६ । पित्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपित्त-४० । लिपि-कन्नह । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें संस्कृत व्याख्या है ।

ग्रन्थ नं० ३३ ।

४ जिनभक्तिसार ' '। पत्र स०-१७ । पन्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ न० १३।

६ तत्त्वार्थसूत्र-आचार्यं उमास्वाति । पत्र स०-३४ । पक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें दिवाकरनिन्द-कृत कन्नड लघुवृत्ति है, वीचके दो पत्र नहीं है।

ग्रन्थ न० ९।

७ त्रेवर्णिकाचार-जिनसेन । पत्र सः-१८९ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-३६ । लिपि-कन्नह । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विश्रेप-इसमें प्रारम्भिक एक तथा बीच के दो पत्र नहीं है।

ग्रन्थ नं० ९७।

द्वादशानुप्रेत्ता-विजयण्ण । पत्र स०-८५ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६६ । लिपि-कन्नछ । भाषा-कन्नह । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्य न० ९८।

र द्वाद्शानुप्रेन्ता-विजयण्ण । पत्र स०-८१ । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-शालि० शक १४४२ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेप-शालि शक १४४२ प्रमाथि सवत्सर वाश्वयुज शुक्ल सोमवार को इसे वेलगोल निवासी चि-वकमकुट ने लिखा है। इसकी दो प्रतिया है। दूसरी प्रति साधारण सवत्सर कार्तिक कृष्णा ७ रविवार के दिन लुसिसल निवासी नागप्प के पुत्र ब्रह्मदेव के द्वारा लिखी गई है।

ग्रन्थ न १०९।

१० द्वाद्शानुप्रेन्ता-विजयण्ण । पत्र स०-७५ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-६६ । लिपि-क-म्नढ । मापा-कन्नढ । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ न० ८७।

११ नीतिसारसमुखय-इन्द्रनन्दी । पत्र स०-६ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिन्त-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टिप्पणी है।

य्रत्य त० ८४ ।

१२ पचपरमेष्ठिस्वरूप-पण्डित वालचन्द्र । पत्र स०-७ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

#### ग्रन्थ नं० ८७ ।

१३ प्रश्नोत्तररत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र स०-२ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टिप्पणी है ।

# ग्रन्थ न० ६९।

१४ मुह्माशास्त्र-चन्द्रसागर वर्णी । पत्र स०-३६ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-९८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-श्रीमृख सवत्सर आषाढ शुक्ला ८ के दिन परिषण्ण के पुत्र पुट्टश्यामय्य ने इसे लिखकर समाप्त किया है।

#### ग्रन्थ न० ४९।

१४ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र स०-३३ । पिन्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिन्त-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

## ग्रन्थ न० ८४।

१६ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्यं समन्तभद्रः । पत्र स०-९ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-७६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा भृद्ध । दशा-उत्तम ।

# ग्रन्थ न० ४९।

१७ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र स०-८ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

# ग्रन्थ न० ९९।

१८ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र स०-५ । पक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपाक्त-४२ । क्षिप-क्षन्त । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'गायत्री व्याख्यान' [ सरकृत ] तथा 'सम्यक्त्वकोमुदी [ कन्नड ] के भी कुछ पत्र है। ,ग्रन्थ न० ७१।

१२ श्रावकाचार—माघनन्दी । पत्र स्०-२० । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० १४०।

२० श्रावकाचारसम्भह्-पण्डित आशाघर आदि । पत्र स०-१०४। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपिक्त-८। ि । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'सागार धर्मामृत' 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' आदि ग्रन्थो से श्रावकाचार सबन्धी कई बाते स-प्रमाण सग्रह की गई है, साथमें कन्नड टीका भी है ।

## ग्रन्थ,न० ८४।

२१ श्रीपदाशीति-···। पत्र स०-५ । पनित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-८० । लिपि-कन्नड । भापा-कन्नड । विषय-धर्मं । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-जीर्णं ।

# ग्रन्थ न० १२९।

२२ सज्जनचित्तवल्लभ-मिल्लिषेण । पत्र स०-१२। पिन्त प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिन्ति-१२०। लिपि-क्षत्रह । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें संस्कृत टीका है । और 'अकलकस्तोत्र' के भी कुछ पत्र है ।

#### प्रन्य न० १५०।

२३ सागारधर्मामृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं -४२ । पनित प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपन्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध-। दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० १२५।

२४ सागारघर्मामृतटीका-\*\*\*\* । पत्र स०-१७। पनित प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-८०। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध ।दशा-सामान्य ।

## ग्रन्थ न० १४०।

२५ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रम । पत्र स०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-८० । लिपि-कन्नद । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

# <del>-≫</del>:≪-

# विपय-प्रतिष्ठा

#### ग्रन्थ न० ११३।

१ जिनसहिता-एकसन्धी । पत्र स०-६६ । पिक्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपिक्त-६० । लिपि-कन्नह । भाषा-सत्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० १४३।

२ जिनसंहिता-एकसघी। पत्र स०-७६। पक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपक्ति-७५। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा। लेखनका रु-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

### ग्रन्थ न० १६।

३ प्रतिष्ठातिलक-ब्रह्मसूरि। पत्र स०-९६। पक्ति प्रतिषत्र-१०। अक्षर प्रतिपक्ति-७४। लिपि-कन्नह। भाषा-सस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

# ग्रन्थ न० ४०।

४ प्रतिष्ठातिलक-न्नह्मसूरि । पत्र स०-५६ । पिन प्रतिपत्र-१६ । अक्षर प्रतिपक्ति-९४ । छिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकालक-शालि॰ शक १५७७ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-खण्डित ।

विशेष-शालि॰ शक १५७७ पाथिव सवत्सर भाद्रपद कृष्णा ८ गृहवार को कोल्लेगाल निवासी विजय-ण्णोपाध्याय के पुत्र शान्तस्य ने इसे लिखकर समाप्त किया है।

#### ग्रन्थ न० १६।

४ प्रतिष्ठातिलक-नेमिचन्द्र । पत्र स॰-१४२ । पन्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपन्ति-५५ लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-कोधि सवत्सर ज्येष्ठ शुक्ला १० शनिवार के दिन मृन्धिन्द्रवेव के लिये यह ग्रन्थ लिखा गया।

#### ग्रन्थ न०४०।

६ प्रतिष्ठातिलक्-नेमिचन्द्र । पत्र , स०-१२८ । पिक्त प्रतिपत्र-१५ । अक्षर प्रतिपिक्त-१८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-शालि० शक १५७६ । पूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्णे ।

विशेष-शालि शक १५७६ तारण सवत्सर ज्येष्ठ शुक्ला ५ के दिन सागडे निवासी विजयण्णोपाध्याय के पुत्र शान्तस्य ने इसे लिखा है।

#### ग्रन्थ न० ३०।

७ प्रतिष्टास्रोद्धार-णण्डत आशाधर । पत्र स०-६८ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-८२ । लिपि-क्षड । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-खण्डित ।

#### ग्रन्थ न० १५।

द्र सिद्धचक्रप्रतिष्ठा- ; । पत्र स०-६। पन्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिक्त-४४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल- 🗴 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

- 200 Bar

## विषय-आराधना, पूजापाठ तथा व्रतविधान

### ग्रन्थ न० ७५।

१ स्त्राराघनात्रय-\*\*\*\*। पत्र स-५२। पित प्रतिपत्र-७। यक्षर प्रतिपिक्त-८१। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-आराधना । लेखनकाल-गालि० शक१८४०। पूर्ण तथा सामान्य गुद्ध। दशा-उत्तम । विशेष-इसका प्रतिलिपिकाल शालि० शक १८४० पिगल सवत्सर कार्तिक कृष्णा १३ बुधवार है। इसमें कलिकुण्ड, सिद्धवक तथा शान्तिचक्र ये तीन आराधनाए शामिल है।

#### ग्रन्थ नं० १६३।

२ नान्दीमंगलादिसंग्रह-' ' । पत्र स०-१६७ । पक्ति प्रतिपत्र-२० । अक्षर प्रतिपक्ति-२१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषयं-पूजा । वस्तु-कागज । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कई पूजाए तथा 'शान्तिविधान' भी सम्मिलित है।

#### ग्रन्थ न० ११०।

३ पूजापाठसंग्रह- । । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । वसर प्रतिपिक्त-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'नान्दीमंगल' 'विभिषेकपाठ' तथा विमानशृद्धि भी हैं ।

#### ग्रन्य न० ११२।

४ पूजापाठसंग्रह : : : । पत्र स०- ४२ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-७० । लिपि-कन्नड । मापा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'नान्दीमगल' तथा 'लघुगान्तिविघान' है।

#### ग्रन्थ न० १५८।

५ पूजापाठसंग्रह- : : । पत्र स०-२४७ । पिनत प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-नागरी । भाषा-प्राकृत तथा सस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-कागज । लेखनकाल-सवत् १७०९ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप—यह प्रति संवत् १७०९ श्रावण शुक्ला २ शुक्रवार के दिन लिखी गई है।

#### ग्रन्थ न० १६०।

६ पूजापाठसंग्रह्- : : : । पत्र स०-२०७ । पिनत प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिनत-१५ । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत तथा हिन्दी । विषय-पूजा । वस्तु-कागज । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्य न० १६२।

७ पूजापाठसंग्रह्-ःःः। पत्र म०-२६० । पिक्त प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपक्ति-२८ । लिपि-नागरी । माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-कागज । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ७५।

८ मृत्युं जयन्त्राराधना । । पत्र स०-२२। पनित प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपन्ति-६४। लिपि-कन्नड । भाषा-सम्बन्त । विषय-आराधना । लेखनकोल-शालि० वक १८४१। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—इसकी प्रतिलिपि शालि॰ शक १८४१ कालयुक्ति सवत्सर वैशाख शुक्ला प्रतिपदा शनिवार की समाप्त हुई है। प्रतिलिपिकार नागराजोपाध्याय के पुत्र ब्रह्मदेव है।

#### ग्रन्थ न० १६।

६ रत्नत्रयविधान-अय्यप्प । पत्र स०-२। पनित प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-७५ । लिपि-कन्नड भाषा-सस्कृत । विषय-त्रतिविधान । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

#### —≫::≪—

## विषय-न्याय तथा दर्शन

#### ग्रन्थ न०११।

१ श्रष्टसहस्त्री—आचार्यं विद्यानन्दो । पत्र सं०-९० । पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा—सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामोन्य शुद्ध । दशाँ—जीर्णं तथा खण्डित । विशेष-इसमें व्याकरण सवन्दी और भी कुछ पत्र है ।

#### ग्रन्थ न० ६।

२ श्राप्तपरीत्ता-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-४५ । पित प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिति-१५० लिपि-कन्नड । मापा-सस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-र्जीण तथा खण्डित । ग्रन्थ न० ५ ।

३ पत्रपरीत्ता-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र म०-९ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१६० । लिर्प-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थं न० १३५।

४ प्रमेयकमलमार्वेग्ड-आचार्यं प्रभाचन्द्र। पत्र स०-१६०। पंक्ति प्रतिपत्रं-९। अक्षर प्रतिपक्ति-१२०। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणं तथा खण्डित ।

#### **-≫**®≪—

### विपय-व्याकरश

#### ग्रन्थ न० १२८ ।

१ कातत्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र स०-११३ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । माषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथी सामन्यि शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ न ३ १२९ ।

२ कातत्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र स०-४८ । पित प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिति-१२० । क्षिप-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याकरण । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रत्य न० १४९ ।

३ चिन्तामणिको टीको-आचार्यं समन्तभद्र । पत्र स०-५०। पक्ति प्रितिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-१५०। हिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शृद्ध । दशा-जीर्णं तथा खण्डित ।

#### ग्रन्थ न० ३२।

४ जैनेन्द्रन्यास-प्रभाचन्द्र । पत्र सन्-१३० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल- 🗴 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रत्थ न० २८ ।

४ जैनेन्द्रप्रित्रया-गुणनन्दी । पत्र स०-१२२ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्याकरण । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसकी प्रतिलिपि आनन्द संवत्सर कार्तिक कृष्णा ३ शुक्रवार को की गई है।

#### ग्रन्थ न० ३६।

६ जैनेन्द्रप्रक्रिया-गुणनन्दी । पत्र स०-१७३ । पिन्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिन्त-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ८२।

७ रूपसिद्धि —दयापाल । पत्र स०—६२ । पन्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६७ । लिपि—कन्नड । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । लेखनकाल—४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० २४।

८ शब्दानुशासन-भट्टाकलंक। पत्र स०-१३०। पिक्त प्रतिपत्र-१२। अक्षर प्रतिपिक्त-१०५। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत तथा कन्नड। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीणं। विशेष-यह ग्रंथ शालि०शक १५२६ शोभकृत् सवत्सर फाल्गुन श्ल्का ५ गुरुवार के दिन रचा गया है।

#### ग्रन्थ नं० १३०।

६ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह्—आचार्यं अभयचन्द्र। पत्र सं०-१२४। पिक्त प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिप-क्ति-१०३। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशाँ-सामान्य।

## ग्रन्थ नं ०, १३९।

१० शाकटायनप्रित्रयासंग्रह्-आचार्यं अभयचन्द्र । पत्र स०-१३३। पक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०२। लिपि-कृष्तड। भाषा-सस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

#### -4400

## विषय-कोश

#### ग्रन्थ न० ३५।

१ अमरकोश-अमरसिंह। पत्र स०-७६। पनित प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपन्ति-५३। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। निषय-कोश। लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

#### ग्रन्थ न० ४४।

२ श्रमरकोश[ वनौषधिवर्ग ]-अमरसिंह। पत्र स०-२५ है। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-६१। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

#### ग्रन्थ न० ६३।

३ श्रमरकोश-क्षमर्शसह । पत्र सं०-९२ । पिनत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिप्रक्ति-७२ । लिपि-कन्नह । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### ग्रन्थ नं० ९१।

४ नानार्थरस्नाकर-देवोत्तम । पत्र स०-१७६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कष्मड । भाषा-कष्मड । विषय-कोश । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ नं० १२२।

४ नानार्थसंग्रह- · · · · · । पत्र स०-१७ । पन्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-२७ । लिपि-कन्नड । भाषा-तेलुगु । विषय-कोश । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ९१।

६ नाममाला-महाकवि घनजय। पत्र स०-१२। पिक्त प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपक्ति-६१। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

#### ग्रन्थ न० ९१।

७ नाममाला-महाकवि घनंजय। पत्र सं०-४७। पिनत प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-५६। लिपि-कन्नड। भाषा-सम्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शृद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

#### ग्रन्थ न० ४२।

द विद्ग्धचूहामिग्-विटुल । पत्र स०-७५.। पित्त प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपित्त-११२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कोश । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तभा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह 'अमरकोश' की टीका है ।



### विषय-काव्य

#### ग्रन्थ न० १२५।

१ ज्ञान्न हामिण्-वादीमसिंह। पत्र स०-१५। पन्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। ग्रन्थ न०४।

२ धर्मशर्माभ्युद्य-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र स०-१०४ । पक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- ४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्रत्य न० २१ ।

३ पुरुदेवचम्पू-अहंदास । पत्र स०-९०। पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- × । पूण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ४५ ।

४ पचसन्धानकावय-किव शान्तिराज । पत्र स०-११२ । पिन्त प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें स्वोपञ्च संस्कृत टीका मी ह

#### ग्रन्थ व० ४६।

प्रचसन्धानकान्य-कवि शान्तिराज । पत्र सं०-१११ । पक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-८६ । किपि-कन्नर । भाषा-सस्कृत । विषय-कान्य । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । . . विशेष-इसमें स्वोपन्न सस्कृत टीका है ।

#### ग्रन्थ न० ६८।

६ भावकजनकल्पयुत्त-पद्मराज। पत्र सं०-१४८। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षरे प्रतिपंक्ति-६३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। लेखनकाल-×। पूर्णे तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-यह कवि शान्तिराज कृत 'संरसजनचिन्तामणि' की क्यास्या है।

#### ग्रन्थ नं० ६७।

७ मुनिसुत्रतकाञ्य-अर्हेद्दास । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्य नं० ११८।

८ मुनिसुन्नतकाव्य-अईहास । पत्र सं०-४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ नं० ९६।

ह यशोधरकाव्य-वादिराज । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ नं० ९६।

१० यशोधरकाव्य-वादिराज। पत्र सं०-१८६। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-६०। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ नं० १२५।

११ यशोधरकाव्य-वादिराज । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्य न० १४२ ।

१२ यशोधरकाञ्यटोका-लक्ष्मण । पत्र सं०-१०८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेप-इसमें संस्कृत 'नागकुमारचरित' के भी कुछ पत्र हैं।

#### ग्रन्थ नं० ४७।

१३ सरसजनचिन्तामिण्-किव शान्तिराज। पत्र सं०-२७७। पं.क्त प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिक्त-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशंष-इसमे पद्मराजकी वनाई हुई सस्कृत टीका भी है।

#### ग्रन्थ न० ६२।

१४ सरसजनिचन्तामिण-किव चान्तिराज। पत्र स०-२०२। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ं ग्रन्थ नं० ६८।

१५ सरसजनचिन्तामणि-कवि शान्तिराज। पत्र स०-१९। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिप-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कांच्य । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### ग्रन्थ न० १०२।

१६ स्रसजनिन्तामिं -कृवि शान्तिराज । पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । लिपि-कन्नड। माषा-सुस्कृतं । विषय-काव्यं । लेखनकाल्- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्धं । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें संस्कृत टीका है।

#### ग्रन्थ चं० २२।

१७ सुखबोधिनी-अहंदास । पत्र सं०-१२० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-शालि०शक १७४४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह 'मुनिसुवतकाव्य' की टीका है। शालि०शक १७४४ चित्रभानु सवत्सर फाल्गुन शुक्ल १० वनार के दिन यह ग्रन्य लिखकर समाप्त हुआ है।

#### ग्रन्थ न० १०५ ।

१८ सन्देहध्वान्तदीपिका-पण्डित यशःकीर्ति । पत्र स०-९७। पिक्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिक्त-११० । लिपि-प्रमाड । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणं । विशेष-यह 'धर्मशर्माभ्युदय' काव्य की टीका है । टीका के कर्ता यश कीर्ति ललितकीर्ति पण्डिताचार्य के शिष्य हैं ।

-0-36-25-4

## विषय-श्रलङ्कार श्रादि

अन्य न० १३३।

१ श्रालुकारसंग्रह-अमृतानन्द योगी। पत्र स०-५९। पिनत प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिनत-३३। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-अलकार। लेखनकाल- 🗴। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण। विशेष-इसमें कन्नड टिप्पणी है।

**->**:≪-

## विषय-नीति तथा सुभाषित

ग्रन्थ नं० ७४।

१ नीतिवाक्यामृत-आचार्य सोमदेव । पत्र स०-८९ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपृक्ति-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ न्० १५१ ।

२ नीतिवाक्यामृतटीका-नेमिनाय । पत्र स०-

ग्रन्थ नं० ९१।

३ हर्दनीति-सिंहराज । पत्र स०-९६ । प्रक्ति प्रतिपत्र- ६ । अक्षर प्रतिपक्ति-६५ । लिप्-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-बीति । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

**->**;•≪--

## विषय-पुराग

ग्रन्थ नं० ५३।

१ ध्रादिपुराग्-महाकवि पप । पत्र स०-१९८ । पवित प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपवित-७५ । लिप-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-शालि०शक १७३३ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-शालि०शक १७३३ प्रजोत्पत्ति सवत्सर पुष्य शुल्का १४ शनिवार के दिन महायंत्रपुरस्थ

पाइवेनाथ चैल्यालय में उपाध्याय चेन्नप्प के पौत्र चन्दु उपाध्याय के द्वारा यह लिखा गया है।

'ग्रन्थ न० १३६।

२ श्रादिपुरासा [पूर्वपुरासा ]-आचार्य जिनसेन । पत्र स०-१९५ । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पन्ति-१२३ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल∸शालि०शक १४५१ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-शालि०शक १४५१ सर्वेषारी सवत्सर फाल्गुन शुल्का १० मगलवार को वैपबाहि निवासी मल्ल-इस के पुत्र नेमरस ने इसे लिखा है।

#### ग्रन्थ नं० १४०।

३ द्यादिपुरास [ पूर्वपुरास ]-आवार्यं जिनसेन। पत्र स०-२०। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० २७।

४ उत्तरपुराण्-आचार्यं गुणभद्र । पत्र सं०-१६१ । पिक्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिक्त-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीणं ।

ग्रन्थ न० १०८।

४ इत्तरपुराण्-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-२७५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०० । लिपि-कल्ल । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-शालि०शक १४३५ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-शालि०शक १४३५ अगीरस सवत्सर मार्गशिर कृष्ण १० गुरुवार को कोणसूर विट्टिदेव के पुत्र पुट्टदेवरस ने इसे लिखा है। इसमें प्रार्थिक पत्र नहीं हैं।

#### ग्रन्थ न० १२४।

६ उत्तरपुराग्य-आचार्य गुणभद्र । पत्र स०-१२४ । पित्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपित्त-१५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-शालि०शक ८२४ । पूर्ण तया सामान्य शुद्ध । इशा-सामान्य ।

विशेष-शालि०शक ८२४ दुदुभि सवत्सर कार्तिक कृष्ण ५ वृषवार के दिन अनन्तमित आर्यिका ने तरु-पुरस्य चन्दर के पुत्र चन्दण्य को इसे लिखवाकर दिया है।

#### ग्रन्थ न० ११९।

७ जिनभारत-ब्रह्मणाक । पत्र सं०-४१ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्य न० १४७।

द जैमिनिभारत-लक्ष्मीश । पत्र सं०-११८ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-३ । जिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य श्द्ध । दशा-जोर्ण ।

विशेष-इसमें यक्षगान सवन्धी और भी कुछ पत्र है।

#### ग्रन्थ न० ५२।

ह त्रिषष्टिलत्तस्णमहापुराण्-चामुण्डराय । पत्र स०-१६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न० १०७ ।

१० वृषभनाथपुराण्-मट्टारक सकलकीर्ति । पत्र स०-१०७ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-, १०५ । लिपि-कन्नड । मापा-सस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## 

# विषय-चरित्र

### ्रग्रन्थ नं० २९!

१ जिनदत्तचरित-पद्मनाभ । पत्र सं०-९५ । पिन्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिनत-५० । लिपि-भन्नड । भाषा-मन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसका अपर नाम 'पद्मावतीचरित' है। प्रतिलिपि का समाप्तिकाल शार्वेरि संवत्सर कार्तिक भाक्ता ३ वृधवार है।

#### ग्रन्थ नं० ७६।

२ जिनदत्तचिरत-पद्मनाभ । पत्र स०-८४ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिनत-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा शुद्ध । दशा-जीर्णं । विशेष-इसका अपर नाम 'पद्मावतीचरित' है ।

#### ग्रन्थ न०२०।

३ शानचन्द्राभ्युदय-कल्याणकीति । पत्र स०-२३ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीण ।

#### ग्रन्थ न० ३।

४ नागकुमारचिरत-बाहुवली । पत्र स०-१५६ । पिनत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपिन्त-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसका अन्तिम भाग कवि वर्षमान का रचा हुआ है ।

#### ग्रन्थ नं० ३१।

४ नागकुमारचरित—बाहुवली । पत्र स०-१८० । पिन्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-कोधि संवत्सर श्रावण कृष्णा १३ के दिन कुदेर निवासी देवचन्द्र ने रामसमूद्र के जिन्नप्प सेट्टि के लिये इसे लिखकर दिया है।

#### ग्रन्थ नं० ८८।

६ नागकुमारचित-चाहुवली । पत्र स०-१८५ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-७९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-शालि० शक १७३८ । पूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-शालि० शक १७३८ हेविलवि सवत्सर भाद्रपद शुक्ला १० सोमवार को इसे दासनिल्ल गगप्प

के वास्ते नजूडप्प ने लिखकर दिया है।

#### ग्रन्थ न० ९५ ।

भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । लेखनकाल—शालि० शक १६७२ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।
 विशेष—शालि० शक १६७२ दुर्मैति सवत्सर में इसे बालय्य ने धर्मण के वास्ते लिखकर दिया है । इसमें

'कियापाठ' के भी कुछ पत्र है।

#### ग्रन्थ न० ९६ ।

८ नागकुमारचरित-मल्लिषेण। पत्र स०-१८। पन्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपन्ति-६२। स्तिप-कन्नछ। भाषा-सस्कृत। विषय-चरित्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें सस्कृत टीका है। .

#### ग्रन्थ न० ५० ।

ह नेमिजिनेशसङ्गति-मङ्गरस । पत्र स०-२२१ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपिन्त-९० । लिपिकन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-शालि० शक १७७४ । पूर्ण तथा बृद्ध । दशा-उत्तम ।
विशेष-शालि० शक १७७४ कोघि सवत्सर मार्गशिर शुक्ला ७ गुरुवार को तोविनकेरे निवासी अलक्रप्पके पुत्र पुटुण्णने ब्रह्मण्ण को इसे लिखकर दिया है ।

#### ग्रन्थ न० ५१।

१० नेमिजिनेशसङ्गति-मङ्गरस । पत्र सं०-१६० । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-११३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध दशा-अतिजीणं ।

#### ग्रन्थ न० ५६ ।

११ नेमिजिनेशसंगति-मगरस । पत्र सं०-१२२ । पक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित । लेखनंकाल-शालि०शक १७३४ । पूर्ण तथा शद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-शालि०शकं १७३४ आंगीरंस सवत्सर ज्येष्ठ कृष्णा १४ सीमवारके दिने शिक्षघट्टेस्ये चन्द्रनाथ चैत्यालय में रायप्प के पुत्र निलनाख्यने इसे लिखकर समार्प्त किया है।

'ग्रन्थ न० ७३।

१२ नेमिजिनेशसंगति—मगरस । पत्र सं० - २९७ । पैक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपैक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-केन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामन्य शुंद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह ग्रन्थ प्रभव सक्तर भाद्रपद शुक्का ५ रविवारके दिन होलवनहिल्ल निवासी पापण्णके पुत्र पोम्मण्णके द्वारा लिखा गया है।

ग्रन्थ न० १०६ ।

१३ नेमिजिनेशसंगति-मगरस। पत्र स०-९७। पंक्ति प्रतिपंत्र-१०। अक्षर प्रतिपक्ति-१२०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-शालि०शक १५२६। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशां-सामान्य। विशेष-शालि०शक १५२६ शोभकृत् सवर्त्सर कार्तिक कृष्णा ८ बुधवार के दिन यह ग्रन्थ लिखा गया है।

ग्रन्थ न० १३७।

१४ नेभिजिनेशसंगति-मगरस । पत्र स०-९० । पित्रत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपित्ति-८१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ न०९०।

१५ भरतेशवेभव-रत्नाकर वर्णी। पत्र स०-९०। पिन प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रिनिपिक्त-८२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-शालि०शक १६६८।पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-शालि०शक १६६८ अक्षय सवत्सर आश्वयुज कृष्णा ५ मगलवार रोहिणी नक्षत्रमें इसे नागप्प के पुत्र पदुमण्णने उत्तल निवासी पद्मण्ण के वास्ते लिखकर दिया है। इसमें 'अनन्तव्रतविधान' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ न । ९३।

१६ भरतेशवेभव-रत्नाकर वर्णी । पत्र स०-१५४६ । पक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपक्ति-९०। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ न०३८।

१७ माणिक्यिजनेशचरित-'' '। पत्र स०-१५१। पक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपिक्त-२४। लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-शालि०शक १७१३। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-शालि । शुक्ल सवत्सर आषाढ़ शुक्ला ५ बुधवारको नेलहालु निवासी पुट्टण्णने इसे लिखकर समाप्त किया है।

### ग्रन्थ न०११४।

१८ रामचरित-कवि चन्द्रशेखर । पत्र स०-९८ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल्-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें १६ अध्याय [सीतापहरण सिंघ] तक है। इसके रचियता चन्द्रशेखर आचार्य चन्द्रकीर्ति के शिष्य हैं।

ग्रन्थ न ० ३३।

१९ तत्त्मीमितस्वयंवर\*\*\*\*\* । पत्र स०-७। पित प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकालं-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम विशेष-यह 'नागकुमारचरित' को एक अंश है ।

#### प्रन्य नं० ५८।

२० श्रीपालच्दित-केशण । पत्र स०-१३ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा गुद्ध । दशा-उत्तम् ।

## विषय-कुथा

#### ग्रन्य नं० ३३।

१ चन्द्रमुखीकथा- ' ' पत्र स०-१४। पन्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपन्ति-६२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल- 🗙 । पूर्णे तथा मामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

### प्रन्य नं० १०३।

२ घर्मामृत-नयसेन । पत्र मं०-१३३ । पिन्त प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-६३ । लिपि-कन्नह । भाषा-कन्नह । विषय-कथा । लेखनकाल- ४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० १३६।

ं ३ घमोसृत-नयसेन । पत्र स-८४ । पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपिनत-१३० । लिपि-कन्नह । भाषा-कन्नह । विषय-कया । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शृद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्य न० १४६।

४ घर्मामृत-नयसेन । पत्र स०-१२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-८० । लिपि-कन्नड । मापा-कृन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दश्य-जीर्ण् तथा खण्डित ।

## ग्रन्य नं० ३९।

\* १ पंचतंत्र-दुर्गेसिंह। पत्र सं०-२०। पिन्त प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिन्ति-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल-४। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

#### ग्रन्थ न० ९ ।

\*६ पचतंत्र-दुर्गसिंह। पत्र स०-४४। पॅक्ति प्रतिपत्रे-८। अक्षर प्रतिपक्ति-४८। लिपि-कन्नड। माषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल-शालि० शक १७७२। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष - शास्त्र १७७२ सीम्य सवत्सर श्रावण कृष्णु १ गुरुवारके दिन इसे शीतगल्छु निवासी कालप्पके पुत्र गाल शेट्टिके वास्ते तोविन केरे निवासी वीरमद्रके पुत्र पृटुण्णने लिखकर दिया है।

#### ग्रन्य नं० ८९।

७ वत्तीसपुत्यत्तीकथा- । । पत्र स०-६०। पित्त प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपित्त-५०। लिपि-कन्नड। मापा-कन्नड। विवय-कृषा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

क्विय-घातु सब्त्सुर कार्तिक कृष्ण सोमवार को इसे कोलतूर निवासी वेंकटरामय्यने लिखा है।

#### ग्रन्य नं० ८ू ।

्र भेतालपंचित्रिशित्- । पत्र सं०-७२३ । पृक्ति प्रतिपृत्र-६ । अक्षर प्रतिपृक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-कृषा । लेखुनकाल- ४ । पूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-स्थय सवत्सर श्रावण शुक्ला ५ के दिन इसे चेन्नप्पने अपने वास्ते लिखा हैं ।

#### ग्रन्य नं ० १४५ ]

१ लीलावती-नेमिचन्द्र । पृत्र स०-२८ । पृतित प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपन्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शृद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० १११।

१० व्रतकथासंग्रह- \* \* \* \* \* । पत्र स०-१०७ । पिनत प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नर । भाषा-कन्नर । विषय-कथा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शृद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें ७२ व्रतों की कथाएं है ।

#### ग्रन्थ न० १९४।

११ सम्यक्त्वकौमुदी-पत्र स०-५१। पिनत प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

#### -250000-

## विषय-इतिहास

१ गोम्मटेश्वरचरित-चन्द्रम । पत्र स०-१०२ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा शृद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह कार्कलस्य गोम्मटेश्वरप्रतिमा का चरित्र है। इसके रचयिता चन्द्रम, श्रुतमुनिके शिष्य है। ग्रन्थ न० १८।

२ भूतालपायङ्यके शासननियमः । पत्र स०-३६। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-४७। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-इतिहास। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य जुद्ध। दशा-उत्तम। विशेप-इसमें भूतालपाण्ड्यके राज्यशासन सम्बन्धी कई विषय शामिल है।

#### ग्रन्थ न० ७२।

३ शान्तिराजकविप्रशस्ति–कवि शान्तिराज । पत्र स०–२० । पक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपक्ति– , ९० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–इतिहास । लेखनकाल– 🗴 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

## **一》**《《一

## विषय-आयुर्वेद

#### ग्रन्थ नं० ४४ ।

\*१ नाडीपरीचा-\*\*\* । पत्र सं०-१३८। पिनत प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपिनत-५१। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-बायुर्वेद । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

#### ग्रन्थ न० २०।

२ वैद्यसंप्रह्- । पत्र सं०-७३। पिक्त प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-५६। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-आयुर्वेद। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-अति जीर्ण।

### ग्रन्थ नं० ४४।

३ वैद्यसंग्रह- · · · · । पत्र सं०-७२ । पिन्त प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिन्त-७८ । लि.पि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

## ग्रन्थ नं० ५४।

४ वैद्यसंग्रह- · · · · । पत्र स०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ नं० ९४।

४ वैद्यसंग्रह-\*\*\*\* । पत्र सं०-१६८ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-८९ । लिपि-कन्नड । मापा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

#### ->:≪-

## विषय-ज्योतिष

#### ग्रन्थ न० ६४।

१ केवलज्ञानहोरा-मुनिचन्द्रसेन । पत्र स०-३१ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत तथा कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० ५४ ।

२ ज्योतिष-''' । पत्र स०-१६२ । पिक्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिक्त-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'शकुन' 'दूतलक्षण' आदि कई विषय शामिल हे। परिघावि सवत्सर फाल्गुन कृष्णा प्रति-पदा को श्रवणवेल्गोल निवासी पायि सेट्टिने इस लिखकर समाप्त किया है।

#### ग्रन्थ न० १३४।

३ नवप्रह्चिन्तामिण्-··· । पत्र स०-१०७। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपक्ति-१९। लिप्-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल- × । पूर्णं तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-सोम्य सवत्सर मागशिर शुक्ला ३ चन्द्रवारके दिन इसका लेखन समाप्त हुआ है ।

#### ग्रन्थ न० ६१।

\* ४ बृह्ज्जातक-वराहिमिहिर । पत्र स०-२१२ । पित्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपित्त-५२ । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा अशुद्र । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें वोच-वीचमें कन्नड टिप्पणिया है, तथा ज्योतिष सबन्धी और भी कुछ पत्र सम्मिलित हैं ।

#### ग्रन्थ न०११७।

\* ४ बृहज्जातक-वराहमिहिर। पत्र स०-७४। पनित प्रतिपत्र-१२। अक्षर प्रतिपन्ति-९४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-४। अर्थं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसम कन्नड टीका भी है।

## 

### विषय-गणित

#### ग्रन्थ वं० ५४ ।

१ गियातकाष्ट्रक[पहाडा]-\*\*\*\* । पत्र स०-२० । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपन्ति-१७ । लिपिकन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गणित । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।
प्रन्थ न० ५४ ।

२ गियातिवतास-राजादित्य । पत्र स०-१९ । पश्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपन्ति-२७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गणित । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य सुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न०५४।

\*३ गिण्तिविलास-राजादित्य । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गणित । लेखनकाल- 🔀 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्य नं० ६०।

\* ४ राणितविलास-राजादित्य । पत्र सं०-६० । पन्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपन्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गणित । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

#### ->:<-

## विषय-मंत्रशास्त्र ।

### ग्रेत्यं निं० १५.1

१ ज्वालिनीसत-इन्द्रनन्दी । पत्र स०-२१ । पित्त प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-मत्रशास्त्र । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसका अपर नाम 'ज्वालिनीकल्प' है ।

#### ग्रन्य न० १५ ।

- २ पद्मावतीकल्प-आचार्य मिल्लिपेण । पेत्र स०-१७९ । पिनत प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपिन्त-३४ । लिपि-कंन्नह । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्रे । लेखनकाल- 🗴 । पूर्ण तया सामान्य शुद्ध । दंशा-उत्तम । ग्रन्थ न० ८१ ।
- ३ पश्चितांयमंत्राष्टिक- • • । पत्र स०-१। पिनत प्रतिपत्र-१०। अक्षरं प्रतिपिनत-७३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-मत्रशास्त्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणें । विशेष-इसमें समन्तभद्र कृत 'मत्रव्याकरण,' 'सुवर्णनिर्माण', अष्टिदिग्वन्वन' इनके भी एक एक पत्र हैं। ग्रन्थ न० १५।
- ४ पचनमस्कारकल्प- : : । पत्र स०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । छिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-मत्रशास्त्र । छेखनकाळ- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें आदि के दो पत्र नहीं हैं ।

#### ग्रन्थ नं ८५।

४ यंत्रसम्रह- ः । पत्र स०-१९ । पिनतं प्रतिपत्र-४ । असर प्रतिपन्ति-१५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-मत्रशास्त्र । लेखंनकालं- ४ । पूर्णे तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ न० ३७।

६ त्तघुशान्तिहोम-\*\*\* । पत्र स०-१५ । पर्कत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-४१ । लिप-कन्नड । भाषां-संस्कृत । विषय-मत्रशास्त्र । लेखेनकालं-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुंह । दशा-उत्तर्मे । ग्रन्थ न०३८ ।

- ७ लघुशान्तिहोम-''''' । पत्र स०-१५ । पिनत प्रतिपंत्र-७ । वसंर प्रतिपिनत-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-मत्रशास्त्र । लेखनकार्ल- × । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य न० १५ ।
- ८ श्रीदेवताकलप-अरिप्टर्नीम । पत्र सं०-५ । पन्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपन्ति-५४ । लिपि-कन्न ड । भाषा-संस्कृत । विषय-मत्रशास्त्र । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य सुद्ध । दशा-उत्तम । प्रत्ये न० १५ ।
- ६ सरस्वतीकेल्प-आचार्य मल्लिपेण। पत्र स०-८ । पर्नित प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपत्रि-५०। लिप-कन्नढ। भाषा-सस्कृत । विषय-मत्रशास्त्र । लेखनंकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रत्य त० १२०।
- १० होमिव्यान-\*\*\* । मत्र स०-२१। पक्ति प्रतिपत्र-६। सक्षर प्रतिपक्ति-२०। लिपि-कर्स्ड। भाषा-संस्कृत । विषय-पत्रशास्त्र । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-इत्तम । विषय-इसमें कल्लाड टीका है, तथा वैद्यक सवन्यी और भी कुछ पत्र है।

## विषय-लोकविज्ञान

ग्रन्थ न० १०।

रै विलोयसार [ त्रिलोकसारे ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१०९ ।पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-पक्ति-६०८ । लिपि-कन्नडे । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्धे । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ११।

२ विलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-११२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पक्ति-८८ । लिपि-कन्नड । मापा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका है।

ग्रन्य न० १२।

३ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-९८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पक्ति-१५० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य सुद्ध । दशा-जीर्णं तथा खण्डित ।

विशेष-इसमें आचार्य गुणभद्र कृत 'उत्तरपुराण' के भी १६ पत्र है।

ग्रन्य नं० १७।

४ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४८ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-पक्ति-५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दर्शा-जीर्ण ।

विशेप-इसमें मत्रशास्त्र सम्बन्धी और भी कुछ पत्र है।

ग्रन्य न० १२५।

४ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्यं नेमिचन्द्र । पत्र स०-२० । पिन प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पिनत-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ न० (५२।

६ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२२ । पक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पक्ति-११० । लिपि-कन्नद्र । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्य न० ८० ।

७ त्रिलोकसारवृत्ति-माघवचन्द्र । पत्र स०-६७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-६३ । लिपि-कन्नद्र ।
 मापा-सस्कृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीणं ।

ग्रन्य न० ८३।

द लोकतंक्वविभाग-सिंहसूरि। पत्र स०-४४। पंक्ति प्रतिपत्र-८। असर प्रतिपक्ति∸९१। लिपि-कन्नड। नापा-संस्कृतं। विषय-लोकविज्ञाने। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-अति जीणै।

विशेप-यह प्राकृत 'लोकविमाग' का सस्कृत रूपान्तर है।

ग्रेन्य न० ९१।

र् लोकस्वरूप-चन्द्रम । पत्र स०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विर्पर्य-लोकविज्ञान । लेखनकाल- 🗙 पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## विषय-लक्षण, समीक्षा तथा पाकशास्त्र।

#### ग्रन्य नं० ३३ ।

१ धर्मपरीक्ता-पायण्ण । पत्र सं०-११२ । पिन्त प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नह । मापा-कन्नह । विषय-समीक्षा । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

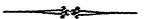
#### ग्रन्य नं० ११५ ।

२ धर्मपरीज्ञा-वृत्तविलास । पत्र सं०-११६ । पिन्त प्रतिपत्र-९ । ब्रक्षर प्रतिपंक्ति-२९ । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-समीका । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्य नं० ६४ । ४

३ तत्त्वग्रसंग्रह-\*\*\*\* । पत्र सं०-५२। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-२८। लिपि-कन्नड। मापा-कन्नड। विषय-त्रक्षण । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा नामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्य नं ० ६४।

४ बज्रपरीचाःःः। पत्र सं०-१६। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-२४। लिपि-कन्नड। मापा-संस्कृत । विषय-समीक्षा । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।



## विषय-क्रियाकाण्ड

#### ग्रन्य न० ७।

१ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द बादि । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राष्ट्रत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-शालि० शक १६८४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्य न० ८।

२ क्रियापाठ-शाचार्यं कोण्डकुन्द सादि । पत्र सं०-४७६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । असर प्रतिपंक्ति-६८ । लिप्-कन्नड । नापा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ नं० ६५।

३ क्रियापाठ-आचार्यं कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-१२१। पक्ति प्रतिपत्र-७ । असर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । सापा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीणं ।

#### प्रन्य नं० ७७।

४ क्रियापाठ-बाचार्य कोण्डकुन्द बादि । पत्र सं०-५७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । बक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । चिप-क्रव्यह । मापा-प्राकृत तया संकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । छेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तया सामान्य शुद्ध । दशा-बीर्ण ।

#### ग्रन्य नं० ८६।

४ क्रियापाठ-त्राचार्यं कोण्डकुन्द बादि । पत्र चं०-८८ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । वसर प्रतिपंक्ति-२८ । लिपि-कन्नढ । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्य नं० १३८।

६ कियापाठ-जानार्यं कोण्डकुन्द लादि । पत्र सं०-१३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्तर प्रतिपंक्ति-७५ । निपि-करह । नापा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य सुद्ध ।. प्रधा-रक्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

#### ग्रन्थ न० १५४।

७ कियापाठ-आचार्यं कोण्डकुन्द आदि । पत्र स०-२९७ । पक्ति प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा सस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । वस्तु-कागज । लेखनकाल- 🗙 । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'तत्त्वार्थसूत्र' 'त्रतस्वरूप' आदि भी है।

#### ग्रन्थ न० १६१।

द क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र स०-३०८ । पिनत प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपनित-१७। लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा सस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । वस्तु-कागज । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

#### ग्रन्थ न० १२१।

**९ शवसंस्कारविधि**- ' ' । पत्र स०-३०। पिक्त प्रतिपत्र-४। बक्षर प्रतिपिक्त-३२। लिपि-कन्नड। भोपा-सस्कृत। विषय-क्रियाकाण्ड। लेखनकाल- ×। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

#### ग्रन्थ न० १०१।

१० श्रावकप्रतिक्रमग्।-\*\*\*\*। पत्र स०-१०। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-३५। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत। विषय-क्रियाकाण्ड। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

### ->:≪--

## विषय-स्तोत्र

#### ग्रन्थ न० ४०।

१ श्रक्तंकस्तोत्र-आचार्यं अकलकदेव। पत्र स०-१। पिकत प्रतिपत्र-१२। अक्षर प्रतिपंक्ति-६०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष-इसमें 'त्रैवणिकाचार' के भी कुछ पत्र है।

#### ग्रन्य 'न० ७० ।

२ श्रारोग्यस्तोत्र-श्रुतकीति । पत्र स०-४ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-९४ । लिपि-कन्नड । मापा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

#### ग्रन्थ नं० १००।

३ दशभक्ति-वाचार्यं कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र सं०-१३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रति-पक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । माषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-बालि॰वाक १७१८ । पूर्णे तथा सामान्य बृद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'पचस्तोत्र', 'स्वयमूस्तोत्र' आदि भी है। साथ कन्नड टीका भी। शालि०शक १७१८ तल स्वत्सर आपाढ शुल्का १५ के दिन इसे पढुवस्ति पदुमय्य उपाध्यायने चारकीर्ति के शिष्य सन्मतिसागर के लिये लिखा है।

#### ग्रन्थ न० १५५।

श्व द्राभक्ति—आचार्यं कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र सं०-१५०। पंक्ति प्रतिपत्र-१३। अक्षर प्रति-पक्ति-२७। लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संग्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-कागज । लेखनकाल- ४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष-इसमें 'पचस्तोत्र' भी सम्मिलित है।

#### ग्रन्थ न० ८७।

४ प्रश्नोत्तरचतुर्विशतिजिनस्तवन—धर्मच्न्द्र । पत्र स०-१७ । पन्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपन्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विप्रयु-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० ७ ।

६ स्तोत्रसंग्रह्-आचार्यं समन्तभद्र भादि । पत्र स०-४४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर् प्रतिपक्ति-५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दगा-उत्तम ।

विशेष-इसमें स्वयभ, जिनसहस्रनाम, भ्वतामर, कल्याणमन्दिर, विषापहार, एकीभाव तथा जिनचतुर्वि-शतिका और तत्त्वार्थसूत्र एव आचार्य पद्मनिद्कृत क्रियाकाण्डच्लिका सम्मिलित है।

#### ग्रन्य न० ४१।

७ स्तोत्रसंग्रह्-आचार्यं मानतुग आदि । पत्र स०-३४। पन्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपिन्त्-३५। लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनुकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्यं गुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें निम्नलिखित स्तोत्र है-भुवतामर, जिनसहस्रनाम, जिनचतुर्विशित्का, सुप्रमृत, दूण्टाष्टक, अद्याष्टक तथा माघनन्दिकृत चतुर्विशित्जिनस्तोत्र । इसके अतिरिक्त इसमें 'स्वयम्भ्मतोत्र' के भी कुछ पत्र है ।

यृन्य न० १०१। ८ स्तोत्रस्यह्-आचार्यं मानतुग आदि । पत्र स०-२४। पिनत प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपिनत-४२। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण विशेप-इसमें 'भक्तामर' 'पार्वनाथाष्टक' आदि कई स्तोत्र है ।

#### ग्रन्थ न० १५७।

रु स्तोत्रसंग्रह्-आचार्य मानतुग आदि। पत्र स०-९६। पित प्रतिपत्र-२६। अक्षर प्रतिपित्त-२२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। वस्तु-काग्ज। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेप-इसमें 'भक्तामर' आदि कई स्तोत्र है। दशभिक्त के कुछ पत्र है।

#### ग्रन्थ न० १६४।

१० स्तोत्रसंग्रह्-आचार्यं जिनसेन आदि। पत्र स०-१७१। पन्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपन्ति-२०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत, प्राकृत तथा कन्नड। विषय-स्तोत्र। वस्तु-कागज। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें 'सहस्रनाम, नवदेवता' आदि कई स्तोत्र है। 'दशभिक्त' के भी कुछ पत्र सम्मिलित है।



## विषय-भजन तथा गीत

#### ग्रन्थ न० ३३।

१ श्रिमिमन्थुयत्तगान [ चक्रव्यूह्भेद्न ]-पत्र स०-४४। पक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपक्ति-६०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-गीत । लेखनकाल- 🗙 पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। द्शा-उत्तम।

ग्रन्य न० ६६ ।

२ श्रिममन्युयत्तगान- ''''। पत्र स०-४९। पक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-३१। लिपि-। कन्नड। मापा-कन्नड। विपय-गीत। लेखनकाल-×। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम्।

### ग्रन्य न० १४।

३ श्रादीश्वरयत्त्वगान-'''। पत्र सं०-९३। पक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-९०। लिपि-कन्नड। मापा-कन्नड। विषय-गीत। लेखनकाल-शालि० शुक्ष १७७३। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दुशा-उत्तम। विशेष—शालि० शक १७७३ विरोधिकृत् सवत्सर फाल्गुन कृष्ण १२ वृषवार के दिन यलेकेतनहल्लि निवासी यिज्जध ने अपने पुत्रके लिये इसे लिखा है।

### ग्रन्थ नं० १८।

४ देवीमाहात्म्ययत्त्रगान- \*\*\* । पत्र स०-६८ । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपन्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दश्चा-उत्तम ।

#### प्रन्थ न० ८ ।

४ भजनसंग्रह- ' ' ' । पत्र सं०-३६६ । पनित प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपनित-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल- ४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कई धार्मिक मजन सग्रह किये गये है।

ग्रन्थ नं० ३३।

६ सजनसंग्रह-\*\*\*\*'। पत्र स०-२१। पिनत प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपन्ति-८५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-भवन। लेखनकाल- ४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें 'सोमेश्वरशतक' के भी कुछ पत्र हैं।

#### ग्रन्थ न० ११४।

७ भजनसंग्रह्-''' । पत्र स-१११ । पक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें सस्कृत स्तोत्र सम्बन्धी और भी कुछ पत्र है।

#### ग्रन्थ न० १४४।

द रामायग्रयस्त्रान- · · · · । पत्र स०-१४। पक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपक्ति-३०। िलपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-गीत। लेखनकाल- ×। अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

#### ग्रन्थ न० ५५।

६ श्रीकृष्ण्यच्नगान- । पत्र स०-४०। पक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपक्ति-३५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-गीत । लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विद्येप-दृदुमि सवत्सर पुष्य शुक्ला दितीया के दिन बेंगलूर निवासी कालप्य की पुत्री पियनीके लिये मुज-गन्पने इसे लिख कर दिया है।

#### ग्रन्थ न०३९।

१० सोमशेखरचित्रशेखरयत्तगान-\*\*\*\* । पत्र स०-७६। पनित प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपन्ति-६९। क्षिप-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-गीत। लेखनकाल- 🗙 । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नें० ४३।

११ सोमशेखरचित्रशेखरयद्यगान- '' । पत्र सं०-४७। पन्ति प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपन्ति-५५। लिपि-कन्नड । माषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल- 🗙 पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## विषय-प्रकीणक

#### ग्रन्थ ने० १५६।

१ क्रियापाठादिसंग्रह्-आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०-६०। पंक्ति प्रतिपत्र-१५। अक्षर प्रति-पक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत। विषय-प्रकीणंभ। वस्तु-कागज। लेखनकाल-×। पूर्णं तथा सामान्य सुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें कई स्तोत्र तथा अष्टक सम्मिलित हैं।

### ग्रन्थ नं० १६५।

२ क्रियापाठादिसंग्रह्-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र स०-४६० । पक्ति प्रतिपत्र-१९ । यक्षर प्रति-पंक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत, सस्कृत तया कन्नड । विषय-प्रकीर्णक । वस्तु-कागज । लेखन-काल- × । पूर्ण तया सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कई स्तोत्र तया कन्नड 'ध्यानस्वरूप' सम्मिलित है।

#### ग्रन्य न० १४८।

३ योगरत्नाकरादिसंग्रह्-शान्तरम आदि । पत्र स०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नह । भाषा-कन्नह तया संस्कृत । विषय-प्रकीर्णक । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तया सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'योगरत्नाकर' 'लोकस्वरूप' 'वृतस्वरूप' आदि के अपूर्ण पत्र संग्रह किये गये हैं।
ग्रन्य न० १५९।

४ रयणसारादिसंग्रह्-आचार्यं कोण्डकुन्द बादि । पत्र संत-२८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । बत्तर प्रति-पंक्ति-२३ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत, संस्कृत तया कन्नड । विषय-प्रकीणंक । वस्तु-कागज । लेखन-काल- × । पूर्णं तया सामान्य सुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'रयणसार' 'सूक्तिमुक्तावली' 'ध्यानस्वरूप' आदि कई विषय है।

#### प्रन्य नं० १९ ।

४ संग्रह्-\*\*\*\* । पत्र सं०-१६८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अतर प्रतिपंक्ति-६३ । लिपि-कन्नढ । भाषा-संन्कृत तथा कन्नड । विषय-प्रकीर्णंक । लेखनकाल-४ । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कई विषयों के अपूर्णं पत्र संग्रह किये गये हैं ।

#### 'ग्रन्य नं० १५३।

६ संप्रह-\*\*\*\* । पत्र सं०-३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । बक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । नापा-संस्कृत । विषय-प्रकीर्णंक । लेखनकाल-४ । बपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्णं तथा खण्डित । विशेष-इसमें ज्योतिष तथा वैद्यकसंबन्धी कुछ अपूर्णं पत्र सग्रह किये गये हैं ।



# श्रालियूरु श्रादिनाथ-देवालयस्थ ताडपत्रीय ग्रन्थों की सावेवरग्।-सूची

## विषय-धर्म

ग्रन्थ न० २१।

१ द्वादशानुप्रेन्ता-विजयवर्णी । पत्र स०-९४ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नह । विषय-धर्म । लेखनकाल-🗙 । वपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें जिनगुणसपत्ति, उपसर्गनिवारण आदि कुछ वतकथाए भी हैं।

ग्रन्य न० ३१ ।

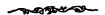
२ द्वादशानुप्रेत्ता-\*\*\*\*। पत्र स०-१०७। पक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नह । विषय-धर्म । लेखनकाल-🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें त्रिलोकवर्णन तथा व्रतवर्णनके भी कुछ पत्र सम्मिलित है।

ग्रन्थ म० २२।

३ रत्नकर्राहश्रावकाचार-आचार्यं समन्तमद्र । पत्र स०-४५ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित।

विशेष-इसमें कथासहित विस्तृत कन्नड टीका भी है।



## विषय-प्रतिष्ठा

ग्रन्थ न• ११।

४ जिनसहिता-आषार्य एकसधी । पत्र स०-१२२ । पक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । , विशेष-इसमें महावीरावार कृत गणितसार तथा कन्नड जीवन्वरषट्पदिके भी कुछ पत्र हैं।



## विषय-आराधना तथा पूजापाठ

ग्रन्थ न० २९।

**४ आराधनासंग्रह-\*\*\*\* । पत्र स०-९७।** पृष्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-५० । लिपि-कन्न**र ।** भाषा-सस्कृत । विषय-आराधना । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें मृत्युञ्जय, सर्वरक्षा, गर्भरक्षा, शान्तिचक्र, वजपञ्जर, कलिकुड, सिद्धचक्र, नागाजुँन तथा गणघरवलय ये ९ माराघनाए हे, तथा दशघर्मपूजा भी सम्मिलित हैं।

ग्रन्थ न० १६।

६ आराधनासंग्रह- ... । पत्र स०-११५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नर । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । लेखनकाल- 💢 । पूर्णं तथा सामान्य शुंद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कलिकुंड, वज्रपंजर, नागार्जुन ये तीन आराधनाए तथा नेमिचन्द्र कृत प्रतिष्ठातिलकातर्गत शान्तिहोम विधान भी है।

#### ग्रन्थ नं० ७ ।

७ तान्दीमंगलादिसम्ह- ' ' ' । पत्र सं०-९७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें नान्दीमगल, कलिकुंडाराघना तथा मृत्युंजयाराधना सम्मिलिति है ।

#### ग्रन्थ नं० ३०।

द्र नान्दीमगलादिसंग्रह्- ''''। पत्र स०-३९। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपक्ति-५५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण। विशेष-इसमें नान्दीमगल नित्यपूजा आदि है, तथा गीतके भी कुछ पत्र है।

### ग्रन्थ नं० ४।

ह पूजापाठसंग्रह्- ''' । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-शालि० शक १८१३ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें सम्यावन्दना, मंगलाप्टक तथा नित्यपूजा है। यह शालि॰ शक १८१३ खर संवत्सर बाश्वयुज कृष्णा ८ के दिन लिखा गया है।

#### प्रन्य नं० ५।

१० पूजापाठसंग्रह्- ''' । पत्र स०-५३। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-५०। लिपि-कन्नह । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें अभिषेक, शान्तिपूजाविधान तथा पचपरमेष्ठिपूजा आदि है।

#### ग्रन्थ नं० १३।

११ पूजापाठसंग्रह्-\*\*\* । पत्र स०-७२ । पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नह । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेप-इसमें नादीमगल, महाभिषेक आदि सम्रह किये गये हैं।

## ग्रन्थ र्न० १४।

१२ पृज्ञापाठसंग्रह्-''' । पत्र सं०-३६। पंक्ति प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपंक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमे अभिषेक, नित्यपूजा बादि सम्मिलित है।

#### ग्रन्थ न० २७।

१३ पूजापाठसंप्रह्—'''' । पत्र सं०-४५ । पिनत प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२७ । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल- × । अपूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें महापुण्याहवाचना, ग्रहशान्तिपूजा आदि है, तथा ज्योतिष संवन्त्री और भी कुछ पत्र है। ग्रन्थ नं० ३३ ।

१४ पूजापाठसंग्रह्- । पत्र सं०-१०३। पिनत प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-३०। लिपि-कन्नड। मापा-सस्कृत। विषय-पूजा। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें नित्यपूजा, नान्दीमंगल, पंचपरमेष्ठिपूजा आदि संग्रह किये गये हैं।

#### ग्रन्थ नं० ३४।

१५ पूजापाठसंप्रह्-''''। पत्र स०-११४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । असर प्रतिपक्ति-३५ । लिपि-कश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण नथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेप-इसमें अभिषेक, नित्यपूर्णा, नान्दीमंगल आदि संग्रह किये गये हैं ।

### विषय-कोश

ग्रन्थ न० ३५।

१६ नाममाला-महाकवि घनंजय । पत्र स०-१० । पन्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंनितं-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें पूजापाठ, स्तीत्र आदिने भी नुछ पत्र है।

### विषय-काव्य

ग्रन्थ न० १८।

१७ धर्मशर्मोभ्युद्य-महाकवि हरिचन्द्र। पत्र स०-५२। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तया खण्डित ।

## विषय-पुराण

ग्रन्थ न० १ ।

१८ पार्श्वनाथपुराण्-पार्खं पण्डित । पत्र स०-१९६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-शालि०शक १६०६ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें आदिके ५ पत्र नहीं हैं। शालि०शक १६०६ रक्ताक्षि सवत्सर चैत्र कृष्णा ५ मानुवारके दिन देशीगणीय बाहुबली के शिष्य गुम्मटण्णते बेलतगडिके शान्तिनाथ चैत्यालयमें नेमिचन्द्रदेवसे इसे लिखनाया ।

## विषय-चरित्र

ग्रम्थ न० १२ । '

१६ जिनद्त्तचरित-पद्मनाम । पत्र स०-७० । पनित प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसका अपर नाम 'पद्मावतीचरित' है।

ग्रन्थ न० ९।

२० जैमिनिभारत-जैमिनि । पत्र सर्०-४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-५२ । लिपि-कन्नरः। भाषा-कन्नड । विषय-चित्र । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८।

२१ भरतेशवैभव-रत्नाकर वर्णी । पत्र स०-५१ । पत्रित प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल- 🗙 । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें चतुर्वंष [कन्नड गद्य] तथा व्रतकथाओं के भी कुछ पत्र हैं।

## विषय-कथा

ग्रन्थ न०६।

२२ व्रतकथासंग्रह्- \*\*\*\* । पत्र स०-९२ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिन्ति-८० । लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें १८ व्रतोकी कथाए हैं ।

ग्रन्थ न० ३६।

२३ व्रतकथासमह-''''। पत्र स०-२४। पिनत प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपेन्ति-३५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें अनन्तव्रत तथा पुष्पांजलिव्रत की कथा है।

## विषय-ज्योतिष

ग्रन्थ न० २६।

२४ ज्योतिषसंग्रह-\*\*\*\* । पत्र स०-२५ । पिनत प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपिनत-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-४ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें ज्योतिष के भिन्न भिन्न विषय 'सग्रह किये गये है ।

ग्रन्थ नं० १७ ।

२५ नत्त्रतिलक-''''। पत्र स०-४०। पनित प्रतिनत्र-१०। अक्षर प्रतिनंनित-५०। लिपि-कन्नड। माषा-कन्नड। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-४। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। वशा-उत्तम।

विशेष-इसमें ज्योतिष सवन्धी और भी कुछ पत्र है।

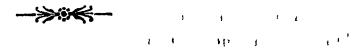


# विषय-भेत्रशाह

ग्रन्थ न० २३।

२६ वालमहिचिकित्सा- "। पत्र स०-२२। पिकत प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-३०। लिपि-कन्नड। माषा-कन्नड। विषय-मत्रशास्त्र। लेखनकाल-४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष-इसमें मत्रशास्त्र सवन्धी और भी कुछ पत्र है।



# विषय-लोकविज्ञान

ग्रन्थ नं० २५। ,

२७ तिलोयसार [त्रिलोकसार]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र स०-५४। पित प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रति-पित्त-१००। लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकिवज्ञान । लेखनकाल- × । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें अभयचन्द्र कृत संस्कृत टीका भी सम्मिलित है।

## विषय-शिल्पशास्त्र

ग्रन्य न० २०।

२८ वास्तुशिल्प-····। पत्र स०-३४। पिनत प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपिन्त-२७। लिप्-कन्नड। मापा-कन्नड। विषय-शिल्पशास्त्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें मत्रशास्त्र सवन्धी और भी कुछ पत्र है।

**→>:≪**--

## विषय-स्तोत्र

ग्रन्थ न० १०।

२६ स्तोत्रसंग्रह-\*\*\*\* । पत्र स०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४ । पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेप-इसमें सुप्रभातस्तोत्र तथा स्वप्नावली है

ग्रन्थ न० १५।

३० स्तोत्रसंप्रह्— । पत्र सं०-४१। पंक्ति प्रतिपत्र-४। क्षत्र प्रतिपक्ति-३०। लिपि-कन्नह। मागा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें मगलाष्टक, पादर्वनाथमत्राष्टक तथा पद्मावत्यष्टक आदि स्तोत्र सग्रह किये गये हैं।

ग्रन्य न० २४।

३१ स्तोत्रसंग्रह्-किव मपाल आदि। पत्र स०-४०। पक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपक्ति-७५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-४। पूर्णं तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीणं। विशेष-इसमें पचस्तोत्र और सिद्धस्तोत्र है। आप्तमीमासा के भी कुछ पत्र हैं।

->::

### विषय-गीत तथा भजन

ग्रन्थ न० १९।

३२ गीतसंग्रह-\*\*\*\* । पत्र स०-३६ । पक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्य न० २।

३३ रामायण्यस्गान-\*\*\*\* । पत्र सं०-७२ । पक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-× । पूर्णं तथा सामान्य सुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ न० ३५।

३४ समालक्ष्म [ यद्मगान ]- · · · । पत्र सं - १३। पित्त प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-४०। लिपि-कश्नर । भाषा-कन्नर । विषय-गीत । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## विषय-प्रकीणक

### ग्रन्थ न० ३।

३५ संग्रह-'''' । पत्र स०-१४८ । पिनत प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपिनत-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-प्रकीर्णक । लेखनकाल- × । अपूर्ण तथा सामान्य श्रृद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें ज्योतिष तथा स्थानीय चैत्यालय के दान आदि का विवरण है ।

ग्रन्थ नं० २८।

३६ संग्रह- · · · · । पत्र स०-१४ । पितत प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-सस्कृत तथा कन्नड । विषय-प्रकीर्णेक । लेखनकाल- × । अपूर्णे तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें सुभाषित, पूजापाठ आदिके अपूर्णे पत्र सग्रह किये गये हैं ।



# युन्थकार-सूची

अकल <b>इ</b> देव		अभि	नवचन्द्र
् अक्लङ्कस्तोत्र १८२, १८	३, २४९, ३१३	अरवशास्त्र	२७६
<b>अ</b> कल <b>न्</b> राप्टक	२७७	अभिन	वचन्द्रम
बप्टशती	९०	अश्वपरीक्षा	<b>२</b> ४७
तस्त्रार्यराजवातिक	ሪ, ९, ?ዟ५	_	( नागचन्द्र )
न्यायवि नक्चयालङ्कार	२२१	पस्परामायण	१२ <b>६</b>
प्रतिष्ठाकल्प २१	४, २६१, २६२	रामचन्दपुराण	१२४
प्रवचनप्रवेश	१०१		_
प्रायदिचतविष्टि	५८		प्रदेव
लघीयस्त्रय	१०२	त्रेलोक्यविधानकथा	२३६
शस्दानुशासन	१११, २९०	अमः	(सिंह
स्वरूपसम्बोधनपञ्चविशति ३१,	३२, ३३, २०६	अमरकोश ११४,१	१४, ११६, २२१, २२ ,
अगगलदेव	ſ	<b>२६५</b> , २	९०,
चन्द्रप्रभपुराण १४५, १४	६, २२७, २६७	अमरकोष (वनौषधिवर्ग)	२९०
अजितसेन	İ	अस	<b>र</b> क
	१३५	अमष्श्रतक	288
अ्लङ्क रचिन्तामणि 	-	आंग	रिन्द्र
अट्ट अथवा अहेडा	_	एकाक्षरनाममाला	११७
अट्टमत ( मेघलक्षण )	<i>3</i> .6 ₹	अम्ब	<b>ग</b> नन्द
अनन्तपण्डित		वेदान्तकल्पतरु	१०३
<u>द्राक्यमञ्जरी</u>	१९९		त्रग़ति
<b>अ</b> नन्तवीर्य		उपासकाचार	¥o
प्रमेयरत्नमाला १०	०, १०१, २२१	धर्मपरीक्षा	१७५
अनंभट्ट		परमात्मस्वरूप	२०६
तर्कंसग्रह	द्र४	श्रावकाचार	६९, ७०
अप्यदिक्षित		सामायिकपाठ	१८१
<u>कृ</u> वलयानन्द	<b>१</b> ३६	अभि	तचन्द्र
अभग्रत्दी		समयसारवृत्ति	२८
क्रमेंप्रकृतिनिरूपण	२०२		न्द सुनि
अभयसूरि सिद्धान्त चङ्ग	वृतीं	न्यायदीपावलीविवेक	. ૧૬
द्वादशाङ्ग व्याख्यान	,		रन्द योगी
अभिनवगुप्त			१३५, २२५, २९३
ह्येक्लोचनालङ्कार	१३७	अलङ्कारसग्रह	תני נויג נורו

अमोघवर्ष		भव्यकुमुदचन्द्रिका <b>टी</b> का	५९
	, ५७, २०९, २८६,	श्रुतभक्ति	<b>२४</b> ९
	, (0, (03, (04)	सत्यभित	२४९
अरबप		सरस्वतीस्तोत्र	१९५
रत्नत्रयविद्यान	२८९		७४, ७५, ७६, २१३, २८७
अच्चप्पार्य		सिद्धचऋपूजा	<b>२२०</b>
प्रतिष्ठासारसग्रह	<b>२</b> १५	सिद्धचत्रार्चनाष्टक	
<b>अरिष्टने</b> मि		सिद्धस्तोत्र	<b>१</b> ९६
श्रीदे <b>वता</b> कल्प	२७६, ५००	सूक्तिमुक्तावली	२ <b>६</b> ०
<b>अ</b> र्हे दास		स्तोत्रसग्रह	२७९
पुरुदेवचम्पू	<sub>2</sub>	প্রহা	धर आदि
	२२४, २६६, २९२	श्रावकाचारसंग्रह	२८६
मुनिसुत्रतकाव्यटीका	१२८	संग्रह	२०१
युखबोधिनी सुखबोधिनी	<b>२</b> ९२	स्तोत्रसग्रह	१९७
अश्वघोष भिद्य		1	्रे इ <b>दे</b> चरस
्रार्थ गाप गण् द्विजवदनचपेटा		श्रीपालचरित्र	•
	२०९		२३४, <b>२</b> ३५
असग	_	1	द्रनन्दी
वर्द्धमानकाव्य	१३२, १३३	जिनसहिता	८१, २१४, २६१
आचण		ज्वालिमीकल्प	२४४, ३००
श्रीपदाशीति	७०, ७१	<b>श्रैवणिकाचार</b>	<b>አ</b> ଡ
<b>आदि</b> नाथ		नीतिसारसमुच्चय	५१, २०९, २८५
धन्यकुमारच <b>रि</b> त	२३२	पास्वेनाथमन्त्राष्टक	<b>१</b> ७०
आदियाप	.,,	पार्वनाथाष्टक	१९०
अनन्तव्रतचरित	१४९	प्रायश्चित्तविधि	- ५८
आनुन्द्वर्धन		श्रुतावतार	१६४
काव्यालोक काव्यालोक		इर	रंगोल
_	१३६	न्यायकन्दलीटीका	९६
आर्थप		<b>उ</b> म्र	ादित्य
जिनेन्द्रकल्याणाभ्युदय	८१	कल्याणकारक	<sub>'</sub> २३९
<b>आ</b> शाधर		<b>च</b> ढचारि	देख भट्ट
अनगारघर्मामृत	इ४, ३५, २०६	<b>अष्टा</b> ङ्गहृदय	१६५
<b>बह</b> ैंत्स्तोत्र	१८४		<b>, यार्क</b>
<b>अहं</b> द्भक्ति	२५०	योगाष्टक	२ <b>५१</b>
<b>क्रियाकलाप</b>	२४८	_	
चतुर्विंगतिजिनपूजा	८५	_	( उमास्वामी )
जिनयज्ञकल्पदीपक स्थानने किन्त	८१	•	, ४६, २०८, २५९,२८५
ज्ञानदीपिका	88		व्रन <del>ि</del> ध
प्रतिष्ठासारोद्धार ८२, ८३, २१	६, २६२, २८८	जिन्संहिता	८१, २१४, २८७, ३०७

<del>ग्रन्यकार-सूची</del> ३१५			
_	कनकनन्दी	1	
तिभगी	२०२	केशण	
त्रिभंगिटीका		श्रीपालचित्त	२९६
पयडिसत्तद्वाणकी र	१० रीका ०४	केशव	
THE WAS THE	•	घातुपाठ	305
	कमलभव -	केशवण्ण	
शान्तीश्वरपुराण	१४८	त्रिभगीवृत्ति	१०
	कर्णपार्य	केशव मि	
नेमिनाचपुराण	१४७, २२८	तर्केपरिभाषा	
	कल्याणकीर्ति	तकैंभाषा	९४ ९४
चास्तत्त्वभेदाष्टक	२३	केशवसेन	70
<b>चिन्मयचिन्ता</b> मणि	२३, २४, २०५		
ज्ञानचन्द्राम्युदय	१२३, १५२, २२४,२३१, २९५	चतुर्विशतिस्तव	२५०
द्वादशानुप्रेक्षा	४९	केशवार्ये	
नागकुमारषट्पदि	- २३३	प्रदनशास्त्र	२७४
सिद्धराशिवर्णेन	२१	केशिराज	
	याणकीर्ति आदि	शब्दमणिदर्पण	१०९, ११०
	•	कोण्डकुन्द	, , , ,
सप्रह	<b>.</b>	<b>क्रियाकलाप</b>	२४७
कवि	त्रमाळ नागार्जुन	दशभित	१७५, २४८
कर्मेपरीक्षा	२४१	नियमसार	48
	कार्तिकेय	पचित्यकाय	१६, २०४
बारस अणुपेहा अथ		पवयणसार	१५, २०४
11 13 13 161 214	कालिदास	बारस अणुपेहा अथवा अणुपेनखा	५९, २१०
		मूलाचार	६०
<b>अभिज्ञानशाकु</b> न्तल	१३४	मोक्खपाहुड	१६, १७
कुमारसम्भव	१२० .	रयणसार	६५, ६६, २१२
मारुविकाग्निमित्र रेप्स्चिक	१३४	श्रुतभक्ति तथा चारित्रभक्ति	१८१
मेघसन्देश 	१२८, १२९	समयप।हुड	२०, २८४
रघुवशकाव्य	१३०, १३१	समयसार	२८, २०४, २८४
विक्रमोर्वशीय	१३४	समयसारचूलिया '	२८
श्रुतबोध	१३९	कोण्डकुन्द आर्	दे
	कुमुद्चन्द्र	त्रियाकलाप	१७६
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	१८५	1	७८, ३०२, ३०३
प्रतिष्ठातिलक टिप्प	णि ८२, २१५	क्रियापाठादिसग्र <b>ह</b>	३०५, ३०६
	<b>कुमुदे</b> न्दु		३०६
प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणि	२६२	सहजात्मप्रकाश	₹0
	केदारभट्ट	संग्रह	२ <b>०</b> ०
***************************************	_	स्तोत्रसम <b>ह</b>	१९७
*	१३७, १३८, १३९, २२५, २६६	र । स्यानसम्	•

कोण्डब्	इन्दें तिथा पूज्यपाद	चन्द्रिण वर्ष	fi
क्रियाकलाप	२४७, २४८	यंशीघरचरित	<b>ধ্</b> ३४
दशभित	१७९, २४८, २७७, ३०३	चन्द्रन वर्णी	f ' '
दशभनत्यादिसग्रह	१७९, २४८	नॅन्दीरवरव्रतकथा	' १६०
नन्दीश्वरभक्ति	१७९, १८०	यशोधरचरित	१५६
के	ोमटदेव भूपाल	चन्द्य उपाध	
श्रृङ्गारदीपिका	१३७	तीर्थयात्राचरित	२३८
·	खण्डनाकन्द	त्रैलीक्यभूर्वणैचरित	२३१, २३२
तत्त्वदीपिका	९३	नन्दीश्वरव्रतकथा	१६०
	गङ्गेत्रवर	स्याद्वादमर्तासद्धान्त	२०४
तकंचिन्तामणि	२२०	चन्द्रकीर्ति	
	गणेइवर	कमें <b>दहन</b> विधान	<b>'</b> ₹१६
तत्त्वचिन्तामणि	९३	परमागमसार	५२, ५३
	गर्भिष	चन्द्रम खपाध्य	ग्रय
गार्ग्सहिता	२४१, २४२	् सक्षिप्तश्रुतज्ञानविधान	२२०
and and and	गुणनन्दी	ेचन्द्रभं करि	वें व
ऋ[बमण्डलस्तोत्र	१८४	र्गणितविलास	१६८, २४४
जैनेन्द्रप्रक्रिया	१०८, २९८	गुम्मटस्वामीचरित	२७०
	गुणनन्दी सुनि	गोम्मटेश्वरचरित	· .
ऋषिमण्डलारा <b>घ</b> न		यशोधरचरित 😘	१५६
451441000141414		लोकस्वरूप	१७३, २४६, ३००
aria in a sa i	गुणभद्र	शान्तीशनुति	२७८
आत्मानुशासन जनगण	२२, २३, २०५ १४४, १४५, २२६, २६७, २९४	चन्द्रशेखर	<b>ह</b> वि
उत्तरपुराण	_	पपादेवीगद्य	' २३८
	गुणवर्भ	रामचरित	, <b>२४</b> ६
पुष्पदन्तपुराण	१४८, २२८	चन्द्रसागर व	~
	गुरुदास	•	_
योगसार	۷۰	जिनमनितंनय मुल्लोशास्त्र	४३, ४४, २५९ २८६
	गुरुराम		_
गोम्मदेश्वर	' २३८	चन्द्रसेन सु	
	गौतमस्वामी	केवलज्ञानहोरा <del>केवलज्ञानहोराम</del>	<b>२९९</b>
ऋषिमण्डलस्तीत्र	<b>ર્ર</b> હ	केवलज्ञानहोराशास्त्र	' १६६
	क्ष्यर्ति ( .ब)	चामुण्डरार	ł
नानार्थं कोश	,	चारित्रसार	४३
ાના ત્રુપાય	११ <u>७</u>	त्रिषष्टिलक्षण हापुराण	१४६, २२७, २९४
~^ .	चतुरास्य	लोकोपकारक	२५२
चतुरास्यनिषण्ट्	F. <b>११७</b>	सक्षिप्तचतुर्विशतितीर्थञ्करपुराण	रेरेट

चारंकीर्ति चारंकीर्ति		जिनेन्द्रबुद्धि
गीतवीतराग	२५२	ailians
चारुकीर्ति आदि		साधिकार्यानि
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	२०१	जैसिनि
संग्रह चि <b>क</b> ण	404	affriga-
		10)
बाहुबलिचरित	१५५, २३३	द्ण्डी काव्यादर्शे १३६ २२।
चिरसुख सुनि		144, 114
<b>स</b> ण्डनदीपिका	९२	द्य पालमुनि
प्रमाणमाला तास्पर्यटीका	१००	रूपसिद्धि १०९, २९०
चिदानन्द कवि		दामोदरभट्ट
बुद्धिसागरचरित	२३३	<b>आरोग्यचिन्तामणि</b> १६५
<b>অস</b>		दिवाकरमुनीन्द्र भट्टारक
अनन्त <b>नाथ</b> पु <b>रा</b> ण	१४१	तत्त्वार्यंलघुवृत्ति ४५
उ जयदेव		दुर्गिसिह
चन्द्रालोक	१३६	<b>उ</b> णादिवृत्ति १०४
	***	पञ्चेतन्त्र २९७
जल्ह्ण	_	देवणा
<b>ब्रैक्तिमुक्तावली</b>	२००	तत्त्वप्रदीप ९३
जिनचन्द्र		देवनन्दी
रीहिणीचरित	१५७, २३४	पडारचक २५१
सिदंतसार	२१	पहारवक्रमाला १९४
जिनदत्त सूरि		मिद्धिप्रयस्तोत्र १९६
<b>विवेकविलास</b>	१९९	हेवएप
जिनदेवण्ण		रायविजय २६९
श्रेणिकचरित	<b>२</b> ३५	देवरकवि
जनसेन जि <b>नसे</b> न	747	धर्मंशर्माभ्युदयटीका १२५
_	202 202	देवसेन
वादि पुराण १४३, १४४, २२६		3/ 205
<b>जि</b> नसहस्रनाम	१८८, २७८	वाराह्याया
जिनसहस्रनामस्तोत्र	१९५	्र अलि।प <b>र</b> ।त
त्रवींगकाचार	- २८५	दसणसार
पार्विभ्युदय	१२६	द्वेन्द्रमुनि
सहस्रनाम मन्त्र	<b>کا</b> د د د د د د د د د د د د د د د د د د د	बालग्रहिचिकित्सा २७१
सहस्रनाम स्तोत्र	२५०	देवोत्तम
जिनसेन (द्वितीय)	o <b>v</b> o	नानार्थरत्नाकर ३९०
हरिवश पुराण	१४९	हो <u>ड</u> ुय
जिनसेन आंदि	ا ــ س	चन्द्रप्रभचरित १५०, २३७
स्तीर्वसंप्रह	<b>ই০</b> ४	AleNaha an an

	धनक्षय		-	नेमणा
नामसाला	११८, २२२, २९	१, ३०९	शानभास्करचरित्र	" १५२, २३१
राघवपाण्डवीय (द्वि		१, १३२		नेमरस
विषापहारस्तोत्र	१९	२, १९३	सुदर्शनचरित	२६९
	धन्वन्तरि		} ~	नेमरस कवि
<b>घन्त्रन्तरिनिघण्ट्</b>		२३९	लोभदत्तचरित	२३४
3	धर्मकीर्ति			मेचन्द्र आचार्य
सम्यक्तवकोमुदी	१६२, १६	३, २३७	गाः आसर्वतिभगी	म मन्द्र जापाप
	धर्मचन्द्र		कस्मपयडि	ን
प्रक्नोत्तरचतुर्विशति		३०४	गोम्मटसार	२, २०२, २५४ ४, २८४
	धर्मदास	(00	गोम्मटसार (कर्मक	
विदग्धमुखमण्डन	•	, २६६	•	हाण्ड) २०२, २५४, २८२
•	तन्दसूरि	3 744	जिनसहिता	२१४
कुमारसम्भव दीपिका		१२०	तिभगी	9, 90
5	नयसेन			७१, १७२, १७३, २४६, २७६,
<b>धर्मामृत</b>				१०१, ३१०
यमामृत ललिताङ्गदेव कथा	१६०, २३६	i	दव्वसगह १०, १	१, १२, १३, २०३, २५५, २५६
कारता भूपप गणा	311622	१६१	ध्वजारोहणविधि	८१
अर्ह्दष्टक	नागचन्द्र		पयडिसम्विकत्तण	१४
जहद <i>ण्ट</i> क जिनमूनितनय		१८४	पचपरूवणा	, १५
•	( as Comm - 1 - 1	२०७	पचसत्तावण्ण	१५
_	(अभिनव पंप)		प्रतिष्ठातिलक	८२, २१५, २८७
पंपरामायण		१२६	यन्त्रसग्रह	८३
रामचन्द्रपुराण		२२८	लद्धिसार	१७, १८, २५७, २८४
	नागराज	,	लीलावती	२९७
पुण्यास्रवकथा	_	, २३६	वीसपरूवणा	१८, १९, २०, २०४
	नागवर्म		सत्ततिभगी	70
अभिधान <i>र</i> त्नमाला		११४		मेचन्द्र आदि
कणटिकभाषाभूषण		१०४	गोम्मटसारादिसग्रह	२५४
काव्यालोकन		१३७	<b>_</b>	चन्द्र कवि
नानार्थरत्नाकर	•	\$ \$ 90	अर्द्धनेमिपुराण	२२६,
	गसेन मुनि		वसन्ततिस्रकाचरित	- <del>7</del> 7 7 8
तत्त्वानुशासन		२०,२		मिचन्द्र यति
नि	त्यनाथसिद्ध		<b>उद्योगसार</b>	, , <del>१</del> ९
रसरत्नाकर	3	१६६	<b>लीलावती</b>	१३२
	नीलकण्ठ			नेमिनाथ
सम्यषत्वकोमुबी		\$63	नीति <b>वाक्यामृतटीका</b>	753

पृहाभिराम	पाण्डुदासयति श्रीघर भट्ट
रत्नशेखरचरित २३४	न्यायकन्दली ९६
पदुमण्ण	पाण्ड्य भूपति
सुवर्णभद्रचरित्र १५८	भव्यानन्दशास्त्र २१०
पद्म पद्म	पायण्ण वर्णी
•	अहिंसाचरित २२९
	ज्ञानचन्द्रचरित १५२, २३१
पंप	धमेंपरीक्षा ३०२
आविषुराण १४२, २२६, २९३	पार्श्वपंहित
रामचरित (पंपरामायण) १३२	पाव्वनाथचरित १५४
पद्मनन्दी आचार्य	पाइवैनायपुराण १४८, ३०९
आलोचनाः १७५	पूज्यपाद
उपासकसंस्कार ४१, २०७, २८४, २८५	इंग्टोपदेश ३८ ३९, २०७
एकत्वसप्तित ४२, ४३, २०७	उपासकाचार ४१
क्रियाकाण्डचूलिका २४८	चन्द्रप्रभस्वामिघोप २५०
अंबू दिख्य पण्णित २४६	चैत्यमक्ति १७१
दानपञ्चाशत् ४७	जैनेन्द्र १०८
क्षान्यासुत्रसा	शान्त्यष्टक १९३
धर्मोपदेशामृत ५०, ५१	समाधिशतक २८, २९, ३०, २०६, २५८
पद्मनिन्दिपञ्चिविद्याति ५२, २०९ भ्रज्यक्लीकल्याणवतिव्यान २१८	सर्वार्थसिद्धि ७३, ७४
7440(11441-111111	पोन्न
W 111 0 11	जिनाक्षरमाला १८८
	प्रदौम्यसूरि
/1 / 4/11//11/1	000
पद्मतन्दी वणीं	शब्दमञ्जरी प्रभाचन्द्र
भुजवलिकल्याणद्रत विघान ८७	200
पद्मनाभ	जनस्दन्यास
जिनदत्तवरित १५०, १५१, २६८, २९४, २९५,	प्रातक्रमणत्रयका टाप्प
३०९	प्रभाचन्द्र आचार्य
जिनदत्तरायचरित २३०	तत्त्वार्थवृत्ति ३०८
पद्मावतीचरित १५४	वन्वार्थस्य
यशोधरचरित १५७	ज्यांग्राक्रमदचर्द्र
पद्मप्रभदेव	3
पार्वं नाथस्तव २७८	व्रतस्वरूप ६६, ६७, ६८, ४१४, ०००, ८००
पद्मराज	सिद्धान्तसारवृत्ति
भाविकजनकल्पवृक्ष २९१	प्रभाचन्द्र देव
पाणिनि	दानसार ४
कार्कान्यसम्बन्धपरीक्षा १०७	4

प्रवरकीर्ति	
तत्त्वनिश्चय	९३
बन्धुवर्म	
जीवसम्बोघन	२४, २०५
बालचन्द्र	
द्रव्यसग्रह लघ्वृत्ति	१३
बन्घूपद्रेश	१६
ू बालचन्द्र <b>रे</b> व	
तस्वरत्नप्रदीपिका	88
बाहट	٠ -
<b>औषघगुणपाठ</b>	२७०
बाहुबली	(00
	•
गोम्मटेश्वरचरित	१५०
द्वादशान्त्रेक्षा	४९
घर्मनाथपुराण <u> </u>	१४६, २२७
नागकुमारचरिन १५४, २३२, २३३,	२६८, २९५
पद्मावतीयक्षज्ञान	२५२
बोम्मरस	
गृणरत्नमाला	१५९
जीवन्घरषट्पदि	२३०
त्रह्म	
चन्द्रप्रभचरित्र	१५०
त्रह्मणाङ्क	
जिनभारत	२९४
ब्रह्मदेव कवि	
समयसार	२०
ब्रह्मदेव गणक	ļ
करणप्रकाशिका	२४१
ब्रह्मदेव ( ब्रह्मशिव )	
समयपरीक्षा	१७५
<b>ब्रह्मसूरि</b>	
अभिषेकपाठ	८३
<b>प्रैविणकाचार</b>	४७, २०८
प्रतिष्ठातिलक ८२, २१५, ३	1
ब्रह्मसूरि कवि	1777 104
अक्षसूरिकाव	ĺ
जाप <sup>र</sup> व <sup>र</sup> मारत	१५१

	भट्टि	ı
भट्टिकाव्य ( रा	_	१२६
	भर्तृहरि	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
शृतकत्रय	, c	ລລຸ
भूग स्त्राप्त शतकद्वय (नीति	'तथा श्रःकार )	२२५ १४०
	भानुकीर्ति	,
शङ्खदेवाष्टक		१९३
	भारवि	1
क्रिरातार्जुनीय		११९
· ·	भावसेन जैविद्य	•••
कृातन्त्ररूपमाला	१०४, १०	ધ, १०६, <b>૧</b> ૦૭,
विरुवनस्यास्त्रास	२२३, २८	
विश्वतत्त्वप्रकाश	\$ <b>***</b> ******	१०३
0	भास्कर	
जीवन्घरषट्पदि	<b>.</b>	१, २३०, २३१
	भास्करनन्दी	
तत्त्वार्थसुखवोधवृ	ति	४५
ध्यानस्तव्	_	२६
	भूतबल्लि	
महावन्घ	t	<b>२</b> ५७
	भूपाल	
जिनचतुर्विसतिका	_	१८७
,	भूपाछ आदि	
स्तोत्रसग्रह		१९६, १९७
	भोजराज	
चम्पूरामायण		१२३
वैद्यसग्रह		२४०
	मंगरस	
खगेन्द्रमणिदर्पण		२३९, २७०
जयनृपकाव्य		१२४, २२४
	१३७, २३३, २६८	, २८५, २९६
प्रभञ्जनचरित		१५५
श्रुङ्गारसुघाव्घि		638
श्रीपालचरित		२६९
सम्यक्तवकोमुदी	ч	१६३, २३७
सूपशास्त्र		२७७
हृद्रिवशपुराण		३३८, ३२९

## प्रन्थकार-सुची

भस्सट	1	परीक्षामुतसूत्र ्ः	<sup>-</sup> ₹₹₹
	१३५, १३६	माधवचन्द्र े	<b>च</b> ३५
महिनाय		चन्द्रचष्टिकथा	•
<b>कुमारसम्भव</b> नीका	१२०	त्रिलोकसारवत्ति <del></del>	:309
मेघसन्देशटीका ,	१२९	माघवभट्ट	<b>ૻ ૨૪</b> ૩
	१३४	मृहूर्संदर्पेण 	<b>\\</b>
शिषुपालवभटीका स <b>िवेण</b>	1	मानतुङ्ग	<b>९१,</b> २५१
कामचाण्डालिनीकल्प	२४४	भक्तामरस्तोत्र १ मानतुङ्ग आदि	771 / 111
ज्वालिनीकल्प	२४५	स्तोत्रसंग्रह १९७, ३	१७९, ३०४
त्रिय <b>ष्टिलक्षणमहापुराण</b>	१४६	स्तात्रसप्रह <b>भायणा</b>	
	२२४	आञ्जनेयचरित	<sup>।</sup> २६८
नागकुमारकाव्य १५३	१५४, २९५	मृतिरगले	६०
44.34	१६०	माद्रयण सेट्टि	٦
नागकुमारपञ्चमीकथा	२३२	अञ्जनादेवीचरित	२२९
नागकुमारपञ्चमीचरित	300	मायिभट्ट	
पद्मावनीकल्प	२४५, २७५	ताकिकरका	९५
भैरवगद्मावनीकस्प		प्रबोधसाधन	९८
भैरवपद्मावतीस्तोत्र	<b>१९</b> २	मुकुन्दकवि	_
deal.	, २१२, २१३,	परीषहजय	५३
२६०, २८६	- 	मुनिचन्द्र	0.41-
सरस्वतीकल्प	२४६, ३००	चन्द्रनाधाष्टक	१८७ <del>,</del>
महादेव मह	१०२	मुनिचन्द्र विद्यार्थी	<b>१२</b> ३
मुद्दतावलीप्रकाश (१) महावीर	•	चन्द्रप्रभचरितव्याख्यान	
	१६८, १६९	यक्षत्रमे	
गणितसार महासेन	44.7	चिन्तामणिवृत्ति	१०८
	<b>ર</b> ુપ્ <b>પ</b>	यतिवृषम	१७१
प्रद्युम्नचरित मा <b>यकवि</b>	***	तिलोयपण्णति	,0,
	१३३, १३४	यशःकीर्ति	२९३
शिशुपालवष माघनम्दी आचा	र्ध	सन्देहच्यान्तदीपिका	***
	२८४	योगीन्द्रदेव	्र ३५, ३६
उद्योगसार	२७८	अमनाशीति	२५
चतुर्विशतिस्तोत्र	१४, २०३, २०४	जोगसार	१८९
4614711	६८, ६९, २१२	निजाष्टक	२६, २०५
शास्त्रमारसम्च्चय	२१२, २८६	परम्प्यासु रस्नाकरकवि	<b>147 1 1</b>
श्रावकाचार माघनन्दी व्रती		• • • • • • • • • • • • • • • • • • •	३७
	१८६	अपराजितेश्यरशतक.	१५५, १५६
चतुर्विकातितीर्थं द्भरस्तोत्र	, , ,	भरतेशवैभव	२७
माग्रिकदेव	१९६	रत्नाकरशतक	२७
स्तोत्रसप्रह		शतकत्रय	२७
माणिक्यनन्दी	९८	चतकद्वय	ť
परीक्षामुख		•	

श्रेण्यारोहणसन्धि	१५८	1	arrath Dr.
षोडशस्वप्नसन्धि	१५८		वराहमिहिर
	कर वर्णी	<b>बृहज्जातक</b>	799
		<b>)</b>	ार्धमार्न कवि "
त्रिलोकशतक भरतेशवैभव	१७३ २०० ४६० हरू	कातन्त्रविस्तर	, १०७
मरतरायमय रत्नाकरशतक	२३३, २३४, २९६ २८४	श्रीपालचरित	२३५
रत्नाकरश्चयक			द्धिमान मुनि
<del></del>	रम	दशभक्त्यादिसग्रह	<b>२४</b> ९
अजितनाथ पुराण	१४१		वसुनन्दी
	वन्द्र मुनि	आचारवृत्ति	३६
<b>बाराघनासमु</b> च्चय	३७, ३८, २०६, २०७		वाग्भट
₹	विषेण	नेमिनिर्वाणकाव्य	१२५
पद्मपुराण	१४७, २२८	वॉग्भटालङ्कार	१३७
_	जादित्य		ाचस्पति मिश्र
गणितविलास	२७५, २९९, ३००	तरवकीमुदी	
गणितसग्रह	१६९ १६९	į	59 - <del>22</del>
	भचन्द्र	1 -	वाणीवल्लभ
्। अनेकार्थनाममाला	- •	वर्षेमानपुराण	288
	११४	,	वादिचन्द्र
रामच	न्द्र द्राविङ	पाण्डव पुराण	१४८
नानार्थं रत्नाक <b>र</b>	११७	1	ृवादिराज ,
रामच	<b>ान्द्र</b> सुनि	एकीभावस्तोत्र	<b>228</b>
पुष्यास्रवकथा	१६१, २३६	प्रमाणनिर्णय	99
~	तेन सुनि	यशोधरेकाव्य	१२९, १३०, २२४, २९२
तत्त्वानुशासन	6	यशोधरचरित	, ያ <b>ረ</b> ው ,
<u> </u>	ण कवि	वादिरा	ज तथा धनञ्जय
मण्डकदेवचरित मण्डकदेवचरित		एकीभाव तथा विषा	पहारस्तोत्र १८५
मण्डूमद्यमारत श्रुतकीर्तिमुनिचरित	१५६	ŧ	वादी <b>म</b> सिंह
	१५७	क्षत्रचूडामणि	'१र्ने०, १२१, २२४, २९१
	क्षण	गद्यचिन्तामणि	१२१
यशोषरकाव्यटीका	्१३०, २९२	द्रादशानु <b>प्रेक्षा</b>	२० <i>९</i>
<b>स</b> र्स	शि कवि	नवपदार्थनिश्चय	१३
जैमिनिभारत	२३१, २९४	स्याद्वादिसद्धि	१०४
ं बलि	तकीर्ति 💮		वासुदेव
<b>बादिपुराणटिप्पणी</b>	१४४	न्यायसारपदपञ्चिका	
उत्तरपुराणटिप्पणी	१४४		<b>वासुपू</b> ज्य
	<b>इ</b> यसूरि	दानशासन 📑 ,	*\& \C \ \
अमरकोशपदविवृति	११६	दानसार -	
•	दराज		२०८ यकीर्ति सुनि
ताकिकरका	1		•
सारसंग्रह	<b>९</b> ५, २२० १०३	श्रुतस्कन्घाराघ <b>ना</b> सरस्वतीकल्प	र १९
_	ाज किव	_	२४६
<u>.</u> .	•	_	वेजयण
न्यायकुसुमाञ्जलि	९६	द्वादशानुप्रेक्षा	४८, ४९, २०८,२५९, २८५
	হে चि	नागकुमारषट्पदि	733
प्राकृतमञ्जरी	१०९		ायणण सुनि
<b>यो</b> गशतक	रें७१	समवसरणस्वरूपविन	रण २३१

विजय वर्णी	वेमभूपाल
आदीव्वरजन्माभिषेक चरित १५०	शृङ्गारदीपिका १३४
' द्वादशानप्रेक्षा ३०७	शङ्करभट्टं
श्रुतज्ञानविधान २१९	,
श्रुतस्कन्चारायना २१९	
विद्वल	शङ्करानन्द
विदग्धचूडामणि ११८, ११९, २९०	अथर्वशिखोपनिषद्दीपिका ९०
विद्यानन्द	शब्दब्रह्म
	चन्द्रप्रभगद्य १८६
अष्टमनन्दीश्वरपूजा २१६	शर्चवर्म
विद्यानन्द खामी	कातन्त्रं २३३
अष्टसहस्रो ९०, २८९	शशधर शर्मा
आप्तपरोक्षां ' ९१	गौतमसिद्धान्त ९२
'तत्त्वार्थंश्लोकवार्तिक ९३, १०३, २२०	न्यायसिद्धान्तदीप ९७
पत्रपरीक्षा ९७, २२१	शाकटायन
पार्वनाथस्तोत्र १९०	घातुपाठ : १०८
प्रमाणपरीक्षा	घातुपाठादिसंग्रह <b>२</b> २३
सत्यशासनपरीक्षा १०३	शब्दानशासन १११
विद्यानन्दी आदि	शानटायन अमोघवृत्ति ११३
कलिकुण्डाराघनादिसंग्रह २६३	शान्तणां वंणी
विद्यानाथ	अनन्तकुमार <del>ीच</del> रित २२९
प्रतापरुदीय १३६, १३७	शान्तरस
विद्यासाधव	
मुहूर्तंदर्पेण २५४   चिनश्वरं नन्दी	
0.00	शान्तिरस आदि
	योगरत्नाकरादिसंग्रह ३०७
विश्वनाथ	शान्ति सुनि
भाषाकुसुममञ्जरी	पुरुदेवचरित १५५
विश्वनाथ भट्टाचार्ये	शान्तिकीतिं मुनि
भाषापरिच्छेद . १०२	र्चतुर्विवातितीर्थेङ्करपुराण १४६
सिद्धान्तमुक्तावली १०३	पार्वनाथचरित १५४
विष्णुसेन आ०	शान्तिनाथ
समवसरणस्तोत्र १९४, १९५, २५१, २७८	सुकुमारचरित २६९
समवसरणाष्टक १९४	ञान्तिराज कवि
्रं वीरनन्दी	पञ्चसन्धानकाव्य २९१
<b>बाचारसार</b> ३६, ३७, २५८	शान्तिराजकविप्रगस्ति २९८
चन्द्रप्रभचरित्र १२२, १२३	सरसजनाचन्तामणि २९२
वीरसेन	- शिवकोटिआचार्य
धवलाटीका २५६	रत्नमाला ६५, २११
वीरसेन और जिनसेन	वहाराधना १६१, १६२, २३६
	शिशुमायण कवि
जयघवलाटीका २५५ यृतविलास	अञ्जनाचिंग २६८
	त्रिप्रदहनचरित १५२, १५३
444 (140	शुभचन्द्र चरित
वेद्व्यास	ज्ञानार्णंव ८०
कस्रडभारत १४५	सामान

नरपिङ्गलि <del>-}िक्स्मण्डमङ्</del>		२४३ १३९		६५, २१०, इ	१११, २६०,
नीतिरसायनशतक	<u>}</u>	141	रतगरपक्लोक	२८६	
	चन्द्र देव	{	स्वयम्भूस्त्रोत्र	_	१९७, २७९
परीक्षाम्सवृत्ति		९७		समन्त्रभद्र आदि	
शुभचन	द्र भट्टारक		रत्नकरण्डश्रायक	- <del>-</del>	228
चरित्र सिद्धिवतपूजाविध	ान	24	संप्रह	•	२००, २०१
	विति		स्तोत्रसग्रह		\$08.
<b>दै</b> वज्ञवल्लभ		२४३		सातण घणी	
	<b>श्री</b> धर	` ' `	अनन्तमती चरित		२६७
	-	2015		सिंहराज	( • •
वैद्यामृत	•	२, २७३	चिन्मय चिन्तांम		274
	राचार्य		हदय नीति		78
गणितसार		१६९	हिंदन नागत	<b>~</b>	१४१, २९३
ज्यातिर्ज्ञानविधि		२४२		सिंहसूरि	
श्र	ीह <b>र्ष</b>	ļ	लोकतस्य		१७३
खण्डनग्रन्य .		१२१	लोकत <del>र</del> वविभाग	ŧ	३०१
नैषघकाव्य		१२६		युखप्रकाश मुनि	
श्रत	कीर्ति		न्यायदीपावली र्न		९६
आ रोग्य-तोत्र		३०३		सुन्दर	24
श्रनेकी	र्ति देव	, ,	डन्दुदीपिका	8.41	
ु ' ''' किल्लासमारी स्टित	11.01 4.0	250	<b>उ</b> न्दुद्धापका	-77-	१६५
विजयकुमारी चरित	·	२३४		सोमदेव	
	तमुनि		द्वादशानपेक्षा		४८, २०९
<b>आसव्यत्</b> ति		\$	नी लियाक्यामृत	' १३९, १	४०, २९३
त्रिभगीटीका	1	१०	रुविमणीकथा		२३६
परमागमसार	~	१५		सोमनाथ	
सकत्तकीर्ति भट्टारक			कल्याणकारक		१६५
वृषभनाथपुराण	4	२९४		सोमप्रभ	
श्रीपाल चरित		१५७	सूमितम्बतावली	७६, ७७, ७८,	E Q G 90
सकलचन्द्र गुनि			n e		६०, २८७
द्वष्टाख्टक	•	१८९		_	( ) (00
	<b>ानन्द</b>			हरिचन्द्र	
व्यादिनाथ यक्षगान	•	२५१	<b>घर्मशर्माम्यु</b> वय	१२३, १२४, १२५, २	९०, ३०९
	i Petter	111		<b>हरिहर</b>	
	कुमार		तार्किकरक्षा की ट	ोका	९५
वास्तु गास्त्र		१७४		हस्तिमल्ल	
	त्तभद्र	1	प्रतिष्ठाविधि	<b>4.</b> • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	201.
बाप्तमीमांसा	९१, ९२,	, २२०		स्तिमस्ल कवि	२१५
केवलज्ञानचू डामणि		<i>२</i> ४१ '		ारतमस्य काच्	
चन्द्रप्रभस्तीत्र		१८६	वृषमनायगद्य		१९३
चिन्तामणिटीका (?)		२८९	वृषभगयपुराण	<b>A</b> 1	२२८
चिन्नामणिटीका (१)	64	१०७	श्रीपुराण	•	४८, १४९
जिनशतक गुरुवानगरम्	१८७, १८८,			हमचन्द्र	
युवत्यनुशासन रत्नकरण्ड श्रावकाचार		, २६४	अभिवानिचन्ताम	<b>ण</b>	<b>{                                    </b>
रस्तपारण्ड जानमाचार	६०, ६१, ६२, ६	<b>३, ६४</b> '	काव्यानुशासन		१३६